साक्षी

अंक-23

साक्षी

अंक-23

भारतीय भाषाओं में रामकथा
(तेलुगु भाषा)

प्रधान सम्पादक

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक और अनुवाद

प्रो. आई.एन. चन्द्रशेखर रेड्डी

एमिरिटस आचार्य, हिन्दी विभाग

श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश)

परिकल्पना

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

निदेशक, अयोध्या शोध संस्थान : तुलसी स्मारक भवन

अयोध्या, फ़ैज़ाबाद (उ. प्र.)

अयोध्या शोध संस्थान

तुलसी स्मारक भवन, अयोध्या, फ़ैज़ाबाद (उ. प्र.)

फ़ोन—फ़ैक्स : 05278-232982

साक्षी-23
भारतीय भाषाओं में रामकथा : तेलुगु भाषा

प्रधान सम्पादक
डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

सम्पादक और अनुवादक
प्रो. आई.एन. चन्द्रशेखर रेड्डी

परिकल्पना
डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

ISSN : 2454-5465

तेईसवाँ अंक
©अयोध्या शोध संस्थान

प्रकाशक

वाणी प्रकाशन

21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
फ़ोन : 011-23273167, 23275710
फ़ैक्स : 011-23275710
ई-मेल : vaniprakashan@gmail.com
वेबसाइट : www.vaniprakashan.in

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए वाणी प्रकाशन की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। विचारों से पूर्णतः सम्पादक और वाणी प्रकाशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

पुस्तक के बारे में

अत्युत्तम मानवीय गुणों से दिव्यत्व को प्राप्त कर सकते हैं, ऐसा दिव्य संदेश एवं महत्तर प्रेरणा रामकथा देती है। राम का जीवन और राम के द्वारा प्रतिपादित मूल्य इसलिए कालजयी बनकर जब तक मानव का इतिहास होगा तब तक जीवित रहने की महिमावान स्फूर्ति प्रदान करते हैं। वैकुंठवासी श्री महाविष्णु ने राम के रूप में ऐसा अवतार धारण किया जो सिर्फ राक्षस संहार ही नहीं बल्कि पूरी मानव-कोटि को उत्तम मार्ग दिखाता है। राम का जीवन और राम के आदर्श इसलिए भी अमर हुए हैं कि एक मनुष्य अपनी कठोर एवं संघर्ष साधना के द्वारा धरती को स्वर्ग बना सकता है। बल्कि स्वर्ग का अनुभव मानवों को प्रदान कर सकता है। श्रीराम जाति, प्रांत, भाषा की सीमाओं को लाँघ कर एक सामान्य मानव के लिए आवश्यक संपूर्ण उत्तम गुणों का समर्थन करते हैं। राजा के रूप में राजाओं में श्रेष्ठ सिद्ध हुए हैं। अयोध्या राज्य राम राज्य बना है। भारतीयों के लिए एक बड़ा ही सपना तैयार करके अपने नाम का चरितार्थ बनाया है। 'राम राज्य' के रूप में आज भी भारतीय श्रीराम के शासन को अपने स्मृतिपटल पर खड़ा कर लेते हैं।

श्रीराम धर्म के संरक्षक रहे हैं। उनके विचार में धर्म की रक्षा करने से धर्म ही मनुष्य की रक्षा करता है। प्रत्येक मनुष्य अपने धर्म के पालन से इस धरती को स्वर्ग बना सकते हैं। यह दिव्य संदेश और अप्रतिम प्रेरणा रामकथा जन-जन में फैलाती है। श्रीराम को घनीभूत धर्ममूर्ति के रूप में प्रतिस्थापित करती है।

आंध्रों की भाषा, आंध्रों की मिट्टी श्रीराम की पावन चरणधूलि से पवित्र बनी है। आंध्रों की भाषा में, आंध्रों की संस्कृति में, आंध्रों के जीवन विधान में, आंध्रों की साँस-साँस में राम तत्व फैला हुआ है। पावन गोदावरी नदी, पर्णशाला, दंडकारण्य, भद्राचल श्रीराम-लक्ष्मण की मूर्तियाँ आदि आंध्रों की अमूल्य संपदा है। श्रीराम के बहुमूल्य जीवन के वे पल आंध्रों की मिट्टी में समा जाना उनका सौभाग्य है। इसका यही प्रमाण है कि आंध्रों के साहित्य में, कलाओं में और जीवन में श्रीराम परावर्तित हुए हैं। श्रीराम के नामधारी पुरुष, सीता के नामधारी नारी वर्ग, श्रीराम के नामधारी गाँव, गलियाँ, नगर, कॉलोनी, मंडल आदि आंध्रों के श्रीराम के प्रति समर्पण के सूचक हैं।

आंध्रों के लिए यह गौरव की बात है कि साहित्य के सभी रूपों में रामकथा प्रस्तुत हुई है। क्या पद्य क्या गद्य, काव्य, कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास, आलोचना, निबंध, लोक साहित्य आदि सभी साहित्यिक रूपों में रामकथा अभिवर्णित है। आंध्रों के लिए यह गौरव की बात है कि तेलुगु में समृद्ध राम काव्य परंपरा प्राप्त होती है। प्राचीन एवं मध्य युग में राम से संबंधित अनेक

महाकाव्य रचे गये हैं। रंगनाथ रामायण, भास्कर रामायण, मोल्ल रामायण, निर्वचनोत्तर रामायण, उत्तर रामायण आदि इसकी पुष्टि करते आज भी काव्य रत्न के रूप में आंध्रों की गली-गली और गाँव-गाँव में रामकथा तत्व को फैलाते देखे जाते हैं। वास्तुकला, कलंकारी कला, शिल्प कला, मंदिर कला आदि सभी में श्रीराम सायास ही प्रतिबिंबित होते दर्शन देते हैं। शायद ही आंध्र में ऐसा कोई गाँव नहीं होगा जहाँ राम मंदिर या राम के नाम से अभिहित कोई आदमी नहीं मिलेगा। आंध्रों की यह विशेषता भारतीय राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता को परिपुष्ट करती है।

मनुष्य के जन्म के लिए मूलाधार स्त्री है। उसी रूप में स्त्री रहित मानव-जीवन की कल्पना नहीं कर सकते हैं। श्रीराम की कहानी का मूलाधार भी स्त्री ही है। सीता माई के बगैर रामायण नहीं है और रामकथा भी। श्रीराम की कहानी में सिर्फ सीता ही नहीं बल्कि कैकेयी, कौसल्या, उर्मिला, तारा, मंदोदरी, शबरी आदि अनेक स्त्रियों का चित्रण है। जिनके द्वारा वाल्मीकि आदि कवियों ने नारीवर्ग को महान संदेश प्रदान किए हैं। विशेषता यही है कि ये सारे नारी पात्र श्रीराम से किसी न किसी रूप में संबंध रखते हैं।

नैतिक, धार्मिक, राजनीतिक कई मूल्यों का संरक्षण रामकथा में हुआ है। रामायण मूल्यों का अथाह भांडागार ही है। रामकथा जहाँ महान पारिवारिक मूल्यों का संदेश देती है, वहीं राजनीतिक उत्तम मूल्यों का समर्थन भी करती है। श्रीराम एक राजा के रूप में, एक पति के रूप में, एक भाई के रूप में, एक पिता के रूप में तथा एक मित्र के रूप में उच्चादर्शों का पालन करते संपूर्ण मानव जाति को अचरज में डालते हैं। वहीं विश्वामित्र और वशिष्ठ आश्रम में श्रीराम के आचरण के द्वारा महत्तर आध्यात्मिक संदेश को रामकथा प्रदान करती है।

रामायण मूल्यों का काव्य है। आंध्र रामालयों का गढ़ है। आंध्र में निर्मित राम मंदिरों के द्वारा ही आंध्रों की संस्कृति में राम तत्व जीव-शक्ति के रूप में फैल गया है। आंध्रों के जीवन में और संस्कृति में समा गये इस सत्य को अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या के अथक प्रयास से बाहर निकाल कर संपूर्ण भारत को ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को अवगत कराने का यह पुस्तक-प्रयास सर्वथा सराहनीय एवं पुण्य कार्य है। खासकर डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह जैसे कर्मठ एवं समर्पित अधिकारी सहचर-गणों के होते उनका ''भारतीय भाषाओं में रामकथा'' वाला यह यज्ञ अत्यंत सफल हुआ है। इनके अतिरिक्त तेलुगु रामकथा के 46 मर्मज्ञ विद्वान जिनके तेलुगु-आलेख प्रस्तुत पुस्तक में संगृहीत हैं, श्रीराम के प्रति उनकी असीम श्रद्धा और भक्ति के कारण ही अल्पावधि में यह कार्य संभव हो सका है। उनके शोध-पूर्ण तेलुगु आलेखों का हिंदी में अनुवाद करते समय मुझे अपूर्व आनंद का अनुभव हुआ है। जिसे मैं श्रीराम का वर प्रसाद ही मानता हूँ। अन्यथा कम समय में यह संभव ही नहीं हो सकता था। श्रीराम के प्रति गिलहरी-समर्पण ही यह पुस्तक-रत्न है। इसका मणिदीप प्रकाश संपूर्ण भारत को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को आलोकित करेगा, ऐसा पूर्ण विश्वास है। जय श्रीराम...

–प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

अनुवादक एवं संपादक

अनुवादानुभव

दक्षिण भारत की भाषाओं में तेलुगु भाषा सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा है। भारत सरकार ने तेलुगु भाषा को 'प्राचीन भाषा' का गौरव देकर उसकी जिम्मेदारी को और बढ़ाया है। दक्षिण की भाषाओं में अपने संस्कृतनिष्ठ लक्षण के कारण तेलुगु भाषा हिन्दी भाषा के अतिनिकट पड़ती है। साथ ही तेलुगु भाषा उत्तर दक्षिण भाषाओं का सेतु भी है। उसकी उत्तर छोर पर उत्तर भारत की भाषाएँ और दक्षिण छोर पर दक्षिण भारत की भाषाएँ बोली जाती हैं।

अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या 'श्रीराम' के प्रति समर्पित है। शोधपरक अपनी अन्यान्य योजनाओं के अन्तर्गत भारतीय भाषाओं में रामकथा शीर्षकीय साहित्य-शोध-प्रकाशन संबंधी बहुत बड़े दायित्व को लिया है। उसी दायित्व बोध-प्रेरणा से पहले 'तेलुगु में रामकथा' शीर्षक से तेलुगु पुस्तक के लिए आवश्यक सामग्री को इकट्ठा करके सम्पादन करने का दायित्व मुझे सौंपा था। तेलुगु के शोधार्थी और विद्वानों के सहयोग से और सबसे बढ़कर श्रीराम के आशीर्वाद से वह काम यथासमय सम्पन्न हो गया। इस पुस्तक के साथ ही संस्थान ने मुझे उसका हिन्दी रूपांतर करने का दायित्व सौंपा था। मुझे हर्ष है कि वह दायित्व भी पूरा करके हिन्दी प्रेमियों एवं पाठकों के सामने 'तेलुगु में रामकथा' हिन्दी रूपांतर को शीघ्र ही प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग तक तेलुगु में समृद्ध वैष्णव भक्ति साहित्य रचा गया है। उसमें राम भक्ति साहित्य ही सर्वाधिक है। इसके कई कारण हैं। मुख्य कारण तेलुगु भाषियों की कर्मभूमि आंध्र प्रदेश श्रीराम की चरणधूली से पुनीत हुई है। अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण समय को आंध्र प्रदेश के गोदावरी तट पर पर्णकुटीर डालकर बिताया है। अहल्या-विमोचन की तरह आंध्र प्रदेश श्रीराम की चरणधूली से साममय हो गया है। यहाँ के गाँव, मंडल, नगरों के नाम ही नहीं तेलुगु भाषियों के नित्य कर्म भी राममय हैं। मंदिर तो अनगिनत हैं। आंध्रवासी अपने सारे कार्य रामांकित करके ही आरंभ करते हैं। इससे पता चलता है कि आंध्रों के जीवन में राम तत्व कितनी गहराई में पैठ गया है।

प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद-ग्रंथ में विविध शोधार्थी और विद्वानों के द्वारा तेलुगु में लिखे गये कुल 46 लेखों का सरल हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। यथासंभव तेलुगु लेखों के भाव-निकट पहुँचने की कोशिश की गयी है। इन लेखों में मुख्यतया तेलुगु, संस्कृत भाषाओं के उद्धरण और प्रमाण प्रस्तुत हुए हैं। ऐसे उद्धरणों का यथासंभव सरल हिन्दी गद्यानुवाद किया गया है। तेलुगु और संस्कृत की छंदबद्ध पंक्तियों को सरल हिन्दी गद्य में प्रस्तुत किया गया है।

वस्तु-आयाम के अन्तर्गत 46 लेखों में अधिकांश तेलुगु में विविध कवि-कवयित्रियों के द्वारा रचे गये रामायणों से संबंधित हैं। खासकर तेलुगु में लिखे गये रंगनाथ रामायण, भास्कर रामायण, मोल्ला रामायण, रामायण कल्प वृक्ष से संबंधित हैं। इन महाकाव्यात्मक कृतियों के साथ-साथ राम दास, त्यागराजु, अन्नमाचार्य और तरिगोंड वेंगमांबा जैसे कीर्तनकार एवं पदकर्ताओं की कृतियों में अभिव्यंजित राम तत्व का विश्लेषण भी किया है। साहित्य के इन दोनों रूपों के अतिरिक्त तेलुगु लोक साहित्य में भी राम तत्व बड़ी मात्रा में प्राप्त होता है। राम तत्व के इस आयाम पर भी लेख प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त आंध्र में प्रसिद्ध राम मंदिरों से संबंधित लेख भी इसमें संगृहीत है। सभी लेख समीक्षात्मक एवं विचारोत्तेजक और राम भक्ति के प्रति समर्पित हैं। रामाज्ञा-अनुवाद-यज्ञ में अपनी-अपनी समिधाओं को समर्पित करनेवाले सभी विद्वानों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

अनुवाद की अंधगुफाओं की यात्रा करते समय संभव स्थलों पर ही प्रकाश फैलाया गया है। जटिल, कठिन भावों को यथासंभव सरल बनाकर ही प्रस्तुत किया गया है। कुछ स्थलों में तेलुगु भावों के कलात्मक सौंदर्य को हिन्दी में संप्रेषण की सरलता पर ही अधिक ध्यान रखा गया है। स्थानीय विद्वानों के तेलुगु के इन लेखों को हिन्दी के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर सबके समक्ष रखते हुए अपार हर्ष हो रहा है। 'रामो विग्रहवान धर्मः' श्रीराम धर्म-कर्म-प्रेरणा से ही मैं एक अनुवादक का धर्म निभा पाया, ऐसा मेरा पूरा विश्वास और अनुभव है।

–प्रो.आई.एन.चन्द्रशेखर रेड्डी
एमिरिटस आचार्य, हिन्दी विभाग
श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय
तिरुपति-517502. आ.प्र.
09849670868

विषय-सूची

'उत्तररामचरित' में श्रीराम का पात्र-चित्रण 13

बी.सुरेंदर

आंध्र के साहित्य, संस्कृति और कलाओं में राम तत्व 16

डॉ. मल्लकुंट्ला रामनाधम

वाल्मीकि और तुलसी रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन 26

डॉ.माडुगुल अनिल कुमार

रामकथा : सीतान्वेषण के लिए हनुमान की खोज 36

कटारी लक्ष्मी नारायण

रामायण : अयोध्याकांड : भाव-विश्लेषण 40

डॉ. टी. माल कोंडय्य

रामायण में कुछ स्त्री पात्र-संदेश 44

डॉ. सूरपराजु वसंतकुमारी

रामायण : पारिवारिक व्यवस्था 48

डॉ.काकर्ल भूपति नायुडु

मोल्ल रामायण : सुंदरकांड वैशिष्ट्य 50

डॉ. मंगमार मुनिलक्ष्मी

श्री कोदंड राम मंदिर की रामायण शल्पकलाएँ ओंटिमिट्ट 57

डॉ. बट्लूरि उषाराणी

ताल्लपाक अन्नमय्या के संकीर्तनों में श्रीराम 60

डॉ. कोणिदल शोभा

लोक साहित्य : रामकथा 66

डॉ. राचपालेम पुरंधीश्वरी

वासिष्ठ रामायण (द्विपद काव्य) शिखिध्वजोपाख्यान : तरिगोंड वेंगमांबा 77

डॉ. वी. कृष्णवेणी

श्री कोदंड राम मंदिर : तिरुपति 83
डॉ. वी. तेजोवाणी

श्रीमद्रामायण के शैक्षिक तत्व 89
डॉ. यस. मुरलीधर राव

नायुनि कृष्णमूर्ति कृत 'रामायण' का वैशिष्ट्य 94
जी. नीलिमा

श्रीमद्वाल्मीकिकालीन विद्याविधान : एक अनुशीलन 97
डॉ. के. पुरुषोत्तम

वाल्मीकिरामायण : रामकथाश्रित संस्कृत नाटक : एक अनुशीलन 104
डॉ. मल्लंपल्लि भद्रकालि

श्रीराम के जीवन में गुरु का स्थान 110
डॉ. यस.एल.वी. उमामहेश्वर राव

श्रीमद्रामायण में वरदान : वर्गीकरण 112
डॉ. ओ.वी. भास्कर शमा

रामायण : विभिन्न राज्य व्यवस्थाएँ 117
एन.एम. एलुमलै

श्रीराम के पुरुषोत्तम लक्षण : तत्व कथन 125
डॉ. ओ.यस.आर.यस. वि.बी.यस.शमा

सीता कल्याण 131
के. यन. उमामहेश्वरी

रामकथा : जीवन मूल्य 134
गुंडाल नरेंद्रबाब

रामायण : सनातन धर्म प्रबोधा का वैशिष्ट्य 138
यस. माधवी लता

रामायण : पतिभक्ति तत्परता 141
सी. विजय लक्ष्मी

रामकथा : जीवन 145
वी. हेममालिनी

अन्नमय्या संकीर्तनों में रामायण की विशेषताएँ 148
डॉ. टी. रघुनाथ

उत्तरराम चरित : लक्ष्मण का निर्वाण 152
डॉ. एन. कल्पलता

अपदुद्धारक श्रीराम शतक 155
डॉ. के. करुणाश्री

रामायण : नैतिक एवं धार्मिक अंश 157
सी. कुप्पय्या

महाभारत : रामकथा 161
डॉ.एल. कस्तूरी

रामकथा - हनुमान का चातुर्य 165
यस. चन्द्रय्या

राम का शासन : राजनीति 168
के. विजय कुमारी

रामायण में मानवीय मूल्य 172
डॉ. ए. सच्चिदानंद मूर्ति

रामकथा में स्त्री पात्रों की समस्याओं का चित्रण 175
के. गुरप्पा

रामायण और मानवता का विकास 180
डॉ. टी. सुनीता

जाषुवा : कुशलवोपाख्यान 187
डॉ. जी. शैलम्मा

वाल्मीकि रामायण और मोल्ल रामायण : तुलनात्मक अध्ययन 192
आई. रजनी

वाल्मीकि रामायण महाकाव्य अवतरण : वैशिष्ट्य 201
पी. वरलक्ष्मी

रामायण में विविध भक्ति मार्ग 206
डॉ. सत्तु राधिका

रामायण काव्य : दुःखी घटनाओं का निलय 209
यम. देवराजुलु

रामराज्य : आदर्श शासन : हमारा कर्तव्य 213
पेल्लूर सुनील

यक्षगान - रामकथा 215

जी. हेमलता, डॉ. एन. हरिनाथ रेड्डी

श्रीराम के हृदय में लक्ष्मण 219

डॉ. एम. गिरिबाब

श्रीमद्रामायण में हनुमान का चरित्र 222

शेक जमाल बाशा

रामायण कल्पवृक्ष : विश्वनाथ योग दर्शन 225

परिचय 229

‘उत्तररामचरित’ में श्रीराम का पात्र-चित्रण

बी.सुरेंदर

मनुष्य धर्माचरण के साथ संघर्ष करने पर बड़ी तकलीफों में भी विजय अवश्य प्राप्त करेगा, इसके निरूपण के लिए ही श्री महाविष्णु ने श्रीराम के रूप में अवतार लिया। साथ ही अपने आचरण से सबके लिए आदर्श खड़े किये। धर्माचरण ही भगवान का रूप है, उसके लिए मानव-जन्म ही सर्वोत्तम साधन है, प्रमाणित करके ‘रामो विग्रहवान धर्मः’ के रूप में प्रशंसित हुए।

यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्यदनुवर्तते।।

1. जिसे श्रेष्ठ मानव अमल करता है दूसरे भी उसी का आचरण करते हैं। जिसे श्रेष्ठ मानव प्रामाणिक रूप में लेता है दूसरे भी उसी को प्रमाण के रूप में लेते हैं।

इसलिए मानव ने अपने अनुसरण के लिए, अपने आचरण-व्यवहार को बहुत ही सावधानी के साथ निभाकर आगे बढ़ाया है। ऐसे श्रीराम का आदर्श रूप एक होने पर भी कवियों ने उनके विविध गुणों का यशगान करते हुए काव्य लिखे हैं। ऐसे काव्यों में भवभूति के द्वारा रचित ‘उत्तररामचरितम्’ भी एक है।

‘**रामो विग्रहवान धर्मः**’ ऐसा पहले ही बताया गया है। मानो धर्म ही सरूप होकर श्रीराम के रूप में पैदा हो गया है। महाकवि भवभूति ने मालती माधवम्, उत्तररामचरितम्, महावीर चरित्र नामक तीन नाटक रचे हैं। इनमें ‘उत्तररामचरित’ अति प्रचलित है। उत्तररामचरित में भवभूति ने वाल्मीकि रामायण से अलग कई परिवर्तन किये हैं। उन्होंने श्रीराम को धर्म वीर के रूप में खड़ा किया है। इसमें सीता वियोग से श्रीराम बहुत रोते हैं। इतना बड़ा दुख हृदय में बसाने पर भी बाह्य रूप से उसे व्यक्त न करके अपने धीरोदात्त गुण का परिचय दिया है श्रीराम ने। पंडितों ने यही कहा है कि करुणा रस को धाराप्रवाह के रूप में बरसाने के लिए ही भवभूति ने यह परिवर्तन किया है। रघुवंशीय राजा प्रजा शासन को ही अधिक महत्त्व देते हैं, इसी को श्रीराम ने अपने सदाचरण से प्रमाणित किया है।

रावण संहार के तदुपरांत श्रीराम सीता को अयोध्या बुला लाये। वर्तमान छाया-पटों की तरह उस समय के चित्रकारों ने भी उस समय के चित्र बनाये हैं। सीताअपहरण के बाद हुई घटनाओं के बारे में चित्र बनाये गये हैं। उन सभी को देखकर गर्भवती सीता थक कर श्रीराम की गोद में सर रखकर आराम कर रही थीं। उस समय दुर्मुख नामक एक चारण श्रीराम के पास आया। तब

श्रीराम ने अपने बारे में जनता के विचारों को सनुाने के लिए दुर्मुख से कहा। इसके पहले सीता देवी ने लंका नगर में अग्नि परीक्षा द्वारा अपनी पवित्रता को प्रमाणित किया था। किंतु अयोध्या जनता ने उस पर शक किया। इसी बात को दुर्मुख ने राम से बताया। सीता देवी के शील-स्वभाव को जानते हुए भी श्रीराम कुछ नहीं कर पाने की स्थिति में थे। इससे श्रीराम दुखी हुए। किंतु

स्नेहम दयाम च सौख्यम च यदि वा जानकी मपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्ति मे व्यथा।।

–उ.रा. च.1.12

2. ''प्रजा-सुख के लिए अपनी मैत्री, दया, विश्वास के लिए जिम्मेदार सीता देवी से भी अलग होने में मैं चिंता नहीं करूँगा।'' श्रीराम कहते हैं।

'उत्तररामचरित' में श्रीराम अपने दुख के लिए स्वयं चिंतित होनेवाला सामान्य मानव है। चित्रों को निहारने के बाद सीता देवी पूर्व दर्शन किये स्थलों को फिर से एक बार दर्शन करने की अभिलाषा व्यक्त करती हैं। दोहदों के समय होनेवाली कामनाओं की पूर्ति के बहाने श्रीराम ने लक्ष्मण से सीता देवी को जंगल में छोड़कर आने का आदेश दिया। लक्ष्मण रथ सारथी सुमंत्रु को बुला लाने के लिए गया। उस समय सीता श्रीराम की जाँघों पर सर रखकर सब कुछ भूलकर पूरी तसल्ली के साथ सो रही थीं। सोनेवाली सीता देवी के चेहरे की तरफ देखते हुए श्रीराम–

अपूर्व कर्मचंदाल मयी मुग्धे विमुंच माम।
श्रितासि चंदन भ्रांत्या दुर्विपाकम विषद्रुमम।।

उ.रा.च.1-46

3. ''इसके पूर्व किसी के द्वारा नहीं किये गये दुष्कर्मों से मलिन हुए मुझे, हे मुग्धा, अब तो छोड़ कर चले जाओ। चंदन वृक्ष समझकर भ्रांति में, किसी भी रूप में काम नहीं देनेवाले, कम से कम स्पर्श करने योग्य भी नहीं विष वृक्ष के आश्रय में आयी हो।'' श्रीराम कहते हैं। सब कुछ राम पर छोड़कर उन पर विश्वास करके सब कुछ छोड़कर सोनेवाली सीता का चेहरा देखकर श्रीराम विचलित हो जाते हैं। एक क्षण के लिए सामान्य मनुष्य के रूप में भाग्य का शिकार हुए मनुष्य की तरह विलाप करते हैं। सामान्य मनुष्य के रूप में सोचते हैं। आनेवाले वियोग दुख को झेलने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसलिए वे प्रजा के लिए ईश्वर बने हैं। सोनेवाली सीता को देखते हुए कही राम की बातों का निरीक्षण करने से इसमें श्रीराम की धर्मपरायणता, सीता वियोग दुख, धर्माचरण की निठुरता, भाग्य के अज्ञात परिणाम आदि का पता चलता है। इसीलिए–

'पुट पाक प्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः'

4. ''मन में बाहर नहीं दिखाई देनेवाली व्यथा को झेलनेवाले श्रीराम अमलिन करुणरस पाक हैं'' भवभूति ने ऐसा कहा है। करुण रस का स्थायी भाव दुख है। फिर भी भवभूति ने सीता राम के दांपत्य प्रेम को श्रृंगार स्पर्शहीन, मलिन काम वासना मुक्त बनाया है। श्रीराम की बातों में कहीं भी काम वासना व्यक्त नहीं होती है। उनका प्रेम अलौकिक प्रेम है। राम के स्नेहपूर्वक प्रेम, विरहाकुल दुख हम में शोक भाव को ही पैदा करता है। इसमें श्रीराम धर्ममूर्ति से अधिक प्रेममूर्ति और स्नेहमूर्ति

के रूप में दर्शन देते हैं।

एको रसः करुण एव निमित्त खेदात
भिन्नः पृथक पृथगवाश्रयते विवर्तान।
अवर्त बुद्धुद तरंगमयान विकारान
अंभो यथा सलिल मेव हि तत्समग्रम॥

—उ.रा.च.3-47

5. ''करुण रस अकेला ही रस है। बाकी सब उसके ही भेद हैं। एक ही रूप वाला पानी आवर्त, बुद्धुद, तरंग रूपों को प्राप्त करते हुए अपने मूल रूप को खोए बिना रहता है। उसी प्रकार करुण रस अन्य विभावादि के कारण अनेक रूप धारण करता है। फिर भी उसका मूल रूप नहीं बदलता है।

इसमें श्रीराम ने सामान्य मनुष्य की तरह विलाप किया है। सीता के वियोग से—

हाहा देवी स्फुटति हृदयम ध्वंसते देहबंधः
शून्यम मन्ये जगदविरलज्वालमंतर्ज्वलामि।
सेदन्नंदे तमसि विधुरो मज्ञती वास्तरात्मा
विष्वज्मोहः स्थगयति कथम मंदभाग्यः करोमि॥

—उ. रा. च.3-38

6. ''हृदय टूट रहा है, शरीर शिथिल हो रहा है, जगत शून्य हो गया है। हृदय में ज्वालाएँ फूट रही हैं। मेरी दुखी आत्मा घने अंधकार में डूब रही है। सभी ओर से अंधकार फैल रहा है। ऐसी स्थिति में मुझ जैसे मंदबुद्धि को कहाँ जाना है समझ में नहीं आ रहा है।'' कहा। साधारणतया स्त्रियों की वेदना ऐसी होती है। किंतु श्रीराम में कवि ने ऐसे भावों को दिखाया है।

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणाम चेतांसि कोहि विज्ञातुमर्हसि॥

—उ.रा.च. 3-8

7. ''लोकोत्तर महात्माओं के मनों को जानना कहाँ संभव है? उनके हृदय कभी कुसुम-कोमल, कभी वज्र से भी कठोर होते हैं।'' ऐसा भवभूति ने वासंति से कहलवाया है।

कालिदास के बाद संस्कृत साहित्य में अत्यंत प्रचलित भवभूति हुए। इस नाटक ने ही उन्हें संस्कृत साहित्य में अत्युन्नत शिखरों पर पहुँचा दिया है।

आंध्र के साहित्य, संस्कृति और कलाओं में राम तत्व

डॉ. मल्लकुंट्ला रामनाधम

प्रस्तावना

साहित्य किसी भी समाज के लिए एक वरदान है। किसी भी समाज के मूल्य उसके साहित्य में परावर्तित होते हैं। इसलिए किसी समाज की संस्कृति-सभ्यताओं के अनुशीलन के लिए, आचरण-संस्कारों का अध्ययन करने के लिए, वेशभूषा, संप्रदाय, जीवन विधान, मूल्य, महत्त्व ऐसे सभी विषयों के बारे में जानने के लिए उस समाज के साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक होता है।

ऐसी दृष्टि से भारतीय साहित्य का अनुशीलन करने से श्रीमद्रामायण, श्री महाभारत, श्रीमद्भागवत आदि कई पीढ़ियों से प्रकाश फैलाते नजर आते हैं। उनमें भी श्रीमद्रामायण भारतीयों के मूल्यों को, विचारों एवं आशयों को अद्भुत, अपूर्व एवं सर्वजनामोद के रूप में तथा सर्वजनानुकरण योग्य दर्शन देता है। रामायण के पात्र और रामायण के संदेश सार्वकालिक हैं।

भगवान मनुष्य का पतन होते देखकर उसके उद्धार के लिए स्वयं मनुष्य के रूप में पैदा हुए। भगवान मनुष्य के रूप में जन्म लेकर उसके कष्ट-दुखों को झेलते हुए एक उदात्त जीवनयापन करके आदर्श खड़ा करते हैं। ऐसे अवतारों में उदात्त एवं उन्नत अवतार रामावतार है।

सब जानते हैं कि राम की कथा कहनेवाली रामायण है। आदर्श जीवन विधान को अपनाना ही नहीं है अपने राज्य को सर्वसम्पन्न बनानेवाले कीर्तिमान श्रीराम हैं। इसलिए आज भी लोग रामराज्य की कल्पना करते हुए उसे चाहने लगे हैं। लेकिन एक बात को नहीं भूलना चाहिए। राम राज्य की स्थापना किसी राम मंदिर को बनाने से या राम नाम जप करने से नहीं होती है। सबके हृदय राम मंदिर बनने पर, राम के उच्चादर्श-गुणों को आत्मसात करने पर, उनके द्वारा प्रशस्त आदर्श जीवन विधान का अनुसरण करने पर राम राज्य की स्थापना अवश्य होगी।

''**आत्मानां मानुषं मन्ये**'' ऐसा अपनी दिव्य शक्तियों की घोषणा न करके मनुष्यों के बीच में मनुष्य के रूप में जीकर, मानव सहज सारे कष्ट-सुखों को भोगकर किसी भी प्रकार की स्थितियों में संयम न खोकर अपूर्व व्यक्तित्व को प्रकट करनेवाले राम का व्यक्तित्व सर्वथा अनुसरणीय है। एक आदर्श प्रभु के रूप में, प्रेममूर्ति पति के रूप में, विनयशील पुत्र के रूप में, पराक्रमी वीर के रूप में, आश्रितों के प्रति वात्सल्य मूर्ति के रूप में, दायित्वपूर्ण भाई के रूप में आदि अनेक रूपों में राम का व्यक्तित्व अनंत सुगुणों से भरा है। भारतीय सारी भाषाओं में, सारी विधाओं में रामकथा विशेष रूप से वर्णित है। रामकथा को किसी न किसी रूप में रचने में ही अपने जीवन की सार्थकता के

रूप में कवि मानते हैं। उसी का परिणाम है अपार रामकथा साहित्य।

श्रीमन्नारायण के अवतारों में मानव जाति के लिए हित और आदर्श को प्रदान करनेवाला श्रीरामावतार ही है। सबके हृदयों में आनंदमूर्ति के रूप में रमनेवाले श्रीराम ही हैं। राम शब्द परमात्मा वाचक माना जाता है। माधवतत्व में छिपे मानवतत्व को प्रकट करनेवाला रामावतार है।

''**रमंते योगिनो यत्र इति रामः**''

योगी जिस नाम का निरंतर ध्यान करते हुए विगलित वेदांतपरक आनंद का अनुभव करते हैं वही राम हैं। राम के समकालीनों के रूप में वशिष्ठ आदि मुनि, उनके बाद के अनेक ऋषिगण, आधुनिक काल के त्यागराजादि भक्तों ने राम नाम रस-पान नशे में गिरकर राम को परम तत्व के रूप में वर्णन करके स्वयं पुनीत होकर पूरी मानव जाति को पुनीत किया है।

''**रमंते योगिनो यस्मिन चिदानंदे परात्मनि**''

राम नाम में एक और विशेष गुण भी है। 'रा' अक्षर का मतलब संसार है। 'म' का अर्थ ईश्वर है। इसलिए पूरे 'राम' शब्द के लिए विश्वाधीन ईश्वर जैसा अर्थ है।

रामायण काव्य में मनुष्य की विभिन्न मानसिकता का निरूपण भी है। श्रीराम ईश्वर है, रावण एक राक्षस है, ऐसा रामायण ने विश्वजनीन किया है।

आंध्र प्रदेश

महोज्ञवल इतिहास रखनेवाला समाज आंध्र समाज है। सुविशाल आंध्र पर कई राजाओं ने शासन किया है। कई राजाओं ने शासन के साथ-साथ इसे सुसम्पन्न भी किया है। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक-सांस्कृतिक रूप में आंध्र को विकसित किया है। यहाँ प्रत्येक क्षेत्र में एक युगकर्ता दर्शन देता है। एक तेजो मूर्ति नजर आता है। अपूर्व साहित्य सृजन से तेलुगु साहिती-मंजूषा को मणिमय बनानेवाले कविगण, पद साहिती सम्पदा से तेलुगु की मिट्टी को सरस संगीत स्वर के रूप में लयबद्ध करनेवाले वाग्गेयकार और इतिहासकार हमारे सामने आते हैं।

तेलुगु साहित्य जगत में भक्ति साम्राज्य की स्थापना तीन राजाओं ने की है। ये तीनों ज्ञान वैराग्य विद् होकर श्रीराम भक्ति में पराकाष्टा प्राप्त महात्मा हैं। ये तीनों कृतिकर्ता होना आंध्रों का महाभाग्य है। उनमें पोतना ने श्रीराम साक्षात्कार प्राप्त करके उनसे प्रेरित होकर श्रीमद्भागवत को मंदार मकरंद स्रवंती के रूप में रचा है। रामदास ने राम भक्ति को सत्य फल के रूप में निरूपित करके आंध्रों में भक्ति-विश्वासों को जगाया है। त्यागराजु ने शहद-स्रवन तेलुगु भाषा में राम भक्ति सुधा रस को बहाया है। राम भक्ति से ओतप्रोत 'कृतियों' की रचना करके आंध्रों के जीवन को पुलकित किया। ये तीनों तारक मंत्र जप परायण हैं। भक्ति रस को प्रवाहित करनेवाले मधुर काव्यों को रचा है। अपनी कृतियों को राम को ही नैवेद्य चढ़ाया है। इनमें पोतना और त्यागय्या ने अपनी कृतियों को भगवान को ही समर्पित किया है तो रामदास अपने कीर्तनों समेत रत्नाभरणों को राम को समर्पित करके अमर हो गये हैं।

तेलुगु साहित्य में रामायण को समुचित स्थान दिया गया है। श्रीराम हों या रामायण आंध्रों

के लिए परमप्रिय है। भौगोलिक रूप में आंध्र उत्तर दक्षिण के मध्य में स्थित है। विभिन्न संस्कृतियों का सेतु है। जनावास के लिए दुर्भेद्य रूप में प्रसिद्ध दंडकारण्य भी आंध्र में है। शाप ग्रस्त होकर इस दंडकारण्य को अपने चेतनामय जीवन के साथ पुनीत करके निवास योग्य बनाना राम के वनवास का एक प्रयोजन है। आर्यावर्त से दक्षिण देश में पहुँचने का प्रवेश द्वार आंध्र है। सीता, राम, लक्ष्मण ने वनवास का अधिकांश समय यहीं पर बिताया है। (आंध्र प्रदेश का मतलब वर्तमान आंध्र प्रदेश ही नहीं बल्कि आंध्र शातवाहन राजाओं की सुदूर सीमाओं में बसा आंध्र प्रदेश है।)

पादुका रहित श्रीराम ने आंध्र भर में यात्रा की है। राम की चरणधूली से आंध्र देश पुनीत हुआ है। सीता-राम के विहार, विनोद, वेदनाओं आदि के लिए प्रमाण है यहाँ की धरती। कण-कण में, पानी में, वायु में, आकाश में, वृक्ष-लताओं में प्रत्येक कण-कण में राम तत्व है। सब राममय है। राम नाम से तथा राम के उचादर्श जीवन विधान से आंध्र प्रभावित हुआ है। इसलिए भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में आंध्र में राम भक्ति अधिक पायी जाती है। राम भक्ति की अधिकता की जगह आंध्रवासी ने राम तथा उसके चरित को अपने जीवन का अंग बना लिया है कहना अधिक उचित है।

मंदिर, मूर्ति-स्थापना आदि न होने पर भी राम भजन करनेवाला कोई न कोई केंद्र प्रत्येक गाँव में मिलता है। इसलिए 'कीर्तना' नामक रूप को राम नाम के साथ जोड़कर ही देखा जाता है। तेलुगु लोगों का आचार है कि कुछ लिखने के पहले ही 'श्रीराम' लिखकर आरंभ करते हैं। इस से बढ़कर आरंभ किया है पूछने की जगह यहाँ के लोग 'श्रीराम चुट्टावा' पूछते हैं। यानी आरंभ किया है क्या?

वाल्मीकि रामायण

श्रीराम के दिव्य चरित का यशोगान करनेवाले वाल्मीकि विश्वसाहित्य में आदि कवि के रूप में कीर्तिमान हुए हैं। श्रीमद्रामायण आदि काव्य के रूप में प्रशंसित हुआ है। श्रीराम जैसा गुण सम्पन्न मनुष्य धरती पर कोई दूसरा नहीं है, सिर्फ वाल्मीकि ही नहीं बल्कि पूरे विश्व ने एक कंठ से यशगान करके प्रशंसा की है। श्रीराम सिर्फ भारतीयों को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिए आदर्श मूर्ति हैं। ऐसा माना जाता है कि वेद ही रामायण रूप में अवतरित हुए हैं।

वाल्मीकि द्वारा निर्मित रामायण भारतीयों को जीवन-पारायण ग्रंथ है। रामायण जीवन वेद, जीवन नाद, जीवन पारायण है। मधुराती मधुर प्रत्यक्ष अक्षर मंत्रपूत महिमान्वित गायत्री बीज यंत्र रामायण है। वाल्मीकि कोयल के द्वारा आलापित राग अमृत नाम रामायण है। वही राम वेद है।

वाल्मीकि ने अपने रामायण को 'सीतायाः चरितम महत' के रूप में चित्रण किया है। सीता बगैर राम की या रामायण की कल्पना हम नहीं कर सकते हैं। आदर्श दांपत्य के लिए सीता राम प्रतीक हैं। कैकेयी के द्वारा दशरथ से माँगे गये दोनों वरदानों में सीता का उल्लेख नहीं है। सीता चाहे तो अयोध्या में या मिथिला में स्वेच्छा के साथ रह सकती है। पति के विरोध करने के बावजूद भी

सीता राम के साथ वनवास करने के लिए तैयार हो गयी। पति के साथ ही स्वर्ग समझ कर अरण्यवास के लिए तैयार हो गयी। स्त्री के लिए पति के पास ही स्वर्ग सुख है, उसकी सेवा से बढ़कर कोई परमावधि नहीं हो सकती है। सीता पात्र के द्वारा वाल्मीकि ने इसी का निरूपण किया है। शीलवती सीता राम के सामने तीखे सवाल करने के संदर्भ सीता के व्यक्तित्व के अक्षुण्ण प्रमाण हैं। तरह-तरह के आरोप करनेवाले स्त्री लोक सीता के चरित्र का अनुशीलन दृष्टि से अनुशीलन करना चाहिए। पति के साथ सुख के साथ-साथ कष्टों में भी भागीदारी करते हुए समय आने पर सीता की तरह सवाल करना चाहिए।

''वेद वेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे
वेदः प्राचेतसा दासीत साक्षाद्रामायणात्मना।''

वेद वेद्य पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र के रूप में अवतरित होने पर वेद साक्षात रामायण बन गया है।

महर्षि वाल्मीकि आदि कवि हैं। विश्व साहित्य में अत्युत्तम महाकाव्य रामायण महाकाव्य है। प्राचीन भारतीय संस्कृति को प्रतिबिंबित करनेवाला राष्ट्रीय काव्य रामायण है। काव्य नायक श्रीराम सम्पूर्ण मानव हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। मानव जाति को गृह धर्म, सामाजिक धर्म को प्रबोध करनेवाला महेतिहास रामायण है। सत्य, धर्म और शांति, त्याग के संदेश देनेवाले रामायण का संदेश सार्वकालिक, सार्वदेशिक लोगों के लिए गमन और लक्ष्य को दिखाता है। मुख्य रूप से युवकों एवं विद्यार्थियों को दिशा निर्देश करता है।

राम का जन्म : रामावतार-सार्थकता :

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानां सृजाम्यहम।।

ऐसा गीताचार्य का वचन है।

जब-जब धर्म को हानि पहुँचेगी, अधर्म फैल जाता है, तब मैं अपने को सृजन करूँगा, यही इन पंक्तियों का सारांश है। यह भगवान के द्वारा भक्तों को दिया गया अभय वचन है। उसी प्रकार भगवततत्व ने देश काल परिस्थितियों के अनुरूप कई अवतार लिए। अवतार अलग होने पर भी लक्ष्य सिर्फ दो ही हैं। एक दुष्ट दमन और दूसरा शिष्टों की रक्षा। इन दोनों आशयों की पूर्ति में रामावतार विशेष रूप से मुख्य है। परमतत्व राम के रूप में अवतरित हुआ तो वेद रामायण के रूप में वाल्मीकि की लेखनी से उतरा। राम के तत्व के साथ जानकारी रखनेवाले कई होने पर भी उसे पूर्णत्व में जाननेवाले सिर्फ दो ही हैं। एक विश्वामित्र हैं दूसरी कैकेयी है। विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण के साथ यज्ञ की रक्षा करवायी है। राम का पराक्रम लोक के साथ-साथ सीता कल्याण की बुनियाद बना। दूसरी कैकेयी सामान्य नहीं है। ''नैक जन्म समुपात्त तवःपरिशीलितात्म विद्यमहित प्रभाव हृदयंगम'' अर्थात् अनेक जन्मों में किये गये तप के कारण प्राप्त आत्म ज्ञान से पवित्र अन्तःकरण प्राप्त महनीयमूर्ति कैकेयी है। इसके न होने से रामायण नहीं है।

''रमयतीति रामः''

श्रीरामचन्द्र साक्षात विष्णुमूर्ति का अवतार हैं। उनके भाइयों के रूप में पैदा हुए भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न विष्णु के आयुध शंख, चक्र, गदा और शारंग हैं, यह कई लोगों को मालूम है। उसी प्रकार वेद-माई, ब्रह्म विद्या स्वरूपिणी जगन्माता ही सीता के रूप में पैदा हुई है, ऐसा 'भारद्वाज रामायण' और 'स्कंद पुराण' में बताया गया है।

रामावतार

भगवान मनुष्य को पतन होते देखकर उसके उद्धार के लिए स्वयं मनुष्य के रूप में पैदा हुए। भगवान मनुष्य के रूप में जन्म लेकर उसके कष्ट-दुखों को झेलते हुए एक उदात्त जीवनयापन करके आदर्श खड़ा करते हैं। ऐसे अवतारों में उदात्त एवं उन्नत अवतार रामावतार है।

सब जानते हैं कि राम की कथा कहनेवाली रामायण है। आदर्श जीवन विधान को अपनाना ही नहीं है अपने राज्य को सर्वसम्पन्न बनानेवाले कीर्तिमान श्रीराम हैं। इसलिए आज भी लोग रामराज्य की कल्पना करते हुए उसे चाहने लगे हैं। लेकिन एक बात को नहीं भूलना चाहिए। राम राज्य की स्थापना किसी राम मंदिर को बनाने से या राम नाम जप करने से नहीं होती है। सबके हृदय राम मंदिर बनने पर, राम के उच्चादर्श-गुणों को आत्म सात करने पर, उनके द्वारा प्रशस्त आदर्श जीवन विधान का अनुसरण करने पर राम राज्य की स्थापना अवश्य होगी।

''**आत्मानां मानुषं मन्ये**'' ऐसा अपनी दिव्य शक्तियों की घोषणा न करके मनुष्यों के बीच में मनुष्य के रूप में जीकर, मानव सहज सारे कष्ट-सुखों को भोगकर किसी भी प्रकार की स्थितियों में संयम न खोकर अपूर्व व्यक्तित्व को प्रकट करनेवाले राम का व्यक्तित्व सर्वथा अनुसरणीय है। एक आदर्श प्रभु के रूप में, प्रेममूर्ति पति के रूप में, विनयशील पुत्र के रूप में, पराक्रमी वीर के रूप में, आश्रितों के प्रति वात्सल्य मूर्ति के रूप में, दायित्वपूर्ण भाई के रूप में आदि अनेक रूपों में राम का व्यक्तित्व अनंत सुगुणों से भरा है। इसलिए सारी भारतीय भाषाओं में, सारी विधाओं में रामकथा विशेष रूप से वर्णित है। रामकथा को किसी न किसी रूप में रचने में ही अपने जीवन की सार्थकता के रूप में कवि मानते हैं। रावणादि राक्षसों का संहार करके धर्म की रक्षा करना ही रामावतार का लक्ष्य है।

श्रीराम का कल्याण

गुरुकुल में वशिष्ठ आश्रम में विद्याभ्यास को पूरा करने के बाद श्रीराम विश्वामित्र महर्षि की इच्छा के अनुसार पिता की अनुमति से यज्ञ की रक्षा के लिए निकले। बीच रास्ते में ताटकी का वध किया। यज्ञ का भंग करने आये मारीच को सागर में डूबने के लिए विवश करके सुबाहु आदि राक्षसों का संहार करके यज्ञ की रक्षा की है। उसके बाद गौतम मुनि की पत्नी अहल्या का शाप विमोचन करके मिथिला नगर पहुँचे। वहाँ विश्वामित्र की आज्ञा से शिव धनुर्भंग करके जनक की पुत्री सीता के साथ विवाह किया। उसके बाद परशुराम के द्वारा प्रदत्त 'वैष्णव धनु' को निशाने पर लगाकर दिव्य तेज के साथ अयोध्या पहुँचे। चैत्र सुदी नवमी के दिन राम का जन्म जिस रूप में हुआ ठीक उसी दिन

अर्थात् चैत्र सुदी नवमी के दिन ही श्रीराम का कल्याण सम्पन्न हुआ। उसी दिन को ही रामावतार की परिपूर्ति भी हुई है।

श्रीराम ने अयोध्या में पैदा होकर उत्तर भारत को पुनीत किया। अरण्यवास के बहाने दक्षिण भारत में प्रवेश करके दक्षिण भारत को पुनीत किया। ऐसे श्रीराम का, उत्तर भारत की तुलना में आंध्र देश में 'भद्राचलम' में सम्पन्न होनेवाले कल्याण का वैशिष्ट्य है। कल्याण के दिन सरकारी आधिकारिक सत्कार के साथ स्वामी को रेशमी, पीतांबरों के साथ-साथ अक्षतों में मोतियों को समर्पित करना परंपरा से चल रहा है। वैभव पूर्ण इस कल्याण को देखने के लिए जनता बड़ी आसक्ति दिखाती है।

पितृ वाक्य परिपालक

''**मातृदेवो भव, पितृदेवो भव**'' यह आदर्श है। माता-पिता के प्रति आदर भाव का सूचक है। इसलिए माँ जैसी कैकेयी की बातों को मानकर पिता की आज्ञा के पालन के लिए श्रीराम अरण्यवास के लिए निकलते हैं। यह श्रीराम ''**पितुर्वचन निर्देशत पितुर्वचन गौरवात**'' बोलने में माता-पिता के प्रति समर्पित श्रीराम दिखाई देते हैं।

पितृ वचनों का पालन करनेवाले पुत्र के रूप में श्रीराम चिरस्मरणीय हैं। जिन धर्मों का पालन हमें करना चाहिए उनका पालन पहले वे करते हैं। राक्षसों का संहार करके यज्ञ की रक्षा करने की बात दशरथ के कहने पर बिना कुछ कहे राम ने विश्वामित्र का अनुसरण किया। यहाँ पुत्र धर्म का निर्वहन किया।

राम को अरण्यवास के लिए भेजना पड़ रहा है इस चिंता में डूबे दशरथ को देखकर श्रीराम ''मेरे पिता को गुस्सा आने पर भी, दुःख होने पर भी मैं एक पल के लिए भी सहन नहीं कर पाऊँगा। पिता ही पुत्र के लिए प्रत्यक्ष भगवान है?'' ''माँ, कहीं आपने गुस्से में पिता को दुःख तो नहीं दिया। पूर्व कभी पिता के चेहरे में ऐसी बाधा नहीं देखी मैं ने। सच बोलो माँ, तुम्हारा श्रीराम पूछ रहा है। सच बोलो माँ।'' श्रीराम ने कैकेयी से सवाल किया। पिता के कष्ट और दुख को नहीं देख सकनेवाले पुत्र के रूप में श्रीराम यहाँ दर्शन देते हैं।

अरण्यवास से वापस लौटने की प्रार्थना कितने ही रूपों में करने पर भी, पितृ वचनों के पालन के प्रति दृढ़ चित्त श्रीराम वापस नहीं लौटे हैं। इस प्रकार पितृ वाक्य परिपालक दक्ष के रूप में श्रीराम युवापीढ़ी के लिए आदर्श हैं।

अरण्यवास

माता-पिता के बाद उनसे समतुल्य भाई हैं। वह सहोदर भाव राम के साथ अरण्यवास क्लेश को अनुभव करने पर भी, उन सारे क्लेशों को सानंद भोगनेवाले लक्ष्मण में, पिता के मरणोपरांत बड़े भाई का ही राज्याधिकार मानकर, राम के अरण्यवास के लिए जिम्मेदार कैक्यी माँ जानकर उसकी निंदा करके, अपने को राज्य की कांक्षा नहीं है, घोषणा करके राम को ही वह अधिकार है, राम

को पुनः अयोध्या ले आकर राजा बनाऊँगा, ऐसी शपथ करनेवाले भरत को देखने पर सहोदरों के प्रेमानुराग का पता चलता है।

वनवास के समय गुह के आदर, ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव के साथ मैत्री, हनुमान की सहायता से सीतान्वेषण, समस्त वानरों की सहायता से सेतु का निर्माण, विभीषण की शरणागति, सेतु निर्माण करते समय गिलहरी पर राम की दया आदि प्रसंगों के दौरान मानव को सकल धर्मों के प्रति समर्पित भाव रखना चाहिए, ऐसा संदेश मिलता है। सीतापहरण का समाचार सुनकर जगन्नाथ होते हुए भी राम सामान्य मनुष्य की तरह शोक करते हुए उसकी रक्षा करने के लिए कटिबद्ध होते हैं। रावण का संहार करके सीतासमेत अयोध्या लौटनेवाले श्रीरामचन्द्र समस्त वानर, राक्षस श्रेष्ठों को अपने साथ ले गये।

मानव मूल्यों में दूसरों के दुखों को देख नहीं सकना एक बड़ा सगुण है तो वह लक्षण राम में देख सकते हैं। अरण्यवास के लिए निकलते समय—

न श्रोतमिति राजान मुपालोब्धोपि वक्ष्यसि
चिरं दुःखस्य पापिष्टमिति रामस्तमब्रवीत।

हे सुमंत्र, इस दुख को मैं अधिक समय तक देख नहीं सकूँगा। ''रथ को क्यों नहीं रोका'' राजा के पूछने पर ''मुझे सुनाई नहीं पड़ा, ऐसा बोल सकते हैं न चलो।'' राम अपने दुख को स्वयं झेलने के लिए तैयार हैं दूसरों के दुःख को वे देख नहीं सकते हैं।

राम का गुण

रामायण उस समय के लिए ही नहीं आज भी प्रासंगिक होने का कारण उसमें वर्णित मानवीय मूल्य हैं। ये मूल्य नित्य नवीन हैं। सत्य एवं सनातन भी हैं। रामायण में एक-एक पात्र के बहाने इन मूल्यों का पोषण किया गया है। किंतु मुख्य पात्र नायकोचित पात्र श्रीराम में सारे मूल्य घनीभूत हुए हैं।

''**रमंते सर्वेजनाः गुणैः अस्मिन इति रामः**'' सुगुणों का राशि जिसके कारण समस्त जन सुखी रह सकते हैं वे ही श्रीराम हैं। समस्त आदर्श गुण मिलकर श्रीराम में परिपूर्ण हुए हैं। उन सुगुणों में कुछ हैं, रमणीय सुंदर रूप, मृदु मधुर भाषण, पितृ वाक्य पालन, मातृ भक्ति परायणत्व, गुरु भक्ति परायण, सहोदरों पर अतुलित वात्सल्य भाव, एक पत्नीव्रत, सहृदयता, दया, क्षमा, धर्मज्ञता, राजनीतिज्ञता, भोग कांक्षाराहित्य, कर्म सिद्धांत पर विश्वास, स्नेहशीलता, शत्रु भयंकरता, दुष्ट शिक्षण, शिष्ट रक्षणा, भक्त वात्सल्य, दानशीलता, परिहास गुण, पराक्रम आदि।

श्रीराम वचनबद्ध पुरुष हैं। सत्य वाक्य पालन उनका धर्म है। सुग्रीव को वानर राज्य प्रधान बनाने का वचन राम ने दिया। उसी प्रकार विभीषण को भी रावण का संहार करके लंका राज्य प्रदान करने का वचन दिया। क्योंकि विभीषण अपने भाई रावण के हाथों में अपमानित हुए। अगर कुछ विपरीत होता है तो अपने राज्य देने की प्रतिज्ञा की है। अपनी प्रतिज्ञा के पालन के लिए अपनी सम्पदा को भी त्याग देने का गुण युग युगों तक धरती पर आदर्श बन कर रहेगा।

श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। आज के प्रत्येक मानव के लिए वे आदर्श हैं। वे गुणवान, दृढ़व्रत,

समर्थ, चरित्रयुक्त, सर्वभूत हितैषी, विद्वान, प्रिय दार्शनिक, जितक्रोधी, द्युतिमंत, असूयामुक्त, शत्रुभयंकर, पितृ वाक्य पालक, शरणागत वत्सल, नियतात्म, महावीर, श्रुतिमंत, महात्यागी, सत्यवादी, दयालु, पूर्वभाषी, मितभाषी, वेद-वेदांग-तत्वमसि, विनय सम्पन्न, दुष्ट शिक्षक, शिष्ट रक्षक ऐसे अनेक आदर्श गुणों से सम्पन्न हैं श्रीराम। लोक में धर्म ही श्रेष्ठ है। धर्म में ही सत्य है। ''राज्य पालन से धर्म पालन ही मुख्य है।'' राम ने कहा। धर्म के सामने राज्य तृणप्राय है।

श्रीराम अपने पिता को दिये वचनों का पालन करने में, स्थिर आचरण सबके लिए आवश्यक है कहने के साथ-साथ कैकेयी को आदर देने की बात कहने में राम की विनम्रता का पता चलता है। अपकार करनेवाले को भी उपकार करने का पवित्र गुण उनमें है। वही संदेश उन्होंने दिया है। अपने आप धर्म का आचरण करने के साथ-साथ अपने भाइयों से भी आचरण करवाया है। बोलना आसान है उनका अमल करना कठिन है। लेकिन श्रीराम आचरण करके सबके लिए आदर्श पुरुष बने हैं। श्रीराम के महोन्नत गुणों में एक पत्नीव्रत 'धर्मेच, अर्थेच, कामेच, नाति चरामि' वैदिक धर्म का प्रतीक बने हैं। स्त्री-पुरुष दोनों समान होने पर धर्माचरण में भी दोनों समान ही हैं। स्त्री पुरुष भेद नहीं है इसका आदर्श श्रीराम ही हैं। धर्म पालन के लिए अपनी पत्नी सीता को अरण्य भेजा है। आदर्श प्रभु का परिचय दिया है। रामायण में प्रत्येक कदम पर श्रीराम का पात्र कुछ न कुछ आदर्श खड़ा करते पाया जाता है।

'**रमयतीति रामः**' सबको आनंद प्रदान करनेवाला राम है, ऐसा अर्थ निकलता है। इसीलिए वाल्मीकि ने राम का वर्णन करते हुए ''सर्वसत्व मनोहरः रामः'' कहा है। अर्थात् सभी जीवों के हृदयों को लूटनेवाले राम हैं। इसलिए पैदा होने से लेकर अवतार समाप्ति तक माता-पिता को, भाइयों को, पत्नी को, राज वंश को, समस्त प्रकृति को, योगियों को, ऋषियों को, प्रजा को आखिर शत्रुओं को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। सभी ने उनकी प्रशंसा ही की है। मारीच, रावण, कुंभकर्ण आदि ने उनके गुणों की प्रशंसा की है। '**रामो विग्रहवान धर्मः साधुः सत्यपराक्रमाः**' राम के सबसे बड़े शत्रु मारीच के ये वचन अत्यंत विचारणीय हैं।

राम का बड़प्पन

श्रीराम महाराजाओं के वंश में पैदा हुए। सम्पन्न एवं अमित पराक्रमी हैं। फिर भी निगर्वी हैं। राम ने सामान्यों से भी स्नेह किया है। नाव चलानेवाले गुह के साथ भी स्नेह किया। उससे प्रेम किया। सभी मानव अगर आनंद के साथ जीना है तो अहंकार को छोड़कर सबके साथ स्नेहानुराग के साथ जीना चाहिए। यही आदर्श राम का चरित्र प्रस्तुत करता है। राम ने सुग्रीव से स्नेह किया। वानर जाति का आदर किया। जातियों के बीच में एकता को रामायण बढ़ाता है।

''**रामो विग्रहान धर्मः**''

श्रीराम धर्मज हैं। इसलिए अरण्यवास के लिए निकलते समय दुखी माँ को धर्म का ही प्रवचन दिया। इसलिए राम पूरी तरह धर्मज हैं।

श्रीराम ने सामान्य भक्तों को, कष्टकाल में रहनेवाले लोगों को मुख्य रूप से अपने पर विश्वास

रखनेवाले लोगों का किस रूप में उद्धार किया, रामायण काव्य में कई प्रसंगों के द्वारा स्पष्ट किया गया है। उसी क्रम में सामान्य भक्तिन शबरी सबको आकर्षित करती है। श्रीराम गुह के साथ आलिंगन करके, अहल्या को शापमुक्त करने पर भी शबरी का आतिथ्य स्वीकार करके जटायु को प्रेम से सहलाना आदि श्रीराम की सामान्यता स्पष्ट करते हैं।

राम का जन जीवन विधान

रामायण में मानव किन-किन परिस्थितियों में किन के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए, ऐसे सामाजिक अंशों पर भी प्रकाश डाला गया है। राम राज्य में विद्या संस्थाओं का निर्वहण, सुरक्षा की व्यवस्था, अयोध्या नगर में अत्यंत श्रेष्ठ रूप में थे। सब अपने धर्म को अच्छी तरह निभाते थे। उस राज्य में दुष्ट, दुर्बुद्धि लोग, चोर, क्रूर, व्यभिचारी, नास्तिक, आलसी, भिखारी नहीं थे। नित्याग्नि होत्र उनकी नित्य विधि थी। स्त्री-पुरुष दोनों धर्मावलंबी थे। आज की जनता के लिए उनकी सामाजिक स्थिति प्रेरणादायक है।

श्रीराम ने एक क्षत्रिय के रूप में, पिता-पुत्र के रूप में, सति-पति, राजा-प्रजा, मालिक-सेवक, गुरु-शिष्य, बहन-भाई आदि रूपों में आदर्शवान जीवन बिताया है। उनका चरित्र अत्यंत पूजनीय है।

राम का तत्व

'श्रीराम' लिखे बगैर आंध्रों की कलम आगे नहीं बढ़ती है।

''**श्रीराम जय राम जयजय राम**'' नारा लगाये बिना आंध्र नारा नहीं लगाते हैं। राम के बगैर आंध्रवासी नहीं है। राम के नाम बगैर गाँव, राम मंदिर बगैर गाँव देखने को नहीं मिलता है। राम कोटि, राम भजन, राम पूजा, राम नाम, रामभारमु इन सबसे ओतप्रोत धरती ही आंध्र प्रदेश है। राम के नाम पर पता नहीं कितने गाँव हैं। कितने मंदिर हैं पता नहीं। रामन्न, रामय्य, रामक्क, सीतक्क, जानकम्म ऐसे नाम तेलुगु लोगों के अतिप्रचलित नाम हैं।

विश्व मानव इतिहास में सूर्य की तरह प्रकाशवान चरित्र सूर्यवंशीय राजा राम का है। अपने व्यक्तिगत औन्नत्य को वंश, राज्य, देश और विश्व के लिए भी आदर्श शिखर के रूप में खड़े महापुरुष श्रीराम हैं।

उपसंहार

रामावतार इतने वैशिष्टय होने के कारण ही युग युगों से सप्त ऋषियों से लेकर सामान्य मानव तक सबके लिए अत्यंत प्रिय बना है। विनय, विवेक, सत्प्रवर्तन, सौशील्य राम की सम्पदा है। मानव को उत्तम बनने के लिए श्रीराम ही आदर्श हैं। श्रीराम सकल गुणराशि हैं। श्रीराम को धर्ममूर्ति के रूप में ढालकर मानव समाज के लिए उन्नत आदर्श करना ही वाल्मीकि का उद्देश्य है। आज के जीवन की कई विसंगतियों के लिए रामायण समाधान प्रस्तुत कर सकता है। श्रीराम आदर्श पालक हैं। प्रजा की बातों को गौरव देनेवाला शासक हैं। धर्म के लिए राज्य, पत्नी सीता को, भाई लक्ष्मण

को त्यागनेवाले धर्मनिष्ठ और सत्यनिष्ठवान हैं। राम का राज्य रामराज्य के रूप में प्रचलित हुआ है। सत्य, अहिंसा और शांति को अपने सिद्धांतों के रूप में माननेवाले महात्मा गांधी ने भी श्रीराम की आराधना करके यशगान किया है।

उच्चतम मूल्यों के साथ मानव समाज के विकास के लिए रामायण का संदेश सार्वकालिक प्रयोजनकारी है। उज्ज्वल, उत्तम, उन्नत भविष्य के लिए युवा पीढ़ी श्रीराम के आदर्श गुणों का अनुसरण करके अपने जीवन को सार्थक बनाना ही हमारी आकांक्षा है।

विविध संदर्भों में राम का उपदेश है–

''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''
''देशे देशे कलत्राणीः देशे देशे च बाँधवाः''

ये वाक्य वास्तविक सत्य हैं।

राम नाम जानकर या अनजान में जप करने पर कितने बुरे क्यों न हो मुक्ति प्रदान करेगा, ऐसा जनता का पूर्ण विश्वास है जीवन में कई लोगों को कष्ट, समस्याएँ, चिंताएँ होने पर राम नाम का जप करते हैं। सीता कल्याण प्रसंग का हो, श्रीराम का मुकुटाभिषेक प्रसंग का हो परायण करते हैं। इसी प्रकार रामायण के विविध अंशों का पारायण करने से विविध प्रयोजन प्राप्त होते हैं। यह कई पीढ़ियों से चले आये विश्वास हैं।

रामायण की संस्कृति को विधिवत पालन करनेवाली पंरपरा आंध्र में है। विवाहादि शुभ कार्यों में श्रीराम और सीता को आदर्श के रूप में मानने के कारण रामायण के वैशिष्ट्य को, श्रीराम के बड़प्पन को समझा जा सकता है। रामायण साहित्य का सृजन करनेवालों में तिक्कन, मोल्ल, गोन बुद्धा रेड्डी, भास्कर रामायण कर्ता आदि सभी धन्यजीवी हैं। रामायण को विशेष रूप से लोक जनता, कठपुतली खेल, भजन संगठन, हरिकथा, बुर्र कथा, वीथी नाटक आदि लोक कलारूप जनता के मनोनुकूल, परिस्थिति-अनुकूल, समयानुकूल प्रदर्शन करके जनरंजक बनाने में आंध्र अत्यंत सफल हुआ है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

इस प्रकार रामकथा को, उसमें सम्मिलित संदेश को, संस्कृति को, कलाओं को नित्य प्रजा में प्रचारित करनेवाला रामायण नित्य नवीन शिखा-पंख के रूप में प्रचलित हुआ है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

रामायण प्रस्तुत इतिहास के साथ-साथ पूर्व इतिहास के लिए भी बुनियादी है। वर्तमान और भविष्य के लिए आधार है। रामायण भूत, वर्तमान और भविष्य का समन्वित रूप है। इसलिए रामायण आज के जटिल जीवन के लिए अत्यंत उपयोगकारी है।

राम के जन्म से अयोध्या परम पवित्र हो गया है। उसी प्रकार श्रीराम की चरणधूली से आंध्र प्रदेश भी परम पावन बन गया है। इसलिए प्रत्येक गली में राम मंदिर, व्यक्तियों के नाम, पहाड़ों के नाम, मंडलों के नाम, शहरों के नाम आंध्र में यत्रतत्र हैं। राम राज्य की स्थापना के वैशिष्ट्य को इससे भी समझ सकते हैं।

वाल्मीकि और तुलसी रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ.माडुगुल अनिल कुमार

जंतुनाम नरजन्म दुर्लभमतः पुमस्त्वम ततो विप्रता
तस्माद्वैदिकदर्म मार्गपरता विद्वात्व मस्मात्परम।
आत्मनात्म विवेचनम स्वनुभवो ब्रह्मात्मना संस्थितिः
मुक्तिर्णो शतकोटि जन्म सुकृतैः पुण्यैर्विना लभ्यते।।

–वि.चू.2

जीवों को प्रथम मानव जन्म प्राप्त होना कठिन है। उससे भी वह जीव पुरुष होना, उससे भी ब्राह्मण होना, उससे भी वैदिक धर्मावलंबी होना, उससे भी विद्याधिक होना बहुत ही दुर्लभ है। और आत्म-नात्म विवेक, श्रेष्ठ अनुभव, ब्रह्मात्म भाव को प्राप्त करना जैसे सौ करोड़ जन्मों के पुण्य कर्मों के फल के रूप में प्राप्त होता है। ऐसे मानव जन्म को प्रत्येक को धर्माचरण से सफल व सदुपयोग कर लेना चाहिए। इसके लिए आवश्यक दिशा निर्देश करने के लिए ही श्री महाविष्णु ने श्रीरामचन्द्र के नाम से सामान्य मनुष्य के रूप में जन्म लिया है।

राम का वैशिष्टय

राम के बारे में मारीच :

रामो विग्रहवान धर्मः साधु स्सत्य पराक्रम ।
राजा सर्वस्य लोकस्य देवानामिव वासवः।।

–वा.रा.अ.का. 37.13

श्रीराम का मतलब धर्मस्वरूप है। सज्जन, पराक्रमी है। देवताओं के लिए जिस रूप में देवेंद्र राजा है, वैसे ही श्रीराम को सर्वलोकों का राजा बताया है। उसी रूप में रावणासुर ने भी–

शासयेत सबलम वीरम ससुग्रीव विभीषणम्।
अहो सुबलवान रामो महादस्त्र बलम च वै।।
यस्य विक्रममासाद्य राक्षसा निधनम गताः।
तम मन्ये राघवम वीरम नारायण मनामयम।।

–वा.रा.यु.कां. 72, 10-11

''सुग्रीव, विभीषण से मिले हुए राम को दबाकर रखना चाहिए। अहो, राम बहुत बड़े बलशाली हैं। राम के पराक्रम से सभी राक्षस नष्ट हुए हैं। वह वीर राम अविनाशी नारायण हैं, ऐसा मान रहा हूँ।'' ऐसा सोचा है।

एक बार पार्वती देवी ने :

केनो पायेन लघुना विष्णर्नामसहस्रकम।
पर्यते पंडितैर्नित्यम शोतुमिच्चाम्यहाम प्रभो।

—वि.स.स्तो. उत्तर भूमिका. 26

''किस प्रकार के उपाय से पंडितगण श्री विष्णु सहस्रनाम को एक ही शब्द के द्वारा उच्चारण कर रहे हैं। बताने के लिए पार्वती देवी ने पूछा। तब परमेश्वर ने—

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्र नाम तत्तुल्यम रामनाम वरानने।।

—वि.स.स्रोत्र, उत्तर भूमिका 27

''श्रीराम नाम का जप एक बार करने से उससे श्री विष्णु के सहस्रनामों का पारायण करने का फल प्राप्त होता है।'' परमेश्वर ने पार्वती को उपदेश दिया। इस मंत्र को ही तारक मंत्र कहते हैं।

''**रमंत योगिनः अस्मिन**'' जैसी राम शब्द की व्युत्पत्ति है। योगी ध्यान करके अपनी आत्मा में भगवान श्रीराम के दर्शन करके प्रसन्न होते हैं। इसलिए भगवान ही श्रीराम बने हैं।

रामायण का वैशिष्ट्य

वेद के कर्मकांड और ज्ञानकांड नाम से दो प्रकार हैं। कर्मकांड कौन से काम नहीं करना चाहिए बताते हुए लौकिक धर्माचरण को बताता है। ज्ञानकांड का ही दूसरा नाम उपनिषद् है। वेदों में तथा उपनिषदों में परमात्मा के बारे में बताया गया है। वेदों में बताये गये परमात्मा ही श्रीराम हैं।

'वेद वेद्य पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेत सादा सीत्साक्षाद्रामायणात्मना।।'

वेद वेद्य परमात्मा ने दशरथ के पुत्र के रूप में जन्म लिया तो वेद वाल्मीकि की लेखनी से रामायण बना है, ऐसा बुजुर्गों का विचार है।

रामावतार का वैशिष्ट्य

देवताओं को नुकसान पहुँचानेवाले राक्षस विष्णु से डर कर भृगु पत्नी के आश्रय में गये। उसने विष्णु को रोककर राक्षसों की रक्षा की है। विष्णु ने सुदर्शन चक्र से उसका सर काट दिया। तभी वनांतर से लौटे भृगु महर्षि ने ''तुम भी मेरी तरह काफी समय तक पत्नी-वियोग को झेलो'' कहते हुए विष्णु को शाप दिया।

इसीलिए विष्णु को श्रीराम के रूप में अवतरित होना पड़ा। उसी प्रकार जय-विजय सनकसनादि मुनियों से शाप ग्रस्त होकर रावण, कुंभकर्ण के रूप में जन्म लेने से उनका संहार करने के लिए भृगु का शाप विष्णु को काम आया।

रामायण का मतलब सिर्फ श्रीराम की कथा ही नहीं है।

स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः–
सुंदरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी।

–अ.को. 2, म. 535

ऐसा कहने के कारण 'रामा' स्त्री पर्याय शब्द बन गया है। 'आयनम' का मतलब गमन या चलना है। स्त्री का आचरण कैसा होना चाहिए, सीता देवी अपने पातिव्रत्य से निरूपण करने के कारण इसकाव्य को 'रामायण' नाम प्राप्त हुआ है। इसीलिए—

काव्यं रामायणं कृत्स्नम सीतायाश्चरितम महत।
पौलस्त्य वदमित्येव चकार चरितव्रतः।।

–वा.रा.बा.कां.4.7

सकल व्रतों का आचरण करनेवाले वाल्मीकि ने श्रीमद्रामायण को 'रामायण', 'सीताचरित', 'पौलस्त्य वध' नामों से रचा है।

सीता का वैशिष्ट्य

राघवत्वे भवत्सीता रुक्मिणी कृष्णजन्मनी।
अन्वेषुचावतारेषु विष्णोरेषानपायिनी।।
देवत्वे देवदेहेयम मनुष्यत्वेच मानुषी।
विष्णोर्देहानुरूपा वै करोत्यषात्म नस्तनुम।।

–वि.पु.137–138

इस श्लोक से श्री महालक्ष्मी ही सीता देवी जैसा पता चलता है।

कुशध्वज नामक राजा की पुत्री वेदवती श्री महाविष्णु को पति के रूप में पाने के लिए तप करती रहती है। रावण ने उस पर अत्याचार करते हुए उसके केशों को खींचा। उस समय उसने–

उवाचाग्निम समाधाय मरणाय कृतत्वरा।
धर्षितायास्त्वयानार्य न मे जीवितमिष्यते।।
राक्षस्तस्मात प्रवेक्ष्यामि पश्यतस्ते हुताशनम।
यस्मात्तु दर्षिताचाहम त्वया पापात्मना वने।।
तस्मत्तव वदार्थम हि समुत्पत्स्येयह्यहम पुनः।
न हि शक्यम स्त्रीया हस्तुम पुरुषः पाप निश्चयः।।

–वा.रा.उ.कां.17. 30–32

''आग जलाकर मरने के लिए तैयार होते हुए नीच, पापात्मा होकर मुझ पर अत्याचार करने के कारण मैं आग में कूद पड़ूँगी। मुझ पर अत्याचार करने के कारण तुझे मारने के लिए मैं फिर जन्म लूँगी।'' कहती है। उस रूप में प्राणों को छोड़नेवाली वेदवती ही सीता देवी है। नारद वाल्मीकि महर्षि को रामायण कथा बताते हैं। यह कथा श्रेष्ठ है उसे लिखने के लिए कहते हैं–

कुरु रामकथाम पुण्याम श्लोक बद्धाम मनोरमाम।
यावत स्थस्यंति गिरयः सरितश्च महीतले।।
तावद्रामयाण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।
यावत रामस्य च कथा त्वत्कृता प्रचरिष्यति।।

–वा.रा.बा.कां.2.36-37

रामकथा पापों को दूर करनेवाली है। सुनने मात्र से परमानंद देनेवाली है। इसलिए उसके श्लोकों को रचो। इस भूमंडल पर नदियाँ और पहाड़ जब तक रहेंगे यह रामकथा समस्त लोकों में कीर्तिमान बनेगी। तुमसे रचित रामकथा प्रशंसित होते रहने तक तुम्हारी कीर्ति-प्रतिष्ठाएँ तीनों लोकों में व्याप्त रहेंगी।'' ऐसा ब्रह्म ने वाल्मीकि को प्रोत्साहित किया। तब वाल्मीकि ने रामायण काव्य को रचा है।

श्रीराम चरित को सभी अवश्य पढ़कर श्रीराम को अपना आदर्श बनाकर आचरण करना चाहिए, ऐसा राम का यशगान करते हुए कई कवियों ने राम काव्य रचे हैं। संस्कृत भाषा में आदि काव्य के रूप में प्रचलित श्रीमद्रामायण 'वाल्मीकि रामायण' के रूप में प्रचलित हुई। हिन्दी भाषा में 'रामचरितमानस' 'तुलसी रामायण' के रूप में प्रचलित हुई। तुलसीदास का ही गोस्वामी तुलसीदास नामक प्रसिद्ध नाम भी है। तुलसीदास 'रामचरितमानस' नाम से रामायण लिखने के कारण इसे 'तुलसी रामायण' नाम भी प्राप्त हुआ है। तुलसीदास ने इसे दोहा-चौपाई शैली में रचा है। इससे अलग चार पंक्तियों का एक और छंद वृत्त को, दो पंक्तिवाले सोरठा लघु वृत्त का भी प्रयोग इसमें किया है। संस्कृत भाषा के अनुष्टुप छंद की तरह हिन्दी में ये छंद गानेयोग्य और सरल होने के कारण तुलसी की रचना 'हनुमान चालीसा' को आंध्रों ने जिस रूप में आत्मसात किया था उसी रूप में सारा जग रामायण का आदर कर रहा है। इसकाव्य को कई लोगों ने तेलुगु में पद्य काव्य के रूप में अनुवाद भी किया है। इसकेकांड वाल्मीकि रामायण का अनुकरण करते हुए बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किंधा, सुंदर, युद्ध और उत्तरकांड के रूप में ही हैं। तुलसीदास रामायण कथा लिखते हुए–

रामकथा कै मिति जग नहीं।
असि प्रतीति तिन्हके मन मही।।
नाना भांति राम अवतारा।
रामायण सत कोटि अपारा।।

–रा.मा.बा.कां.32.3

रामकथा इस रूप में होनी चाहिए, ऐसा नियम कहीं भी नहीं है। रामकथा अनंत है। रामावतार के लिए कई कारण हैं। रामावतार कई प्रकार से है। उसी प्रकार शत कोटि रामायण हैं। विविध रूपों में रचने पर भी सभी ने रामकथा का अनुसरण किया है। उनमें कुछ मुख्य प्रसंगों को लेकर संक्षिप्त रूप में वाल्मीकि और तुलसी रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत संदर्भ में किया जा रहा है।

बालकांड

1. तुलसी रामायण में श्रीमद्रामायण को शिव भगवान पार्वती देवी को बताते हैं। अपने आप जगत्पिता होते हुए पत्नी के वियोग में तड़पनेवाले एक सामान्य मनुष्य की स्तुति करनेवाले परमेश्वर पर पार्वती को शक होता है। राम की परीक्षा लेने के लिए वे राम के पास सीता बन कर जाती है। सीता देवी के रूप में रहनेवाली पार्वती को देखकर लक्ष्मण आश्चर्य होने पर भी श्रीराम मौन रहते हैं। अपने पास सीता बनकर आयी पार्वती से वे बोलते हैं–

जोरी पानि प्रभु कीन्ह प्रनामु। पिता समेत लीन्ह निज नामा।।
कहेउ बहोरि कहा वृष केतू। बिपिन अ केलि फिरहू केहि हेतू।।

प्रभु श्रीराम दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए अपनी पूरी कहानी बताकर ''परमेश्वर कहाँ हैं? अकेली इस जंगल में क्यों घूम रही हैं?'' पार्वती देवी से प्रश्न करते हैं। श्रीराम की महिमा को जानते हुए पार्वती देवी आश्चर्य होती हुई अपने अज्ञान की चिंता करती हुई वापस लौटती हैं। बीच-बीच में पीछे मुड़कर देखती लौटती हैं। तब–

फिरि चितवा पाचेउ प्रभु देखा। सहीत बंधु सीय सुंदर बेषा।।
जहाँ चितवहि तहाँ प्रभु असीना। सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रभु ना।।

–रा.मा.53.3

पीछे मुड़कर देखने पर पार्वती को श्री सीता लक्ष्मण समेत सुंदर रूपधारी श्रीराम सब कुछ दर्शन दिए। श्रीराम के आसीन होने पर चतुर, पटु भक्त, ऋषिगण श्रीराम की सेवा कर रहे थे।

इस रूप में सीता के रूप में पार्वती के जाने पर उन्हें शिव अपनी माँ मानते हुए उन्हें अपने पास नहीं आने देते हैं। दक्ष यज्ञ के दौरान अपने शरीर को छोड़कर हिमवंत की पुत्री पार्वती के रूप में अवतरित होनेवाली पार्वती से फिर विवाह कर लेते हैं।

वाल्मीकि रामायण में यह पार्वती-परमेश्वर की कथा नहीं है।

2. तुलसी रामायण में–श्रीराम, भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण जैसा क्रम दिया गया है जब कि वाल्मीकि रामायण में–

अतीत्तैकादशाहम तु नाम कर्म तथाकरोत।
ज्येष्टम रामं महात्मानं भरतं कैकई सुतम।।
सौमित्रिं लक्ष्मणमिति शत्रुघ्न मवरं तथा।
वसिष्ठः परमप्रीतो नामानि कुरुते तदा।।

–बा.कां.18.20-21

इस रूप में भाइयों का क्रम राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के रूप में है।

3. वाल्मीकि रामायण में अहल्या आक्रंदन प्रसंग में—

मुनिवेषं सहस्राक्षं विज्ञाय रघुनंदन।
मतिं चकार दुर्मेधा देवराजा कुतूहलात।।

—48.19

मुनि वेश धारण आया व्यक्ति इंद्र है जानकर भी दुर्बुद्धि से अहल्या देवताओं के प्रभु इंद्र पर आसक्ति के कारण उससे मिलने के लिए तैयार हुई। उसके बाद—

कृतार्थोस्मि सुरश्रेष्ठ गच्च शीघ्रमितः प्रभो।
आत्मानां च देवेश सर्वथा रक्ष गौतमात।।

—48.21

तुलसी रामायण में उपर्युक्त प्रसंग नहीं है।

4. तुलसी रामायण में—गौतम ने अहल्या को पाषाण बनने का शाप दिया।

गौतम नारी श्राप बस उपलदेह धर धीर।
चरण कमल रज चाहती कृपा करहू रघुवीर।।

गौतम महामुनि की पत्नी ने शाप के कारण धैर्य के साथ पत्थर का रूप धारण किया। तुम्हारी चरणधूलि उसे चाहिए। दया सागर समझे जानेवाले तुम उस पर कृपा करो। यह विश्वामित्र राम से कहते हैं। पाषाण रूपी अहल्या ने राम की चरणधूलि के स्पर्श से अपने निज रूप को प्राप्त किया।

वाल्मीकि रामायण में—

वायु भक्षा निराहारा तप्यंती भस्म शायिनी।
अदृश्य सर्वभूतानामाश्रमे स्मिभिवत्स्यसि।।

—48.30

'सबके लिए अदृश्य रहकर, भस्म में लिपटे, बिना किसी आहार के, वायु का ही भक्षण करते हुए, तप करते हुए इसी आश्रम में निवास करोगी।' इस रूप में गौतम अहल्या को शाप देते हैं।

5. तुलसी रामायण में—जनक के यज्ञ में विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण गये। राम-लक्ष्मण के उद्यान में विहार करते समय ही सीता उन्हें देखकर प्रेम करने लगती है।

थके नयन रघुपति छबि देखे। पलक कीन्हू परिहारि निमेषे।।
अधिक सनेहू देवा बै भोरी। शारद ससिहि जनु चितव चकोरी।।

—230.3

श्रीराम के दिव्य रूप को देखकर सीता के नेत्र प्रसन्न हुए। प्रेम के कारण शरीर अधीन नहीं रहा। शरद ऋतु में चन्द्रमा को देखकर अधीर उठनेवाले चकोर पक्षी की तरह सीता भी अधीर हो उठी है।

वाल्मीकि रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

6. तुलसी रामायण में—जनक चारणों के द्वारा स्वयंवर की घोषणा करते हैं। धनु को उठाने

में असफल सभी राजाओं का गुस्से से दूषण करते हैं। तब लक्ष्मण –

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ को उ हो ई। तेहि समाज अस कहइ न कोई।
कही जनक जसि अनुचित बानी। बिद्यामान रघुकुलमनि जानी।।

–252.1

रघुवंश शिरोमणि श्रीराम सभा में हैं यह जानकर भी जनक ऐसा कह सकते हैं? रघुवंश में पैदा हुए कोई राजकुमार के होने से किसी भी समाज में ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए। ऐसा बोलते हुए श्रीराम जनक की सभा में धनु को तोड़ते हैं।

जब कि वाल्मीकि रामायण में–जनक की बातें सुनकर विश्वामित्र राम से 'धनु को देखो' बोलते हैं। तब श्रीराम 'मैं इसे छू कर और लगाने की कोशिश करूँगा' सविनय बोलते हैं। धनु की परिक्रमा और नमस्कार करके उसे लगाने की कोशिश करते हैं। तब वह टूट जाता है।

7. तुलसी रामायण में–परशुराम का जनक की सभा में आना, लक्ष्मण के गुस्से में परशुराम से बातचीत, तब श्रीराम के द्वारा परशुराम को अनुनय करना, परशुराम के द्वारा श्रीराम का सम्मानित होना, धनु में जंग लगी है, लक्ष्मण का कहना और धनु पुराना पड़ गया, परशुराम का कहना, शिव धनु को लेकर इस रूप में न्यूनता भरी बातें बोलने का प्रसंग है।

जबकि वाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण परशुराम से बोलते ही नहीं हैं। श्रीराम सीता को अयोध्या ले जाते समय रास्ते में परशुराम सामने आते हैं। वे श्रीराम को सम्मान देते हुए बात करते हैं। लेकिन श्रीराम ही परशुराम से–

ब्राह्मणो सीति पूज्यो में विश्वामित्र कृतन छ।
तस्माच्चक्रो न ते राम मोक्तुं प्राणहारं शरम।।

–76.6

'परशुराम तुम ब्राह्मण होने के कारण, विश्वामित्र के बंधु होने के कारण मेरे लिए पूज्य हो। इसलिए जानलेवा इस बाण को तुम पर प्रयोग नहीं करूँगा।' ऐसा बहुत गुस्से में बोलते हैं।

अयोध्यकांड

8. तुलसी रामायण में–राम के वनवास करने से जंगल में सभी राक्षस मर जाते हैं। तब अपने को सुख होगा, इसलिए देवताओं और सरस्वती देवी की वंदना करते हैं। मंथरा कैकेयी को बुरी सलाह देने के लिए सरस्वती विवश करती है।

वाल्मीकि रामायण में सरस्वती की इस माया प्रसंग का उल्लेख नहीं है।

अरण्यकांड

9. तुलसी रामायण में–अपने को साहस कार्य करने की जरूरत है। तब तक आग में छिपे रहो, श्रीराम सीता से कहते हैं। तब सीता राम को नमस्कार करके अग्नि प्रवेश करती है। यह लक्ष्मण को मालूम नहीं है।

वाल्मीकि रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

10. तुलसी रामायण में—शबरी श्रीराम से तुम पंपा नदी के तट पर जाकर सुग्रीव से मैत्री करो, ऐसा बोलती है। वाल्मीकि रामायण में—

गच्छ शीघ्रमितो राम सुग्रीवं तं महाबलम।
वयस्यं तं कुरु क्षिप्रमितो गत्वाद्य राघव।।

—72.17

राम, तुम यहाँ से शीघ्र जाकर बलशाली सुग्रीव से मैत्री करो, ऐसा कबंध श्रीराम से बोलते हैं।

11. तुलसी रामायण में—शबरी श्रीराम को जूठे बेर खिलाने का प्रसंग है। वाल्मीकि रामायण में श्रीराम का अतिथि-सत्कार करके आश्रम दिखाती है। जूठे बेर खिलाने का प्रसंग नहीं है। वह अपने शरीर को आग में डालकर स्वर्ग प्राप्त करती है।

सुंदरकांड

12. तुलसी रामायण में—हनुमान ने लंका में प्रवेश करने के बाद सर्वप्रथम ब्राह्मण रूप में विभीषण के दर्शन किये। विभीषण ने हनुमान को सीता का समाचार दिया।

वाल्मीकि रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

13. तुलसी रामायण में—हनुमान शिंशुपा वृक्ष के ऊपर बैठकर श्रीराम की अंगूठी को सीता की गोद में गिरा देते हैं।

वाल्मीकि रामायण में—

प्रत्ययार्थं तवानीतं तेन दत्तं महात्मना।
समाश्वसि हि भद्रं ते क्षीण दुःख पलाह्यासि।।

—36.3

'श्रीराम के द्वारा दी गयी अँगूठी को तुमको विश्वास दिलाने के लिए लाया। शांत हो जाओ। तुम्हारा मंगल होगा। तुम्हारे दुःख दूर होने का समय आ गया है।' ऐसा बोलते हुए हनुमान सीता देवी को अँगूठी दे देते हैं।

14. तुलसी रामायण में—अंगद रावण के यहाँ दूत बन कर जाता है। तब रावण उसके सामने राम का दूषण करता है। तब अंगद अपनी मुट्ठी को बाँध कर धरती पर मारते हैं। तब धरती हिलती है। रावण नीचे गिर कर उठ बैठता है। रावण की ताज भी गिर जाती है। उसे फिर से सर पर रख लेता है। ताज के टुकड़ों को अंगद राम तक पहुँचने के रूप में फेंक देता है। इंद्रजित जैसे लोग अंगद के पैर को उठा भी नहीं पाते हैं। रावण भी अंगद के पैर को उठाने की कोशिश करता है। तब अंगद उससे राम के चरण छूने की बात कहता है। तब अपमानित होकर रावण चला जाता है।

वाल्मीकि रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

15. तुलसी रामायण में—रावण की नाभि में अमृत भांड है, इसीलिए वह अमर है, उस पर बाण चलाने की सलाह विभीषण राम को देता है। तब श्रीराम रावण की नाभि पर बाण छोड़ता है। बाण लगकर अमृत भांड सूख जाता है। तब दूसरे बाण से रावण के दस सर और बीस हाथ श्रीराम काट देते हैं।

वाल्मीकि रामायण में—युद्ध में राम की विजय के लिए अगस्त्य महामुनि राम को 'आदित्य हृदय' का उपदेश देते हैं। उसके अतिरिक्त—

अथ संस्कारयामास मातली राघवं तदा।
अजानन्निव कीं वीर त्वमेनमनुवर्तने।।
विसृजास्मै वधाय त्वमस्त्रम पैतामहू प्रभो।
विनाश कालः कथितो यः सुरैः सोकद्य वर्तते।।

—108.11-12

तब मातली राम से 'हे वीर, अनजान बनकर इससे क्यों युद्ध कर रहे हो? इसे मारने के लिए तुम ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करो। देवताओं के अनुसार इसका विनाश काल आ चुका है।' ऐसा कहा। तब श्रीराम ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके रावण का संहार करते हैं।

उत्तरकांड

17. तुलसी रामायण में—

कथा समस्त भुसुंडी बखानी। जो मैं तम्ह सनकही भवानी।।
सुनि सब रामकथा खगानह। कहत बचन मन परम उचानह।।

'हे भवानी, काकभुशुंडि महर्षि पूरी रामकथा को गरुड़ को बताने पर वह बहुत प्रसन्न हुआ। काकभुशुंडि गरुड़ को बताते समय मैंने सुना वही तुमको बताया।' ऐसा एक तप-सम्पन्न कौए ने गुरुड़ को बताया। उसे सुनकर शिव भगवान ने पार्वती को बताया। वही 'रामचरितमानस' काव्य है।

वाल्मीकि रामायण में—नारद वाल्मीकि को रामकथा के बारे में बताते हैं।

18. तुलसी रामायण में—श्रीराम को परब्रह्म स्वरूप और महिमावाले भगवान के रूप में बताया गया है। इससे बढ़कर उत्तरकांड में जनारोप से श्रीराम के द्वारा सीता को जंगल भेजने का प्रसंग, कुश-लव जन्म आदि का वर्णन नहीं है।

वाल्मीकि रामायण में—श्रीराम को एक सामान्य मनुष्य के रूप में चित्रण किया गया है। इससे अलग उत्तरकांड में जनारोप से श्रीराम के द्वारा सीता को जंगल भेजने का प्रसंग, कुश-लव जन्म आदि का वर्णन है।

वाल्मीकि रामायण काव्यात्मक है और तुलसी रामायण आध्यात्मिक काव्य के रूप में विकसित है।

वाल्मीकि तुलसीदासः देवी भविष्यति।
रामचन्द्र कथां दिव्यं भाषा रूपां करिष्यति।।

'वाल्मीकि ही कलियुग में तुलसीदास के रूप में पैदा होकर रामचन्द्र की दिव्य कथा को व्यावहारिक भाषा में लिखेंगे' ऐसा शिव भगवान ने पार्वती देवी को बताया, ऐसी जनश्रुति है।

हिन्दी साहित्य का नाम लेते ही हमें तुलसीदास की याद आती है। उस समय देश में नष्ट हुए सदाचार, चरित्रहीनता आदि को देखकर जनता के उद्धार के लिए तुलसीदास ने रामचरितमानस को रचा है। इसकाव्य को रचने के लिए उन्होंने हिन्दी की उपभाषा अवधी का प्रयोग किया है। इसमें उन्होंने श्रीराम को अलौकिक शक्तिसमेत परमब्रह्म के रूप में चित्रित किया है। हिन्दी साहित्य संस्कृत साहित्य जैसा प्राचीन न होने पर भी रामकथा साहित्य हिन्दी में अत्यंत व्याप्त है।

इस प्रकार अनुशीलन करने पर स्पष्ट होता है कि तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखने के लिए अकेले वाल्मीकि रामायण से ही नहीं आध्यात्मिक रामायण, आनंद रामायण जैसे अन्य रामायणों में प्रचलित प्रसंगों को भी चुनकर अपने काव्य को जनरंजक बनाया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वाल्मीकि रामायण।
2. श्री तुलसी रामायणमु (रामचरितमानस का तेलुगु अनुवाद)।
3. श्रीरामचरितमानस।
4. विवेक चूढ़ामणि।
5. श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रम।
6. अमरकोशम्।
7. विष्णु पुराण।

रामकथा : सीतान्वेषण के लिए हनुमान की खोज

कटारी लक्ष्मी नारायण

इक्ष्वाकु वंशीय राजा दशरथ की तीन पत्नियाँ हैं। कौसल्या, सुप्रजा, कैकेयी। उन्हें श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न नामक चार पुत्र पैदा हुए। कैकेयी की इच्छा के अनुसार श्रीराम राज्य का त्याग करके अरण्य जाने के लिए तैयार हुए। श्रीराम के साथ सीता देवी और लक्ष्मण अरण्य चले गये। उस रूप में उन्होंने पति भक्ति और भ्रातृ भक्ति का परिचय दिया है। भगवान अवतारी राम ने जन्म लेकर मनुष्य के रूप में सारे कष्टों को झेला है। इसीलिए रामायण विशिष्ठ बन गया है। वह आदि काव्य भी है। आज के गाँवों का निरीक्षण करने से लगता है कि ऐसा कोई गाँव नहीं है जिसमें राम मंदिर न हो। यह कोई अतिशयोक्ति की बात नहीं है। रामायण ही भारतीयों के लिए आदर्श ग्रंथ बन कर रह गया है।

हनुमान ने राक्षसों से बचने के लिए सूक्ष्म रूप धारण किया। वे त्रिकूटगिरि पहाड़ पर प्रकृति शोभा को निहार रहे हैं। उस गिरि के शिखर पर लंका नगर बसा है। उस नगर का रक्षा-कवच देखने से लगता है कि हवा भी बिना अनुमति के अंदर नहीं घुस सकती है। सूर्यास्त होने के कारण सूक्ष्म रूप से ही रात भर खोज करना चाहा हनुमान ने। लंका नगर की ओर चलने लगे। आठ-दस मंजिलवाले भवनों से लंका नगर अत्यद्भुत लग रहा था।

नगर के चारों ओर आयुधधारी राक्षस पहरा दे रहे थे। तब लंकाधिदेवता विकृत आकार से हनुमान के सामने खड़ी हो गयी। बड़े गर्जन के साथ सवाल किया कि यहाँ क्यों खड़े हो? तुम्हारा नाम क्या है? लंका में प्रवेश करना तुम्हारे वश की बात नहीं है। प्राण खोने के पहले इन प्रश्नों का जवाब दो। उसने कहा। नगर देखने आया। देखने के बाद जिस रास्ते से आया उसी रूप में लौट जाऊँगा। हनुमान ने जवाब दिया। हनुमान की ये बातें लंकिणी को अच्छी नहीं लगीं। अपनी हथेली से हनुमान की छाती पर एक मार मारी। बिजली जैसी इस मार से हनुमान चीखा। अगले पल में अपने बाएँ हाथ से एक घूँसा मारा। उस घूँसे से लंकिणी अपने शरीर पर नियंत्रण खोकर बेहोश होकर धरती पर गिर पड़ी। उसे देखकर हनुमान को दया आयी। मैं इस लंका की नगराधिदेवी हूँ। तुमने मुझे हराया है। अब तुझे हरानेवाला कोई नहीं है। यह ब्रह्म का विचार है। सीतादेवी के कारण राक्षस जाति का नाश संभव है। तुम निश्चिंत होकर इस नगर में प्रवेश करके अपना काम पूरा करके लौटो। जाओ स्वेच्छा के साथ सीतान्वेषण करो। लंकिणी ने हनुमान से कहा। हनुमान एक राजमहल के पास पहुँचने लगे। कई सौ योद्धा पहरा दे रहे थे। वे सिंह गर्जन कर रहे थे। उन योद्धाओं में

कार्यशूर, धीमान, श्रद्धालु सभी थे। सनातन धर्मशील, प्रतिव्रताशिरोमिण, राम की हृदयेश्वरी सीता देवी उनमें दिखाई नहीं पड़ी। चिंताग्रस्त होकर हनुमान खोजने लगे। रावण के भवन की तरफ आगे बढ़े। उस भवन समुदाय में सभी योद्धाओं के भवनों को देखा। कुंभकर्ण, इंद्रजित, विभीषणादि सभी के भवन घूमघाम कर फिर रावण के भवन में प्रवेश किया। कई विकृत आकारवाले राक्षस पहरा दे रहे थे। भवनों में ऊँचे रत्नों के प्रकाश में चमक रहा था पुष्पक विमान। रावण की पूजाओं से तथा रक्षा से भरे लंका नगर में हनुमान सीता की खोज करते-करते थक गये। कहीं भी सीता का पता नहीं चला। धीरे-धीरे हनुमान रावण के रनिवास की तरफ मुड़े। रावण की सारी पत्नियाँ वहाँ पर थीं। विश्वकर्मा ने ब्रह्मा के लिए पुष्पक विमान तैयार किया था। कुबेर ने ब्रह्मा के अत्यंत कठोर तप करके उसे प्राप्त किया था। कुबेर को हराकर रावण ने उसे प्राप्त किया था। रावण की पत्नियों में किसी को भी सौंदर्य और गुणों में कम आँक नहीं सकते हैं। फिर भी सीतापहरण से रावण तुच्छ बन गया है।

उन रमणीय नारियों के समूह में अत्यंत विशिष्ठ अत्यंत सौंदर्य के साथ, मणिरत्न हारों से शोभित सुवर्ण कांति की देह से एक सोनेवाली रमणी को हनुमान ने देखा। उसे ही जानकी देवी मान लिया। हनुमान को बहुत आनंद हुआ। उछले, कूदे, गीत गाये, पूँछ हिलायी। खंभों से कूद पड़े। फिर हनुमान को संदेह हुआ कि अगर वह सीता देवी है तो पराये पुरुषों की तरफ क्यों देखेगी? फिर अन्तःपुर छोड़कर पानशाला पधारे। सभी सुंदर स्त्रियाँ संयोग सुख और नशे में धुत होकर सो रही थीं। इतनी स्त्रियों के बीच में रावण गोगण के बीच में वृषभ की तरह लग रहा था। पानशाला की तरफ हनुमान ने देखा। अनेक व्यंजन और शराब पीकर विविध रंगों की स्त्रियाँ वहाँ तन्मय थीं। उनमें सीता दिखाई नहीं पड़ीं।

देव, गंधर्व और नागा कन्याएँ तो हैं लेकिन सीता देवी नहीं है। पानशाला छोड़कर हनुमान बाहर आये। फिर एक बार सब जगह देखूँगा समझकर फिर खोज में पड़ गये। लंका में प्रत्येक इंच खोज करने लगे। कहीं भी सीता नहीं है। जटायु ने यहीं कहा था कि सीता को लंका की तरफ ले जाया गया है। क्या मिथिलाधीश की पुत्री रावण को स्वीकार कर सकती है? रामबाण भीति से रावण सीता को सागर में डुबाया होगा। कहीं सीता स्वयं सागर में कूद पड़ी होगी। कहीं ये राक्षस स्त्रियाँ उन्हें खा गयी होंगी। राम नाम का जप करके कहीं सीता ने प्राण नहीं छोड़े। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। सीता का पता लगाये बिना लौटने से क्या प्रयोजन है? सीता का पता न चलने पर राम प्राण छोड़ देंगे। उसे देखकर लक्ष्मण भी प्राण छोड़ देंगे। भरत, शत्रुघ्न भी नहीं बचेंगे। सभी मर जायेंगे। कृतज्ञता का दूसरा नाम सुग्रीव उनकी पत्नी रुमा, तारा, अंगदादि सभी वीर भी मर जायेंगे। पूरी वानर जाति नष्ट हो जायेगी।

सीता का पता लगाये बिना लौटने से इस ओर इक्ष्वाकु वंश और उस ओर पूरी वानर जाति नष्ट होना सच है। इसलिए अगर मैं न लौटकर यहाँ वानप्रस्थ आश्रम में जीने से वे सभी यही सोचेंगे कि मैं सीता का अन्वेषण कर रहा हूँ। जीवित रहेंगे। जिंदा रहने से ही सारे सुख प्राप्त होंगे। अब

मैं इस दशकंठ का संहार करूँगा। नहीं इसे पकड़ कर बलि के पशु के रूप में राम के पास ले जाऊँगा। यह समझते हुए हनुमान आगे बढ़े। सामने अशोक वन दिखाई दिया। अब मेरे कार्य साधना के लिए देवगण, ऋषिगण, ब्रह्मादि सभी देव, अग्निहोत्र, वायु, देवेंद्र, वरुण, सूर्य-चन्द्र, शिव, पार्वती और अश्विनी देवता सभी सहायक बनना चाहिए। जानकी देवी मुझे दिखाई पड़ना चाहिए। यह सोचते हुए हनुमान अशोक वन की तरफ मुड़े।

हनुमान के तीव्र गमन वेग से वहाँ की सारी लताएँ तितर-बितर हो गयीं। हनुमान कण-कण में खोज करने लगे। सुवर्ण, माणिक, रत्नों जड़े भवनों, सुंदर उद्यान वनों, कई वृक्ष, शिला मंडप, जल पुष्करिणियाँ, गानेवाले चक्रवाक पक्षी, क्रीड़ावन, भवन, झरने, शिंशुपा वृक्ष सब दिखाई पड़ने लगे। एक शिंशुपा वृक्ष के ऊपर हनुमान चढ़ गये। वहाँ से अशोक वन पूरा दिखाई देने लगा। भरे फूले फूलों से वन रात के समय अत्यंत सुंदर लग रहा था। कुछ अशोक वृक्ष सोने के रंग में थे। सामने एक भवन भी दिखाई दिया। वह हजार खंभों से कैलासगिरि की तरह था। हनुमान ने निशित दृष्टि देखा। शुक्ल पाड्यमी के दिन की चन्द्ररेखा की तरह उपवासों से सूख गयी दीन वदन के साथ, मलिन वस्त्रों से, राक्षसी स्त्रियों से परिवेष्टित होकर, भस्मावगुंठित आग की तरह, कुजग्रह पीड़ित रोहिणी तारा की तरह, क्रूर मृगों के बीच में मृग की तरह, काले नाग जैसी चोटी के साथ, पीले रंग का वस्त्र पहननेवाली एक नारी को देखा। देख कर शायद यही सीता होगी। शायद यही है। उस समय ऋष्यमूक पर्वत पर अपने गहने गिरानेवाली यही होगी। रावण के अपहरण से कृषकाय बनी है। राक्षस स्त्रियों की यातनाओं से डरे हुए मृग शावकों सी लग रही है। आँखों से आँसू टपका रही है। राम ने जिन आभरणों की चर्चा की थी उन आभरणों के पहनने के चिह्न उसमें नजर आ रहे हैं। वे कंठाभरण, कर्णाभरण शायद ऋष्यमूक पर्वत पर गिराने के बाद बचे आभरण होंगे।

अब कोई संदेह नहीं करना चाहिए। यह ही उनकी पत्नी है। सीता की दुर्बल वेदना को देखते हुए हनुमान के नेत्र सजल हो गये। रामचन्द्र की पत्नी को ही क्लेश हुए हैं, विधि कितना कठोर है। इस विशालाक्षी के लिए राम ने वाली को गिराया। रावण के समान कबंधु को मारा है। नदी-नद और सागर को लाँघ कर लंका नगर में सीता को देखा है, शायद इसी नारी के कारण है। दशरथ के परिवार की सबसे बड़ी बहू है। धर्मज्ञ, कृतज्ञ, और आत्मवेत्ता राम की धर्मपत्नी है। शील सम्पन्न इसके लिए राम प्रतीक्षा कर रहे हैं। अगर ये मिल जाएगी तो भूमंडल को जीतने का आनंद राम को होगा। सुरापान, मांस भक्षण आदि निरंतर करनेवालों के बीच में सीता देवी है। अपना पातिव्रत्य ही रक्षा के रूप में है। दुःख की राशि जैसी है। राम को तथा लक्ष्मण को नमस्कार करके हनुमान उस वृक्ष की शाखाओं पर जाकर बैठ गये। मेरा पति आश्रम में न होने के समय यह राक्षस मुझे उठाकर ले आया। राम रूप से मुझे धोखा देकर ले आया। अब इन राक्षस स्त्रियों के बीच में रहते जीना बहुत मुश्किल है। राम तक समाचार पहुँचा सकनेवाले जटायु को रावण ने मार दिया है न। यहाँ मेरा पता चलने पर रावण को मारकर लंका को जला देगा राम। सब कुछ देखकर और सुनकर हनुमान ने निश्चय कर लिया है कि यही सीता देवी है। अब इसे सांत्वना देनी चाहिए। सीता देवी

से बात करने की इच्छा से पेड़ की शाखाओं के बीच से ही हनुमान गाने लगते हैं—

रक्षिता स्व स्व वृत्तस्य स्वजनस्य च रक्षिता
रक्षिता जीव लोकस्य धर्मस्य च परंतप।।

रामचन्द्र के गुण गणों की स्तुति करते हुए अगर मैं बातचीत शुरू करूँगा तो वे अवश्य मेरी बातें सुनेंगी। उस रूप में धर्मार्थहित रूप में आरंभ करूँगा। सीता देवी की खोज करने वानर वीर चारों दिशाओं में आगे बढ़े। उनमें मैं भी एक हूँ। जटायु की बहन सम्पाति की बातों पर मैं यहाँ आया हूँ। सागर को लाँघ कर आया। तब सीता देवी ने सर ऊपर उठाकर शाखाओं में आश्चर्य के साथ देखा। सीता को संतोष हुआ। शिंशुपा वृक्ष के ऊपर शाखाओं के बीच में वानर को देखा। क्या सच है या सपना है। मैंने जो देखा और सुना शायद सच है। सीता देवी इस रूप में सोच रही थी। हनुमान ने पेड़ से उतर कर सीता के सामने खड़े होकर दोनों हाथों से नमस्कार किया। रावण के द्वारा अपहरण की गयी सीता देवी आप ही को समझ रहा हूँ। जी हाँ, मैं दशरथ की बहू हूँ। जनक महाराज की पुत्री हूँ, राम की पत्नी हूँ, ऐसा सीता ने जवाब दिया। रावण के द्वारा दिया गया समय अब सिर्फ दो महीने है । उसके निकल जाने के बाद प्राण त्याग ही अकेला मार्ग है। ऐसा जानकी के कहने पर देवी, मैं राम दूत हूँ। राम कुशल हैं। आपके कुशल समचार जानने मुझे भेजा है। हनुमान ने सीता से कहना शुरू किया। उसे संदेह होकर कामी रूपी रावण तो नहीं है, समझकर डर गयी।

अत्यल्प काल में ही राम और लक्ष्मण शतसहस्र संख्याक वानर सेना से परिवृत्त सुग्रीव से मैत्री करके यहाँ आयेंगे। मैं उस वानर-श्रेष्ठ का मंत्री हूँ। मुझे हनुमान कहते हैं। दुष्ट रावण को हराकर आपके दर्शन करने सागर लाँघकर आया हूँ। मुझ पर विश्वास कीजिए माई। आपके शक के अनुसार मैं राक्षस नहीं हूँ। माई, यह देखिए राम की अँगूठी। कहते हनुमान ने सीता को अँगूठी दिखायी। माई अब तक उन्हें आप कहाँ हैं मालूम नहीं है। जानते ही वे अपनी वानर सेना के साथ सागर लाँघकर राक्षसों का संहार करके इस पूरे लंका नगर को नष्ट कर देंगे। राम निरंतर तुम्हारा ध्यान ही कर रहे हैं। सदा तुम्हारा नाम स्मरण कर रहे हैं। तुझे अपने पास लाने के लिए सदा मेहनत कर रहे हैं।

उपसंहार

रामायण अत्यद्भुत काव्य है। उसमें भी सीता देवी के अन्वेषण के लिए हनुमान की खोज और अद्भुत है। असंभव सागर यात्रा को हनुमान ने सुगम बनाया है। वे धी शाली एवं महाबल सम्पन्न हैं। चतुर एवं मेधा सम्पन्न हैं। सागर यात्रा के दौरान अनेक गतिरोधों को भी लाँघा है। राक्षस वीरों का संहार भी किया है। अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना भी किया। लंका नगर में इंच-इंच की खोज की। अन्त में सीता का पता लगाने में सफल हुए। हनुमान ने राम, लक्ष्मण, सुग्रीव, अंगद, सीता आदि सभी के अभिनंदन प्राप्त किये हैं। सबको आनंद सागर में डुबो दिए। श्रीराम का विश्वासभाजक सहचर हनुमान हैं। जीवन भर नाम स्मरण से सदा प्रसन्न रहते हैं। इसीलिए हनुमान चिरंजीव हैं।

रामायण : अयोध्याकांड : भाव-विश्लेषण

डॉ. टी. माल कोंडय्य,

रामायण आदि काव्य है। भगवान का चरित काव्य है। 'रामः आयलः' राम का उत्तर दक्षिण देश की यात्रा रामायण है। ''सीतायांश्च चरितम रामायण''। सीता और राम की कथा ही रामायण है। ''चरित इति चरित'' कहावत है। ''भा''-ज्ञान- रती चाहनेवाली है। जिस ज्ञान को चाहते हैं उस ज्ञान को प्रदान करनेवाला भारतीय है। रामायण इतिहास है। ''इति हासः इतिहासं''—ऐसा हुआ है बतानेवाला ही इतिहास है।

सांसारिक सुख-दुखों से मुक्त करनेवाला ही श्रीराम है। ''संसार ताव युक्तानां जंतूनां हत चेतसाम, श्रीमद्रामायणाखन पीयूषं भीषजंस्कृतं'' यह रामायण का सत्य है। राम ही विष्णु है। विष्णु ही सर्वंतर्यामी हैं।

''मातारामो मात्पिता रामभद्रा, भ्रातारामो मत्सखा राघवेशं सर्वस्वं ने रामचन्द्रा, दयालुर्नान्यं दैवं नैवजाने नजाने।'' दुःख को दूर करनेवाला ही राम है। ''रमंते योगि नोस्मिन्निति रामः''। ''रमय तीतिरामः'', रामः अभिरामः लोकोत्तर दिव्य मंगल विग्रह।। 'म' कार राक्षस वाचः, 'म' कारः मरण वाचकः राक्षस विनाश 'रा' का मतलब प्रकाशवान, 'म' मही राजाओं को धर्म का प्रवचन करनेवाला । राम में 'र', 'अ', 'म' नामक भाग हैं। 'र' अग्नि बीज है। असूर्य बीज, 'म' चन्द्रबीज है, पाप, अंधकार को दूर करनेवाला राम है। सूर्य-12, अग्नि-3, चन्द्र -1 कुल सोलह कलाओं का मुरारी है। 'रा' रावण— ''मा'', मरण का कारक राम हैं। अष्टाक्षरी ''र'' पंचक्षराम, बीज रूप—राम शब्द है। श्रिया रमत इति श्रीरामः, लक्ष्मी, राम श्रम करनेवाला है। श्रीराम में ''र'' ब्रह्म रूप है। 'म' जीव है, जीव और ब्रह्म की एकता, राम शब्द है। यह परंपरा है। आदाय्नयःसंप्रदाय, कोटि मन्मथुल, कोटि सूर्युल प्रकाशवाल राम हैं। स्वस्ति श्री वैवस्वत मन्वांतर में बीस महा युगों के बाद , तीस हजार वर्ष के बाद, त्रेता युग में विलंबी नामक वर्ष चैत्र मास शुक्ल पक्ष नवमी बुधवार पुनर्वसु नक्षत्र के दौरान दोपहर को कर्काटक लग्न में, रवि, कुज, गुरु, शुक्र, शनिचर दशा में श्रीराम का जन्म हुआ है। अयोध्या को पवित्र करते राम का जन्म हुआ है।

''विचार्य माणे योध्योयं परी मूर्ति त्रियात्मका'' (रा.14, 1-2) पर विचार करने से अयोध्या नगर ही ब्रह्म विष्णु शिव रूप से मिश्रित है। स्कंद पुराण के अयोध्या विवरण के अनुशीलन से पता चलता है।

''अकारो ब्रह्मच प्रोक्तं, यकारो विष्णु रुच्यते,'', ''धकारो रुद्र रूपश्च अयोध्यानाम राजते''

इसमें अ, य, ध अक्षर हैं। 'अ' कार ब्रह्म, 'य' कार विष्णु, 'ध' कार रुद्र हैं। ब्रह्म हत्यादि पापों को भी दूर करनेवाला अयोध्या है। यह बहुत आश्चर्य का विषय है। राम अत्यंत मृदु भाषी हैं। लोक के बारे में ही उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया है।

''**शील वृद्दैस्यदाचार परिपूरै, वय वृद्धै लोकिक वैदिक विषय ज्ञान**''

परिपूर्णशील, सदाचार सम्पन्न, वृद्ध, बड़े होते हैं। ज्ञानी लौकिक, वैदिक, विषय के परिपूर्ण होते हैं। यह एक आश्चर्य प्रसंग है।

राम के सिंहासन् आरूढ़ उत्सव को चाहनेवाले दशरथ से वशिष्ठ की बातें तत्कालीन प्रजातंत्र के मूल्यों के बारे में बताती हैं।

''**परन्तु सकलान्भपान्य महूयद्रुतं भमन**'' 12, 1-2 में समस्त राजाओं को बुलाकर उनके उद्देश्य को जानने की बात वशिष्ठ ने कही है। यह सच ही प्रजातंत्र के मूल्य संबंधी विचार हैं।

'' अनेन तदा प्रजा स्वामिक प्रभत्वमें वेतिज्ञायते'' यह भी एक आश्चर्यदायक विषय है। राचरिक में अच्छा प्रजातंत्र का विषय है। सामंत राजाओं को भी महत्त्व देना श्रेयस्कर विषय है।

शो. सत्यात्परं धर्ममहं जगत्यां 41, 1-2 , सत्य ही सकल धर्म मार्ग है।

''सत्यात्परं धर्ममहं'' सत्य ही स्वर्ग का सोपान है।

महाभारत में शकुंतला के मुख से कल्पित किया गया है ''अश्वमेध सहस्त्रंच सत्यं तुलयाधृतं'' '' अश्वमेध सहस्त्रसाद्धि सत्यमेव विशिष्यते'' इतिः इस प्रकार सत्य को हजारों अश्वमेध यज्ञों से तुलना करके उसके महत्त्व को बताने की कोशिश की गयी है। इसलिए हमारे उपनिषदों में 'सत्यमेव जयते' कहा गया है।

''सत्यं ब्रूयात'' विशेष बात है। ''सूस्रूत वाक्यं मेलु'' आश्चर्य की बात है। 'सत्येस्वरं प्रतिष्ठितं तस्मात्सत्यं परमं वदंति' तैत्तरीय उपनिषद् में सत्य को इस रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

''अःकिं ब्रवीषिकुल पांसनिये कुवरस्सीतावतीः''

—32,1-2 आ.प.स.

इस श्लोक में राम को 'अ' अक्षर से दशरथ ने तुलना की है। 'अ' कार वशिष्ठादि मुनियों से संबंधित है। अ, वन कातुक, यानी वनवास कुतूहल से संबंधित है।

'कुमार' में कु-भूमि, मा-लक्ष्मी, र-पत्नियों के रूप में, अर्थात् श्री देवी, भूदेवी को पत्नियों के रूप में रखनेवाले श्री महाविष्णु हैं। कु-भमि पर, मार यानी मन्मथ की तरह सुंदर है। पन्नाम नरक से मुक्त करनेवाला भी कुमार है। नारायण स्वरूप भी है, ऐसा दूसरा अर्थ है।

बृहस्पति स्कंध पुराण में पतिव्रत स्त्री के बारे में विवरण दिया गया है।

''पूर्वाक्त वाचभिः पतिव्रतास्सत्कार्यास्तदि लक्षणा दुष्याइतिस्थि।'' (1-80) पति का जूठा अन्न, पानी, और फल को पत्नी को अत्यंत प्रिय के रूप में लेना चाहिए। पति पादोदक को पत्नी को पीना चाहिए। पति के नीचे बैठने से पत्नी को उच्च स्थान पर नहीं बैठना चाहिए। पड़ोस में नहीं जाना चाहिए। चुगल नहीं बोलना चाहिए। बुजुर्गों के सामने धीमे स्वर में बोलना चाहिए। एक आश्चर्य की बात पतिव्रताओं के बारे में कहा गया है कि उसके कारण पितृ वंशीय, मातृवंशीय तथा भ्रातृवंशीय

तीनों को स्वर्ग सुख प्राप्त होंगे।

इसलिए कैकेयी का दूषण करना अपराध नहीं हैं।

''**आध्वारा मनुवव्राज मंगलान्यभिदुध्यशी**'' राम के दशरथ के घर जाने की बात जानकर सीता ने राम को मंगल कामनाएँ दी है। यहाँ बड़ों को मंगल कामनाएँ देना चाहिए। सांबु की व्युत्पत्ति करते समय भी श्रीकृष्ण को जांबवती ने मंगल किया है। द्रौपदी ने अर्जुन को मंगल किया है। वह हमेशा अपने पति की नव वधु है। पत्नी हमेशा अपने पति को नव वधू के रूप में दिखाई पड़नी चाहिए। इसलिए ''सुमंगली रियं वधूः'' कहा गया है। दशरथ ने कैकेयी को दिए दोनों वर कामुक स्थिति में दिए वर हैं। मोह भाव के कारण ही उन्होंने वर दिए। इसीलिए कहा गया है कि ''कामातुराणां न भयं न लज्जा'। इसकारण से पुरुष स्त्री के सामने झुककर अपने पतन का कारण बनता है। ''कामंदवे मुनेरपि मनोवश्यं'' मुनिगण भी काम के कारण स्त्रीलोलुप बने हैं। तेलुगु कवि नन्नया ने 'कामु शक्ति नोर्वगलरे जनुलंटारु' काम की शक्ति जनता नहीं जानती है। स्त्रीलोलुप हुए बिना कोई पुरुष नहीं होता है। यह आर्योक्ति है।

स्त्रियाँ पुरुषों को अपने प्रेम से अनुराग से अपना दास बना लेती है। उनके पतन का कारण बनती हैं। सरस, विलास में डुबो कर पथभ्रष्ट करती हैं। अयोध्या की जनता राम के राजतिलक की कामना से है। दशरथ ने प्रजा की इच्छा की जानकारी अनसुनी कर दी है। उनकी प्रजा ने इस रूप में कहा—''विष्णुवा सद्दशम रामं मेदिनी वृणुते पतिम'' प्रजा ही नहीं विष्णु स्वरूप वाली अयोध्या की धरती भी राम को ही चाह रही है। वाल्मीकि का यही विचार है। यहाँ एक आश्चर्य की बात है।

''विष्णुवा सद्दशम, अतएव रामं, वृतावती भूमिः मेदिनी मधु कैटभ वसानिस गंधेन उपहत''

''सर्वगाध इति श्रीराम सौगंध्येन वासइतु'' इसमें मेदिनी का पद प्रयोग भूमि के लिए किया गया है। मेदिनी का मतलब मधु कैटभ के मेधा से संबंध रखनेवाला है। सर्वसुगंधी राम की चाहत भूमि को सुगंधी बनने की कामना व्यक्त कर रही है। यह एक आश्चर्य की बात है। राम अतिमनोहर पुरुष हैं। सुगंधी इसलिए अति विशेष है। भूमि सकल पापों एवं प्रदूषण के लिए मूल है। गंगा पवित्रता का मूल है।

''तच्भुता मंथरा, पूर्ववैर वासनया पुनः'' (7-8) मंथरा को कैकेयी के मन में बुरे विचार लाने के लिए जिम्मेदार समझा जाता है। रामायण भी यही कहती है। विष्णु के कारण नुकसान उठानेवाली मंथरा का प्रतिशोध लेना ही रामायण की कथा है। सत्योपाख्यान रामायण में मंथरा के पूर्वजन्म की कथा है। मंथरा का पिता विरोचन बड़ा पराक्रमी है। दानशील, इंद्रासन् का अधिकारी है। इसलिए देवताओं से प्रेरित होकर विष्णु ने इंद्र की सहायता से मंथरा की हत्या करवायी। इसके पहले बृहस्पति की सहायता से देवता विरोचन के शरीर में प्रवेश करके गये। देवता लोग विरोचन के शरीर को चाहने वाला निम्न श्लोक देखिए—

''**देवाः आयुर्देहि महाराजा ब्राह्मणे भ्योहियाबितं**''

इसलिए अपने मरण के लिए जिम्मेदार हरि पर मंथरा ने प्रतिशोध को पाला है। इसलिए वह कैकेय राज्य में राजदासी की पुत्री के रूप में पैदा हुई। कैकेयी के विवाह के बाद उसके साथ अयोध्या

आयी। अपना बदला ले लिया। अग्नि पुराण में भी मंथरा की कथा है। इसलिए कहा गया है कि 'स्त्री बुद्धि प्रलयांतकः'। दशरथ की कथा में मंथरा का इस रूप में महत्त्व है। कैकेयी दशरथ को युद्ध में सहायता करती है। बदले में वरदान पाती है। कैकेयी की हथेली वज्र के समान मानी जाती है। इसलिए वह मुनिवज्र मानी गयी है। उसी की सहायता से कैकेयी दशरथ की सहायता कर पायी है। धवलाश्व नामक मुनि के शाप से वह युग युगों तक स्वार्थी स्त्री के रूप में बदल गयी है। इसलिए कामंदक शास्त्र में कहा गया है कि स्त्री पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। और भी कई कहानियाँ स्त्रियों के व्यक्तित्व को बतानेवाली मिलती हैं। काशी राजा वैरा की कहानी भी उनमें एक है।

पुत्र वही है जो पिता की बातों को स्वीकार करता है। राम ने पितृ वाक्य का पालन किया है। रामायण में विवरण है–

''लघ्वीमिमां प्रतिज्ञांतु'' 32-33, पुत्र को पितृ वाक्य परिपालन करना चाहिए। इसमें तीन विषय हैं।

1. पिता के जीवन काल में पिता के वचनों के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

2. पिता के मरणोपरांत अब्दिक में अच्छा भोजन खिलाना चाहिए।

3. गया में पिंड प्रदान करना चाहिए।

ये तीनों कार्य करनेवाला ही सही पुत्र है। माता के वचनों से भी पिता के वचनों को ही अधिक महत्त्व है। पिता के वचनों को पालन करने से समस्त देवताओं के वचनों का पालन हो जाता है। इसलिए माता के वचनों से पिता के वचनों को अधिक महत्त्व दिया गया है। इसलिए राम कहते हैं–

''नास्ति शक्तिः पितुराक्यं समतिक्रमितुंममि''

–46, 1-2

सगर पुत्र पिता के वचनों का पालन करते हुए मर गये हैं। पिता की आज्ञा को उन्होंने ठीक से अनुसरण किया है क्या? संप्रदाय उनको मिल गया है। 'अदम्नाया संप्रदायः' यह अक्षर सत्य है।

'' ना भुक्तं क्षयते कर्म कल्पकोटि शतैरपि '' ब्रह्मादि देवता को भी कर्म फल को भोगना ही पड़ेगा।

इसलिए राम को कर्म फल की खोज करते हुए अरण्यवास करना ही चाहिए। सीता से अलग हो जाना चाहिए। क्योंकि राम के पूर्वजन्म के शाप-विशेष का फल है।

राम के पूर्व जन्म के शाप

जलंधरा : स्कंद पुराण के अनुसार बृंद शाप। जलंधर की पत्नी से विष्णु के मिलने से पैदा हुई जलंधरा शाप का फल है। विष्णुरूप राम के लिए सीता का वियोग।

नारद : नारद अंबरीष की पुत्री के विवाह के समय अपमानित होकर विष्णु को शाप देते हैं। यह दूसरा शाप है। राम की पत्नी को दूसरे अपहरण करेंगे, ऐसा नारद ने विष्णु को शाप दिया था।

भृगु का तीसरा शाप है। भृगु महर्षि की पत्नी को देव दानव के संगर के समय विष्णु ने वध किया था। इसलिए भृगु ने विष्णु को पत्नी वियोग का शाप दिया था।

रामायण में कुछ स्त्री पात्र-संदेश

डॉ. सूरपराजु वसंतकुमारी

रामायण के प्रत्येक पात्र समाज के लिए कुछ न कुछ पाठ सिखानेवाले हैं। पुरुष पात्र ही नहीं बल्कि नारी पात्रों ने भी समाज के लिए समुन्नत संदेश दिए हैं। प्रस्तुत लेख में उनमें कुछ नारी पात्रों का परिचय-विश्लेषण दिया जा रहा है।

सीता देवी

सीता का जन्म ही अद्भुत है। जनक महाराज को यज्ञ करने के लिए भूमि को जोतते समय भूमि के अंदर एक पेटी में सुंदर शिशु के रूप में प्राप्त हुई है। जनक के घर में पुत्री के रूप में पली है। स्वयंवर में श्रीराम ने शिव धनु को तोड़कर सीता के साथ विवाह किया है। सीता राम का दांपत्य जीवन सारे लोकों को आदर्श माना जाता है। आंध्र में तो यह इतना प्रचलित है कि विवाह के समय छपनेवाले निमंत्रण पत्रों में सीता राम के चिह्न ही मुद्रित किये जाते हैं। उसके बाद ही बाकी समाचारादि दिए जाते हैं। सीता-राम पातिव्रत्य और एक पत्नीव्रत के लिए प्रतीक ही बने हैं।

रामायण में वर्णित स्त्रियों में ही नहीं बल्कि विश्व की सारी स्त्रियों में सीता देवी सर्वोत्तम नारी शिरोमणि कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

सीता के जीवन में कई विचित्र मोड़, विषम परीक्षाएँ और कष्ट देखे जा सकते हैं। श्रीराम की राजतिलक की तैयारियाँ चल रही हैं, तब श्रीराम सीता के पास आकर कैकेयी के दोनों वरदान भरत का राजतिलक और राम के लिए चौदह वर्ष अरण्यवास के बारे में बताकर वनवास जाने की सूचना देते हैं।

यस्तवयासहस स्वर्गो निरयो यस्त्रवया विना।
इतिजान स्परां प्रीतिं गच्च राम मया सह।।

(वाल्मीकि रामायण, 78-30-18)

सीता देवी राम से कहती हैं तुम्हारे साथ रहना ही मेरे लिए स्वर्ग है। तुमसे अलग रहना मेरे लिए नरक है। मुझ पर तुम्हारा बहुत बड़ा प्रेम है इसलिए मुझे भी वन ले चलिए। सीता देवी सारे राजमहल के सुखों को छोड़कर राम के साथ वनवास गयीं। कष्टों तथा दुःखों में पति के साथ रहूँगी सोचकर वे राम के साथ गयी हैं। साथ ही समाज को बताया कि पति और पत्नी दोनों को कष्ट और सुखों में साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

वनवास के समय सीता सोन-हिरण को देखकर इच्छा से राम से उसे लाने के लिए कहा, वही दोनों के अलग होने का कारण बना। राज भोगों को भी छोड़कर जंगल में आयी सीता के मन को भी उसने लूट लिया तो लगता है सहज ही उसके पीछे कोई माया या षड़यंत्र छिपा हुआ, ऐसा संदेश सीता का जीवन देता है।

त्वं पुनर्जम्भुकः सिंही मामिहेच्चसि दुर्लभम।
नाहं शक्यात्वया स्पष्टुमादित्यस्य प्रभायधा।।
सूर्याचन्द्र मसौछभौ पाणिभ्यां हर्तु मिच्चसि।
अग्निं प्रज्वलितं दृष्टय वस्त्रेणा हर्तु मिच्चसि।।
अयो मुखानां शूलानामग्रे चरित मिच्चसि।
रामस्य सदृशं भार्यां य्योधिगस्तुंत्व मिच्चसि।।

(वाल्मीकि रामायण, 3-47, 42, 44)

अशोक वन में सीता देवी रावणासुर से ''तुम गीदड़ हो। मैं मादा शेर हूँ, सर्वथा मैं तेरे लिए दुर्लभ हूँ। फिर तुम मुझे चाहते हो। सूर्य को जिस रूप में कोई छू नहीं सकता है वैसे ही तुम मुझे छू नहीं सकते हो। फिर भी तुमने दुस्साहस किया। मेरा अपहरण किया। मैं श्रीराम की प्रिय पत्नी हूँ। मुझ पर अत्याचार करना चाहते हो तो समझ लो कि कोई प्रलयाग्नि को वस्त्र समझकर टोकरी में रखने की तरह तुम भूल कर रहे हो। शूल की नोक पर चलने की कोशिश कर रहे हो।''

इससे स्पष्ट होता है कि सीता परम साध्वी, पतिव्रता किसी से भी नहीं डरती है। अपने धर्म, आत्म बल से उसमें अपने प्रति अगाध विश्वास रहता है। इसके द्वारा यह भी संदेश दिया गया है कि अपने आत्म बल से चलने वालों की सहायता भगवान भी करता है।

हनुमान कहता है कि अगर आप चाहें तो मैं आपको अपनी भुजाओं में बिठाकर ले जा सकता हूँ। अनुमति माँगता है तो सीता कहती हैं कि तुम मेरी संतान की तरह हो फिर भी मैं पराये पुरुष का स्पर्श तक नहीं करना चाहती हैं। श्रीराम को ही आकर इन सारे राक्षसों का संहार करके मुझे ले जाना है, तभी मेरी मुक्ति होगी, कहती हूँ।

रावण वध के बाद हनुमान सीता के पास आकर ''माई, तुझे डरानेवाली इन दुष्ट राक्षसिनियों का संहार करना चाहिए, मुझे अनुमति दीजिए, पूछने पर तब सीता ने कहा था कि दूसरों के आदेश पर काम करनेवाले दासीजन पर गुस्सा करना ठीक नहीं है। उन पर दया करके क्षमा करके छोड़ देना ही साधुओं का लक्षण है।'' कहती हैं। ये बातें सीता के क्षमा-गुण के प्रतीक हैं।

रावण वध के बाद सीता राम अयोध्या पधारे। बुजुर्ग, वृद्ध, सासुमाओं की सेवा करते, घर के काम करते, भगवान की प्रार्थना आदि करते कैसे जीवन काटना है, सीता देवी ने करके दिखाया है।

लोक निंदा से सीता को दुबारा जंगल में छोड़ कर आने की आज्ञा होने पर, लक्ष्मण सीता देवी को जंगल में छोड़कर आते समय वह कहती है–''स्त्री के लिए पति ही साक्षात भगवान है। बंधु और गुरु भी हैं। अपने पति को जो अपकीर्ति होनेवाली है , उसे रोकना भी मेरा ही धर्म है। राम से यही कहिए।''

सीता के जीवन में कई कष्ट, परीक्षाएँ, सजाएँ अपने किसी अपराध के बगैर सीता ने सब कुछ को झेला है। अरण्यवास, कदम-कदम पर कष्ट फिर भी कभी भी अपराध या दोष दिए बिना पति सेवा को ही परमावधि के रूप में सीता ने व्यवहार किया है। आदर्श दांपत्य जीवन के लिए भी सीता ही प्रतीक है। सीता का जीवन सम्पूर्ण नारी जाति के गर्व का कारण है। समाज के लिए एक बहुत बड़ी सीख है।

मंदोदरी

मंदोदरी के माता-पिता राक्षस राजा मय और अप्सरसा हेमा है। मंदोदरी अतिसुंदर, गुणशील, उदात्त व्यक्तित्व, पतिव्रता नारी है। पुलस्त्य ब्रह्म का पौत्र, विश्वन ब्रह्म का पुत्र लंका नगर के राजा रावण के साथ उसका विवाह हुआ। पति के बल पराक्रम विजयों को देखकर उसने गर्व किया। लंका की पटरानी के रूप में चमकी है। इंद्रजित जैसे महावीर को जन्म दिया। वीर माता के रूप में प्रचलित हुई है।

रावण काम वासना में डूबकर अपराध करने लगा। मंदोदरी ने उसे समझाया। किंतु उसने नहीं माना। उसका अपराध पराकाष्ठा पहुँच गया। उसने सीता का अपहरण किया। पतिव्रता नारी के शोक, शाप प्राणांतक होते हैं, ऐसा उसने बार-बार अपने पति से कहा। मौत भी मुझे देखकर डरती है, ऐसा गर्व करने वाले पति को देखकर वह चिंतित हो गयी।

राम और रावण के युद्ध के पहले और बीच में भी मंदोदरी रावण को समझाने की कोशिश करती है। अन्त में युद्ध में रावण मारा गया। युद्ध क्षेत्र में निर्जीव पड़े अपने पति के सिर को गोद में रखकर ''प्रभु, तीनों लोकों को डरावनेवाले, देवेंद्र भी आपको देखकर डर जाते हैं, तुझे देखकर दिक्पालक, ऋषिगण, यमधर्म राज भी डर जाते हैं। ऐसे आपकी मृत्यु?'' कहती हुई मंदोदरी विलाप करती है।

इंद्रियाणी पुरा जित्वा जितं त्रिभुवनं त्वया।
स्मरद्भिरिव तद्वैरं इंद्रियैरेव निर्णितः।।

(वाल्मीकि रामायण - 3-15, 16)

''इसके पहले आपने इंद्रियों को जीता है। इसलिए तीनों लोकों को जीता है। अब आप इंद्रियों के वश में हो गये। इसलिए शत्रु के हाथों में मारे गये।'' ऐसी आलोचनात्मक बातें मंदोदरी ने कही हैं।

''राम से वैर नहीं चाहिए, वह सब रूपों में अनर्थदायक है, सीता को उसे लौटाकर संधि कर लो'' ऐसा कई बार वह रावण से कह चुकी है। ''आभिजात्य में और सौंदर्य में वह कैसे मुझ से बड़ी है? आपने कामातुर होकर नारी चौर्य किया है। पतिव्रता नारी का शापग्रस्त हो गये। अपने भाई विभीषण की बातें सुनकर, मेरे संदेश को अलग रखकर मृत्यु की गोद में सो गये हैं।'' रोती हुई मंदोदरी ने कहा था।

उतने बड़े दुःख में भी मंदोदरी ने राम की और किसी की कोई निंदा नहीं की है। साधारण स्त्रियों की तरह पति के अपराधों को छिपाकर दूसरों की निंदा नहीं की। पति के अपराध और बुरे कदमों का उन्होंने विरोध किया। आत्म अनुशीलन करके वेदना का शिकार हुई। मंदोदरी का

मनोबल, सटीक दृष्टि, विशाल हृदय, गलती को गलती कहने का मनोधैर्य आदि अत्यंत प्रशंसनीय हैं। मंदोदरी का व्यक्तित्व मेरु शिखर ही है।

महावृक्ष पर लता की तरह चढ़कर सुखी जीवन चाहनेवाली है मंदोदरी। उस महावृक्ष पर जब कीडे लगकर गिरने की स्थिति में है तो व्याकुल होनेवाली पत्नी की तरह मंदोदरी तड़पती रही है। पति के अपराधों का समर्थन नहीं करती है। विरोध भी कर नहीं सकती है। अपने किसी अपराध के लिए नहीं पति के अपराधों के लिए अपना जीवन कैसे नष्ट हो जाता है, इसका सही उदाहरण मंदोदरी का जीवन है। वह स्वयं आत्म समीक्षा कर लेती है। अपनी आलोचना भी करती है। पति का हितबोध भी करती है। इससे बढ़ कर कोई नारी अपने पति के लिए क्या कर सकती है। मंदोदरी जैसी पत्नी को पाकर भी रावण ने अपने अपराध से अपने जीवन को खो दिया है। मंदोदरी अपने जीवन के साथ ये सारे संदेश समाज के सामने रखती है। बिना किसी अपराध की पत्नियाँ कैसे पति के अपराधों का शिकार होती हैं, मंदोदरी का चरित्र यह संदेश देता है। सावधान करता है।

शबरी

शबरी जंगल में पैदा होनेवाली जनजाति की कन्या है। मातंग आश्रम में आयी है। वहीं एक कोने में कुटिया डालकर रोजाना उषःकाल में आश्रम की सफाई करके तरह-तरह की सेवाएँ करती थी। पूजा के लिए फूल लाती थी। भोजन के लिए फल तोड़कर लाती थी। महर्षियों के वस्त्र साफ करती थी। बिना किसी थकान के दिन भर आश्रम का काम करती थी। महर्षियों की सेवा करना ही अपनी परमावधि मानती थी। इस रूप में शबरी परिचारिका भक्ति का प्रतीक बन गयी थी।

आश्रम के एक-एक महर्षि ने सिद्धि को प्राप्त किया। बूढ़ी शबरी ही आश्रम में बच गयी। मातंग ऋषिगण स्वर्ग सिधारते हुए ''शबरी, तुझे देखने के लिए श्रीराम आएँगे। लक्ष्मण समेत तुम्हारा अतिथि सत्कार स्वीकार करेंगे। तुम्हारा जीवन धन्य हो जायेगा। तुझे जन्मरहित मोक्ष प्राप्त हो जायेगा।'' बताया था। इसलिए शबरी राम की प्रतीक्षा करती रही।

श्रीराम उसके पास आ ही गये। आनंद परवशता में शबरी चकरा गयी। उसकी आँखों से गिरनेवाले आँसुओं को पोंछते हुए श्रीराम ने उसे अपने बगल में बिठाया। श्रीराम के हस्त स्पर्श से योगिनी शबरी ने अनिर्वचनीय अनुभूति को प्राप्त किया। राम-लक्ष्मण की उसने पाद पूजा की। मीठे फल खिलाये। अतिथि सत्कार किया। आश्रम दिखाकर सारा समाचार दिया। श्रीराम से आज्ञा माँगते हुए यज्ञ कुंड में कूद कर अपने शरीर को त्याग करके मोक्ष को प्राप्त किया।

मुक्ति पाने के लिए बड़े वंश में ही पैदा होने की कोई आवश्यकता नहीं है। विद्या-पांडित्य को भी प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं है। बड़े-बड़े काम भी करने की जरूरत नहीं है। अपनी पवित्रता, भक्ति भावना, गुरुओं के वचनों पर विश्वास रखने मात्र से परिचारिका भक्ति से भी मनुष्य मुक्ति को प्राप्त कर सकता है, इस संदेश को शबरी पात्र प्रदान करता है।

इस रूप में रामायण का एक-एक पात्र समाज के सामने एक-एक संदेश को प्रस्तुत करता है। उन पाठों को पढ़कर, उन संदेशों को समझकर बेहतर सूझबूझ से आगे बढ़ना ही समाज का कर्तव्य है।

रामायण : पारिवारिक व्यवस्था

डॉ.काकर्ल भूपति नायुडु

रामायण काल में प्रत्येक परिवार आकर्षणीय था। जनता सुखी और शांत थी। इसलिए राम राज्य में आर्थिक असमानता और अर्थ संग्रह नहीं होता था। लोगों को राम राज्य के प्रति विश्वास होने के ये दो ही मुख्य कारण हैं। इसलिए वाल्मीकि रामायण के प्रत्येक परिवार में शांति और सुख के सप्त स्वर सुनाई पड़ते थे। उसकाल में प्रत्येक परिवार गृहस्थाश्रम का सच्चा प्रतीक था।

सानंदं सदनं सुताश्च सुधियः कांतान दुर्भाषिणी
सन्मित्रं सधनं स्योषिति रति श्चाज्ञा पराः सेवकाः।
अतिध्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मेष्टान्न पानं गृहे।
साधोः संगमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्ताश्रमः।।

जाति भेद, वर्ग भेद, धनी, गरीब जैसे भेद न होने के कारण सभी गृहस्थाश्रम के आनंद को प्राप्त करते थे। वर्ग संघर्ष नहीं होते थे। अड़ोस-पड़ोस में, बंधुओं में, सारी जातियों के परिवारों में किसी को भी देखो कोई बलहीन, आलसी के रूप में दिखाई नहीं पड़ते थे। बच्चे बुद्धिमान लगते थे।

स्त्री-पुरुष संबंध

रामायण काल में गृहस्थाश्रम धर्म आदर्श था। मुख्य रूप से स्त्रियों में आत्मविश्वास बढ़ानेवाले उपदेश रामायण में दिखाई देते हैं। स्त्री सामर्थ्य के प्रति रामायण में किसी भी प्रकार का शक नहीं है। रामायण ने इसे स्वीकार भी किया है। श्रीराम के वनवास जाने के निर्णय के बाद वशिष्ठ ने स्पष्ट रूप से कहा है–

आत्मा हि दारा स्द्वेषां दार संग्रह वर्तिनाम
आत्मेयमिति रामस्य पालयिष्यति मेदिनी।।

स्त्री पुरुष की आत्मा है। सीता राम की आत्मा होने के कारण ''श्रीराम के वनवास जाने से सीता ही राज्य भार को ढोयेगी। स्त्री राज्य का शासन करेगी।'' इस रूप में बोलने में वशिष्ठ ने किसी भी प्रकार का संकोच नहीं किया है। पति के राज्य पर पत्नी को अधिकार रहता है। यह विषय कैकेयी को भी मालूम है। इसलिए भरत को सिंहासन् पर अधिकार प्राप्त होना है चाहकर वरदान माँगा। इससे अच्छाई ही हुई। इसलिए रामायण लिखा गया है।

गृहस्थाश्रम : जीवन विद्यालय

गृहस्थाश्रम दो व्यक्तियों के आत्मीय विकास को प्रोत्साहन देता है। गृहस्थाश्रम सद्‌गुणों, सदाचारों को प्राप्त करनेवाला स्थान है। परिवार में पवित्रता, निर्मलता, माँगल्य लोप के बिना श्रद्धा होनी चाहिए। प्रत्येक स्त्री पुरुष को समानता का भाव होना चाहिए। तभी लोगों में प्रेम, निर्मलता और माँगल्यादि प्राप्त होते हैं। सीता देवी को लेकर वापस जाते समय एक जंगल के द्वारा निकल रहे थे। तब आदर्श दंपतियों के बारे में बताते हुए श्रीराम सीता देवी से ''यहाँ एक कुटीर हुआ करता था। उसमें ऋषी और उसकी पत्नी हुआ करते थे। प्रत्येक आदमी को आराम देना ही उनका उद्देश्य था। अब वे दोनों यहाँ नहीं हैं। लेकिन उनका काम उनके द्वारा रोपे गये वृक्ष कर रहे हैं। पिता के कर्तव्य को पुत्र पूरा कर रहे हैं। दूसरों को हितोपदेश करने के पहले अपने घर के बारे में श्रद्धा रखनी चाहिए। सबसे पहले अपने परिवार को ही ठीक करना चाहिए। घर में जीत कर बाहर जीतना चाहिए। हम विश्वकल्याण के लिए निकले हैं। बताया है।

उसकाल में पति-पत्नी के लक्ष्य सीता राम की तरह या चन्द्रमती हरिश्चंद्र की तरह थे। एक ही विचार, एक ही आचार, एक ही विचारधारा, वही गृहस्थाश्रम है। ऐसा नहीं तो वह सिर्फ भोजन गृह हो जायेगा। इसलिए श्रीराम के वनवास के निकलते ही सीता देवी भी तैयार हो गयी।

रामायण में मोक्ष देनेवाले प्रसंग नहीं हैं। रामायण में गृहस्थाश्रम के बारे में ही बताया गया है। कैकेयी, मंथरा दोनों ने राज वंश को छिन्नभिन्न बनाने की कोशिश की है। किंतु भरत आदि भाई, कौसल्या आदि माँओं के प्रेम में कोई कमी नहीं हुई है। गृहस्थाश्रम अभेद्य और सुदृढ़ होना चाहिए। यह रामायण का संदेश है। दूसरे रूप में बोलना है तो गृहस्थाश्रम ही रामायण का हृदय है। गृहस्थाश्रम धर्म रामायण के लिए हृदय जैसा है। बुनियादी की तरह है। इसी पर रामायण धन्य सौध जैसा खड़ा है। वाल्मीकि कवि ने गृहस्थाश्रम को ही अधिक महत्त्व दिया है। शूरत्व, वीरत्व को प्राथमिकता नहीं दी है।

संक्षेप मे कहना है तो रामायण ही एक कुटुंब है। यानी गृहस्थाश्रम है।

सर्वे सुखिनः संतु सर्वे संतु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यंतु मा कश्चित दुःखभाग्भवेत।।

मोल्ल रामायण : सुंदरकांड वैशिष्टय

डॉ. मंगमार मुनिलक्ष्मी

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं।।

भगवद्गीता में गीताचार्य का यही प्रवचन है। धर्म की हानि होकर अधर्म के फैलने पर भगवान अपने आप अवतार लेकर अधर्म का संहार करेगा, ऐसा इस प्रवचन का सारांश है। वैसे ही भगवान ने दुष्ट दमन और शिष्टों की रक्षा के लिए कई बार अवतार लिए हैं। सभी अवतारों में दुष्ट दमन के बाद अवतार परिसमाप्ति के कारण सामान्य मानव के लिए आवश्यक कोई शिक्षा दिखाई नहीं पड़ती है। वे सभी सिर्फ विष्णु महिमा को प्रस्तुत करनेवाले हैं। राम और कृष्ण अवतार ही ऐसे अवतार हैं जिनमें विष्णु अवतार पुरुष होने के साथ-साथ धर्म-अधर्म की व्याख्या करते हुए मानव जाति के लिए आवश्यक शिक्षा प्रदान की है। कृष्णावतार में अवतार पुरुष के रूप में श्रीकृष्ण ने यही किया और रामावतार में श्रीराम के रूप में मानव के समस्त सुख-दुखों को भोगकर आदर्श के रूप में मानव के लिए उपयुक्त मार्ग बताया है।

1. वाल्मीकि संस्कृत में रामायण को रचने के बाद कई कवि विविध भाषाओं में रामायण लिखकर धन्य हुए। ऐसे रामायणों में तेलुगु कवयित्री मोल्ला के द्वारा लिखित मोल्ल रामायण भी एक है। रामायण रचनेवाली कवयित्रियों में पहली कवयित्री मोल्ला हैं। शायद तेलुगु में सबसे अधिक रामायण ही रचे गये हैं। एक लंबी रामायण परंपरा तेलुगु साहित्य में प्राप्त होती है। शायद इसका एक कारण सामाजिक मूल्यों को जनता तक पहुँचाना ही है।

''रामो विग्रहवान धर्मः'' राम घनीभूत धर्म का प्रतीक हैं। रावण अधर्म का प्रतीक है। अधर्म पर धर्म का युद्ध ही रामायण है। मानव जीवन की सारी विशेषताओं को छूते हुए समाज में मानव को कैसे जीना है आवश्यक सभी मूल्य रामायण में प्रस्तुत किये गये हैं। मनुष्य को किस प्रकार के गुण चाहिए, दूसरों के साथ कैसे जीना है इन सब पर रामायण में प्रकाश डाला गया है। मनुष्य को उत्तम व्यक्तित्व सम्पन्न बनने की शिक्षा रामायण काव्य देता है। राम नाम तारक मंत्र है। विष्णु सहस्रनामों के बराबर है। इतना ही नहीं है—

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरं
एकैक मक्षरं पुंसां महापातक नाशनं।।

शतकोटि राम नाम लिखने से उसके अंदर का प्रत्येक अक्षर महापातकों को दूर करता है,

ऐसा भविष्योत्तर पुराण उद्घाटित करता है। उसी रूप में राम रहस्योपनिषद्। '**राम मंत्र योदपेत सरामो भवतीति रामेगोक्तः**' राम मंत्र को जपनेवाले राम ही बनेंगे, बताया है।

(आंध्र प्रभा, समचार पत्रिका, 10-04-2012)

2. राम और रामायण दोनों आंध्रवासियों को अत्यंत प्रिय हैं। उनके लिए रामायण पारायण ग्रंथ है। नहीं बुझनेवाली प्यास है, तृष्णा है। कितनी ही बार सुनने के बावजूद भी प्यास बढ़ती है।

इसलिए पीढ़ियों दर पीढ़ी रामायण की प्यास नहीं बुझती है। रामायण अमर काव्य बन पड़ा है। ऐसी तेलुगु जाति के लिए सामान्य लोगों को भी आसानी से समझ में आये ऐसी तेलुगु भाषा में, अच्छी शैली में, तेलुगु कहावतें-मुहावरों के साथ कर्ण-माधुर्य रूप में व्यावहारिक तेलुगु में मोल्ला ने रामायण रचा है।

तेलुगु भाषा में प्रौढ़ कवियों के बराबर कविता कहने की प्रतिभा मोल्ला में है। इसीलिए उस समय की कवयित्रियों में मोल्ला को प्रथम स्थान दिया जाता है। मोल्ला रामायण में रामकथा संक्षेप में कहने के बावजूद भी काव्य कथन शैली आकर्षणीय है। मोल्ला असमान प्रतिभा का यह श्रेष्ठ उदाहरण है। छहकांड वाले रामायण काव्य में पहले के चारकांडों का कथागमन काफी संक्षेप और तेज शैली में रचा गया है। सुंदर और युद्धकांड तो वर्णन बहुला होकर मनोहर ढंग से कथागति के साथ रचे गये हैं। मोल्ला का विचार है–

तेनेसोक नोरु तीयनगुरीति
तोड़नर्थमेल्ल तोचकुंद
गूढ शब्दमुलनु गूर्चिन काव्यम्मु
मूग चेविटि वारि मुच्चट गुनु।

अर्थात् मोल्ल रामायण सुनने से शहद के मुँह में डालने से जैसा मीठा स्वाद होता है, वैसा होगा। व्यक्त अर्थ अत्यंत सरल ढंग से समझ में आयेगा। बधिर और गूँगों के साथ सभी इसका रसास्वादन कर सकते हैं। साथ ही मोल्ला ने यह भी स्पष्ट किया कि कविता किस रूप में होनी चाहिए। मोल्ला कवयित्री बहुत विनयशील है। पोतना के कहने के अनुसार ही–

चेप्पुमनि रामभद्रुडु
चेप्पिंचिनपल्कु मीद जेप्पेद नेनै
येप्पुडु निहपर साधन
मिप्पुण्य चरित दप्पुलेंचक डेंदुन।।

अपने निरहंकार को मोल्ला ने इस रूप में प्रकट किया है। रामभद्रु की आज्ञा से ही मैं बोल रही है। उनकी कथा कहना मैं कई जन्मों का पुण्य समझती हूँ।

3. राजनीतिक व्यवस्था से दबकर अपने व्यक्तित्व को बेचकर अपनी कृतियों को राजाओं को समर्पित करनेवाली परंपरा का विरोध करते हुए मोल्ला ने अपने विशिष्ठ व्यक्तित्व का परिचय दिया है।

सल्ललित प्रताप गुण सागरुड़ै विलसिल्लि, धात्रिपै

भक्लिदुडैन राम नरपालकुनिन स्तुति चेयु जिह्वकुन
जिह्लर राज लोकमुनु जेकोनि मेच्चग निच्च पुट्टुने?
यल्लमु बेल्लमु दिनुचु नप्पटिकप्पटि कासचेयुने?

मोल्ला यह स्पष्ट कहती है कि राजाओं के द्वारा दिए जाने वाले सुवर्णों के लिए तात्कालिक सुखों में पड़कर मैं अपने को व्यर्थ नहीं कर सकती। मेरी जिह्वा राजाओं के द्वारा दिए जानेवाले अदरक और गुड़ के स्वाद को नहीं चाहती है। बल्कि राम नाम के स्वाद को चाहती है। इससे मोल्ला के व्यक्तित्व को समझ सकते हैं।

4. प्रस्तुत लेख में मुख्य रूप से सुंदरकांड के वैशिष्ट्य के साथ-साथ उसके सौंदर्य पक्ष का उद्‌घाटन करने का लक्ष्य है। रामायण में सुंदरकांड एक पवित्रकांड है। एक उज्ञवल तारा है। अन्यकांडों की तुलना में सुंदरकांड का वैशिष्ट्य है। अन्यकांडों को कथा संदर्भ के अनुसार वाल्मीकि ने नामकरण किया है। लेकिन सुदंरकांड के संदर्भ में ऐसा नहीं किया है। इसमें भी वैशिष्ट्य है। ''सुष्टु आदियते इति सुंदरः'' कहा जाता है। यानी ठीक रूप से आदर करनेवाला सुंदर है। ''सुंदरस्य भावः सौंदर्यं'' आदरणीय, आचरणीय सुंदर स्थिति सौंदर्य है।

सुंदरे सुंदरो रामः, सुंदरे सुंदरी कथा
सुंदरे सुंदरी सीता, सुंदरे सुंदरं वनम
सुंदरे सुंदरम काव्यं, सुंदरे सुंदरः कपिः
सुंदरे सुंदरं मंत्रं, सुंदरे किम न सुंदरम।

यह आर्योक्ति है। सुंदरकांड में अभिवर्णित राम सुंदर सुगुणवाला है। श्रीरामकथा सर्वदाद्भुत संदर काव्य है। सीता भुवनैक सुंदरी है। वन भी सुंदर है। काव्य भी सुंदर है। कांचनादि कमनीय शरीरवाला हनुमान भी सुंदर है। सीता रामांजनेय के मंत्र भी सुंदर हैं। इस सुंदरकांड में जो सुंदर नहीं है कुछ भी नहीं है। सर्व सुंदर है।

रामायण काव्य में सभी सुंदर होने के बावजूद वानर जाति वाला हनुमान कैसे सुंदर बन गये, यह प्रश्न उठता है। पद्म पुराण में शिव भगवान पार्वती से ''मदंशजो महा बाहूः महाबल पराक्रमः सुभगस्सुंदर श्रीमान भक्त रक्षापरायण'' ऐसा दिवाकर्ल वेंटावधानी ने सूचित किया है। (सुंदरकांड सुबोधिनी, विवरण के साथ, स्वीकार, दिवाकर्ल) इससे स्पष्ट होता है कि हनुमान का दूसरा नाम सुंदर है। इससे अलग सुंदर शब्द की व्युत्पत्ति, 'सुं' का मतलब शोक, 'दारयति' का मतलब खंडयति यानी दूर करनेवाला है। हनुमान सागर लाँघकर सीता का पता लगाकर राम के कुशल समाचार सीता को बताकर, सीता के कुशल समाचार राम को बताकर सीता राम के शोक को दूर किया। इसलिए वे सुंदर हैं।

ब्रह्मांड पुराण में ''अस्य सुंदरकांडस्य समम मंत्रं न विद्यते'' ऐसा है। (श्री सुंदरकांड प्राशस्त्य-पारायण विधान) अर्थात् सुंदरकांड के समान और कोई पारायण मंत्र नहीं है। इससे बढ़कर ''चन्द्र बिंब समाकारं वांचितार्थ प्रदायकं, हनुमत्सेवितं ध्यायेत सुंदरकांड उत्तमं'' भी कहा गया है। इसलिए सुंदरकांड पारायण ग्रंथ के रूप में प्रचलित हुआ है।

5. मोल्ला के समय की सामाजिक परिस्थितियों को दृष्टि में रखने से प्रौढ़ कवियों के किसी भी रूप में कम मोल्ला की काव्य रचना दिखाई देती है। सुंदरकांड में सीता, रावण, हनुमान ये तीनों पात्र ही मुख्य हैं। फिर भी ये तीनों रामकथा से परिवेष्ठित ही नजर आते हैं। संदर्भ के अनुसार किस पात्र से क्या कहलवाना है मोल्ला को अच्छी तरह मालूम है। बालकांड में सीता किसी भी कष्ट से अपरिचित निरीह बालिका के रूप में चित्रित है। स्वयंवर में राम के द्वारा विवाहित होने के बाद लोकैक सुंदरी के रूप में चित्रित है। उसके बाद सीता के जीवन में कष्ट ही कष्ट हैं। पीहर में सुखी जीवन जीनेवाली जानकी परिस्थितियों के साथ समझौता करके राम के साथ वनवास जाती है। रावण के यहाँ बंदी बनती है। राक्षसों की मायाओं से, धोखे के कार्यकलापों से प्रत्येक पल डरते हुए निस्सहाय स्थिति में रहते हुए भी आत्म स्थैर्य, मनोबल, भविष्य के प्रति आशा, दृढ़ विश्वास, विवेक, सूझबूझ, स्थिप्रज्ञता आदि गुणों के साथ सीता दिखाई देती हैं।

रावण ने सीता से कहा कि मुनियों की तरह जटाओं के साथ रहनेवाले, साग-सब्जी खाकर जीनेवाले राम-लक्ष्मण लंका कैसे पहुँच सकते हैं? सागर को लाँघ कर मुझे बंदी बनाना असंभव है। दानव हमेशा मानवों पर विजय पाते रहे। दानवों पर विजय प्राप्त करना क्या संभव है?

जगतीशुडु मानवुडंट
नगरे भुज शक्ति चेत नाकेदुरन्नन?
नगधरुडो, नगधन्वुडो
नगभोदियो, कोंत कोंत नातोबोरन?

रावण इस रूप में पूरे नगर और दिक्पालकों को अपने वश में बताकर अहंकार करता है। रावण के गर्व को तथा उसकी बाहु शक्ति को लेकर उसके विश्वास को देखकर सीता कहती है—

पति दैवमुगा नेप्पुडु
मति दलचुचु नुंडु नट्टि मगुवल जेरपन
ब्रतिन गलयट्टि नीतो
ब्रति वचनमु लाडु कंटे बापमु गलदे?

ऐसा कहती है। परायी स्त्रियों को चाहने से आयु, पुण्य का नाश होता है। सत्पुरुषों की निंदा करने से नरक जायेंगे, जैसे न्याय को सुनो। सीता की इन बातों में उनका उन्नत व्यक्तित्व छिपा हुआ है। इसके अतिरिक्त सीता भाषण पटु भी है। संदर्भ के अनुसार बोलने की प्रतिभा सीता की है। स्त्रियों के द्वारा आचरणयोग्य सारे गुणों को आचरण करके सीता ने दिखाया है। श्रीराम सिर्फ राजा ही नहीं हैं बल्कि श्रीमन्नारायण हैं, ऐसे श्रीराम को सागर, राक्षस, तुम और तुम्हारी शक्ति कुछ भी नहीं है। ये सारी बातें सीता रावण से कहती है। श्रीराम के पराक्रम और वीरता का वर्णन करते हुए सीता रावण को सावधान करती हैं—

आरूढ प्रतिमान विक्रम कलहंकार तेजोनिधिन,
श्रीरामुन, सुगुणाधिरामु डेडगन जेकोन्न निन्नाजिलो
दारन दोंगिलितंचु निष्ठुरगतिन दंडिंचि खंडिंप मु

न्नीरेट्लेननु दाटिवच्चु, नलुकन नेडेल्लि शांतिंपुमा।

ऐसा कहती है। सीता राम को यहाँ साक्षात श्रीमन्नारायण के रूप में चित्रित करती है। उन्हें सर्व शक्तिमान बताती है। सीता की मुद्रा शांत बैठकर भी वीरत्व को धारण करती है। यहाँ सीता में मोल्ला ने शांत रस में वीर रस का पोषण करके दिखाया है। यह उसकी प्रौढ़ प्रतिभा का परिचायक है।

6. सीता के शोक को देखकर हनुमान सीता से ''नेनु निन्नु ना वीपु पै नेक्किंचुकोनि समुद्रमु दाटि रामुनि वद्दकु तीसुकेल्तानु। रावण सहितंगा लंकनु पेल्लगिंचुकोनि पोगल शक्ति नाकु वुंदि।'' अर्थात् आपको भुजाओं पर बिठाकर सागर लाँघकर ले जाकर राम के पास खड़ा करूँगा। रावण सहित पूरी लंका को नष्ट करूँगा। ऐसी शक्ति मुझमें है। ऐसा कहने पर सीता बड़ी सूझबूझ के साथ हनुमान को जवाब देती है। मोल्ला ने इस प्रसंग का बहुत सुंदर चित्रण किया है–

नीवंत वाडवगुदुवु
नी वेंट नेवत्तुनेनि नेगदवु कीर्तुल
रावणुनि कन्न मिक्किलि
भूवरुडे दोंगयंडु बुधसुत चरिता।

अर्थात् हे हनुमान तुम्हारे बल पर मुझे विश्वास है। तुम मुझे ले जा सकते हो। अगर मैं तुम्हारे साथ आऊँगी तो लोग क्या समझेंगे। लोग यही समझेंगे कि रावण से भी हनुमान बड़ा चोर है। चोरी से सीता को लंका से ले गये। समझेंगे। इसलिए यह उचित नहीं है। मोल्ला का यही विचार है कि श्रीराम के द्वारा रावण संहार के बाद ही सीता को लंका से ले जाना उचित है। यहाँ पर 'बुधसुत चरित' का मतलब पंडितों से प्रशंसित है। हनुमान तुम भी पंडित हो, सोच लो। ऐसा भाव निकलता है। इस प्रकार के भाव में अधिक औचित्य दिखाई देता है।

उसी प्रकार हनुमान राम के द्वारा भेजी गयी अँगूठी को सीता को समर्पित करके फिर राम को देने के लिए सीता के शिरोरत्न को देने की प्रार्थना करते हैं। दानव माया और धोखे से प्रताड़ित सीता शीघ्र हनुमान विश्वास नहीं करती है। अपने शिरोरत्न को देने में सोचती है। तब हनुमान सीता के शक को दूर करने के लिए अपने निजत्व को सिद्ध करने के लिए अपने निज रूप को दिखाता है। ''चुक्कलु तलपूवुलुगा नक्कजमुग मेनु पेंचि अंबर वीथिन वेक्कसमैं चूपेट्टडं'' अर्थात् हनुमान अपने शरीर को ऐसा बड़ा किया कि तारे उनके सर के फूलों जैसे लगने लगे। आकाश मार्ग में अपना शरीर का विस्तार करके सीता को आश्चर्य में डाल दिया। तब जाकर सीता हनुमान पर विश्वास करती है।

7. इन सबके अतिरिक्त सुंदरकांड की वर्णन-शैली पाठकों को बाँध कर रखती है। हनुमान जितेंद्रिय, प्रज्ञावान है। वायु सुत को सीतान्वेषण ही मुख्य कार्य है। इसलिए समयोचित एवं संदर्भोचित हनुमान ने राम का कीर्तन किया। जिससे सीता को विश्वास हो जाये। राम को लेकर मोल्ला ने हनुमान से कहलवाया है–

नील मेघच्चाय बोलु देहमु वाडु
धवलाब्ज पत्र नेत्रमुलवाडु

कंबु सन्निभमैन कंठंबु गलवाडु
चक्कनि पीन वक्षंबु वाडु
तिन्ननै कनुपट्टु दीर्घबापलु वाडु
घनमैन दुंदुभि स्वनमुवाडु
पद्मरेखलु गल्गु पदयुगंबुल वाडु
बागैन यट्टि गुल्फमुल वाडु

(अर्थात, इस पद्य में श्रीराम के शारीरिक सौंदर्य का चित्रण किया गया है। नील मेघ श्याम रंगवाले, धवल कमल जैसे नेत्रवाले, शंख की तरह कंठवाले, विशाल छाती वाले, दीर्घ नेत्रवाले, पद्म की पंखुड़ियाँ जैसे चरणवाले)—इस प्रसिद्ध छंद के साथ-साथ—

निडुद पेन्नेरि वेणि जडलुगा सवरिंचि
मलिन जीर्णांबरं बोलिय गट्टि
भूमि रजंबु विभूति पूतग बूसि
तन पतिमूर्ति जित्तमुन निल्पि—

छंद में भी श्रीराम के सौंदर्य का चित्रण है। अशोक वन रावण अपने वैभव का बखान करके सीता को भ्रम डालने की कोशिश करने पर सीता अपने राम के बारे में बोलती है—

अलकेश्वरुंडु पायनमुगा निच्चिन
यंचित चीनि चीनांबरमुलु
दिविजाधिनाथुंडु दिन दिनंबुनु निच्चु
पारिजातोल्लसत्प्रवर्तनवमुलुनु—

जैसे छंदों में मोल्ला कवयित्री की वर्णन शैली का पता चलता है। वर्णन की निपुणता, शब्दार्थ का संबंध, कल्पना चातुर्य आदि अत्यंत सुंदर बन पड़े हैं। इन वर्णनों में कहीं-कहीं नाटकीयता भी है। उदाहरण के लिए सागर लाँघनेवाले हनुमान का सुंदर एवं सजीव चित्रण मोल्ला ने किया है—

मोगम बिगिंचि, पादमुलु मोत्तमुगा वडनूदि त्रोक्किनी
टुग मोगमेत्ति, भीकर कठोर रवंबुननार्चि, बाहु ल
त्यगणित लीलनुंचि, वलयंबुग वालमुद्रिप्पि, व्रेगुनन
नगमु सगम्मु ग्रूंग गपिनाथुडु निंगिनि दाटे रिव्वुनन।

(अर्थात् चेहरे को सिकोड़कर, चरण बल के साथ स्थापित करके, सर ऊपर उठाकर, और भयानक आवाज के साथ चीखकर, बाहुओं को फैलाकर, वृत्ताकार में पूँछ को हिलाकर अति वेग के साथ पहाड़ से आकाश की तरफ छलाँग लगाये) स्पष्ट है कि हनुमान का आकाश में उड़ना और उड़नेवाले हनुमान के रूप का सहज वर्णन मोल्ला ने किया है।

मोल्ला रामायण के सुंदरकांड में शब्द-सौंदर्य, पद-योजना, अर्थ रमणीयता, अनुप्रास, पद प्रयोग आदि सुंदरकांड को और सुंदर बना डालते हैं। चतुरंग बलों से युक्त सुंदर लंका नगर का वर्णन करते समय हनुमान को 'साहसवान' कहकर संबोधन किया गया है। 'रामुन गीमुन' जैसे युगल

प्रयोग 'दय्यालकु बलिवेट्टेद', 'कय्यमुनकु कालु दुव्वु', 'निवुरु गप्पिन निप्पु' जैसे मुहावरेदार प्रयोगों ने काव्य को अतिसुंदर बना दिया है।

इस प्रकार मोल्ला रामायण का सुंदरकांड अनेक विशिष्ठ प्रयोगों के साथ अद्भुत वैशिष्ट्य के साथ पाठकों के सामने आता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तेलुगु साहित्यमु लो रामकथा : कुमारी पंडा शमंतकमणि।
2. द्विपद रामायणमु भारती : जे.वी. सुब्बरायुडु।
3. श्रीमद्रामायणमु, राष्ट्रीय संगोष्ठी (13-14, नवंबर, 2007)।
4. श्री सुंदरकांड प्राशस्तमु, पारायण पारायण विधानमु : श्री गोपराजु वेंकट रमण।

श्री कोदंड राम मंदिर की रामायण शल्पकलाएँ ओंटिमिट्ट

डॉ. बट्लूरि उषाराणी

विष्णु के दशावतारों में रामावतार एक है। विष्णु के दशावतारों में राम और श्रीकृष्ण अवतारों में मानवाकार में विष्णु नजर आते हैं। मानवोचित कार्य भी करते हैं। महाभारत और रामायण पुराणों में श्रीराम का प्रस्ताव दिखाई पड़ता है। मुख्य रूप से गुप्तों के समय के मंदिरों में रामायण और भागवत से संबंधित अनेक चित्रों एवं दृश्यों को देख सकते हैं।

दक्षिण भारत देश में विशेषकर तेलुगु और तमिल भाषाएँ जहाँ बोली जाती हैं राम मंदिर अधिक निर्मित हुए हैं। नये मंदिरों की तुलना में पुराने मंदिर कम ही हैं।

तेलुगु बोली जानेवाले राज्यों आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में दो प्रसिद्ध राम मंदिर हैं। एक भद्राचल में दूसरा आंध्र प्रदेश के ओंटिमिट्ट में स्थित राम मंदिर है। आज इन दोनों प्रदेशों में लगभग 30 मंदिरों में रामायण से संबंधित विविध प्रसंग और चित्र मंदिरों के प्राकारों पर, दीवारों पर, गोपुरों पर, खंभों पर चित्रित देखे जा सकते हैं।

आंध्र प्रदेश के कडप जिले के ओंटिमिट्ट गाँव में स्थित राम मंदिर के इतिहास संबंधी खोज करने पर पता चलता है कि यह मंदिर विजयनगर राजाओं के समय में निर्मित हुआ है। विजयनगर राजा कंपरायुलु अपनी सेना से इस प्रदेश पर आक्रमण करने पर ओंटोडु (अकेला), मिट्टोडु (ऊपर पहाड़ी पर रहनेवाला) नामक दो व्यक्तियों ने सेना की प्यास बुझाने के लिए यहाँ के पुष्कर को दिखाया था। कंपरायलु और उनकी सेना उस पुष्कर में अपनी प्यास बुझाने के बाद उनकी याद के लिए वहाँ एक गाँव और मंदिर का निर्माण करवाया। वही ओंटिमिट्ट और ओंटिमिट्ट का राम मंदिर है।

पुराणों के अनुसार त्रेता युग में (सीतापहरण के समय) जांबवंत अपनी सेना के साथ सीता की खोज करते हुए इस प्रदेश (दंडकारण्य-ओंटिमिट्ट) से होकर यात्रा करके सीता, राम और लक्ष्मण की मूर्तियों को यहाँ स्थापित किया। इसलिए इस मंदिर को 'दंडकारण्य क्षेत्र' या 'एकशिला नगर' नाम से पुकारने लगे हैं।

स्थल पुराण के अनुसार ओंटोडु और मिट्टोडु नामक दो राम भक्त चोर अपनी कमाई को यहीं पर छिपा कर रखते थे। एक दिन श्रीराम के दर्शन से वे दोनों वहाँ शिलाएँ बने हैं। इसलिए उनके नामों के साथ 'ओंटिमिट्ट' के रूप में उसका नाम पड़ गया है।

16 वीं सदी के इस मंदिर का विकास विजयनगर राजाओं के और मट्ल राजाओं के समय में हुआ है। गर्भालय, आंतरिक प्रदेश, मंडप और मंदिर के अन्य मंडप बनाये गये हैं। उनमें 32

खंभोंवाला महामंडप और प्राकारों पर रामायण और महाभागवत गाथाओं के चित्रों को अद्भुत शिल्प कलारूपों में निर्मित किया गया है। इस श्री कोदंड रामालय (ओंटिमिट्ट) से संबंधित पहला शिला शासन ई.1555 समय का है। इसे गाँव का मुखिया कल्लूरी लिंगय्या ने बनवाया था। श्री देवराय के दरबार के अष्टदिग्गज कवियों में एक अय्यलराजु राम भद्रुडु इस प्रदेश के ही माने जाते हैं। सन् 1652 में फ्रेंच यात्री टावेर्निक ने इस मंदिर का दर्शन करके उसके वैभव की प्रशंसा की है। प्रसिद्ध कवि बम्मेर पोतना ने तेलुगु में भागवत की रचना इसी गाँव में की है। साथ ही इस मंदिर के श्रीराम को ही समर्पित किया था।

ओंटिमिट्ट श्री कोदंड रामालय के दर्शन करने से मंडप के खंभों पर और प्राकारों पर अनेक रामायण प्रसंग शिल्प कलारूपों में चित्रित हैं। उनमें कुछ प्रमुख रूपों का परिचय निम्नांकित है।

महर्षि विश्वामित्र के दशरथ के साथ हुआ संभाषण, सप्त शर भंजन, श्रीराम के द्वारा अपनी अँगूठी को हनुमान को देना, सीता राम के अभय को प्राप्त करनेवाला हनुमान, संजीवनी जड़ीबूटी से हनुमान, कालनेमि नामक राक्षस की रोक, राम सेतु निर्माण के लिए हनुमान के प्रयास आदि उनमें कुछ मुख्य प्रसंग हैं।

उनमें पहला दशरथ से अपने यागों की रक्षा के लिए विश्वामित्र राम और लक्ष्मण की प्रार्थना करने का प्रसंग है। राम और लक्ष्मण को अपने साथ भेजने की प्रार्थना करते हैं। इस संदर्भ का चित्र चित्रित है। इसमें दशरथ और विश्वामित्र का एक-दूसरे के सामने बैठकर बात करने का चित्र बनाया गया है। बगल में राम और लक्ष्मण हैं। दोनों अपने हाथों में धनु और बाणों को लेकर खड़े हैं। दोनों अंजली मोड़ कर नमस्कार करने की मुद्रा में बहुत ही विनयशील नजर आते हैं।

'सप्त शर भंजन' प्रसंग भी महामंडप के ऊपर चित्रित हुआ है। इस शिल्प कला में राम ने सात वृक्षों को अपने एक बाण से गिराने की कोशिश की है तो आड़ में आये एक साँप के पूँछ पर अपने बाएँ पैर से दबा रखकर बाण को छोड़ा है। ऐसा दिखाया गया है। इस प्रकार का चित्र तिरुपति के श्री कोदंड राम मंदिर के रथ पर चित्रित चित्र में भी देखा जा सकता है।

(सप्त तल भंजन-वाल्मीकि रामायण)

एक और खंभे पर श्रीराम का अपने परिचय के हनुमान को अपनी अँगूठी देने का चित्र अंकित है। इस शिल्प कला में श्रीराम के सामने हनुमान घुटनों पर बैठकर, सीता को अपनी पहचान का कोई प्रतीक देने की प्रार्थना कर रहे हैं। राम के बगल में लक्ष्मण (धनु) बाण को धारण करके अंजली मोड़कर खड़े हैं।

एक खंभे पर श्रीराम, सीता सुखासीन होकर बैठे हुए हैं, हनुमान उनके सामने घुटनों पर बैठे हुए हैं। श्रीराम हनुमान को अभय देते दिखाई पड़ते हैं। यह संदर्भ रावण से युद्धोपरांत सीता की भेंट से संबंधित है।

इस मंदिर की अन्य जगहों पर अंकित रामायण अन्य शिल्प कलाओं में कुछ और प्रसंग हैं जो अन्य मंदिरों में नजर नहीं आते हैं। उनमें एक हनुमान के द्वारा संजीवनी जड़ी को श्रीराम को देना है। यह प्रसंग महामंडप के प्राकार की दीवार पर (पूरब दिशा में) तीन भागों में दिखाई पड़ता है।

उसके पहले भाग में लक्ष्मण के युद्धभूमि में बेहोश होने के संदर्भ का है। यहाँ सुग्रीव से हनुमान बोलते दिखाई पड़ते हैं। हनुमान लक्ष्मण के प्राणों को बचाने के लिए हिमालयों से मृत संजीवनी जड़ी बूटियों को लाने की बात कह रहे हैं जैसा चित्रित किया गया है।

दूसरे भाग में लक्ष्मण (बेहोश होकर) राम की गोद में रहते हनुमान संजीवनी जड़ी को देनेवाले प्रसंग का चित्रण है।

तीसरे भाग में लक्ष्मण की सहायता करने के लिए श्रीराम हनुमान को गले लगाते दिखाई पड़ते हैं। उनके बगल में बेहोशी से होश में आये लक्ष्मण पूर्ण स्वस्थ होकर दोनों को कृतज्ञता स्वरूप हाथ जोड़कर नमस्कार करने का चित्र है।

वाल्मीकि रामायण के आधार में आये रंगनाथ रामायण और भास्कर रामायण दोनों ने भी हनुमान के कालनेमि नामक राक्षस पर आक्रमण करने का चित्रण किया है। ये दोनों विरल दृश्य मंदिर में दर्शन देते हैं। इसमें बेहोश लक्ष्मण की रक्षा के लिए हनुमान हिमालयों की द्रोणाद्रि से संजीवनी जड़ियों को लाने के लिए गये मार्ग में कालनेमि के रोकने को छह भागों में चित्रण किया गया है।

पहले भाग में रावण की आज्ञा से हनुमान को रोकने आये कालनेमि एक मुनि का रूप डालकर, जपमाला के साथ योगासीन होकर पर्णशाला के पास है ऐसा इस चित्र में अंकित है। उसके सामने हनुमान अंजली जोड़ते दिखाई पड़ रहे हैं। बाकी दोनों भागों में वन देवता वर्णन शरीर से उद्भूत पहला भाग, शेर दूसरा भाग हाथी के रूपों में वह वनदेवता दिखाई देती है। उसके विवरण को देखने से हनुमान संजीवनी के लिए यात्रा कर रहे हैं। अपनी प्यास को बुझाने पास की पर्णशाला में जाकर मुनिरूप धारी कालनेमि की सलाह में सरोवर में जाता है। वहाँ का मगर उसे पकड़ता है। तब मगर का शाप विमोचन होकर वनदेवता बनने का वर्णन है। उसके बाद के भाग में हनुमान अपने दोनों हाथ जोड़कर मुँह खोलकर कालनेमि के ऊपर कूदने को तैयार होने का दृश्य अंकित है। बाकी भागों में हनुमान कालनेमि को दबाने का, कालनेमि पहले पक्षी के रूप में, बाद में बाघ के रूप में बनने के दृश्य अंकित हैं। हनुमान अपने को मारने के लिए कालनेमि के द्वारा प्राप्त विविध रूपों को आश्चर्य के साथ देखते रहने के चित्र दिखाई देते हैं।

इस मंदिर की अद्भुत एवं अपूर्व शिल्प कलाओं में एक और राम सेतु है। हनुमान सागर को लाँघने के लिए पत्थरों को लाकर सेतु बना रहे हैं। यहाँ हनुमान एक बड़े पत्थर को सर और एक और पत्थर को पूँछ पर लाद कर ला रहे हैं, ऐसा दर्शन देता है।

उपर्युक्त रूप में अनेक अद्भुत एवं सुंदर शिल्पकलाएँ और उनसे संबंधित दृश्य श्री कोदंड राम मंदिर में हमें स्पष्ट दिखाई देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कल्पना देशाय, इकानोग्राफी आफ विष्णु, नयी दिल्ली, 1973।
2. टी.ए.श्रीनिवासन, ए हांड बुक आफ साउथ इंडियन इमेजेस, तिरुपति।

ताल्लपाक अन्नमय्या के संकीर्तनों में श्रीराम

डॉ. कोणिदल शोभा

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं।।

यह गीताचार्य का प्रवचन है। जब-जब धर्म की हानि होती है अधर्म फैल जाता है तब-तब मैं अपने आपको सृजन करके अवतार लेता हूँ, यह इस श्लोक का सारांश है। यह भगवान के द्वारा भक्तजनों को दिया गया अभय है। इसी रूप में भगवान ने देश काल परिस्थितियों के अनुकूल कई अवतार लिए। अवतार अलग होने पर भी लक्ष्य एक ही है। वही दुष्ट दमन और शिष्ट रक्षण। यह दुष्ट दमन और शिष्ट रक्षण आशय को आचरण करनेवाले अवतारों में रामावतार एक है।

वेद पुरुष श्री महाविष्णु दशरथ के पुत्र दाशरथी के रूप में अवतार लेने पर, साक्षात वेद वाल्मीकि हाथों से रामकथा के रूप में पैदा हो गया। यह वेद पुरुष और अत्युत्तम मानव धर्म को निभानेवाले श्रीराम की शुभ चरित है। वही श्रीमद्रामायण है। प्राचीन भारतीय संस्कृति को परावर्तित करनेवाला काव्य है। किस प्रकार के व्यवहार और आचरण से मानव उत्तम मानव बनता है, बतानेवाला काव्य है। मानवता को गृह धर्म, समाज धर्म को प्रबोध करनेवाला महेतिहास भी रामायण ही है। मानव समाज जिस रूप में उत्तम मानव धर्म बनता है, समाज किस रूप में सुख संतोष के साथ रह सकता है, इसके लिए क्या करना चाहिए, मानव अपने जीवन में सार्थकता किस रूप में प्राप्त कर सकता है, सत्य, धर्म, त्याग, शांति आदि मानव को किस रूप में उन्नत बना सकते हैं, रामायण अत्यंत रमणीय ढंग से प्रस्तुत करता है। आज मानव समाज का सामना करनेवाली अनेकानेक समस्याओं का समाधान भी रामायण बता सकता है। सभी कालों, सभी समाजों के लिए गमन और लक्ष्य को भी रामायण प्रदान कर सकता है।

वाल्मीकि रामायण को आधार बनाकर भारतीय भाषाओं में सारी प्रक्रियाओं में रामकथा विशेष रूप से रची गयी है। रामकथा किसी न किसी विशेष रूप में प्रस्तुत करना ही अपने जीवन की सार्थकता के रूप में कवि मानते हैं। उसी का परिणाम है अपार रामकथा साहित्य। उस में भी अत्यंत सरल रूप कीर्तन साहित्य है। कीर्तन साहित्य सामान्य जनता का अतिसुलभ साधन है। पद्य के शासन काल में संकीर्तन को महत्त्व देकर सामान्य जनता को भक्ति तत्व को प्रबोध करनेवाले प्रजा कवि, 32 हजार संकीर्तन रचकर श्री वेंकटेश्वर को समर्पित करनेवाले प्रथम तेलुगु वाग्गेयकार, संगीत में साहित्य को मिलाकर पदरचना के द्वारा जनता में चेतना लानेवाले संकीर्तनाचार्य ताल्लपाक

अन्नमाचार्य हैं। सिर्फ पद ही रचकर पद्य कवियों से किसी भी रूप में कम नहीं हाँकनेवाली कविता रमणीयता से, वर्णन निपुणता से, आलंकारिक शैली विन्यास से, व्यंग्य, चमत्कार, मांडलिक शब्द प्रयोग से, जनता की भाषा में कविता लिखकर पद कविता वैशिष्ट्य का निरूपण करनेवाले पद कविता पितामह ताल्लपाक अन्नमय्या हैं। अपने संकीर्तनों के द्वारा प्रस्तुत रामकथा को, तथा उसके वैशिष्ट्य को और श्रीराम के कल्याण गुणों को स्पष्ट करना ही प्रस्तुत लेख का लक्ष्य है।

आंध्रों का आराध्य देव अगर श्रीराम हैं तो आंध्रों का प्रिय कवि अन्नमय्या हैं। अपने संकीर्तनों से भक्ति साम्राज्य पर शासन करनेवाला कवि अन्नमय्या हैं। हरि पाद युक्त बनकर हरि के दर्शन करनेवाले भक्त श्रेष्ठ अन्नमय्या हैं। इनके कीर्तनों में श्रीराम के प्रति एक स्थिर विश्वास और उत्साह दिखाई पड़ता है। अन्नमय्या संकीर्तनों में कोई कथाक्रम दिखाई नहीं पड़ता है। स्तोत्र की तरह कथांशों को यत्रतत्र सूचित किया जाता है। अन्नमय्या ने कभी संदर्भ के अनुसार कभी गुणों के अनुसार श्रीराम का कीर्तन किया है।

अन्नमय्या संकीर्तनों में श्रीराम को तथा श्री वेंकटेश्वर को अभेद मानते हुए श्रीराम को ही श्री वेंकटेश्वर के रूप में तथा श्री वेंकटेश्वर को श्रीराम के रूप में चित्रण किया गया है। अपने संकीर्तनों के माध्यम से रामायण सारांश को, श्रीराम के गुणगान, महिमाओं, विविध पुण्य क्षेत्रों में स्थित राम की दिव्य महिमाओं को, रामायण पठन फलश्रुतियों को बहुत सुंदर ढंग से अन्नमय्या ने प्रस्तुत किया है।

एककांड की कथा को या अनेककांडों की कथा को एक ही संकीर्तन में प्रस्तुत कर सकने की पांडित्य प्रतिभा अन्नमय्या की है। श्रीमद्रामायण के 24 हजार श्लोकों के सार को दस, पंद्रह वाक्यों में बताकर अन्नमय्या ने अपनी प्रतिभा का निरूपण किया है। ऐसे संदर्भ उनके अनेक संकीर्तनों में दिखाई देते हैं।

''रामुडिदे लोकाभिरामुडितडु
गोमुन परशुराम कोप मार्चेनटरे''

(अर्थात् ये राम हैं लोकाभिराम हैं, आसानी से परशुराम के कोप को बुझानेवाले राम हैं।)

श्रीराम के ताटकी को मारने से लेकर रावण को मार कर सीता को वापस लाने तक हुई रामकथा को अत्यंत रमणीय ढंग से प्रस्तुत किया अन्नमय्या ने।

विविध प्रदेशों में विविध पुण्य क्षेत्रों में विविध नामों से प्रचलित श्रीराम का परिचय हमें देते हुए भक्ति भाव को प्रचारित करनेवाले संकीर्तनाचार्य अन्नमय्या हैं।

''इंदुलोने कानवच्चु, इतडु दैवमनि
विंदुवले नोंटि मिट्ट वीर रघुरामुनि''

(अर्थात् यहीं दिखाई पड़नेवाले, ये ही भगवान हैं, ये ही ओंटिमिट्ट में स्थित वीर राघव मूर्ति हैं) ऐसा प्रस्तुत होनेवाले संकीर्तन में कडप जिले में स्थित ओंटिमिट्ट में विराजमान श्री वीर राघव का परिचय देते हैं। उस वीर राघव की महिमाओं, साहस कृत्यों, भक्ति तत्व का वर्णन किया है। साथ वाविलि पाटि में बसे वीर विजय राम की महिमा को भी कुछ और संकीर्तनों में प्रस्तुत किया है। उसी रूप में–

''सीता रमणवो श्रीराम चन्द्र
दात लक्ष्मणडवे तग्गु रामचन्द्र''

संकीर्तन में दासरि पल्ले में बसे सीता लक्ष्मण समेत श्रीराम के बारे में बताते हुए उनके सौंदर्य, शक्तियों का वर्णन करके धन्य हुए अन्नमय्या। यहाँ पर बार-बार रामचन्द्र रामचन्द्र कहकर स्वयं राम से बात करने की अनुभूति को प्रस्तुत किया है अन्नमय्या ने।

श्रीराम को प्रचलित करनेवाली प्रवृत्ति आश्रित जन-रक्षा के बारे में अन्नमय्या ने अनेक रूपों में बताया है। दमन कर सकनेवालों को भी अपनी दया गुण से क्षमा करके रक्षा करने की सामर्थ्य सिर्फ श्रीराम में ही है। कितना बड़ा शत्रु क्यों न हो उनके आश्रय में शरणागति करने से, भले ही उसके द्वारा अपने को कुछ भी हो जाये, सब भूल कर वे रक्षा करते हैं।

''स्वामी द्रोहियैन चंडि राणासुरुडु
कामिंचि शरणंटेनु काचेनंटिवि
येमनि नीदया येंदु नेंतनि नी महिमेंत
आ माटकु सरियौनखिल वेदमुलु
दावति सीताद्रोहमु दलचि काकासुरुडु
कावुमनि शरणंटे गाचितिवि
ईवल नी शरणने इंदु सरे तपमु।''

(अर्थात् स्वामी द्रोहि चंडि राणासुर की शरण में आने से क्षमा किया, आपकी महिमा अपार है, सीता के प्रति द्रोह करनेवाले काकासुर शरण में आने से उसकी रक्षा की हो, आपकी महिमाओं को और क्या बखान करूँ) इस संकीर्तन में शरण में आनेवाले विविध राक्षसों को क्षमा करके छोड़ने की उनकी प्रवृत्ति का कीर्तन किया है। रावण अगर शरण में आता तो उसकी रक्षा भी करते। काकासुर की रक्षा उसी रूप में की है। तुम्हारा दया गुण बहुत प्रशंसित है। आपकी शरणागति बड़े तप के समान है। ऐसे अन्नमय्या ने हार्दिक रूप से श्रीराम की प्रशंसा की है।

'एक ही वचन, एक ही बाण, एक ही पत्नी' इस सूक्ति के लिए श्रीराम प्रचलित हैं। श्रीराम वचनों का पालन करनेवाले हैं। एक ही बाण से शत्रुओं का नाश कर सकने वाले हैं। जीवन भर सीता को ही पत्नी के रूप में पाया है। श्रीराम के व्यक्तित्व के लिए एक पत्नीव्रत मिसाल बन कर रह गया है। परिवार को, समाज को शांति और प्रयोजन पहुँचानेवाला व्यक्तित्व श्रीराम का है। उस धर्म को हमें भी पालन करना चाहिए ऐसा संदेश अन्नमय्या ने अपने संकीर्तनों के द्वारा घोषित किया है। इससे अलग रावण बाण अमोघ है। ''बापु बापु राघव नी प्रताप मेमनि चेप्प'' (अर्थात् रक्षा रक्षा करो आपके प्रताप की बात क्या कहूँ) वाले संकीर्तन में रावण की शक्ति और युक्ति के बारे में बताया है।

'धर्म की रक्षा मेरा प्रथम कर्तव्य है' कहकर और आचरण करके दिखानेवाले शासक श्रीराम की प्रार्थना करते और प्रश्न करते अन्नमय्या ने कई संकीर्तन रचे हैं।

ना रावणुनि तललु नरिकिनलावरिवि
नेडु ना पापमुलु खंडिंचरादा,

वाडि प्रतापमु तोड़ वारिधि गट्टिन नाटि
वाड विट्टेना मनोवार्दि गट्टरादा।

(अर्थात् तब रावण के सर काटकर संहार करनेवाले आज मेरे पापों को दूर क्यों नहीं करते। अपने प्रताप से सेतु बनानेवाले मेरे मन रूपी सागर पर सेतु नहीं बना सकते।) उस समय कुंभकर्ण जैसे राक्षसों को मार सकनेवाले आप मेरी इंद्रियों पर मुझे विजय नहीं दिला सकते। तब आप शिव धनु को उठाकर उसे झुकाया क्या आज मेरे दुर्गुणों को नहीं झुका सकते हो। ऐसा प्रश्न करते हुए राम के उस समय साहस, बड़े-बड़े कार्यों की प्रशंसा करते हुए आज के मनुष्य के अंदर के दुर्गुण, पापों को, इंद्रिय निग्रह, मन आदि को वश में रखने की शक्ति को मनुष्य को दिलाने की कोशिश अन्नमय्या ने अपने संकीर्तनों के माध्यम से करने का प्रयत्न किया। दुष्टों से ही नहीं बल्कि अपने अंदर के दुर्गुणों से मुक्ति के लिए भी एक मात्र आश्रय श्रीराम हैं। इस सत्य का उद्घाटन अन्नमय्या ने अपने संकीर्तनों के माध्यम से किया है।

सुग्रीव, विभीषण, अहल्या आदि को अभय देनेवाले श्रीराम के कारुण्य को अन्नमय्या ने अपने संकीर्तनों में कई जगह बहुत सुंदर ढंग से चित्रण किया है।

श्रीराम पर भक्ति भाव के उठने पर, उनके रमणीय कथा को श्रुतिमाधुर्य रूप में प्रस्तुत करने की इच्छा पैदा होने पर प्राप्त अनुभूति, आवेश को अन्नमय्या ने कई रीतियों में अपने संकीर्तनों में व्यक्त किया, ऐसे प्रमाण प्राप्त होते हैं।

''नमो नमो दशरथ नंदन रामा कमनिय्य याग भाग कर्त रामा'' वाले संकीर्तन में सिर्फ संबोधनों के माध्यम से ही श्रीराम को अपने मन भर पूजा करके अपने को धन्य बनाया अन्नमय्या ने।

साधारणतया एक बार एक के लिए अच्छा करने वाला काम दूसरे के लिए बुरा भी कर सकता है। लोक में एक शुभकार्य सम्पन्न होने पर वह दूसरों को अशुभ पहुँचा सकता है। ऐसे अंशों को ही अन्नमय्या ने अपने रामायण गान में कथा वस्तु के रूप में लेकर प्रमाणित किया है।

''नूतुलु दव्वग बोते बेतालमुलु पुट्टे
कातालपु लोकुलाल, कंटिरा ई सुद्धुलु।''

नामक संकीर्तन में पुत्र पाने के लिए दशरथ ने पुत्र कामेष्टि की है तो लंका के लिए वह बुरा हो गया है। राम के अवतार लेने पर राक्षसों के लिए वह बुरा हो गया है। सीता का विवाह शिव धनु के लिए नुकसान पहुँचाया। सुग्रीव की भलाई वाली के लिए प्राण हानि हो गयी। विभीषण की बुद्धि के कारण रावण का सर कट गया। कहते बहुत ही चमत्कार के साथ अन्नमय्या ने भगवान की लीलाओं का चित्रण किया है।

''रामचन्द्रडितडु रघु वीरुडु
कामित फलमु लिय्यगलिगे निंदरिकि ।।रामचन्द्र।।
गौतम भार्य पालिटि काम धेनु वितडु
घातल गौशिकु पालि कल्प वृक्षमु
सीतादेवि पालिटि चिंतामणितडु

ईतडु दासुल पालि इहपरदैवमु
परग सुग्रीव पालि परमबंधुवितडु
सरि हनुमंतु पालि साम्राज्यमु
निरति विभीषण पालि निधानमु
गरिम जनकु पालि घन पारिजातमु
तलप शबरि पालि तत्वपु रहस्यमु
अलरि गुहुनि पालि आदि मूलमु
कलदन्न वारि पालि कन्नुलेदुटि मूरिति
वेलय श्री वेंकटाद्रि विभुडितडु।''

नामक इस संकीर्तन में अहल्या के लिए कामधेनु, विश्वामित्र के लिए कल्पवृक्ष, सीता देवी के लिए चिंतामणि, सुग्रीव के लिए इस लोक के बंधु, विभीषण के लिए आश्रय, जनकके लिए पारिजातमु, शबरी के लिए तत्व रहस्य, आस्तिकों के लिए आँखों के सामने का सगुण रूप श्रीराम ही हैं। वे श्रीराम ही श्रीवेंकटेश्वर हैं। अन्नमय्या के ये उच्च विचार, भक्ति-विभोर भाव अन्यथा दुर्लभ है। यह अन्नमय्या की भक्ति भावना का चरमोत्कृष्ट रूप है। श्रीराम के प्रति तथा श्री वेंकटेश्वर के प्रति उनकी भक्ति भावना का श्रेष्ठ उदाहरण है। वे श्रीराम और श्रीवेंकटेश्वर में अभेद को मानते हैं। संकीर्तन के आरंभ में उन्होंने श्रीराम का नाम लिया तो अन्त में श्रीराम को ही श्री वेंकटेश्वर संबोधित किया है।

गुह, सग्रीव अन्य वानर जैसे सामान्यों से श्रीराम ने स्नेह किया। वानर जाति का आदर किया। जातियों के बीच में एकता भाव को बढ़ाया। सब सुख शांति के साथ जीना चाहते हैं तो अहंकार रहित प्रेमानुराग के साथ जीना चाहिए ऐसी भावना राम ने सब में जगायी। अन्नमय्या ने अपने संकीर्तनों के माध्यम से इसी चेतना को जगाने की कोशिश की है।

युद्धों के दौरान आज भी सैनिकों में वीर रस संचार के लिए उन्हें वीर रस प्रबोध गीत सुनाते हैं। उसी पद्धति में अन्नमय्या ने राम को वानर सेना में चेतना जगाने को प्रोत्साहित करते दिखाने की कोशिश की है। 'जयमु मनदि वरचरुलारा' नामक संकीर्तन में इसी प्रकार का भाव है। इस संकीर्तन में अन्नमय्या ने संगीत ध्वनियों का प्रयोग किया है। राम वानर सेना के योद्धाओं से बोलते हैं। हे वानर वीर मंगलवाद्य बजाओ, विजय हमारी ही है। तिडिम-तिडिम बोलते सारी दिशाओं में आगे बढ़ो। जहाँ अधिक सेना है उसे यहाँ भेजो। ढम ढम ढम ढंके को बजाओ। धोखेबाज दानवों को मारो। धणम-धणम कहते किलों को पार करो। देखो वहाँ पेट पेट पेट ध्वनियाँ सुनायी पड़ रही हैं। रावण नीचे गिर गया। भम भम भम शंखनाद करो। धिम धिम धिम बोलते बलवान बनो। स्पष्ट है कि अन्नमय्या ने भम भम, धिम धिम जैसे संगीत शब्दों का प्रयोग करके वीर रस का पोषण किया है। श्रीराम को बड़े वीर के रूप में प्रमाणित किया है।

अन्नमय्या ने श्रीराम को वीर ही नहीं बल्कि एक बहुत सफल कार्यनिर्वाहक के रूप में दिखाने की कोशिश की है। निचले संकीर्तन में–

''भरत गोडुगु पट्टु भागालिम्मु शत्रुघ्न

सरुस लक्ष्मणुड विंजामरिडुमु
सोरिदि निलुचुंडुडु सुग्रीवांगदुलाल
वेरपुतो विभीषण विन्नपालु सेयनो''

कहते हुए राम के राजतिलक के समय अन्नमय्या देश विदेश-राजाओं को, वशिष्ठ, वामदेव, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, सुग्रीवांगद, हनुमान को कार्य करने के लिए एक-एक को एक काम सौंपते हैं। तब श्रीराम को एक अच्छह कार्यनिर्वाहक के रूप में पदकर्ता अन्नमय्या ने सिद्ध किया है।

राम के साहस और बड़प्पन को अन्नमय्या ने कई बार निरूपित किया है। लेकिन बार-बार कहने के बावजूद भी कहने के अलग ढंग के कारण सर्वथा वे नवीन लगते हैं। गाने की शैली को भी अन्नमय्या बार-बार बदलते हैं। प्रति राग में अपने वेंकट राम को प्रस्तुत करने की प्यास उनमें देख सकते हैं।

राम के जन्म के कारण वाल्मीकि को प्राप्त प्रयोजन, मारीच का कर्म, शूर्पणखा की बाधा, राक्षस स्त्रियों का वैधव्य, मंदोदरी का दुख आदि अनेक अंशों को अन्नमय्या ने अपने संकीर्तनों में स्थान दिया है। उसी प्रकार राम-हनुमान के सान्नित्य का सुमधुर संकीर्तनों में गान गाया है। उनकी कलम से निकले संकीर्तनों को परख सकते हैं—

अन्नियु नंदे युन्नवि अदिगो माट
येन्नुकोनि दिनमुलु इदिगो मूट

नामक संकीर्तन में राम के भेजने पर सीता के पास जाकर अँगूठी देकर सीता के द्वारा दी गयी शिरोमणि लाकर राम को देने वाले संदर्भ में अन्नमय्या ने हनुमान की भक्ति भावना का बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रण किया है।

श्री नवमी के दिन गाँव-गाँव में गली-गली में सीता और राम का विवाह करना आंध्र में अब भी चालू है। सारी जनता पूरे उत्साह के साथ सीता और राम का कल्याण करती है। उन दिव्य दंपति के आशीर्वाद से अपने जीवन को धन्य बनाती है। यह कल्याण जगद्विख्यात है, ताल्लपाक अन्नमाचार्य ने अपने संकीर्तनों में सीता राम के विवाह का वर्णन बहुत ही वैभवपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। सीता राम का विवाह पूरे तेलुगु संप्रदाय के अनुसार किया जाता है।

इस प्रकार श्रीराम की लोकोत्तर गाथाओं को, उनके माहात्म्य को, मारीच, कुंभकर्ण, रावणादि शत्रुओं की प्रशंसाओं को तेलुगु परंपरा के अनुकूल चित्रण करके अन्नमय्या ने यह साबित किया कि इसमें वे अद्वितीय हैं। उस देव देव पर श्री अन्नमय्या के द्वारा आलापित गीत संकीर्तन आंध्र के जन-जन में गूँज उठते हैं। शहद जैसा मिठास उन संकीर्तनों से रिसता है। रामभक्ति में इस शहद को डुबो कर अन्नमय्या ने आंध्र की जनता को पुलकित किया है। रामभक्ति की ओर उनको उन्मुख किया है। उज्ज्वल, उत्तम और उन्नत भविष्य के लिए युवा पीढ़ी में राम के आदर्शों का आचरण करके अपने जीवन को धन्य बनाने की प्रेरणा जगायी है।

लोक साहित्य : रामकथा

डॉ. राचपालेम पुरंधीश्वरी

''जनानाम पदम जानपदम'' (यानी लोक से संबंधित साहित्य लोक साहित्य है) लोक साहित्य की ऐसी परिभाषा है। लोक साहित्य, लोक जनता (जनपद, जानपद) आदि शब्दों का प्रयोग साधारणतया तेलुगु में प्रयोग किया जाता है। जनपद, जानपद आदि शब्दों के लिए तेलुगु में गाँव, पल्ले, ग्रामीण जनता आदि अर्थ हैं। 'जानपदुडु' शब्द के लिए मनुष्य, ग्रामवासी, गाँव में रहनेवाला जैसे अर्थ हैं। गाँव में रहनेवाला जानपद है। साधारणतया लोक जनता को सभ्यता से दूर रहनेवाले, अज्ञानी आदि के रूप में देखा जाता है। किंतु यह सही विचार नहीं है। गाँव में रहनेवाला ग्रामवासी हो सकता है। लेकिन अज्ञानी नहीं है। लोक साहित्य प्रत्येक भाषा-साहित्य की बुनियाद माना जाता है।

लोक जनता के जीवन विधान, आचार-संस्कार आदि से संबंध रखनेवाला प्रत्येक लोक साहित्य ही समझा जाता है। जानपदों की अनुभूतियाँ, चित्तवृत्तियाँ, आचार-व्यवहार उनके मन के दर्पण हैं। लोक जनता की भाषा और बातें सभ्यता से दूर रहने पर भी, नागरिकों के आदर-सत्कार से दूर रहने के बावजूद लोक साहित्य उच्च कोटि का होता है। अनुशीलन करने के लिए योग्य समझा जाता है। सृष्टि की मधुर स्मृतियाँ पहले लोक साहित्य में ही गूँजती दिखाई देती हैं। लोक जनता ने अपने अनुभवों को राग रंजित करके गेय रूप में साधारण जनता में प्रचारित किया है। वही लोक साहित्य बन गया है। यह उनके जीवन के साथ घुलमिल गया है। जीवन की सारी विशेषताएँ सहज ही उन के लोक साहित्य में परावर्तित हुई हैं। इसलिए लोक साहित्य लोक जनता के जीवन के काफी निकट दिखाई देता है। ऐसा पंडितों का विचार है। लोक साहित्य जनता की सम्पदा है। किसी भी प्रकार के नियम, गतिरोध, अधिकार के बिना सभी लोगों के लिए गाने योग्य और समझने योग्य साहित्य लोक साहित्य है। रचयिता के होते हुए भी अज्ञात ही है। लोक साहित्य सबके पास, सबसे पोषित होता है। लोक लेखक वस्तु की खोज नहीं करता है। बल्कि अपने आस पास के जीवन को ही वस्तु के रूप में ग्रहण करता है। पौराणिक, वीर रसपूर्ण, करुणात्मक गाथाओं को भी अपने साहित्य के लिए चुनता है। सामान्य जनता को आनंद देने के लिए उनके अनुकूल विषय ग्रहण करता है। प्राचीन वस्तु को लेने पर भी सामान्य जनता को दृष्टि में रखकर ही उसकी रचना करता है। इसलिए लोक साहित्य शैली ही जनता की अपनी शैली है।

आम जनता को आनंद देनेवाली किसी भी कथा को लेकर वह किसी भी समय की क्यों न हो लोक साहित्य रचा जाता है। क्योंकि लोक लेखक के लिए विषय प्रधान है समय और संदर्भ मुख्य नहीं है।

रामायण और महाभारत लोक जनता को अधिक प्रभावित करने पर भी उनमें भी रामायण गाथा ही उनको अधिक पसंद है। रामायण गाथा सुनने से ही लोक जनता का हृदय करुणा रस से भर जाता है। लोक जनता अपने पसंदीदा विषय या प्रसंग को लेकर अपने अनुकूल उसे बना लेती है। लोक साहित्य के विकास में रामकथा का अत्यंत उच्च स्थान है। पौराणिक गाथाओं पर सहज ही जनता की रुचि रहती है। इसलिए रामकथा लोक कवि गायकों को अत्यंत प्रिय बनी है।

तेलुगु लोक साहित्य को परखने से लगता है तेलुगु लेखक साक्षात सीता और राम को अपनी आँखों से देखा है। उनके कष्ट-सुखों को अपना मानकर उनसे तादात्म्य होते दिखाई देते हैं। आंध्रों के जीवन विधान, उनके आचार-व्यवहारों को प्रतिबिंबित करनेवाले आंध्रों के लोक साहित्य में रामायण कथाओं को गीतों के रूप में अवाल्मीकि प्रसंगों से भर कर आंध्रों ने हृदय रंजक बनाया है। लोक साहित्य में रामकथा का उच्चतम स्थान है तो लोक साहित्य के विकास में रामकथा ने भी बड़ा योगदान दिया है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इसके लिए नीचे वाले अंश ही प्रमाण हैं। इसमें कई स्तर की रचनाएँ देखी जा सकती हैं। कुछ पूरे रामायण को प्रस्तुत करनेवाले, कुछ आंशिक रूप से रामकथांशों को प्रस्तुत करनेवाली हैं। कूचिकोंड, धर्मपुरी, शारदा, मोक्षगुंड, सूक्ष्म, संक्षेप, गुत्तेन दीवि, अध्यात्म, चिट्टि रामायण आदि सम्पूर्ण रामकथा को लेकर लिखे गये लोक रामायण हैं तो श्रीरामुलदंडमुलु, रामायण गोब्बिपाट, श्रीराम जाबिलि, अडवि शांत पेंड्लि, सेतु गोविंद नामालु आदि रामकथा के विविध अंशों पर आधारित लोक रचनाएँ हैं। इनके अतिरिक्त जनता में अत्यधिक प्रचलित शांता कल्याण, पुत्र कामेष्टि, श्रीरामुल उग्गु पाट, रामकथा सुधार्णवमु, लक्ष्मण देवर मूर्छा, लंका यागमु, लक्ष्मण देवर नव्वु, उर्मिला देवी निद्रा, कुशलव कुच्चेल कथा, कुशलव युद्धमु, काशलायकमु, श्रीरामायण गानमु, राघव कल्याणमु, श्रीरामुल उग्गु पाट, सीता देवी वेविल्लु, पाताल होममु आदि कई गीत आंध्र में प्रचलित हैं। इन सभी में रामकथा के विभिन्न प्रसंग चित्रित हुए हैं।

रामकथा सुधार्णवमु

आंध्र के श्रीकाकुलम जिले के सुंदर नारायण कवि ने इस गीत को वचन में लिखा है। राम के राजतिलक के प्रसंग को मुख्य रूप से उन्होंने लिया है। लेखक शिक्षित होने के बावजूद भी जानपदों के स्वभाव के अनुकूल इसे रचा है। राक्षस रावण से ''तुम्हारा भाई एक पल में मारा जायेगा। अब तो तुम आँखें खोलो।'' उसी रूप में भास्कर रामायण के प्रसंग में भी इसे देख सकते हैं। 'अवनी नाथुल रक्त पुरमुल वलन्ना पोशनम बेत्ति' कहा है। इसमें भी राक्षस रावण को हित-बोध करते हैं। हितोपदेश करनेवाले विभीषण से रावण कहता है–''नीट पुट्टिन तामराकुलु नीटि कंटनट्लु कलियवु नी ना हृदयंबुलु कदु पापात्मुड़वगुट'' (अर्थात् जिस रूप में पानी में पैदा होनेवाले कमल के पत्तों पर पानी नहीं लगता है, उसी रूप में हमारे बीच में भी कोई विचार मिलता नहीं है। हमारे दोनों के हृदय अलग-अलग हैं। पापात्मा होते देखना पसंद नहीं करता।) विभीषण इस रूप में रावण को हितोपदेश देते हुए हताशा को जतलाता है। लगभग इसी प्रकार का लोक गीतों में भाव प्राप्त होता है–

“उदकमु नलिनी पत्रमु
गदिसियु नेरवैन यट्लु कलयवु नी ना
हृदयमुलु गज स्नानमु
तुदि मरि नीतोडि पोंदु दुष्ट चरित्रा।”

(अर्थात, जल और कमल का पत्ता दोनों देखने के लिए एक-दूसरे से लगे रहते हैं। लेकिन वे दोनों हमेशा अलग ही रहते हैं। उसी रूप में हम दोनों के हृदय देखने के लिए पास में हैं लेकिन हमेशा नहीं मिलते हैं। तुम्हारे साथ रहना दुष्टों के साथ रहना बराबर है।)

गोन बुद्धा रेड्डी ने अपने रंगनाथ रामायण में राम के द्वारा बचपन में गेंद खेल का चित्रण किया है। लोक जनता ने उसका वर्णन इस रूप में किया है–

“आयेड रघुरामु दाप्तुलु दानु
निंडारु प्रेमतो नेड्डुलु गट्टि
तरिमिदि माडेदु तरिनि दट्टुटयु
कट्खरामुड़ा कष्टंबु चेत।”

(अर्थात् श्रीराम अपने आप्तों के साथ प्रेम से गेंद खेल रहा है। जान बूझकर उस नारी पर नहीं मारा। खेल में ऐसा हो गया।)

कुशलव कुच्चल चरित्र

यह लंबा गीत है। इसमें रामकथा को पूर्ण रूप से कहा गया है। किसी स्त्री के द्वारा यह रचा गया समझा जाता है। क्योंकि सीता परित्याग को इसमें बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रित किया गया है। श्रीराम सीता पर दया न करके उसे दूसरी बार जंगल भेज देता है। इसके लिए धोबी और धोबिन का झगड़ा बहुत छोटा कारण है। किंतु यही सीता के वनवास का कारण बना है। किंतु लोक जनता ने कुछ और सोचा है। उनके अनुसार अपने भाई की मौत के बाद भी शूर्पणखा को राम पर मोह नहीं हटा। राम के पास जाकर वह कहती है। मैं तुझे देखने आयी हूँ। मेरे पास सारी विद्याएँ हैं। कई आकर्षण उसने राम को दिखाये। उसकी माया की बातें सुनकर लक्ष्मण ने उसे वापस भेजा। किंतु राम ने उसे सीता और शांता के पास भेजा। शांता ने उसे पसंद नहीं किया। किंतु सीता ने उसे अपने पास स्थान दिया। सेवा के बाद सीता ने उसे मणि-माणिक, रत्न, साड़ियाँ आदि दीं। फिर भी वह संतुष्ट नहीं हुई। रावण के चित्र खींचकर देने से मुझे तृप्ति होगी, वह सीता से कहती है। शांता ने भी इसका समर्थन किया। चित्र खींचकर देने की बात कही। किंतु सीता आश्चर्यचकित हो गयी। दस महीने रावण के पास रहने के बावजूद भी उसने रावण को नहीं देखा है। उसे जनक ही समझा। अब कोई रास्ता नहीं है। सीता ने रावण के अँगूठे का चित्र खींचकर दिया। शूर्पणखा ब्रह्मा के पास ले जाकर उस चित्र में प्राण डलवा लेती है। वह फिर उस चित्र को लेकर अयोध्या चली आती है। उसे सीता के सामने रखकर चली गयी। वह चित्र सीता को फिर एक बार लंका जाने की बात कहता है। इस बीच आखेट पर गये राम लौट कर आते हैं। सीता का चेहरा पसीने से

भीग जाता है। फिर भी साध्वी सीता अपने पति पर शपथ लेकर चित्र से कहती है–''हंसतूलिका तल्पम किंद इंद्र नीलमुल मीदिकि वेलगगा उंचिनदि।'' (राम के नाम को लेकर सीता देवी उस चित्र को चुपचाप पड़े रहने के लिए पलँग के नीचे रखती है) राम का नाम लेने के कारण चित्र चुप रहा। इसके बारे में अन्तःपुर में किसी ने भी राम से नहीं बताया। सीता भी नहीं बताती है। किंतु रात के समय राम सीता के साथ रहते समय वह चित्र राम के सामने आ जाता है। राम चित्र को देखता है। राम सोचता है कि स्त्रियों के मन पर विश्वास नहीं करना चाहिए। उनके मन में किस पर प्रेम रहता है पहचानना मुश्किल है। सीता की तरफ देखकर कहता है कि रावण पर इतना मोह है क्या। इतना स्नेह उसके प्रति है क्या। तब सीता भी कहती है कि मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। तब राम बोलता है कि ऐसा है तो चित्र खींचकर क्यों सामने रख लिया है। इसी का परिणाम सीता का परित्याग है, यह लोक कवियों का विश्वास है।

शांत गोविंद नामालु, पेंड्लि गोविंद नामालु, चरण गोविंद नामालु

इन तीनों में प्रत्येक पंक्ति के अन्त में 'गोविंदा' नामक मुकुट रहता है। इसीलिए इनको गोविंद नामालु कहा गया है। स्त्रियाँ मुख्य रूप से गोविंद नाम स्मरण करते हुए गीतागाना साधारण है। शांत गोविंद नामालु में भी शांत की भूमिका मुख्य है। इसकी कथा आकर्षणीय भी है। रावण का संहार करने देवताओं ने आदिलक्ष्मी से प्रार्थना करने पर आदिलक्ष्मी इसके लिए तैयार होती है। लोक जनता के ही शब्दों में–

भूमि मीदनु पुड्डुदुरु
भूमि मीद पेरुगुदुनु
जनकु निंट बुट्टि–

आदिलक्ष्मी बारह सालों के बाद मिलूँगी कह कर विष्णु से आज्ञा लेकर लंका के एक सरोवर में प्रवेश करती है। अडवि शांत गोविंद नामालु रचना में पंपा सरोवर प्रदेश के सरोवर के फूल मदन बाण बन जाते हैं। किसी भी फूल को देखने पर वह कमल के रूप में ही दिखाई पड़ता है। वह भी स्त्री के रूप में दिखाई देता है। श्रीराम के शोक को इसमें विशेष रूप से चित्रण किया गया है। इसमें मंथरा की बातों से ही कैकेय कठोर निर्णय करती है। मंथरा दुर्बुद्धि नारी के रूप में ही चित्रित हुई है।

शारदा रामायणमु

यह वाल्मीकि रामायण के सार के रूप में रचा गया है। उदाहरण के लिए श्रीराम के राजतिलक संबंधी गीत को देखा जा सकता है–

श्रीराम चन्द्रुनि चरितंबु
राम भक्त कवि चेप्पु कथनंबु
विनग विनग वेड्डुकनु मधुरंबु

(अर्थात् श्रीराम का चरित, रामभक्त कवि के द्वारा किये गये वर्णन बार-बार सुनने पर मधुर लगेगा।)

इससे अलग लंका में लंकापुरी वर्णन भी आकर्षणीय है। लंका में हनुमान इसका वर्णन करता है।

श्रीरामायण गान

यह वाल्मीकि रामायण से भिन्न कथा है। गीत के रूप में रचा गया है। इसमें मुख्यतया अहल्या के चरित का चित्रण है। अहल्या सुंदर स्त्री है। अधिक बार भूपरिक्रमा करनेवाले ही अहल्या का पति बनेगा। ऐसा ब्रह्म ने कहा था। सारे देवता इसके लिए तैयार हुए। सारे अपने वाहनों पर आरूढ़ होकर निकले। उनमें इंद्र भी है। नारद ने गौतम मुनि को बताया कि स्नान करके गो माता की परिक्रमा करने से काम बन जायेगा। गौतम मुनि ने ऐसा ही करके अहल्या के साथ विवाह किया। यह जानकर इंद्र को गुस्सा आया। इंद्र ने अहल्या पर अत्याचार करने का निर्णय किया। कुछ दिनों के बाद इंद्र गौतम मुनि के आश्रम जाकर सुबह होने के पहले ही मुर्गा बन कर बांग देता है। तब सूर्योदय हो गया समझ कर गौतम मुनि नदी स्नान के लिए निकलते हैं। तब इंद्र गौतम मुनि के वेश में आये। इंद्र कामातुर होकर अपनी इच्छा की पूर्ति करने के लिए अहल्या से प्रार्थना करता है। उसे इंद्र समझकर अहल्या अनेक रूपों में उसे समझाने की कोशिश करती है। अनेक उपदेश भी देती है। वह नाकामयाब होती है। तब अहल्या इंद्र को समझाना व्यर्थ समझकर, इंद्र को शाप देने की क्षमता रखते हुए भी इंद्र को शाप देने की जगह अपने आपको शिला बनने का शाप ले लेती है। यह जानपदों की नारी के प्रति आदर दृष्टि का परिचायक है।

लंका याग

यह एक अत्यंत प्रचलित लोक कथा गीत है। इसमें राम की कुछ विशेषताएँ हैं। इसमें सुमित्रा के चरित्र को उभारने की कोशिश की गयी है। राम के साथ लक्ष्मण भी वनवास के लिए निकलता है। कौसल्या कुछ नहीं कहती है। तब सुमित्रा लक्ष्मण से कहती है भाई की सेवा करके अपने जीवन को धन्य बनाओ। तुम राम को पिता के रूप में और सीता को माँ के रूप में देख लो। इस रूप में इसमें सुमित्रा के धीर शांत गुण को दर्शाया गया है।

मानुपारिन तीगमानु तप्पिन वेनुक मरि येट्लु
निल्वगलदू चमुरुलेनि दिव्वेयेंति कालमु दाक वेलिगेदी।

(अर्थात् वृक्ष पर चढ़नेवाली लता वृक्ष के तिरस्कार से कैसे उस पर चढ़ सकती है। तेल के बिना दीप कितने समय तक जल सकता है।) इन दृष्टांतों के साथ सुमित्रा लक्ष्मण को राम के प्रति सेवाभाव रखने का उपदेश देती है। इसमें सीता भी अपने संदेश को देखती है। वह राम के साथ जाने का निर्णय करती है। लक्ष्मण इसमें अपनी पत्नी उर्मिला से कहता है कि जीजा के मार्ग में साली को नहीं चलना चाहिए। इसलिए वह उर्मिला को रोकता है। उसे वनवास करने नहीं देता है। यह

आचार तेलुगु वालों का है। साली को जीजा से दूर रखने की परंपरा है। लोक कवियों ने उर्मिला को इसी रूप में रखा है।

सीता का अपहरण करने आया रावण बेहोशी सीता को स्पर्श किये बिना ''उदय शूलम तेच्चि गड्डु तो पेकलिंचि रधमु पै उंचिन विषयान्नि, आहा एमि पतिव्रता चायनैननु परपुरुषुडु ताक कुंडिन विषयमु'' बहुत बड़े शूल की सहायता से जमीन को ही चीरकर अपने रथ पर रख लेता है। यानी रावण अपहरण के समय सीता का स्पर्श तक नहीं कर पाता है। इस विषय को लोक कवियों ने बहुत सुंदर ढंग से इसमें चित्रित किया है। उसी प्रकार युद्ध क्षेत्र में लक्ष्मण बेहोश हो गया है। तब राम विलाप करता कहता है—''सीता जैसी पत्नी लोग प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन तुम जैसा भाई किसी को धरती में नहीं मिलेगा।'' कहता है। यह लोक कवियों की विशेष दृष्टि है।

'सीता घडिया' नामक गीत में तेलुगु वालों की बहू कैसे व्यवहार करती है, दर्शाया गया है। वह नित्य कैसे व्यवहार करती है, सास-ससुर की सेवा कैसे करती है, अपने पति अन्य लोगों के साथ कैसे व्यवहार करती है, दर्शाया गया है। शयन मंदिर में देर से जानेवाली सीता को देखकर राम ने गुस्सा किया। शयन मंदिर को बंद करके सो गया। नयी बहू सीता—

माम दशरथुलकु मडतलंदिच्चि
सुमित्र कैकलकु सरटीलु वेसि
परग कौसल्यकु पान्पुलु परचि
मज्ञनंबुलु जेसि पसुपुलु पूसि कोनि

(अर्थात् ससुर दशरथ की पलँग ठीक करके चटाई बिछाकर, सुमित्रा और कैक्रेयी को पान करवाकर, कौसल्या माँ चटाई बिछाकर, फिर अपना श्रृंगार करके) ये सारे काम करने में सीता व्यस्त थी। देर हो गयी। बहू अपने पति से अधिक घर के सदस्यों की देखभाल करती है। इस परंपरा को दिखाने लोक कवियों ने इस प्रसंग को रखा है।

भरपूर श्रृंगार करके शयनागार में घुसनेवाली सीता और राम के बीच में लोक कवियों ने श्रृंगार को भी अति सूक्ष्म एवं उत्तम रूप में किया है। कुंडी खोलने की कई बार विनती करने पर भी राम कुंडी नहीं खोलता है। विवश होकर सीता कौसल्या के पास जाकर इसकी शिकायत करती है। कौसल्या राम के पास आकर समझाती है—

दशरथुनि पत्रुडवु जनकुलल्लुडवु
भूमि देवल्लुडवु बुद्धटर नीकु
सीता चेसिन् तप्पु शीघ्रान चेप्पु
नाकु येरिगिंचरा नम्रु गन्न तंड्रि—

(अर्थात् हे राम तुम दशरथ के पुत्र हो, जनक के दामाद हो, भूदेवी के दामाद हो, तुमको अक्ल होनी चाहिए। इसमें सीता का क्या अपराध है। शीघ्र बताओं, मेरे लाडले मुझे बताओ।) लोक कवियों के इस वर्णन से सीता के प्रति उनके प्रेम को पहचान सकते हैं। साथ ही कौसल्या के अपने राम के प्रति वात्सल्य भाव को भी समझ सकते हैं। माँ की बातें सुनकर तब राम दरवाजा खोलता

है। खोलते हुए कहता है कि तुम लोगों ने अपनी बहू को सर पर चढ़ा लिया है। अब मेरी क्या परवाह करेगी। तब सीता भी कहती है कि मेरे ससुर दशरथ अकेले हैं। आप जाइये सासुमाँ। ये बातें कौसल्या को अच्छी लगीं। मुस्कराती कौसल्या अपने पति के मंदिर में चली गयी। सीता राम की सेवा में लग गयी। यह लोक कवि गायकों की भाव सम्पदा है। पति-पत्नी के दांपत्य जीवन के प्रति उनकी विशेष दृष्टि है।

उर्मिला देवी निद्रा

आदि कवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में उर्मिला के पात्र को बहुत महत्त्व नहीं है। उसे एक उपेक्षिता के रूप में ही देखा गया है। लेकिन लोक कवियों ने उर्मिला चरित्र को राम सीता के साथ जोड़कर देखा है। पति से चौदह वर्ष वह दूर रही है। फिर भी अपने जीवन को जीनेवाली उर्मिला उदात्त चरित्र का चित्रण उन्होंने किया है। उसकी आँसुओं की कहानी को बहुत सुंदर ढंग से चित्रण किया है। किंतु वनवास पूरा होने तक उन्होंने भी उर्मिला का चित्रण नहीं किया। राम वनवास पूरा करके सीता समेत अयोध्या पहुँचने के बाद ही उन्हें उर्मिला की याद आयी। चौदह वर्ष पति से दूर रहकर उर्मिला राजमहल में क्या करती रही। इसी का वर्णन प्रस्तुत गीत में है।

वनवास से लौटे लक्ष्मण ने पाया कि जिस पलँग पर उर्मिला लेटी थी। आज भी उसी रूप में लेटी है। वनवास से लौटे लक्ष्मण को उर्मिला की याद राम के राजतिलक के बाद ही आयी। तब भी उर्मिला उसी रूप में पड़ी रही। राजतिलक के बाद सीता उर्मिला की याद करके लक्ष्मण को उर्मिला के मंदिर में भेजती है। सीता जानती है कि उर्मिला सिर्फ अपनी बहन ही नहीं। अपने पति को चौदह वर्ष अपनी सेवा के लिए त्याग करनेवाली त्यागशील है। ऐसी साध्वी उर्मिला और लक्ष्मण के बीच में इस गीत में संभाषण कराया गया है। 14 वर्षों के बाद लक्ष्मण अपनी पत्नी उर्मिला के पास आता है। तब लोक कवियों ने उससे बुलवाया है–

''अय्या मीरेवरय्या-
एव्वरु लेनिवेल मीरिपुडेकांतमुन कोस्तिरि
मायक्क भाव विन मीकिपुड्डु प्राणमुनकु हानिवच्चु
मायक्क मरिदि विन्न मिकिप्पडु ब्रतुक निव्वरु जगति लो
हेच्चैन वंशानिकि अपकीर्ति वच्चि नेनेमि सेतु
कीर्तिगल इंट बुट्टि यपकीर्ति वच्चे नेनेमि सेतु।''

(अर्थात् नींद में सोनेवाली उर्मिला शीघ्र लक्ष्मण को पहचान नहीं पाती है। वह कहती है कि तुम कौन हो। सबके बाहर रहने पर, मेरे अकेले रहने पर आये हो, मेरी दीदी और जीजा अगर तुमको देख लेंगे तो तुम्हारे प्राणों को ही हानि है। मेरी साली और भावज देख लेंगे तुझे जीवित रहने नहीं देंगे। मैं उच्च कुल में पैदा हुई। मेरी अपकीर्ति मत करो। भगवान अब मैं क्या करूँ? गौरववाले परिवार में पैदा हुई अब मैं क्या करूँ? इस अपकीर्ति का सामना कैसे करूँ?) उर्मिला की ये बातें लक्ष्मण के साथ उसके वियोग को स्पष्ट करती हैं। दोनों के बीच सरस श्रृंगार का वर्णन

लोक कवियों ने नहीं किया। उनका मन श्रृंगार पर न जाकर बल्कि दोनों का मन सेवा पर जाता है। उर्मिला लक्ष्मण से सवाल करती है कि तुम दोनों के होते सीता का अपहरण कैसे संभव हो सका है। ''राज्याधिपतुलु मीरु उंडगा रमणेट्लु चेर पोयेनु'' यह लोक कवियों की विचारधारा का परिचायक है। उदात्त प्रेम में स्वार्थ का संचार नहीं होता है। उसमें सिर्फ परमार्थ का ही भाव रहता है। अपने श्रृंगार और सुख के बारे में भूलकर बहिन के बारे में जाननेवाली करुणमयी है उर्मिला।

लक्ष्मण की चौदह वर्षीय निःस्वार्थ सेवा और उर्मिला की चौदह वर्षीय नींद का गहरा संबंध है। लक्ष्मण की अनुपस्थिति में उर्मिला चौदह वर्ष गहरी नींद में राजमहल में पड़ी रही। लक्ष्मण की तरह उसने भी राज सुख नहीं भोगे।

लक्ष्मण देवर नव्वु

'उर्मिला देवी निद्रा' से निकट संबंध रखनेवाला गीत 'लक्ष्मण देवर नव्वु' है। शिष्टों को अर्थ प्रधान है तो लोक जनता को विषय प्रधान है, इस बात की पुष्टि प्रस्तुत लोक गीत से होती है। श्रीराम के राजतिलक के दौरान भरी सभा में—

''कल कल नव्वे लक्ष्मण देवरपुड्डु
कल कल पुट्टेनु कवुलंदरिकिनी-
किलकिल नव्वे लक्ष्मण देवरपुड्डु—
किल किल नव्वगा खिन्नुढय्ये राजु''

(अर्थात् राम के राजतिलक की सभा में अचानक लक्ष्मण टहाका लगाकर हंस पड़े। सभी को आश्चर्य हुआ। उनकी हँसी को देखकर राजा राम को दुख हुआ।) सभा में रहनेवाले सभी को लक्ष्मण की हँसी बुरी लगी। श्रीराम गुस्से में आकर लक्ष्मण के सर काटने को तैयार हुए तब लक्ष्मण अपने तथा निद्रा देवी के बीच में हुए समझौते के बारे में बताता है। वनवास के समय राम की रक्षा के लिए लक्ष्मण जगकर ही रहना चाहता है। वह निद्रा देवी से प्रार्थना करता है कि वनवास के समय उसे नींद न आये। बदले में वनवास की समाप्ति पर पूरी नींद उसे आये। ठीक राजतिलक के समय समझौते के तहत उसका समय पूरा हो जाता है। निद्रा की देवी आकर लक्ष्मण को लील लेती है। यह जानते हुए लक्ष्मण को हँसी आती है। लोक कवियों ने लिखा है—

''कडु वेड्क अयोध्य कनक पट्नान
काकुत्सतिलकुडू गट्टिनवाडु
तनु निद्र पोंदुते नव्वीतिननेनु।''

अपने को लीलने आनेवाली निद्रा देवी को राजतिलक के समय देखकर लक्ष्मण को हँसी आती है। वास्तविकता को बताने के बाद भाई की त्यागशीलता को जानकर उठायी तलवार से अपने सिर को काटने तैयार हुए राम को वशिष्ठ रोकते हैं।

पान्पुपै कूर्चूंडि श्री राघवुलु
तम्मुनि पादमुलु तोड़लपै नुंचि ओय्य पादमुलु

(अर्थात् गद्दी पर बैठकर श्रीराम भाई के चरणों को अपनी गोद में रखकर उन चरणों को —)

श्रीराम अपनी गलती को जानकर लक्ष्मण की त्यागशीलता की प्रशंसा करते हुए उसके चरणों को अपनी गोद में रख लेते हैं। इसमें भी लोक कवियों की भाव-सम्पदा को ही देख सकते हैं। इस संदर्भ में लोक कवि ने दूध और शक्कर की तरह उनकी एकता का चित्रण करके एकता के प्रति अपने समर्पण भाव को प्रस्तुत किया है। ये सब लोक कवियों के सरल स्वभाव और हृदयों की सहज सुकुमारता को दर्शाते हैं।

पुत्र कामेष्टि

इसकी कथा श्रीराम का कल्याण है। कुमारसंभव काव्य में परमेश्वर कपट ऋषि वेश डालकर जिस रूप में पार्वती से संभाषण करते हैं। इसमें विश्वामित्र से मिथिला नगर में आये श्रीराम शिव धनुर्भंग के पहले ही उद्यान में सीता से बात करते हैं। सीता के बचपन में ही बिच्चु के प्रसंग में एक कोने में पड़े धनु को उठाकर रखने के प्रसंग में जनक यह निर्णय करते हैं कि शिवधनु को तोड़नेवाले को ही सीता के साथ विवाह कराना उचित है। इसकी घोषणा भी तभी वे करते हैं। 'रामुलवारि एरुक' नामक यक्षगान में श्रीराम भविष्य बतानेवाली एरुकल सानि (नारी) के रूप में वेश बदलकर सीता को भविष्य बताते हैं। श्री वेंकटेश्वर कल्याण में भी श्री वेंकटेश्वर स्त्री के रूप में वेश बदलकर पद्मावती को भविष्य बताते हैं। 'सीता कल्याण' यक्षगान में मोक्षगुंडम सुब्बय्या नामक लोक कवि ने श्रीराम के द्वारा सीता को भविष्य बताने के प्रसंग का चित्रण किया है।

पाताल होममु

रावण के पाताल होम के बारे में बताने वाला यह लोक गीत रंगनाथ रामायण में भी है। इसे लोक साहित्य में मंधा राम शास्त्री ने रचा है। विश्वकर्म अपनी पुत्री मंदोदरी को वज्रभवन को तोड़नेवाले वीर के साथ विवाह करने की घोषणा करते हैं। रावण से प्राप्त फल के कारण वाली इसकाम में सफल होता है। इस रूप में वाली ने मंदोदरी से अंगद को प्राप्त किया। उसके बाद ही रावण ने मडोदरी के साथ विवाह किया, ऐसा इतिहास बताता है। इतिहास अंगद को मंदोदरी के पुत्र के रूप में चित्रण करता है।

उसी प्रकार गुह और भरत के अग्निप्रवेश गीत लोक गीतों में अत्यधिक प्रचलित हैं। इसमें रामादि के अयोध्या पहुँचने के बाद हनुमान कैकेयी से कोई काम सौंपने की बात कहता है। तब कैकेयी हनुमान को अग्नि प्रवेश करने का काम सौंपती है। यह सुनकर भरत को गुस्सा आता है। वह स्वयं अग्नि प्रवेश करने की कोशिश करता है।

'श्रीराम पट्टाभिषेकमु' एक छोटे प्रसंग पर आधारित लोक कथा गीत है। इसमें एक विशेषता है कि श्रीराम-लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा करनेवाले हनुमान के हाथों में पहननेवाली कड़ियाँ प्रदान करके सत्कार करते हैं। हनुमान ने संजीवनी लाकर लक्ष्मण को जीवित किया था।

कुशलव युद्धमु

शिष्ट रामायण के उत्तरकांड को लोक कवियों ने कुशलव युद्धमु के रूप में करुणा, अद्भुत, श्रृंगार रसात्मक काव्य के रूप में रचा है। कुशलव राम के ही पुत्र हैं यह बात जाननेवाला लक्ष्मण उनके पास जाकर गुप्त बातें करके राम के साथ युद्ध के लिए उन्हें प्रेरित करता है। कुशलव हनुमान को बंदी बनाकर उस बंदर को अपनी माँ को भेंट के रूप में देते हैं। राम अंगद और सुग्रीव को दूत के रूप में भेजते हैं फिर गरुड़ पर आरूढ़ होकर भयकंपित होते हैं। कुशलव को अपने माता-पिता के नाम मालूम हैं। राम बाण चढ़ाकर कुशलव से अपने माता-पिताओं को याद करने की बात कहते हैं। कुशलव के शौर्य पर रीझकर उनसे कहते हैं कि तुम्हारे माता-पिता ने कितना पुण्य किया तुम जैसे पुत्र पैदा हुए। शायद उन्होंने बड़ा तप किया होगा। कुशलव कहते हैं कि उन्होंने कोई तप नहीं किया। पुत्रकामेष्टि भी नहीं की। ऐसा परिहास किया। राम के अस्त्र प्रयोग करने से बालक राम बाण से प्रार्थना करते हैं कि कृपया अपने पर आक्रमण मत करो हम सूर्य वंश में पैदा हुए हैं। इससे राम बाण लौटकर राम के पास ही आता है। राम फिर दूतों से सहायता लेते हैं। कुशलव शर्त रखते हैं कि रामादि उन्हें नमन करने से युद्ध को छोड़ देंगे। तब श्रीराम गुरु का स्मरण करके नमन करते हैं। इसमें सीता पर कुशलव के प्रेम को प्रस्तुत करने के लिए लोक कवियों ने अपनी माँ जंगल में भेजनेवाले श्रीराम से बदला लेने की बात कहलवायी है। यह लोक कवियों के आत्माभिमान के प्रति समर्पण भाव का द्योतक है।

कुशलायकमु

श्रीराम जन्म से लेकर रावण संहार तक रामकथा संक्षेप में वर्णन करके राजतिलक से लेकर स्वर्गारोहण तक लोक साहित्य में रामचन्द्र राजु ने इस प्रकार चित्रण किया है।

सीतान्वेषण के समय राम हनुमान को सीता की याद में विवरण देना, लौटनेवाले हनुमान सीता शिरोरत्न को देना, सीता कल्याण प्रसंग में सीता के द्वारा शिव धनु को उठाना आदि इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं। बचपन में सीता शिव धनु से खेल रही थी परशुराम ने उसे देखकर उसे शक्ति स्वरूपिणी के रूप में पहचान लिया। चलन, भाषा, भाव आदि में लोक साहित्य लोक जनता के भावों को प्रतिबिंबित करता है। उसी प्रकार सीता देवी वामन गुंट लाडुट (एक तेलुगु सांप्रदायिक खेल) सीता देवी का रूठना, रूठे हुए सीता के पास राम तोते को भेजना, सीता घड़िया, सीता देवी के दोहद, सीता का वसंत, आदि प्रसंगों के साथ-साथ श्रीराम के द्वारा सीता के सौंदर्य का वर्णन करना आदि प्रसंग को अत्यद्भुत ढंग से इस गीत में चित्रित किया गया है। इसके लिए एक उदाहरण सीता की स्मृतियाँ प्रसंग की ये पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं।

''तल अंटु आडके आडिनट्लुंडु
पच्चि पसुपुदलके अंदिनट्लुंडु
पेट्टक काटुक पेट्टिनट्लुंडु

दिद्दका तिलकम्मु दिद्दिनट्लुंडु
चेयक श्रृंगारमु चेसिनट्लुंडु
अलदक परिमलमु ललदिनट्लुंडु
वेयक तांभुलमु वेसिनट्लुंडु
तोडुगुलु तोड़गक तोडिगिनट्लुंडु
तोलकरि मेरुपुवले ता वेलुगु चुंडु।''

(अर्थात् सिर स्नान नहीं किया किंतु किये जैसे लगेगी, हलदी नहीं मली किंतु हलदी मली जैसी लेगेगी, काजल नहीं लगाया, किंतु लगायी जैसी लगेगी, तिलक नहीं लगायी, किंतु तिलक लगायी जैसी लगेगी, श्रृंगार नहीं किया, किंतु श्रृंगार किया लगेगी, इत्र नहीं लगाया, किंतु इत्र लगाया जैसी लगेगी, तांबूल नहीं खाया किंतु तांबूल खायी लगेगी, परदा नहीं लगाया किंतु परदा लगायी लगेगी, पहली वर्षा की बिजली जैसी वह चमक रही थी।)

यह लोक साहित्य के लिए भी मिसाल है। विश्व साहित्य का शिरोधार्य है। ऐसे ही सीता वनवास को जाते समय उसकी दयनीय स्थिति को समझनेवाले श्रीराम ''नडुवगलेवु येत्तुकुंदामनुकुन्नप्पुडु'' (तुम चल नहीं सकती फिर भी मैं तुझे उठा नहीं पाऊँगा।) से सीता कहती है ''रघुनाथ इदि चूड लक्षणमु गादु'' (रघुनाथ इसे देखना अच्छा नहीं है) इससे पति पर सीता की पति-भक्ति को समझ सकते हैं। साथ ही राम को सीता के प्रति रहनेवाले वात्सल्य को समझ सकते हैं। तेलुगु की गृहवधु को समझने में यह प्रतीक बन कर रहेगा।

उपसंहार

इस प्रकार लोक साहित्य में प्रत्येक गीत एक कथा है। कथा गीत भी उनके हृदयों से गिरनेवाला सहज झरना है। स्वच्छ रत्नों से भरा झरना है। इन लोक गीतों को पढ़ने से उनके स्वच्छ हृदय का पता चलता है। प्रदूषण से दूर भाव, निर्मल हृदय, सहज सौंदर्य की अभिव्यक्ति, वीरों के सुख-दुख, पतिव्रताओं की कथाएँ, उन कथाओं में आचार-व्यवहारों, विश्वासों, विनोदों, दावतों, उत्सवों आदि का वर्णन अपनी जातीयता को अभिव्यक्त करते पाया जाता है। ऐसा लोक साहित्य अतिमनोहर लगता है। इससे अलग दंपतियों का अनुरागमय दांपत्य जीवन, भाई-बहनों की एकता, सासु-बहुओं की आत्मीयता, भाभी-भावजों का प्रेम आदि शिष्ट रामायणों में स्थान न पाने पर भी लोक साहित्य में इन्हीं को प्रथम स्थान दिया जाता है। ये सभी लोक जनता के हृदयों से उद्भूत होकर आंध्र जनता को रामकथावाहिनी में डुबो कर पुनीत बनाते हैं।

उनकी भावनाएँ ही हृदय रंजक हैं। एक व्यक्ति भारत देश भर भ्रमण करने के बावजूद रामायण और महाभारत को पढ़ने के बावजूद वह भारतीय तत्व को समझ नहीं पाता है। लोक रामायण आदर्श स्थितियों का चित्रण करता है। लोक जनता के हृदय को जानने के लिए उनके लोक साहित्य को पढ़ना अत्यावश्यक है।

वासिष्ठ रामायण (द्विपद काव्य) शिखिध्वजोपाख्यान : तरिगोंड वेंगमांबा

डॉ. वी. कृष्णवेणी

श्रीराम नाम सर्व पाप संहार करता है। रामकथा भारतीयों के जीवन का एक अंश है। भारतीय शिशुओं को घुट्टी के साथ रामकथा को पिलाते हैं। 'रामुडु मंचि बालुडु' (राम अच्छा बालक है) कहते हुए बालक अच्छह गुणों को प्राप्त करना है ऐसा पाठ शुरू करते हैं। भाइयों के बीच में एकता के राम-लक्ष्मणों का दृष्टांत देते हैं। 'सीतम्मकु भूदेवम्मंत ओर्पु' (सीता को भूदेवी जैसी सहनशीलता हैं) कहते लड़कियों को सहनशीलता के पाठ पढ़ाते हैं। पातिव्रत्य के बारे में शिक्षा देते हैं। सीता और राम की मूर्तियों की पूजा करने के बाद ही किसी भी विवाह का आरंभ करते हैं। सांसारिक सागर को पार करानेवाला सिर्फ राम मंत्र है। बुढ़ापे में राम नाम ही एक मात्र आलंबन है। राम जप ऐसा भारतीयों का जीवन में रामायण पारायण एक अन्तर्भाग बन गया है।

वासिष्ठ रामायण

भगवत स्वरूप राम के गुरु जी वशिष्ठ हैं। श्रीराम को विद्या सिखाकर तत्व रहस्यों की शिक्षा देनेवाला गुरु भी वशिष्ठ ही हैं। श्रीराम के व्यक्तित्व को तैयार करने में वशिष्ठ की भूमिका अद्वितीय है। उस गुरु के द्वारा पढ़ाये पाठ 'योग वासिष्ठम' नाम से प्रचलित हैं। 'वासिष्ठ रामायण' को ही 'योग वासिष्ठ' कहा जाता है। इसकी रचना वाल्मीकि महर्षि ने की है।

तरिगोंड वेंगमांबा : वासिष्ठ रामायण

तिरुमल में श्रीनिवास की सेवा में अपने को धन्य बनानेवाली पावन चरित मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा सन् 18 वीं सदी की है, ऐसा निर्णय किया गया है। तात्विक कवयित्री के रूप में उनकी रचनाएँ प्रचलित हैं। उनकी कुल अठारह रचनाएँ प्राप्त होती हैं। उनमें अंतिम रचना 'वासिष्ठ रामायण' है। यह द्विपद काव्य है। मूल ग्रंथ 'वासिष्ठ रामायण' के बारे में वेंगमांबा प्रोजेक्ट के निर्देशक आचार्य के.जे. कृष्णमूर्ति ने परिचय दिया है कि ''वाल्मीकि महाकवि के द्वारा श्रीमद्रामायण को पूरा करने के कुछ सालों के बाद यह 'वासिष्ठ रामायण' रचा गया है, ऐसे प्रमाण प्राप्त होते हैं।'' (वासिष्ठ रामायण, भूमिका पृ.9)

माना जाता है कि वेंगमांबा ने अपने बुढ़ापे में इसकाव्य का अनुवाद किया है। सबकी समझ में आने की तरह सरल रीति में इसका द्विपद काव्य शैली में अनुवाद किया है।

अनुवाद विधान

'वासिष्ठ रामायण' नाम से मूल संस्कृत में दो ग्रंथ प्राप्त होते हैं। पहला 'बृहद्वासिष्ठ रामायण', दूसरा 'लघु योग वासिष्ठ' पहले की रचना वाल्मीकि ने की है। 32,000 श्लोकों की रचना है। इसकाव्य को छह हजार श्लोकों में संक्षेप करके गौड़ आनंद नामक एक काश्मीरी पंडित ने रचना की है। यह 'लघु योग वासिष्ठ' के रूप में प्रचलित हुआ है।

'लघु योग वासिष्ठ' को लेकर रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी राम तीर्थ (सन् 1873-1906) ने इस रूप में व्याख्या की है।

"One of the greatest books, the wast wonderful according to me ever written under the Sun in Yoga Vasishta which ð body on Earth can read without attaching God-to unconsciousness, ð body can read it without bccoming one with all."

तेलुगु में प्रप्रथम 'लघु योग वासिष्ठ' का अनुवाद कवि मडिकि सिंगन ने किया है। वे सन् 14 वीं सदी के हैं। यह पद्य काव्य है। दूसरा अनुवाद तरिगोंड वेंगमांबा का है। यह द्विपद काव्य में रचा गया है। दोनों ने अपने काव्यों को नरसिंह देव को समर्पित किया है। 'सुज्ञान वासिष्ठ रामायण सार' के रूप में वेंगमांबा ने अपने काव्य को रूप दिया है।

'बृहद योग वासिष्ठ रामायण' का अनुवाद एर्पेड के व्यासाश्रम के व्यवस्थापक मलयाल स्वामी ने किया है। उनके शिष्य डॉ. समुद्राल लक्ष्मणय्या जी 32 हजार श्लोकों में व्याख्या कर रहे हैं। अंतिम प्रकरण मुद्रण में है। शीघ्र ही सारे अंक प्रकाशित होंगे, ऐसा उनका विचार है।

ग्रंथ संशोधक का यह विचार है कि वेंगमांबा ने 'वासिष्ठ रामायण' का अनुवाद आवश्यक जगहों पर छोटे-छोटे परिवर्तनों के साथ, सहज भाषा में, सरल शैली में, संक्षेप में, स्वेच्छा से और सुंदर ढंग से किया है।

कथा प्रारंभ : पूर्व काल में भरद्वाज नामक मुनि युवक ने वेद शास्त्रों को वाल्मीकि महर्षि के पास अभ्यास किया था। तत्वों की शिक्षा प्राप्त करने के बाद मोक्ष की कांक्षा तीव्र होने के कारण गुरु के पास जाकर सांसारिक सागर को पार करके मुक्ति प्राप्त करने के मार्ग दिखाने की याचना की। तब महर्षि ने 'सद्गुरु' के आश्रय में जाकर जीवन्मुक्त हुए लोगों में श्रीराम को अग्रगण्य बताकर, शिष्य के आग्रह पर ज्ञान बोध के लिए मूलाधार रामकथा को सुनाया था।

श्रीराम के सोलह वर्षों की उम्र में देवताओं ने श्रीराम के पास जाकर वशिष्ठ के आश्रय में वेदांत ज्ञान सार के बारे में शिक्षा पाने की याद दिलायी है। श्रीराम उनकी बातों पर विश्वास रखकर तीर्थ यात्राएँ करके गुरु की शिक्षा के लिए प्रतीक्षा करते रहते हैं।

विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिए सहायता पहुँचाने के लिए श्रीराम को अपने साथ ले जाने के लिए अयोध्या पहुँचते हैं। चिंता में डूबे श्रीराम को देखकर ज्ञानान्वेषण के लिए वशिष्ठ के

आश्रम में जाने की सलाह देते हैं। वशिष्ठ से श्रीराम को तत्वबोध पाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वशिष्ठ उसे स्वीकार करते हैं।

श्रीराम राजकुमार हैं भविष्य में राज्य पालक बननेवाले हैं। उसके लिए वशिष्ठ श्रीराम को राज भोगों पर विमुखता पैदा करने के लिए, अपने कर्तव्य के अनुसार राज्य शासन के लिए कार्योन्मुख बनाने के लिए—विविध कथाओं के माध्यम से ज्ञान मार्ग बतलाते हैं। उन उपाख्यानों का संग्रह ही 'वासिष्ठ रामायण' है।

गुरजाड वेंकट अप्पाराव के द्वारा रचित 'लवणराजु कला' नामक कविता इसी रामायण का अंश है।

शिखि ध्वजोपाख्यान

वाशिष्ठ रामायण के विविध उपाख्यानों में 'शिखिध्वजोपाख्यान' विशिष्ठ है। चतुर्थ प्रकरण में यह कथा अन्तर्भाग है। एक और काव्य के रूप में बनने की समग्र कथा वस्तु इस उपाख्यान की विशेषता है। इसमें तीन उपकथाएँ हैं। 1. किराटोपाख्यान 2. चिंतामणि उपाख्यान 3. गजोपाख्यान। मूल में 640 श्लोक वाले इस उपाख्यान को कवयित्री ने 600 द्विपदों में अनुवाद किया है। पति-पत्नियों के दांपत्य जीवन के उतार-चढ़ावों को यह कथा सुस्पष्ट करती है।

'स्त्रियाँ वेदाध्ययन करने के लिए योग्य नहीं हैं' कहते समाज के द्वारा स्त्री की उपेक्षा को स्वयं भोगनेवाली कवयित्री तरिगोंड वेंगमांबा इन अंकों को अपनी प्रथम कृति 'नृसिंह शतक' में भी वेदना से स्पष्ट करती हैं। 'शिखाध्वजोपाख्यान' में भी चूढाला इस प्रकार स्थिति का सामना करती है। इसलिए शायद कवयित्री ने कथा को संक्षेप न करके मूल को बिगाड़े बिना प्रस्तुत किया है। शिखिध्वज की पत्नी चूढाला नाम से यह उपाख्यान 'चूडाल कथा' नाम से प्रचलित है।

कथा सारांश

मालव देश का अधिपति शिखिध्वज हैं। उनकी पत्नी चूडाला है। बहुत समय तक राज्य सुख भोग करने के बाद उन बूढ़े दंपतियों को आत्म ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा जागती है। गुरु के आश्रय में जाने से सकल योग सार का उपदेश देते हैं। चूडाला उन उपदेशों को मन में संग्रहण करके साधना करती है। शिखिध्वज तो राज्य शासन की माया से बाहर नहीं हो पाता है। चूडाला आत्म ज्ञान को प्राप्त करती है। नवयौवनवती बनती है।

उसके यौवन के रहस्य के बारे में पति पूछता है। तब वह योग साधना के बारे में बताती है। वह पत्नी की बातों पर विश्वास नहीं करता है। यौवन के अहंकार में वह बोल रही है समझता है। राज्य को, परिवार को छोड़कर तप करने के लिए वह निकलता है। चूडाला राज्य भार को ढोते योग साधना को आगे बढ़ाती है।

वह पति के अज्ञान को दूर करना चाहती है। किंतु अपने को स्त्री समझकर शिक्षा लेने के लिए वह इनकार करेगा, अपने अनुभव वह समझती है। इसलिए वह पुरुष रूप में शिक्षा देने का

निर्णय करती है। तप की शक्ति से चूडाला मुनि के रूप में कुंभ नामक नाम से वह शिखिध्वज के पास पहुँचती है। कुंभ की बातों को सुनता है शिखिध्वज। किराटोपाख्यान, चिंतामणि उपाख्यान, गजोपाख्यान नामक कथाओं के माध्यम से चूडाला पति को कर्तव्य बोध कराती है। कुंभ और दोनों संतोष का अनुभव करते हैं। दोनों राज्य लौटकर शासन करते आत्मानंद के साथ जीते हैं।

उपदेश

अपने उपदेश को यह काव्य अच्छह ढंग से प्रस्तुत करता है। वेंगमांबा के इस 'लघु योग वासिष्ठ रामायण' का अनुवाद करने का मुख्य कारण उसका तत्व ज्ञानोपदेश ही है। सर्व उपनिषदीय सार इसमें निक्षिप्त है। 'शिखिध्वजोपाख्यान' में यह उपदेश शिखर स्थिति में है।

चूडाला शिखिध्वज से—''सदा खंड लक्ष्यमुन निलिचि, चलिंपक - नेनु नेनैति'' कहती है। (मैं सदा लक्ष्य मार्ग पर रहकर, विचलित हुए बिना मैं मैं बन गयी हूँ) रमण महर्षि ने भी लोगों से यही कहा है''निन्नु नीवु तेलुसुको'' (तुम अपने आपको जानो) अपने को जानने की बात कहते हैं।

कुंभ शिखिध्वज से— ''जगंबुलकु जि-त्तमु बंधकंबु'' मन ही सभी बंधनों का केंद्र है। संकल्प विकल्प लक्षण के मन को बाँधने से ही मुक्ति प्राप्त होगी।

''जित्तंबु एट्टिदि? दानि नेनेटु त्रुंप वच्चु' शिखिध्वज कहता है। (मन किस प्रकार का है। मैं उसे कैसे तोड़ सकता हूँ) 'चित्त वृक्षमुनु गूकटि वेल्लैन-गुणमुल तोड़ ब्रड त्रोयुमु' मन रूपी वृक्ष की जड़ गुणों को पहले तोड़ना चाहिए। गुणों की वृद्धि से जड़ों के साथ मन रूपी वृक्ष को गिरा सकते हैं।

पतंजलि महर्षि ने योग शास्त्र में बताया प्रथम श्लोक—
'चित्त वृत्ति निरोधः' चित्त को नियंत्रण नहीं कर सकने की स्थिति में ही मनुष्य बंधनों में फँसता है।

मन से लगकर अहंकार विकसित होता है। उसे भस्म करने के लिए आवश्यक अग्नि कौन सी है, शिखिध्वज सवाल करता है। उसके लिए कुंभ इस रूप में जवाब देता है—

'तनु रूप पंच भूतमुलु ने गानु,
अलरु नी विषयेंद्री - यमुलु ने गानु,
गा, नहंकृति नेनु - गानु, मरेव्व
ड़े ननेडि विचार - मेप्पुडु नीकु
जनिइंचु नपुडु।'

शरीर पंचभूतात्मक है। वह मैं नहीं हूँ। कर्मेंद्रिय मैं नहीं हूँ। मन, बुद्धि, अंहकार मैं नहीं हूँ। तो मैं कौन हूँ? यह संदेह होता है। उसके बारे में सोचने के लिए कहा कुंभ ने।

'तैत्तरीय उपनिषद' में आत्मा के बारे में बतानेवाले प्रसंग में उपर्युक्त विषय हैं। अन्न मयमु, प्राण मयमु, मनोमयमु, विज्ञान मयमु, आनंद मयमु नामक ये सब आत्मा नहीं हैं। इन सबको देख सकते हैं, सुन सकते हैं यह बतानेवाला कोई अंदर है वही आत्मा है। उपनिषद् यह कहता है कि मुमुक्षुओं के लिए यह सोचना आवश्यक है।

ऐसे पारमार्थिक विषयों की चर्चा 'वासिष्ठ रामायण' में है।

कुंभ भ्रांति का विवरण देते हुए–

'भ्रमयु भ्रांतिनि द्राट - भामुन्न रीति
समरगा गनिरुंचि - यरसि चूचिननु
पा मंदु लेकुन्ना पगदि ब्रह्ममुन
दा मिंचि सकल भू - त प्रपंचंबु
भ्रांति चे नुंडिन - भंगि गन्पिंचु।'

अँधेरे में रस्सी को देखकर साँप जैसा भ्रम में पड़ते हैं। यह उपमान आदि शंकराचार्य के द्वारा उपनिषदों की व्याख्वा करते समय भाष्य में लिखा है।

शंकराचार्य विवेक चूड़ामणि में इस लोक में 'सत्तु' 'असत्तु' के बारे में जानने की बात कहते हैं। शाश्वत, नित्य रहनेवाला, अपरिवर्तनीय 'सत्तु' है वही आत्मा। बाकी सब काल गर्भ में मिल जानेवाले हैं। वे ही 'असत्तु' कहते हैं।

इन अंशों को सरल भाषा में इसमें संग्रह किया है वेंगमांबा ने।

'मेरयु प्रपंचंबु - मिथ्यै पोवु,
नेरयु चिद्रब्रह्ममें - नित्यमै निलुचु।'

अपनी आँखों के सामने चमकते हुए–आकर्षणीय लगनेवाला यह संसार मिथ्या है। सदा के लिए खड़े रहनेवाला ब्रह्म है। वही नित्य है।

इसी को ''सत चित आनंद'' के रूप में उपनिषद् संदेश के रूप में सभी ध्यान करते हैं।

''निष्काम कर्म'' को लेकर कुंभ ने इस प्रकार का विवरण दिया है–

'दि– संकल्प - रहित मैनट्टि
सहज कर्मंबुन - सक्तुडै यतडु
गाविंपुचुन्नत - त्कर्म मायोग
पावक मुख मंदु - भस्मै पोवु।'

'संकल्प' रहित रूप में कर्म करने की बात कहते हैं। तब कर्म फल नहीं लगता है।

इस अंश को 'ईशाम्यसोपनिषद्' का दूसरा मंत्र भी स्पष्ट करता है।

'कूर्वन्नेवेह कर्माणी जिजीविषेतशतगं समाः।
एवं त्वइ नान्यथे लोस्ति नकर्म लष्यते नरे।।'

अर्थात् कर्म करते हुए ही इस संसार में सौ साल जीने की इच्छा रखनी चाहिए। यही सही मार्ग है। इससे बढ़कर दूसरा मार्ग नहीं है। इससे मनुष्यों को कर्म नहीं लगते हैं।

ज्ञान प्राप्त होते ही अज्ञान दूर हो जाता है, इस अंश को कुंभ ने बताया है।

'नज्ञान मणगिन - नात्मानु भवमु
प्रज्ञानमैं निंडि - पंडु, नंतटिकि'

शंकराचार्य ने 'अज्ञान-ज्ञान' को लेकर अच्छह उपमानों को उपनिषदों के लिए लिखे गये भाष्य में से संगृहीत किया है।

रात को फैला अंधकार सूर्य के आगमन से जिस रूप में दूर हो जाता है उसी रूप में ज्ञान होने पर अज्ञान दूर हो जाता है।

चूडाला कुछ दिनों के लिए राज्य शासन करती है। फिर कुंभ के रूप में पति के पास आती है। दिन में पुरुष का रूप और रात में स्त्री का रूप धारण करती है। इस रूप में उसकी कुछ दिनों के लिए परीक्षा लेती है। अपनी तपःशक्ति से इंद्र, रंभा आदि अप्सराओं को लाती है। इंद्र कहता है कि वे सब शिखिध्वज से भोग चाहते हैं। किंतु शिखिध्वज उन्हें नहीं चाहता है। इस रूप में परीक्षा लेने के बाद अपने आपको देखने की बात कहती है। अहंकार से मुक्त शिखिध्वज उसे स्वीकार करता है। अपने वेश के बारे में चूडाला बताती है।

दत्वार्थंबु - नीकु बोधिंचु
कोरकु गुंभंडनै - कोन वेल्ल गावु
नद्वैत सारार्थ - मैं प्रकाशिंचु
जिद्वस्तु तत्वंबु - जेप्पि —

तत्वार्थ और वस्तु तत्वों के बारे में आयी हूँ, कहती है। बाद में दोनों राज्य पहुँच कर सभी कर्मों का आचरण करते हुए मुक्ति प्राप्त करते हैं।

इस कथा को बताकर वशिष्ठ श्रीराम को देखकर—

'यप्प, चित्त त्याग - मैनदे शुभमु,
एवरिकैननु धात्रि - निद निक्कमनुचु'

मन के अधीन होकर व्यवहार नहीं करना चाहिए। 'चित्त त्याग' ही शुभ है। कथा के इस उपदेश को, पुरुषार्थ साधनाओं को इस कथा के द्वारा वशिष्ठ ने श्रीराम को बताया है।

आधार ग्रंथ

1. आंध्र महाभारत, ति.ति.दे. प्रकाशन, तिरुपति।
2. उपनिषद् सुधा लहरी - निबंध संकलन - साहिती सांस्कृतिक संस्था, हैदराबाद।
3. नृसिंह शतकमु, तरिगोंड वेंगमांबा, ति.ति.दे. प्रकाशन।
4. मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा कृतुल परिशीलन, सिद्धांत ग्रंथ, आचार्य के.जे. कृष्णमूर्ति।
5. लवणराजु कला, गुरजाड वेंकट अप्पाराव, प्रजाशक्ति बुक हाउस प्रकाशन।
6. वासिष्ठ रामायण - तरिगोंड वेंगमांबा - ति.ति.दे. प्रकाशन।
7. विवेक चूड़ामणि - श्री मलयाल स्वामी - व्यासाश्रम, एर्पेडु।
8. मलयाल स्वामी जीवित चरित्र - समुद्राल लक्ष्मणय्या।
9. श्रीमद्रामायणमु, ति.ति.दे. प्रकाशन।
10. सुंदर रामायणमु, शंकरांबाडि सुंदराचारी।

श्री कोदंड राम मंदिर : तिरुपति

डॉ. वी. तेजोवाणी

धरती पर कई अवतार लेनेवाले श्री महाविष्णु के 'दैवम मानुष रूपेण' क्रम में मानव के अवतारों में विशिष्ठ अवतार श्रीरामावतार है। सत्य के लिए, शौर्य के लिए, बुजुर्गों के आदर के लिए, पितृ वचन पालन के लिए, एक पत्नीव्रत के लिए और राज धर्म के लिए प्रतीक अवतार रामावतार है। इसलिए 'रामो विग्रहवान धर्मः' कहा गया है। राम बाण और पितृवाक्य पालन जैसे वाक्य लोकोक्ति बनकर जनता में बहुत प्रचलित हुए हैं। मानव जीवन के लिए एक आदर्श एवं आचरणयोग्य मार्ग की स्थापना करके राम देव बन गये हैं। दुष्ट दमन, शिष्ट रक्षण के लिए अवतरित श्रीराम वरगर्वित, स्त्रीलोलुप दशकंठ का संहार करते हैं।

श्रीराम रावण संहार के बाद लक्ष्मण और सीता समेत लंका नगर से अयोध्या जाते समय मार्ग में तिरुपति क्षेत्र में कुछ दिनों के लिए आराम किया, ऐसा पुराणों का कथन है। उसकी याद में इस मंदिर का निर्माण तिरुपति में किया गया है।

मंदिर का निर्माण

तिरुपति में स्थित श्री कोदंड राम का मंदिर सन् 10 वीं सदी में चोल राजु ने बनवाया था फिर सन् 15 वीं सदी में विजय नगर राजाओं के समय में इसका काफी विकास किया गया था। इस मंदिर के निर्माण के दौरान ही चन्द्रगिरि गाँव में एक और राम मंदिर का निर्माण किया गया था। यह मंदिर ही रायलसीमा प्रदेश में अत्यन्त प्राचीन राम मंदिर है। सन् 1480-81 वर्षों में तिरुपति के शठगोपदासु नरसिंहराय मोदली नामक एक व्यापारी ने उस समय के विजय नगर राजा नरसिंहरायल की स्मृति में इस मंदिर का निर्माण किया था, ऐसा स्थानीय एक और मंदिर श्री गोविंदराज स्वामी के मंदिर में एक शिला शासन प्राप्त होता है। इसकोदंड राम मंदिर के बारे में जानने के लिए तिरुमल पहाड़ के श्रीवेंकटेश्वर स्वामी मंदिर, तिरुपति के श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर, कोदंड राम मंदिर के लगभग 20 शिला शासन प्राप्त होते हैं। इस मंदिर की बाहरी दीवारों पर जहाँ तहाँ शिला शासन होने के बावजूद वे अस्पष्ट हैं। पढ़ नहीं सकते हैं। किंतु दीवारों पर श्रीकृष्ण के शिल्प, कुछ रेखाचित्र, रथ मंडप के समीप दीवारों पर विजयनगर राजाओं के समय प्रमुख रूप से दिखाई पड़नेवाला सप्तताल बंधन, वाली, सुग्रीव युद्ध दृश्य शिलाओं पर दर्शन देते हैं। इन शासनों के द्वारा मंदिर के स्वामी को श्रीराम पेरिय (यानी बड़ा) रघुनाथ, रघुनाथ कोदंड राम

स्वामी नाम दिया गया है। सन् 1530 में एक शिला शासन द्वारा सदाशिव रायलु ने मंदिर की देखभाल के लिए कई दान दिए हैं, ऐसा समाचार प्राप्त होता है।

मंदिर का वर्णन

तिरुपति में स्थित कोदंड राम मंदिर विशाल प्राकारों के साथ प्रशांत वातावरण में निर्मित हुआ है। यह मंदिर जमीन से लगभग 3 कदम नीचे है। विरल रूप में प्राप्त होनेवाला पश्चिम मुख द्वार के साथ है। इस मंदिर के निर्माण अनुशीलन करने पर कुछ लोगों का विचार है कि इस मंदिर के निर्माण के पहले ही तिरुमल में श्री वेंकटेश्वर का मंदिर बनाया गया था। वह पूरब मुख प्रवेश द्वार वाला मंदिर था। इसलिए इसे पश्चिम मुख प्रवेश द्वार वाला मंदिर बनाना अच्छा है समझ कर इसे बनाया गया था। मंदिर की चारों दिशाओं में ऊँचे प्राकार बनाये गये हैं। प्रहरियों के मध्य में पश्चिम भाग में मंदिर का प्रवेश द्वार बनाया गया है। उसके ऊपर तीन मंजिलवाला गोपुर, कूट, शाल, पंजर आदि अलंकार, गोपुर के ऊपर तीन द्वारों के सामने दोनों ओर द्वार पालक, चारों ओर अनेक देवताओं के शिल्प हैं। गोपुर के ऊपर ऊँचा शिखर, उसके ऊपर सात कलश प्रतिष्ठित हुए हैं। गोपुर द्वार के आगे मंदिर में प्रवेश करने से सामने बलिपीठ, ध्वज स्तंभ गर्भालय के स्वामी के ठीक सामने बनाये गये हैं।

श्री कोदंड राम मंदिर मुख्यालय, गर्भ गृह, अन्तराल (शयन मंडप), मुख मंडप, महामंडप आदि एक ऊँचे स्थान पर बनाये गये हैं। महामंडप लगभग 60 कदम चतुरस्र रूप में बनाया गया है। प्रवेश के लिए दो द्वार हैं। मंदिर के अंदर निर्माणों में अपरूप महामंडप है। यह चार प्राकारों में प्रत्येक प्राकार में 5 खंभों के साथ कुल 20 खंभों की सहायता से बनाया गया है। मंडप के खंभे ठीक विजयनगर समय के नमूने में बनाये गये हैं। नीचे और ऊपर चतुरस्ताकार में बनाये गये हैं। बीच में गोलाकार में है। बाल कृष्ण, हनुमान, बलराम, लक्ष्मी, वाली, सुग्रीव आदि शिल्प अंकित किये गये हैं। मंडप की दीवार पर विजयनगर राजमुद्रिका है। महामंडप के सामनेवाले भाग में पश्चिम की दिशा में गर्भालय और स्वामी के सामने गरुड़ालय बनाया गया है। उसमें नमन करनेवाले गरुड़ की मूर्ति है। इस महामंडप की दक्षिण दिशा में एक कमरा है। उसे आज कार्यालय के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। इस कमरे के सामने सीता और राम के कल्याणवाला मंडप है।

महामंडप के सामने पूरब की दिशा में खंभों की सहायता से बनाया गया मुख मंडप है। मंडप के स्तंभ विविध शैली में बनाये गये हैं। उन पर योग नरसिंह, गोपाल कृष्ण, गोवर्धन गिरिधारी, वटपत्रशाइ, गोपिका वस्त्रापहरण, हनुमान, महा विष्णु के शिल्प दिखाई देते हैं। मंडप की उत्तर दिशा में विष्वकसेन का मंडप है। यह 12 कदमों में चतुरस्राकार में है। बीच में विश्वकसेन अंजली करते बैठे हुए मुद्रा में है। मंडप के ऊपर गोलाकार शिखर, उसके ऊपर कलश के साथ गोपुर है। मंडप मुख द्वार के ऊपर गजलक्ष्मी है। दीवारों पर विजयनगर राजाओं की मुद्रिकाएँ अंकित हैं। मुख मंडप की दक्षिण दिशा में उपर्युक्त मंडप के सामने इसी नमूने में बनाया गया रामानुज मंडप

है। मंडप के अंदर की रामानुज मूर्ति सन् 1497 में पेरिय पेरुमाल दासर नामक व्यक्ति ने प्रतिष्ठा की है। उत्सव और नित्य आराधना के लिए दान भी दिए हैं। इस रामानुज मंडप के ऊपर गणेश की मूर्ति भी रखी गयी है।

मुख मंडप के सामने दो कदम की ऊँचाई पर अन्तराल (शयन मंडप), गर्भगृहालय हैं। अन्तराल 16 कदम विशालता से बनाया गया है। दीवारों पर अलंकरण है। इस मंडप के दोनों ओर गदाधारी द्वार पालक है। इस अन्तराल में झूला भी है। प्रति दिन रात को एकांत सेवा के दौरान कृष्ण स्वामी को चाँदी के पलँग पर सुलाते हैं।

अन्तराल के सामने लगभग 20 कदम चतुरस्ताकार में गर्भालय है। उसके बीचोबीच नेत्रपर्व करनेवाले श्रीराम की मूर्ति, उसके दायीं ओर सीता देवी की मूर्ति, बायीं तरफ लक्ष्मण की मूर्ति पूरी ऊँचाई पर है। श्रीराम द्विभंगिमा की मुद्रा में धनु को बाएँ हाथ से बाण को दाएँ हाथ से, करंद, मुकुट मकर कुंडल, यज्ञोपवीत, केयुर, ग्रेव्याकास, कमर में सिंहमुखवाली पट्टी धारण किये हुए हैं। सीता देवी नीलोत्पल पुष्प को बाएँ हाथ में, दाएँ हाथ में करंद मुकुट लिए हुए विविध आभरणों से शोभित हैं। लक्ष्मण स्वामी राम के प्रतिरूप में हैं। तीनों मूर्तियाँ काफी ऊँची हैं। इतनी ऊँची मूर्तियाँ अन्यत्र दिखाई नहीं पड़ती हैं, ऐसा लोगों को विचार है। इससे बढ़कर सीता देवी की मूर्ति को साधारणतया श्रीराम के बाएँ हाथ की तरफ प्रतिष्ठित करना आचार है, किंतु इस मंदिर में श्रीराम के दाएँ हाथ की तरफ उनकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। इन मूर्तियों के सामने स्वामियों की सेवा करने की मुद्रा में हनुमान की मूर्ति और सीता, राम और लक्ष्मण की पंचलोह मूर्तियाँ हैं। गर्भालय के ऊपर गोलाकार में गोपुर के ऊपर कलश है। गर्भगृह की चारों दिशाओं में 20 खंभों की सहायता से परिक्रमा के लिए रास्ता बनाया गया है। यहाँ विजय नगर राजाओं की राज मुद्रिका है। मुख्यालय की दक्षिण दिशा में 4 खंभों की सहायता से बनाया गया झूला मंडप, उसके ऊपर शिखर, कलश है। इस मंडप के सामने दक्षिण दिशा में मंदिर की रसोई है।

श्री कोदंड राम मंदिर के बाहर दक्षिण दिशा में रथ मंडप है। इसके सामने श्रीमहाविष्णु के रूप में माने जानेवाले वैखानस धर्म संस्थापक विखनस की मूर्ति है। ए. बी. श्रीनिवासचार्य ने इस मंदिर में नित्य धूप, दीप, नैवेद्य की व्यवस्था करके ब्रह्मोत्सवों की व्यवस्था भी की थी, ऐसी मान्यता है।

श्री कोदंड राम मंदिर के सामने राज गोपुर से 50 गज की दूरी पर पूरब में प्रधानालय की तरफ देखते हुए पूरब दिशा में प्रवेश द्वार वाला हनुमान का मंदिर है। यह मंदिर 12 खंभों से बनाया गया है। खंभों पर श्रीकृष्ण, पद्म, हनुमान, श्रीराम के शिल्प अंकित हैं। इसकी दक्षिण दिशा की दीवार पर घुटरूओं पर चलनेवाले बालक श्रीकृष्ण की मूर्ति अंकित है। मंडप के पीछे छोटा मंदिर जिसमें राम-लक्ष्मण की सेवा करनेवाली मुद्रा में हनुमान की छोटी मूर्ति है। इस छोटे मंदिर के ऊपर गोलाकारवाला शिखर, उसके ऊपर कलश है। आंजनेय मंडप के सामने 20 कदम ऊँचा ध्वज स्तंभ है। इस स्तंभ के नीचे श्रीकृष्ण, हनुमान, सुदर्शन चक्र के शिल्प बनाये गये हैं। स्तंभ के ऊपर दीप स्तंभ की चारों दिशाओं में 4 घंटियाँ बनायी गयी हैं। हनुमान मंडप के सामने शहर की मूल सड़क,

पीछे सरोवर है।

हनुमान मंदिर के पीछवाले सरोवर को ही रामचन्द्र गुंट बोलते हैं। यह सरोवर पहले बहुत वैभव पूर्ण था। प्रचलित भी था। इस सरोवर में श्रीराम सीता देवी के साथ नौका विहार करते थे। अब भी साल में एक बार यह उत्सव मनाया जाता है। इस सरोवर के कारण ही इसकी चारों दिशाओं में रहनेवाले कुओं में पानी की व्यवस्था होती है। 11 वीं सदी में वीर नरसिंहरायलु के द्वारा खुदवाया नरसिंह सरोवर भी इसी का भाग समझा जाता है। आज यह सरोवर रामचन्द्र पुष्करिणी के रूप में फिर से वैभवपूर्ण रूप में पुनर्निर्माण किया गया है। तिरुमल तिरुपति देवस्थान की ओर से सरोवर में उत्सव भी हो रहे हैं। इसमें गोविंद राज स्वामी और गोदा देवी के उत्सव भी इसी पुष्करिणी में कर रहे हैं। श्री गोविंद राज स्वामी और उनकी देवेरी दोनों श्री कोदंड राम स्वामी के दर्शन इस दौरान करते हैं।

कार्तिक मास में तिरुचानूर में सम्पन्न होनेवाले पंचमी तीर्थ के संदर्भ में तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी की ओर से पद्मावती माँ को साड़ी भेंट दिए जाते हैं। भेंट में हलदी, चंदन, रेशमी साड़ी, चोली, नैवेद्य, स्वामी के प्रसाद ले जाते समय मार्ग मध्य में श्री कोदंड स्वामी मंदिर की परिक्रमा करके ले जाते हैं। उस समय श्रीराम स्वामी की आरती उतारकर भेंट को ले जाते हैं।

विजयनगर राजा श्रीकृष्ण देवरायलु के बाद के राजा अच्युतरायलु के काल में कुमार रामानुजय्यंगार श्री कोदंड राम स्वामी मंदिर के लिए लकड़ी से एक रथ बनवाया। इस रथ के लिए एक ओर पत्थरों से एक मंडप और दूसरी ओर वाहन आदि रखने के लिए एक और मंडप बनवाया है। इस रथ पर श्रीराम-लक्ष्मण और सीता समेत आरूढ़ होकर नगर की गलियों में जुलूस निकलते हैं।

श्री कोदंड राम स्वामी मंदिर में श्रीराम नवमी के दौरान किये जानेवाले उत्सवों का आरंभ सुलव नरसिंहरायल काल में ही शुरू किया गया था। शठगोप दासर नरसिंहराय मोदलियार द्वारा इस मंदिर की उत्सव मूर्तियों को कनुम त्योहारों के दौरान अभिषेक करने की व्यवस्था की गयी है। विघ्नेश्वर श्रीरामन नामक लेखापाल ने अपने गुरु के नाम पर पूर्व फाल्गुनि नक्षत्र के दौरान नैवेद्य चढ़ाने की व्यवस्था करवायी थी। नरसिंहराय मोदलियार रामय्यन, तिम्मय्या नामक दो व्यक्तियों ने अन्य उत्सवों में स्वामी को नैवेद्य की व्यवस्था करवायी थी। महंत सेनादास जी तिरुमल तिरुपति देवस्थान के लिए अधिकारी के रूप में काम करते समय उनके बाद धर्मदास जी महंत के काल में उन्होंने इस मंदिर के विकास में बड़ी भूमिका निभायी है।

राम मंदिर में सम्पन्न होनेवाले उत्सव

तिरुपति श्री कोदंड राम स्वामी मंदिर का निर्माण, मूर्तियों की स्थापना की तरह यहाँ के उत्सवों में भी विविधता है। साधारणतया आंध्र के राम मंदिरों में श्रीराम नवमी के दिन उत्सव शुरू होते हैं। किंतु इस मंदिर में नवमी के दो दिन पहले सारे उत्सव पूरे हो जाते हैं। 9 दिनों के उत्सव रथोत्सव के साथ पूरा होते हैं। वैखानस आगम के अनुसार सम्पन्न होने वाले ये ब्रह्मोत्सव प्रति वर्ष फाल्गुन मास में होते हैं। इसके पहले कोइल अल्वार तिरुमंजन (सुगंध द्रव्यों से मंदिर की सफाई

करना), शुरुआत, सेनाधिपति उत्सव, वेदप्रबंध अध्ययन आदि कार्यक्रम होते हैं।

ध्वजारोहण से लेकर ध्वजावरोहण तक श्रीराम सीता देवी समेत भाग लेनेवाले ब्रह्मोत्सवों की वाहन सेवाओं का अनुशीलन करने से लगता है एक-एक वाहन एक-एक आध्यात्मिक रहस्य के प्रतीक के रूप में किया जाता है। पहले वाले दिन ध्वजारोहण के साथ शुरू करते हैं। उसी दिन रात को पेद्द शेषवाहन, अगले दिन चिन्न शेष वाहन पर स्वामी नगर की गलियों में जुलूस निकलते हैं। इस पूरे भूभाग को आदि शेष ढोते रहते हैं, ऐसा पुराण घोषित कर रहे हैं। निरंतर श्रम को सहन करते हुए इस भूमाता को ढोनेवाले आदि शेष के प्रति वात्सल्य भाव दिखाने के लिए ही स्वामी आदि शेष वाहन पर विहार करते हैं। दूध और पानी को अलग-अलग करने की क्षमता राज हंस को है। वह पक्षी सरस्वती का वाहन है। ऐसी सरस्वती का रूप धारण करके स्वामी वाहन पर जुलूस निकलते हैं। लोक में अच्छा और बुरा दोनों है, भगवान सिर्फ अच्छाई का समर्थन करते हैं। मनुष्य अच्छाई को सीखना चाहिए, ऐसा संदेश यह वाहन सेवा करती है। जानवरों में सभी को राजस सिखानेवाला जानवर मृगराज शेर है। जंगल में बाकी सभी जानवर शेर को देखकर भाग जाते हैं। भगवद्भक्ति रूपी मृगराज को मन में स्थापित करने से बाकी अरिषड्वर्ग भय से भाग जायेंगे। सिंह वाहन सेवा यही संदेश देती है। मोती ठंडाई पहुँचाते हैं। साथ ही सफेद सभी स्वच्छता के प्रतीक हैं। सारी इच्छाओं की पूर्ति कल्पवृक्ष करता है। भक्तों को संसार सागर से बचानेवाली सेवा सर्वभूपाल वाहन सेवा है। इस रूप में स्वामी की प्रत्येक सेवा विविध संदेश देती सार्थकता को निरूपित करती है।

दुष्ट दमन और शिष्ट रक्षण के लिए स्वामी ने मोहिनी अवतार लिया है। भक्ति विश्वास का प्रतीक और वायुवेग मनोवेग का संकेत, शक्ति सामर्थ्य का प्रतिबिंब और स्वामी का प्रिय पात्र गरुड़ है। गरुड़ वाहन स्वामी और सेवक के बीच के संबंध को बलवान करने का संकेत है। उसी प्रकार अपने हृदय में अपने स्वामी सीता राम को प्रतिष्ठित करनेवाला भक्त हनुमान है। अपनी तरह स्वामी की सेवा करके सार्थक होने का संदेश देते हुए हनुमान कहते हैं। हनुमान वाहन पर जुलूस निकलते स्वामी नेत्रपर्व करते हैं। मगर को दिए वरदान के तहत गजराज की रक्षा करने स्वामी पधारे हैं। गजराज वाहन पर आरूढ होकर स्वामी अपने भक्त को अभय दान देते जुलूस में निकलते हैं। सूर्य से प्रकाश, चन्द्र से ठंडापन मनुष्य प्राप्त करता है। स्वामी इन दोनों गुणों को प्रदान करने सूर्य प्रभा, चन्द्र प्रभा वाहनों पर जुलूस निकलते हैं। शरीर रूपी रथ को स्वधर्माचरण रूपी जीवन यात्रा का बोध कराने स्वामी रथयात्रा पर निकलते हैं। ब्रह्मोत्सव के अंतिम दिन चक्रस्नान किया जाता है। साथ ही ध्वजावरोहण भी किया जाता है। इस रूप में कोदंड राम स्वामी मंदिर में सालाना ब्रह्मोत्सव किये जाते हैं। इन उत्सवों के दौरान राम मंदिर और उसके परिसर को अत्यंत स्वच्छ रखा जाता है। पूरे परिसर में पर्व का वातावरण दिखाई देता है।

उगादि (तेलुगु वालों का नव वर्ष) के दिन प्रातः स्वामी को स्नान होने के बाद आस्थान मंडप में सोने की तिरुच्चि में जुलूस में आकर नये वस्त्रों को समर्पण करके आरती और स्वस्थ सूक्त से स्वामी का अक्षतारोहण किया जाता है। जियंगार देवस्थान अधिकारी दरबार करते हैं। स्वामी को

वार्षिक निवेदन किया जाता है।

श्रीराम नवमी के दिन सर्वप्रथम स्वामी को सुप्रभात, अभिषेक, तोमाल सेवा, उत्सव मूर्तियों को स्थपन तिरुमंजनमु, नवीन वस्त्र समर्पण, तदुपरांत श्रीराम जनन का प्रवचन किया जाता है। शाम को पुष्प मालांकरण, रात को शात्तुमोर तदुपरांत स्वामी के लिए ऊंजल सेवा, उसके बाद हनुमान वाहन पर चारों माड वीथियों में स्वामी का जुलूस निकाला जाता है। उसके बाद एकांत सेवा किया जाता है। अगले दिन कल्याणोत्सव और उसके राजतिलक किया जाता है।

सीता, राम और लक्ष्मण की सेवा करके अपने जीवन को धन्य बनानेवाले हनुमान की जयंती वैशाख मास में मनाई जाती है। उत्सव मूर्ति श्री भक्तांजनेय स्वामी मंदिर जाकर स्थपन तिरुमंजन किया जाता है। शाम को स्वामी हनुमान वाहन में नगर की वीथियों में शोभा यात्रा करते हैं।

दक्षिणायन, कर्कटक संक्रमण संदर्भ में आणिवार संस्थनम किया जाता है। स्वामी, विश्वकसेन के सामने जियंगार स्वामी, चिन्न जियंगार मुद्राओं को अर्चक स्वामी के चरणों के पास रखकर फिर उन्हें ग्रहण करते हैं।

आश्विन मास में दीपावली आस्थान किया जाता है। नवीन वस्त्र समर्पण, आरती, निवेदन अनंतर आस्थान किया जाता है। श्रावण मास में कृष्टामि के दिन शाम को आस्थान किया जाता है। अगले दिन मेट्लोत्सव किया जाता है।

मार्गशीर्ष मास में तीस दिन धनुर्मास उत्सव किये जाते हैं। प्रातःकाल में ही आराधना, सेवाकाल, शात्तुमोर अनंतर भक्तों को दर्शन की व्यवस्था की जाती है।

माघ मास में माघ शुद्ध एकादशी के दिन पुष्करिणी में स्वामी का नौका विहार उत्सव किया जाता है। उसी प्रकार प्रति अमवास्या को सीता राम-लक्ष्मण समेत भक्तांजनेय के साथ स्वामी को फूलों से सजाकर विशेषालंकरण किया जाता है।

इस मंदिर में सुप्रभात, तोमाल सेवा, सहस्त्र नामार्चन सेवा, पहली घंटी, मध्याह्न घंटी, दूसरी घंटी, रात को तोमाल सेवा, रात की घंटी, एकांत सेवा ये सभी नित्य सम्पन्न होनेवाली सेवा के अन्तर्गत आती हैं। प्रत्येक रविवार को इस मंदिर में विशेष उत्सव किये जाते हैं। शनिवार को मूल मूर्ति को अभिषेक, शाम को उत्सव मूर्तियों की शोभा यात्रा की जाती है। रविवार को भक्तांजनेय स्वामी का अभिषेक, अनंतर पान के पत्तों से सुंदर ढंग से अलंकरण किया जाता है। उसके बाद अर्चना की जाती है।

मंदिर दर्शन एक नित्य कर्म है। क्योंकि 'देही देवालयो प्रोक्त जीवेदेव समुच्चयः देह में देवालय' कहा जाता है। यानी देह ही देवालय और जीव ही भगवान है समझा जाता है। मंदिर में सम्पन्न होनेवाली प्रत्येक सेवा उत्सव में मनुष्य को अपने जीवन की सार्थकता दिखाई देती है। धरती के सारे जीव समान हैं। सभी को प्रेम के साथ रहना चाहिए। धर्म मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। ये सारे सन्मार्ग रूपी संस्कार मंदिर में होने वाले कार्यक्रमों का अन्तरार्थ है। इसलिए मंदिर के दर्शन करके उनके द्वारा आचरणीय संस्कारों को सीखना चाहिए।

श्रीमद्रामायण के शैक्षिक तत्व

डॉ. यस. मुरलीधर राव

रामाय राम भद्राय रामचन्द्राय वेदसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।

यह विश्व जनता को मालूम सूक्ति वाक्य है। तप करके पवित्र हुए, निर्मलबुद्धि से कुलपति बने महर्षि, त्रिकालदर्शी होकर आदि कवि बने हैं वाल्मीकि। चेतना-सम्पन्न, कौंच द्वन्द्व वियोग से दुख सागर में डूब कर नये रूप धारण किये हैं वाल्मीकि ने। ब्रह्म देव से प्रेरित और राम-लक्ष्मणों को भी सुनने के लिए आकर्षित करनेवाले, बार-बार सुनने की प्यास बढ़ानेवाले, रमणीय काव्य, नवरसों भरा श्रीमद्रामायण को रचा है। वाल्मीकि इसका प्रणयन करके धन्य हुए।

इस महाकाव्य को सिर्फ इतिहास काव्य के रूप में नहीं विश्व में आदि काव्य के रूप में नाम मिला है। यह महाकाव्य लोगों को आनंद देता है।

1. प्रभु सम्मितो वेदः—प्रभुसम्मित यानी वेद हैं। वेद प्रभु की तरह कर्तव्य का बोध कराते हैं।

2. मित्र सम्मितम पुराणं—मित्र सम्मित का मतलब पुराण हैं, पुराण मित्रों की तरह कर्तव्य के बारे में बताते हैं।

3. कांता सम्मितम काव्यं—कांता सम्मित यानी काव्य हैं। काव्य कांता की तरह आनंद देते हैं। कर्तव्य का बोध भी कराते हैं। सत्यंवध, धर्ममचर, स्वाध्यान्मप्रमदः आचार्यन्प्रियं, धनमाहमाहृत्य, प्रजातंतुं माव्यवत्यत्वीत्वीः। ये विधि वाक्य वेदों की तरह तथा गुरुओं की तरह उपदेश देते हैं। इतिहास पुराण तो 'रामवत वर्तितव्यं न रावणवत' के रूप में मित्र की तरह उपदेश देते हैं।

काव्य तो कांता की तरह प्रेमानुराग दिखाते हुए आकर्षणीय मृदु मधुर वचनों से हमें कर्तव्य की तरह मोड़ते हैं। रामायण के रामचन्द्र की मातृभक्ति, पितृभक्ति, काव्य रूप वर्णनों का प्रभाव हम पर है। उसी प्रकार का प्रभाव मातृदेवोभव, पितृदेवोभव जैसे वेद वाक्यों का नहीं होगा। कांता सम्मित होकर उपदेश देनेवाले काव्यों में वाल्मीकि रामायण महाकाव्य का स्थान सर्वोन्नत है। रचना कौशल, काव्य वस्तु गौरव दोनों ही दृष्टि से रामायण महाकाव्य समस्त महाकाव्यों का मुकुटधारी महाकाव्य है।

वाल्मीकि रामायण ने विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति किससे कैसा व्यवहार करना चाहिए, ऐसे सामाजिक विषयों की व्याख्या की है। प्रति व्यक्ति अपने परिवारों के सदस्यों को, अन्यों को सुख देने के लिए व्यवहार करना चाहिए, ऐसा पाठ पढ़ायेगा। अगर उसके लिए आवश्यक है तो अपने

वैयक्तिक सुखों को त्याग करने के लिए, किसी भी प्रकार के कष्ट को भोगने के लिए तैयार होना चाहिए, ऐसी शिक्षा देता है। वह नैतिक कर्तव्य को भी बताता है। उससे अलग, सत्य, न्याय, सदाचार, प्रतिज्ञापालन आदि उदात्त धर्मों का पालन करते हुए आदर्श जीवन विधान को बताता है। इस प्रकार वाल्मीकि रामायण विविध नैतिक, धार्मिक विषयों के प्रवचन का मूल ग्रंथ बना है।

मानव के लिए आवश्यक विषय, मानव को समाज में कैसे जीना है बतानेवाले विषयों को, गुरू की मर्यादा कैसे करनी है, मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने आचरण करके दिखाया है। श्रीराम की स्वीकृति प्राप्त इस महाकाव्य में असत्य, दोष, अतिशयोक्तियाँ होंगी, ऐसी कल्पना करना भी संभव नहीं है। यह सकल लोगों के लिए आदर्श काव्य है। अत्यंत प्रयोजनकारी काव्य है यह रामायण महाकाव्य। विश्व की सारी जातियों, सभी वर्गों के लोगों के लिए यह पठनीय एवं सुनने के लिए योग्य काव्य है। प्रति व्यक्ति इसे श्रद्धा से पढ़कर, समझकर, उसके अंदर के उत्तमोत्तम शैक्षिक तत्वों को ग्रहण करके श्रीराम के द्वारा अनुसरण किये हुए मार्ग का अनुसरण करके गुरु की सेवा करते हुए विद्या को प्राप्त करना चाहिए।

विषय प्रवेश

विद्या को सीखते समय गुरु के पास अतिविनय के साथ व्यवहार करना चाहिए, ऐसा राम ने आचरण करके दिखाया है। रामायण के अनुसार विद्याभ्यास तीन प्रकार से किया जा सकता है–

गुरुशुश्रुषया विद्या पुष्कलेन धनेनच।
अथवा विद्याया विद्या चतुर्थो नो पलभ्यते।।

गुरु की सेवा करते हुए विद्याभ्यास करना पहला प्रकार है। गुरु को आवश्यक धन देकर विद्याभ्यास करना दूसरा प्रकार है। एक विद्या को गुरु को देकर दूसरा विद्या सीखना तीसरा प्रकार है। चौथा प्रकार नहीं है, यह संप्रदाय है। इनमें धन, एक विद्या की जानकारी रहने पर भी गुरु की सेवा करके विद्या सीखना श्रेष्ठ माना जाता है। ऐसे ही श्रीराम ने विद्या सीखकर दिखाया है।

गुरु कार्याणि सर्वाणि नियुज्य कुशिकात्मजे।
ऊषुस्तां रजनीं तत्र सरय्यां ससुखं त्रयः।।

(बाल, 22-22)

राम के द्वारा अपने गुरु विश्वामित्र के पाँव दबाना आदि सेवाएँ करके विद्या को सीखा है। फिर विद्या सीखते समय प्रसन्न चेहरे से शुचि होकर भगवान की प्रार्थना करके विद्या सीखना है, ऐसा बताया है।

ततो रामो जलं स्पृष्टयव प्रहृष्टवदनश्शुचि।
प्रति जग्राह ते विद्ये महर्षेर्भावितात्मनः।।

(बाल, 22-20)

आधुनिक काल में पाँवों में चप्पल पहनकर, गुरु की बातों को हास्य मिलाकर विद्या सीखने के कारण विद्या का प्रयोजन नहीं हो रहा है। उसी के साथ सिनेमाओं में भी गुरु जी को व्यंग्य के रूप में दिखाने के कारण विद्यार्थियों में गुरु के प्रति श्रद्धा कम होती जा रही है।

शिष्य पर गुरु का अनुग्रह होने पर शिष्य के पत्थर जैसे हृदय को भी कोमल मृदु मधुर बना सकता है। अपनी शक्ति युक्तियों के माध्यम से अपनी सारी विद्याओं को लोक कल्याण के लिए उपयोग कर सकता है। राम के द्वारा अपने ऊपर दिखायी गयी भक्ति और श्रद्धा के कारण विश्वामित्र ने ब्रह्म देव से प्राप्त किये बल-अतिबल दोनों विद्याओं को राम को तथा लक्ष्मण को सिखाया है।

न सौभाग्ये न दाक्षिण्ये न ज्ञाने बुद्धिनिश्चये।
त्रोरे प्रतिवक्तव्ये समो लोके तवानघ्र।।
एत द्विद्याद्वये लभ्धे भविता नास्ति ते नमः।
बलात्वतिबला चैव सर्वज्ञानस्य मातरौ।।
क्षत्पिपासे न ते राम भविष्यते नरोत्तम।
बलाम अतिबलां चैव पठत पथिराघव।।
गृहाण सर्वलोकस्य गुप्तये रघुनंदन।
विद्याद्वयमधीयाने यशश्चा पत्युलं त्वइ।।
पितामहसुते ह्येते विद्ये तेज स्समन्विते।
प्रदातं तव काकुत्थ्स सद्दश स्त्वं हि धार्मिक।।

(बाल, 22-15-20)

हे पुण्यात्मा, सौभाग्य में, सामर्थ्य में, विषय ग्रहण करने में, कार्य को करने में, प्रत्युत्तर देने में, लोक में तुमसे समान कोई नहीं है। बल अतिबल नामक इन महामंत्रों को समस्त ज्ञान के मातृक हैं, इन दोनों विद्याओं को सीखने से आगे तुमको जीतनेवाला कोई नहीं होगा। लोक कल्याण के लिए इन विद्याओं को स्वीकार करो। पूर्वोक्त सारे उत्तम गुण तुझमें समृद्ध हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

दूसरों के सामने बोलते समय हमें बहुत ही विनय के साथ व्याकरणबद्ध भाषा में बात करने से सामने वाला शत्रु होने पर भी अपने वश में आयेगा। रामायण में इसे हनुमान ने निरूपण किया है। उसकी बात करने की शैली से राम ने मुग्ध होकर लक्ष्मण के सामने हनुमान की प्रशंसा की है।

किष्किंधा में राम-लक्ष्मण जंगल में घूमते आते समय हनुमान ने उन्हें पहचान कर उनके पास आकर उचित रूप में उनसे बात की। इसे देखकर राम ने लक्ष्मण से इस रूप में बताया है—

एव मुक्तात्व तु हनुमान तौ वीरौ राम-लक्ष्मणौ।
वाक्यज्ञौ वाक्यकुशलः पुनर्नोवाच किंचन।।
एतचृत्वा वचस्तस्य रामो लक्ष्मणमब्रवीत।
प्रहृष्टवदनः श्रीमान भ्रातरं प्रार्शतः स्थितम।।
सवि यं कपींद्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।
तमेव कांक्षमाणस्य ममांतिकमुपागतः।।
तमभ्यभाषा सौमित्रे सुग्रीवनचिवं कपिम।
वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेह युक्तम अरिंदमु।।
ना नृग्वेदविनीतस्य ना यजुर्वेदधारिणः।

ना सामवेद विदूषश्च शक्यमेवं प्रभाषितुम।।
नूनं व्याकरणं कृत्स्नम अनेन बहुदा श्रुतम।
बहू व्याहरता नेन न किंचिदपशस्दितम।।
न मुखे नेत्रयेर्वासी ललाटे च भ्रुवोस्था।
अन्वेष्वसि च गात्रेषु दोषः संविदितः क्वचित।।
अविस्तरं असंदिग्धं अइवलंबितमद्रुतम।
उरःस्तं कंठगं वाक्यं वर्ते मध्यमे स्वरे।।
संस्कारक्रमसम्पन्नाम अद्रुताम अविलंबिताम।
उच्चारयति कल्यर्णीं वाचं हृदयहारिणीम।।
अनया चित्राया वाचा त्रिस्थानव्यंजनस्थया।
कस्यना राध्यते चित्तम उद्यतासे अरेरपि।।
एवं विधो यस्य दूतो न भवेत पार्थिवस्य तु।
सिध्यंति हि कथं तस्य कार्याणां गतयो मघ।।
एवं गुणगणैर्युक्ता यस्य स्यूः कार्यसाधकाः।
तस्य सिध्यंति सर्वार्था दूत वाक्य प्रचोदिताः।।

(किष्किंधाकांड, 3-26-36)

श्रीराम अपने अनुज के बारे में ऐसा बता रहे हैं। वानर राजा सुग्रीव का सचिव यह वानर बात करने में अत्यंत कुशल है। इसलिए इससे मृदु और श्रुति मधुर रूप में बात करो। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद में यह सुशिक्षित है। वेदविज्ञान सम्पन्न आदमी ही ऐसी बातें कर सकता है। उन वाक्यों में कहीं भी अपशब्द दिखाई नहीं पड़ते हैं। इसलिए यह निश्चय है कि इसने समस्त व्याकरणों का अध्ययन किया है। इसके बात करते समय मुख मुद्रा में, आँखों में, ललाट भाग में, भौहों में और अन्य शरीर के भागों में किसी भी प्रकार का विकार दिखाई नहीं पड़ता है।

गीती शीघ्री शरःकंपी, तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञो ल्प कंठश्च षडेते पाठकाधमाः।।

बातें करते समय रागालापन करनेवाला, वेग से बात करनेवाला, सर को हिलानेवाला, लिखित को पढ़नेवाला, कंठस्थ किये गये को बोलनेवाला, बिना अर्थ जाने बोलने वाला, अस्पष्ट कंठ स्वर के साथ बोलनेवाला ये छह प्रकार के लोग पाठकाधम हैं। इन छह गुणों में एक भी गुण उनमें नहीं है।

स्वरों के उत्पन्न स्थान तीन हैं। 1. वक्षस्थल 2. कंठ 3. सिर

1. व्याकरण नियमों का पालन करके दोषरहित भाषा का प्रयोग करने को सुसम्प्र संस्कृत का नाम दिया जाता है।

2. शब्दोच्चारण में शास्त्रीय पद्धति को क्रम के नाम से पुकारा जाता है।

3. बिना रुके धारा में बोलने को अविलंबित कहा जाता है।

इसने अपने विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है। इसकी बातों में संदेह नहीं है। रुकते

हुए, अर्थरहित पदों को अलग करते हुए उच्चारण नहीं किया। इसने जल्दी रहित आत्मविश्वास से बात की है। इसने ऊँची आवाज में नहीं, धीमी आवाज में नहीं मध्यम स्वर में बात की है। इसकी बातें व्याकरण शास्त्र सम्मत हैं। इसकी बातें शुभदायक हैं और आकर्षणीय हैं। भावों को स्पष्ट ढंग से प्रकट करने के लिए आवश्यक स्वर स्थानों से बोलने के कारण आश्चर्य में डाल रहे हैं।

इनकी बातों से तलवार उठाकर मारने के लिए उद्यत क्रूर आदमी भी ठंडा होकर तलवार को छोड़ देगा। ऐसे कार्यसाधक दूत को रखनेवाला राजा बहुत ही भाग्यवान है। समयस्फूर्ति वाले ऐसे दूत की अच्छी बातों से उस राजा के सारे कार्य सफल होते हैं।

शास्त्रकारों ने भी बात करते समय प्रिय बातें ही करने से भूमि पर के सारे जीव वश में आयेंगे, कहा है।

प्रिय वाक्य प्रदानेन सर्वे तुष्यंति जंतवः।
तस्मात तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।

प्राचीन शास्त्रकारों ने अध्ययन पद्धति को बताया है।

अष्टमि हंति उपाध्यायां शिष्यं हंति चतुर्धशि।
अमावासोभ्यां हंति प्रतिपदा पाठमात्रतः।।
तस्मात पर्वाणि वर्णयेत। इतिः।।

अष्टमी के दिनों, चतुर्दशी के दिनों, पूर्णिमी के दिनों, अमावास्या के दिनों, प्रतिपदा के दिनों में अध्ययन नहीं करना चाहिए, शास्त्रों का यही प्रवचन है। इसी विषय को रामायण काव्य स्पष्ट कर रहा है। हनुमान सीतान्वेषण के बाद सीता के बारे में इस प्रकार बता रहा है–

सा प्रकृत्यैव सत्वंगी, तद्वियोगाच्च कर्मिता।
प्रतिपत्पाठनाशस्य विद्येव तनुतां गता।।

(सुंदरकांड, 59-35)

सीता देवी सहज ही तन्वंगी है। (दुबली शरीरवाली) ऊपर से राम के वियोग से वे प्रतिपदा के दिन वेदाध्ययन करनेवाले की विद्या की तरह दुबली हो गयी है।

इससे यह संदेश मिलता है कि शास्त्रों में सूचित तिथियों में अध्ययन नहीं करना चाहिए।

इतने पवित्र एवं लोकोपकारी रामायण ग्रंथ को रचकर हम सबको उपकार पहुँचानेवाले वाल्मीकि महर्षि को शतकोटि नमन समर्पण करके मेरी शक्ति के अनुसार सभी विषय बतलाकर मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ।

अनुशीलन के ग्रंथ

1. वाल्मीकि रामायण।
2. नीति शतक।
3. व्याकरण स्वर पद्धति।
4. भारतीय धर्मशास्त्र इतिहास।

नायुनि कृष्णमूर्ति कृत 'रामायण' का वैशिष्ट्य

जी. नीलिमा

विश्व वाङमय का शुभारंभ करनेवाला रामायण आदि काव्य है। तेलुगु भाषियों को रामायण के प्रति अनुरक्ति अधिक है। विशेष रूप से रामायण का प्रभाव तेलुगु भाषियों के जीवन पर अत्यधिक है।

प्रति गाँव में स्कूल हो न हो राम का मंदिर अवश्य रहता है। आंध्र प्रदेश राज्य में ऐसा कोई गाँव दिखाई नहीं पड़ेगा जिसमें राम मंदिर न हो।

जनता की कहावतों में 'लंकंत कोंप'(लंका जैसा बड़ा मकान), त्रिजट स्वप्रमु (त्रिजटा का सपना), कुंभ कर्णनुनि निद्रा (कुंभ कर्ण की निद्रा), राम दंडु (राम की सेना) जैसे वाक्यांशों के साथ तेलुगु भाषी रामकथा की याद करते हैं। उसी प्रकार 'चूसिरम्मंटे काल्चि वच्चाडु' (देखकर आने के लिए कहा तो जलाकर आया), 'रामायण में पिडकल वेट' (रामायण में उपलों की खोज), 'रामायणं अन्ता विनि सीता रामुनिकि एमवुतुंदि' (पूरा रामायण सुनकर पूछना कि सीता राम की क्या लगती हैं) जैसी लोकोक्तियाँ आंध्र में सुनायी पड़ती हैं।

व्यक्तियों के नाम (रामय्या, सीतम्मा, लक्ष्मन्न) पक्षियों के नाम (राम चिलुक, सीताकोक चिलुक), फलों के नाम (रामाफलमु, सीताफलमु) जैसे नाम आंध्रवासियों के सबकी जीभ पर नर्तन करते रहते हैं। इस प्रकार आंध्र में सीता और राम और रामायण की याद नित्य करते लोग दिखाई देते हैं। रामायण आंध्रों के जीवन का एक अंग बन गया है।

लेखक का परिचय

नायुनि कृष्णमूर्ति संयुक्त परिवार से आये चित्तूर जिलावासी हैं। सन् 1951 नवंबर 12 तारीख को नायुनि नरसम्मा और नायुनि रामय्य दंपतियों को चौथी संतान के रूप में पैदा हुए।

इन्होंने रामायण, भागवतों को व्यावहारिक भाषा में रचा है। इनके अतिरिक्त यामिनी कुंतलालु, प्रलोभमु, मनसु गुर्रमु, नामक उपन्यासों को, कथलु, एमलेदु जैसे कहानी संग्रहों को, नाटक, काव्य जैसी विविध प्रक्रियाओं में उनकी प्रतिभा व्यक्त हुई है।

रामायण रचना का नेपथ्य

इसके पहले कई कवियों ने रामायण रचा है। संस्कृत वाल्मीकि रामायण ही सबके लिए प्रामाणिक ग्रंथ है। तेलुगु में इसे आधार बनाकर रंगनाथ रामायण, भास्कर रामायण, मोल्ल रामायण, सुंदर रामायण,

कंब रामायण आदि कई लिखे गये हैं। इनमें अधिकांश पद्य रूप में और ग्रांथिक भाषा में आये हैं।

इनको पढ़कर समझना सबके लिए संभव नहीं है। पामर लोगों को रामायण नहीं मालूम है कहना उचित नहीं है। फिर भी पंडित लोग जिस रूप में समझते हैं वैसे सामान्य जनता समझ नहीं सकती है। उनके लिए संक्षिप्त और सरल रूप में चाहिए। कट्टे, कोट्टे, तेच्चे (सेतु बाँधे, मारा है, ले आये हैं) जैसी शैली में सामान्य जनता पसंद करती है। रामायण को गहराई में जाकर वह समझ नहीं सकती है।

वर्तमान कंप्यूटर युग में अधिकांश लोगों को रामायण पढ़ने के लिए भी समय का अभाव सता रहा है। पढ़ने के लिए समय के होने पर भी वह समझ में नहीं आयेगा, ऐसा संदेह भी हो सकता है। ऐसी परिस्थितियों में सबकी समझ में आये संग्रह रूप में रामायण को रचना आवश्यक है। ऐसी स्थिति में इसी विचार से लेखक के द्वारा 1980 के समय रामायण को पूरी व्यावहारिक शैली में और सरल रीति में रचना बहुत बड़ा विषय है।

अयोध्या नगर वर्णन

अयोध्या नगर वर्णन में भी लेखक की संक्षेपीकरण और सरलीकरण की प्रतिभा का पता चलता है। वाल्मीकि ने अपने रामायण के बालकांड में अयोध्या नगर का विविध रूपों में चित्रण किया है। ''स्त्रियों के कमरबंध की तरह अयोध्या नगर की चारों दिशाओं में ऊँचे प्राकार बनाये गये थे। प्राकार में यत्रतत्र ऊँचे द्वार भी बनाये गये थे। बड़े-बड़े किले, उनके ऊपर ध्वजादि थे।'' कहते हुए राजा के वैभव का भी कई रूपों में वर्णन किया है। (श्रीमद्रामायण, दाशरथी रंगाचार्य, पृ.45) यह पूरा वर्णन यह स्पष्ट करने के लिए किया गया है कि ''दशरथ को काफी और आवश्यक राज्य है। सर्वभोग उनके अधीन थे। राज्य में किसी भी प्रकार के कष्ट और कमियाँ नहीं थीं।'' इस रूप में बहुत संक्षेप में नायुनि कृष्णमूर्ति जी ने सरल भाषा में अयोध्या नगर का वर्णन करके राजा दशरथ के राज्य वैभव का चित्रण किया है।

अहल्या वृत्तांत

विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को लेकर मिथिला नगर जाते समय गौतम मुनि के आश्रम दिखाकर वृत्तांत सुनाया है। उसमें गौतम मुनि ''अहल्या को बिना आहार के, वायु भक्षण करते, भस्म में गिरकर, तप करते हुए यहीं हजारों वर्ष पड़े रहो।'' ऐसा शाप करके चले जाते हैं।

''आश्रम में राम और लक्ष्मण ने प्रवेश के समय बर्फ और कोहरे से भरे चन्द्र प्रभा की तरह, जल मध्य में चमकने वाले प्रकाश की तरह प्रकाशवान अहल्या को देखा। राम के चरण स्पर्श से अहल्या को पूर्व रूप प्राप्त हो गया। तब गौतम मुनि ने वहाँ पहुँचकर राम-लक्ष्मण की पूजा करके उनका विधिवत आश्रम में स्वागत किया।'' (श्रीमद्रामायण, पृ.88)

''उत्साह के साथ श्रीराम प्रदेश को निहारने लगे। तब श्रीराम पाद स्पर्श से पत्थर रूपी अहल्या स्त्री बन गयी। सभी आश्चर्य हो गये।'' (ना.रा. 52) ऐसा संग्रह रूप में बताया है।

राम का राजतिलक

राम के राजतिलक के समय कैकेयी दो वरदान माँग कर लेती है। उस समय दशरथ की परिस्थिति को लेखक ने बताया है– ''पुलकावली के साथ हृदय पर मानो बिजली गिरि ताड़ के पेड़ की तरह नीचे गिर गया है।'' ऐसा वर्णन करके दशरथ की मानसिक स्थिति का सुंदर चित्रण किया है।

नायुनि कृष्णमूर्ति ने रामायण के प्रत्येक प्रसंग को संक्षेप करके उसे सरल और सुलभ बनाकर सबके पास पहुँचा दिया है।

संवादों में सरलता

दशरथ कैकेयी से दूसरे वरदान माँगने के लिए कहता है फिर भी–''पूँछ दबाये नाग की तरह एक ही पल में ऊपर उठ गयी। कैकेयी ऐसे वरदानों को छोड़कर तुम्हारे आश्वासनों के अनुसार मुट्ठी भर चावल माँगनेवाली नहीं है, यह तुमने कैसे सोच लिया।'' कहती है। इसमें पूँछ दबाये नाग, मुट्ठी भर चावल जैसे वाक्यांशों का प्रयोग करके प्रसंग को सर्वसाधरण बनाया गया है।

राम के वनवास संदर्भ में राम दशरथ के साथ ''पिताजी, आपके वचनों के पालन के लिए मैं वनवास के लिए तैयार हूँ। बार-बार समझाने पर भी सीता और लक्ष्मण मेरे साथ चलने के लिए तैयार हो गये हैं। अगर आप आशीर्वाद देंगे तो वनवास के लिए निकल जायेंगे।'' कहते हैं। यहाँ पर दशरथ और राम में साधारण पिता और पुत्र दिखाई देते हैं। दशरथ राजा और युवराज श्रीराम दिखाई नहीं देते हैं।

सोने के हिरण को देखकर सीता राम से प्रेम के साथ ''हे मेरे नाथ, मेरा मन सोने के हिरण को पकड़ कर–'' कहती है। यहाँ भी सीता और राम सामान्य पति-पत्नी की तरह ही दिखाई देते हैं।

सीता के अपहरण के लिए आये रावण को देखकर सीता कहती है–''सीता ने असह्य से रावण पर थूकी। छिः नीच अब तक तुमको आदर करनेयोग्य समझकर बात करती रही'' कहती है। 'कांड्रिंचि उम्मि' वाक्य साधारण कार्य है। आम लोग ही ऐसा करते हैं। लेखक ने सीता पर इसका आरोप करके प्रसंग को सरल और सहज बनाया गया है। इससे सीता को रावण पर कितना असह्य भाव है, पता चलता है।

पारिवारिक व्यवस्था के टूटने के आज के युग में पारिवारिक संबंधों की शक्ति कमजोर पड़ गयी है। पति-पत्नी के संबंध हों, या भाई-भाई का संबंध हो, मित्रों के संबंध हों आज स्वार्थ बढ़ गया है। बच्चों को अपने माता-पिता और गुरुजनों पर गौरव भी कम हो गया है। ये सारे मूल्य समृद्ध रूप से रखनेवाला रामायण आज भी इसलिए आदर्श है। आदर्श पति, पत्नी, भाई, पुत्र, राजा आदि सभी रूपों में रामायण के पात्र हमारे सामने आते हैं।

ऐसे सारे विषयों के प्रति परिचय आज के लोगों के लिए सरल रूप में चाहिए। लोगों की इस आवश्यकता को दृष्टि में रखकर नायुनि कृष्णमूर्ति ने रामायण रचा है। व्यावहारिक तेलुगु भाषा इसकी अन्यतम विशेषता है।

श्रीमद्वाल्मीकिकालीन विद्याविधान : एक अनुशीलन

डॉ. के. पुरुषोत्तम

श्रीमद्वाल्मीकि की कलम से निकली रामायण कृति निर्माण कौशलता की दृष्टि से अत्यद्भुत है। ऐसा काव्य 'न भूत न भविष्यति' है। उसकी वस्तु वैशिष्टच सरल सुबोध है। ऐसा कवि दूसरा दिखाई नहीं पड़ता है। उनकी शैली बाद के इतिहास और पुराण के लिए सुगम मार्ग है। यह विश्व धर्म वैचित्र्य और भाव वैभव का निलय है। उनके मौलिक रहस्यों को देख सकनेवाले मनोनेत्र, प्रवचन या व्याख्या करनेवाली प्रज्ञा मुनियों के बिना किसी दूसरे को संभव नहीं है। इसी को 'दर्शन' कहा गया है। महाकाव्य को लिखनेवाला ऋषिकल्प होना आवश्यक समझा गया। दर्शन किये गये तत्वों को काव्य में बदलने के लिए विन्यास चाहिए जो सिर्फ ऋषियों और कवियों को ही संभव होता है। ऐसे दर्शन महाकवियों को ही प्राप्त सहज सौभाग्य है। वाल्मीकि कविकुल गुरु हैं। कालिदासादि उस 'कृतवादग्ध्यर' प्रवेश के लिए योग्य बने हैं।

रामायण सिर्फ कथा के लिए नहीं बल्कि कथा-कथन के लिए भी प्रसिद्ध है। इसमें दिखाई पड़नेवाले स्त्री-पुरुष, प्रकृति विलक्षणता, सत्व, रजस, तमो गुण उनके वर्णन में यत्रतत्र अलग रूप में दिखाई पड़ते हैं।

''**आत्मानां मानुषं मन्ये, रामं, दशरथात्मजम्**'' यह अनुष्टुप पाद है। ''मैं मनुष्य हूँ राम मेरा नाम है, दशरथ का पुत्र हूँ।'' कहते हैं। इसी का विश्व रूप ही काव्य का प्रस्तुतीकरण है।

> **''वेद वेद्ये परे पुंसि, जाते दशराथ्मजे**
> **वैदः प्राचेत सात आसीत, साक्षात रामायणात्मना।''**

वाल्मीकि प्राचेतन हैं। ज्ञान स्वरूप इस शब्द का अर्थ है। वेद अपौरुषेय हैं। रामायण आर्षेय है। ये दोनों ज्ञाननिधि हैं। वेदोपबृहणं का मतलब कर्म और ज्ञान का विस्तार है। यह इतिहास का मूल स्थान है। 'प्रभु सम्मत' वेद से 'मित्रसम्मत' पुराण से 'कांता सम्मत' यह आदि काव्य बाद के कवियों का मार्गदर्शक बना है।

बहु भाषाओं में बहु रूपों में सारी प्रजा के लिए विस्तरित कल्प वृक्ष ज्ञान भांडागार वाल्मीकि यन्न रामायण है। यह विश्वसाहित्य में शिखरायमान है। परिपूर्ण ज्ञानी ही इसकी समीक्षा कर सकता है। आदिकवि वाल्मीकि ने अपने रमणीय रामायण काव्य के द्वारा भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृति के इतिहास में अत्युन्नत स्थान दिलाया है। रामायण में वर्णित संस्कृति उदात्त संस्कृति है।

दशरथ महाराजा के राज्य में नास्तिक, असत्यवादी, शास्त्र ज्ञान विहीन, विद्याहीन नहीं थे।

वाल्मीकि के वचन अक्षर सूक्तियाँ हैं।

नास्तिको नानृतेवापि नकश्चिद बकुश्रुतः
ना सूयको नचाशक्तो ना विद्वान विद्यते क्वचित।।

(1-6-14)

उपनयन संस्कार के बाद प्रत्येक ब्राह्मण छात्र को वैदिक विद्याओं के साथ-साथ साहित्य का भी अध्ययन करना पड़ता था।

रामायण काल में राजाओं के सदाचरण को प्रजा भी अनुसरण करती थी। राजाओं का प्रभाव प्रजा पर होता था। राज व्यवस्था में राजा सर्वोन्नत अधिकारी समझा जाता था। इसलिए प्रजा के अंदर सोये हुए सद्गुणों को प्रकाश में लाकर, देश के विकास के लिए आवश्यक प्रयत्न किया जाता था। प्रजा अपनी प्रतिभा-निपुणताओं को दरबार में प्रदर्शित करती थी। कलाओं में निष्णात कलाकार राजाओं से सहयोग मिलता था। उसकाल में आश्रम ही विद्या केंद्र हुआ करते थे। देश भर आश्रम हुआ करते थे। उनमें ज्ञान-विज्ञान प्रवाह प्रवाहित होते थे।

गुरुकुलाश्रम

रामायण काल में माता-पिता अपनी संतान को गुरुकुल में रखकर उन्हें विद्या दिलाते थे। छात्र गुरुओं की निगरानी में आश्रम में रहते विद्या सीखते थे। गुरुओं का जीवन-लक्ष्य विद्या सिखाना ही था। विद्या के द्वारा शिष्य सदाचारी के रूप में गुरुओं द्वारा बना दिये जाते थे। गुरुओं का व्यक्तित्व शिष्यों के लिए आदर्श था।

शिष्यों की योग्यता

रामायण काल के गुरु उत्तम सदाचारी गुण सम्पन्न और दक्ष थे। उत्साही लोगों को ही अपने शिष्यों के रूप में वे लेते थे। विश्वामित्र ने जब श्रीराम को देखा था तब वे एक वीर योग्य बनेगा ऐसा विचार होने पर ही उसे अपने साथ ले गये थे। श्रीराम समस्त विद्याओं को सीखने के लिए योग्य हैं, जानकर ही उसे बल, अति बल नामक विद्याओं को सिखाया। विद्यार्थियों की दृष्टि में गुरु परम पूज्य है। माता, पिता, जेष्ठ भाई की तरह गुरु को भी 'पितृ पंचक' में स्थान दिया गया है। माता-पिता अपने जन्म के लिए जिम्मेदार हैं। किंतु गुरु हमें प्रज्ञाचक्षु प्रदान करनेवाला है।

"पिता ह्येनं जनयति, पुरुषं पुरुषर्वभ
प्रज्ञां ददातिआचार्यः तस्मत सगुरु रुच्यते"

(2-111-3)

गुरु वर्ग

विद्याभ्यास, विद्याशिक्षण ये दोनों उस जमाने में प्रचलित थे। रामायण में चित्रित अनेक प्रकार के गुरुओं में 'गुरु' (2-111-3) का मतलब अपने आश्रम में रहनेवाले छात्रों के प्रति पिता-पुत्र संबंध

निभाते उनकी योग्यतानुसार विद्या सिखानेवाला है। गुरु के बाद आचार्य (2-111-4), कुलपति (2-111-4) गिनती करनेवाले हैं। कुलपति के निर्देशन में विविध प्रदेशों से आये शिष्य विद्यार्जन करते थे। उपध्याय वर्ग में 'श्रत्रिय' (1-1-1) नामक एक शाखा हुआ करती थी। वे आनुवंशिक रूप में वेदों का अध्ययन करके अपनी सेवाओं से तामसिक वृत्तियों से मुक्त हुआ करते थे। 'तापस गुण' (1-14-12) नामक एक और शाखा हुआ करती थी। तप करके अपने पास आनेवालों को विद्या सिखाते थे। शास्त्र व्याख्याताओं को 'ब्रह्मवादी' (1-12-5) कहते थे। 'उपाध्याय' शास्त्रों को सिखाते थे। ललित कलाओं को सिखानेवाले अध्यापकों को 'शिक्षक' कहते थे।

विद्यार्थी के जीवन में पहली अवस्था ब्रह्मचर्य आश्रम है। इस अवस्था में विद्याभ्यास, सरल जीवन, उन्नत भाव आदि सीखने के लिए शिक्षण दिया जाता था। गुरु के आश्रम में कठोर नियमों का पालन करना पड़ता था। दशरथ के पुत्रों ने भी उस समय आचार के अनुसार शिष्यवृत्ति की थी।

वेदेश्च ब्रह्मचयैश्च गुरभिश्च प्रकर्षितः (2-12-84)

विश्वामित्र के अधीन रहते समय तक राम और लक्ष्मण राजकुमार होने के बावजूद भी दर्भाओं पर सोते थे। विद्यार्थी जीवन में आत्मानुशासन, इंद्रियनिग्रह को अधिक महत्त्व देते थे। तप के रूप में विद्या को सीखना पड़ता था। विद्यार्थी लोग त्याग, सहिष्णुता आदि को बढ़ाना पड़ता था।

विद्यार्थी को अपने गुरुओं के प्रति श्रद्धासक्तियों के साथ-साथ उनकी आज्ञाओं का पालन करने को अधिक महत्त्व देना पड़ता था। श्रीराम अपने गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए ही ताटकी वध के लिए तैयार हुए थे। 'जहिमच्चाननानृप' (1-25-22) शिष्य गुरु के प्रति विनय और विधेय होकर उनकी सेवा करते थे। इसके अतिरिक्त 'ब्रह्ममुहूर्त' में ही नींद से जागकर स्नान करके, संध्या वंदन आदि नित्य कर्म करने की आवश्यकता थी। प्रातःकाल समय में अग्नि होत्र आदि कर्म आदि करना पड़ता था। प्रातःकाल, शाम को संध्यावंदन जैसे कर्म अवश्य करना पड़ता था।

उच्चतम विद्या का अभ्यास करने के लिए एक आश्रम से दूसरे आश्रम में, एक गुरु से दूसरे गुरु के पास जानेवाला वैदिक आचार का पता हमें रामायण से ही प्राप्त होता है। विश्वामित्र अपनी प्रारंभिक शिक्षा सीखने के लिए (पौरोहित्य संबंधी ज्ञानाभिवृद्धि के लिए) नैरूति दिशा भाग के सिद्धाश्रम को चले गये। (1-34-12) श्रीराम ने अपनी प्रारंभिक सैनिक विद्या को (युद्ध विद्या) सुध्वनुन के पास सीखा है। 'अगस्त्मुनि' द्वारा प्रयोग पद्धतियों के साथ-साथ उनको नवीन वस्त्र भी प्राप्त हुए।

रामायण काल के विद्या-पाठ्यक्रम को चार भागों में विभाजित कर सकते हैं। 1.शारीरिक 2. बौद्धिक 3. व्यावहारिक 4. नैतिक पाठ्यक्रम।

शारीरिक

शारीरिक विद्या का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को व्यायाम, आखेट, युद्ध पद्धतियों के द्वारा बल, शक्ति प्रदान करना है। रामायण काल में युद्ध अधिक थे। इसलिए युद्ध विद्या में समस्त पद्धतियों को

सीखना आवश्यक था। इसलिए युद्ध विद्या धनुर्वेद नाम से व्यवहृत होती थी। धनुर्वेदी विद्या में शब्द भेदी विद्या यानी शब्द सुनकर निशाना लगाना, सिखाते थे। युवराजों को उन्नत अधिकारियों के साथ भेजते थे। श्रीराम, अंगद आदि सैनिक यात्राओं में जाते थे। (2-2-36) इसके अतिरिक्त चतुरंग विधान में युद्ध विद्या को दृष्टि में रखकर उस समय विद्यार्थियों को हाथी, घोड़ा, रथ को चलाने की विद्या को सिखाते थे।

'गजस्कन्धे अश्ववृष्टे च रथचर्या सुसम्मतः'

(1-17-27)

बौद्धिक

बौद्धिक विद्या का मुख्य उद्देश्य वाङमय ज्ञान को विद्यार्थियों को सिखाना है। इसमें सकल शास्त्र, कलाएँ हुआ करती थीं। शास्त्रीय साहित्य में वेदों को प्रमुख स्थान दिया जाता था। ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम वेद को लेकर स्पष्ट रूप से रामायण में कहा गया है। 'आदित्य हृदय स्तोत्र'' में सूर्य को लेकर 'ऋग्यजुस्साम पारगः'' (6-105-13) के रूप में बताया गया है। अथर्ववेद के लिए एक जगह 'अथर्वशिरस' (1-15-2) कहा गया है। वेदों के बाद वेदांगों के लिए शिल्प, कल्पम, व्याकरण, निरुक्तं, छंदस्सु, ज्योतिष्यं (षटांग) प्रमुख थे। वेदांत को लेकर वर्णन (6-109-23) के लिए ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद् और उत्तर वैदिक साहित्य को सूक्ष्म रूप से कहा जा सकता है।

व्यावहारिक

राजकीय व्यवहारों में उस समय बहुत रुचि रखते थे। प्रत्येक छोटे विषयों में भी शासक मंत्री, विद्वान, सेनाध्यक्षों से विचार करके देश के भविष्य के बारे में निर्णय करते थे।

नैतिक विद्या

नैतिक विद्या में पवित्राचरण, सत्य, कर्तव्य पालन, इंद्रिय निग्रह, मनोवाक्कर्मों की पवित्रता आदि उत्तम विद्यावान के लिए आवश्यक लक्षण माना जाता था। श्रीराम के राजतिलक का निर्णय करते समय दशरथ के द्वारा बोले गये वचन ही उस समय की नैतिक विद्या की मिसाल समझा जा सकता है।

गुप्त विद्याएँ

उस समय गुप्त विद्याएँ भी प्रचार में थीं। विश्वामित्र ने 'बल' 'अतिबल' नामक अलौकिक शक्तियों को प्रदान करनेवाली गूढ़ विद्याओं को श्रीराम को सिखाया। सीखनेवाले व्यक्ति को उस विद्या के प्रभाव से थकान, मानसिक चिंताएँ नहीं होती थीं। इस विद्या को सीखनेवाले व्यक्ति को सोते समय असावधानी से रहते समय राक्षस आक्रमण नहीं कर सकते थे। चातुर्य, सौभाग्य, ज्ञान आदि किसी तात्कालिक निर्णय करने के लिए तथा किसी के प्रश्न के जवाब देने में वे किसी का सानी नहीं रखते

थे। इस विद्या के प्रभाव से भूख-प्यास नहीं सताया करती थी। (1-22-13,21) श्रीराम ने अपने आपको शुद्ध बनाने के बाद महामुनि के पास इन दोनों विद्याओं को सीखा था।

बलाः इस विद्या में अथर्ववेद मंत्र तंत्र प्रमुख रूप से थे। उनकी सहायता से युद्ध में बल और विजय प्राप्त होते थे।

अतिबलाः इस विद्या में रहस्यात्मक दार्शनिक मंत्र हुआ करते थे। वे श्रीराम को दार्शनिक ज्ञान, बुद्धि निपुणता, तर्कसूक्ष्मता को प्रदान करते थे। (ज्ञान बुद्धि, निश्चये, उत्तरे प्रति वक्तव्ये)

स्वच्छंद बलगामिनी विद्या : (3-17-25) यह विद्या चाहत प्रदेश में व्यक्ति को पहुंचाने की शक्ति रखती है। शूर्पणखा इस विद्या में निपुण है।

चक्षुस्मते विद्या : (4-59-29) इस विद्या के द्वारा सौ योजनों की दूरी तक देखने की शक्ति प्राप्त होती थी। यह विद्या मुख्य रूप से गीधों को मालूम थी। इसलिए वे कई मील दूरी वाले अपने शिकार पर वार कर सकते थे।

सर्व भूतरुत विद्या : (2-35-19) इस विद्या के द्वारा सर्व जीवों की भाषाओं को समझने की शक्ति मिलती है। इस विद्या के प्रभाव से ही कैकेयी के पिता पशु-पक्षियों की भाषा को समझते थे।

कामरूप धारणी विद्या : इस विद्या से अपने इच्छानुसार किसी भी रूप को प्राप्त कर सकते हैं। वानर और राक्षस इस विद्या में प्रवीण थे।

भूत विनाशिनी विद्या : इस विद्या के द्वारा शिशुओं को भूत प्रेतों की पीड़ाओं से बचा सकते हैं। वाल्मीकि महर्षि ने इस विद्या से सीतादेवी के पुत्रों को बचाया था।

त्रिकालज्ञ विद्या : (1-3-6) इस विद्या के द्वारा भूत, भविष्य, और वर्तमान को जान सकते हैं। वाल्मीकि महर्षि को यह विद्या मालूम थी।

अणिमा : अणिमा विद्या को जाननेवाला आकाश में उड़ सकता था। इसी प्रकार आदमी अपने को छोटा और बड़ा करने की शक्ति को पानेवाली अनेक गूढ़ विद्याएँ और रहस्यात्मक कलाएँ उस समय प्रचलन में थीं। हनुमान ने अपनी लंका यात्रा के दौरान इस विद्या का प्रयोग किया था।

उसकाल के विद्या-विधान की पद्धतियों में 'कथा पद्धति' भी एक थी। गुरु आकर्षवान पद्धति में उपदेशों से भरी कथाओं, धर्म, नीति विषयक सिद्धांतों को बतलाकर शिष्यों को उत्तम नागरिक बनाते थे। ऋषि गण, मुनि इस प्रकार की कथाओं के लिए भांडागार थे। कथाओं के माध्यम से अपने शिष्यों को पुराण और आध्यात्मिक विषयों को सरल रूप में और सही रूप में बताते थे। गुरु कथाओं को आदर्श के रूप में लेकर शिष्यों को आश्चर्य, कुतूहल, नवीनता आदि तत्वों से बोध कराता था। विश्वामित्र ने श्रीराम को अभिरामकथाएँ सुनाकर उसे विनोद के साथ-साथ विज्ञान को भी प्रदत्त किया था। आकर्षण ग्रंथों को प्रातःकाल के समय उच्चस्वर में पठन करते थे।

स्वाध्ययन

अर्जित ज्ञान को भूले बिना प्राचीन काल में विद्वानों ने स्वाध्याय, अभ्यास पद्धतियों को विकसित किया

था। गुरु के द्वारा प्राप्त ज्ञान को प्रतिनित्य कंठस्थ करते थे। नारद महर्षि जैसे उन्नत अध्येता को भी 'तपः स्वाध्यानिरतम' करते देखा गया है।इसकाल की विद्याओं में युवकों के लिए व्यायाम, सैनिक शिक्षण, बलवान पशुओं से लडना, रथ सारथ्य, आखेट आदि बल बढ़ानेवाली विद्याएँ मानी जाती थीं।

विश्वामित्र के पास अनेक प्रकार के अपूर्व अस्त्रों का भांडागार ही था। उसमें अत्यंत दुर्लभ अस्त्र भी थे। श्रीराम ने उनकी प्रयोग विधि को सीखा था। युद्ध में अजेय बने हैं। उस अस्त्र समूह को प्रयोग विधि के साथ विश्वामित्र ने श्रीराम को समर्पित किया था। (1-27-28) उनमें से कुछ– धर्मचक्र, काल चक्र, विष्णु चक्र (सुदर्शन चक्र)।

अस्त्र

इंद्रास्त्र, वज्रास्त्र, ब्रह्मास्त्र, ऐषिकास्त्र, वारुणास्त्र, अग्नेयास्त्र, वायव्यास्त्र आदि का प्रयोग करने का अवसर श्रीराम को प्राप्त हुआ था। श्रीराम वेद-वेदांग, कलाएँ, संस्कृत, प्राकृत भाषाएँ, संगीत वाद्य, चित्र कला, शिल्पकला ठीक तरह से जाननेवाले थे। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के तत्वों को अच्छह ढंग से हृदयांगम किया था।

श्रीराम 'धनुर्वेद' में महान पंडित थे। समस्त शस्त्रों में निपुण थे। अतिरथ और महारथियों में प्रचलित थे। युद्धों में अजेय थे। 'क्षात्र धर्म' के प्रति उन्हें काफी प्रीति थी। 'अंगस्तमुनि' के आश्रम में श्रीराम ने कुछ अस्त्रों की वैदिक प्रयोग पद्धतियों को सीखा था।

स्त्री विद्या

इस विद्याविधान को दो भागों में बाँटा गया। 1. सद्यो वधु 2. ब्रह्मवादिनी।

1.सद्यो वधु : इस पद्धति में विद्यार्थिनियाँ गुरुओं की सेवाएँ करते हुए प्रार्थनाएँ, यज्ञ यागादि अधिकारों को सीखती थी। उदाहरण के लिए कौसल्या, तारा और सीता को दिया जा सकता है।

2. ब्रह्मवादिनी : इस पद्धति में युवतियाँ आजन्मांत कन्याओं के रूप में (अविवाहित) रहकर स्वाध्याय, यज्ञ, तप आदि कार्यों में भाग लेती हैं। उदाहरण के लिए स्वयंप्रभा, वेदवती को लिया जा सकता है।

इसके अलावा अहल्या ने गौतम ऋषि के पास, शबरी ने मातंग ऋषि के पास इस प्रकार के ज्ञान को प्राप्त किया था। शबरी ने निरंतर मुनियों के पास रहकर जीवन काटते हुए अपार ज्ञान को विधि के साथ प्राप्त किया था। (विज्ञाने नित्य बहिष्कृता) परमात्मा को लेकर सम्पूर्ण ज्ञान शबरी को प्राप्त हुआ था।

सीता

लंका में रहते समय हनुमान के द्वारा दी गयी मुद्रिका पर श्रीराम का नाम पढ़कर उस अँगूठी को राम की है, ऐसी पहचान की थी। सीता ने कुछ नीति कथाओं, श्लोकों को सुनाकर हनुमान को सही रास्ता बताया था।

''अयं व्याघ्रा समीपेतु पुराणो धर्मसंहितः।
ऋक्षेण गतः श्लोकोस्ति तंनिबोध प्लवंगं।''

सीता ने अपने पतिव्रत्य के आदर्श के रूप में सावित्री, रोहिणी, दमयंती, शचि, अरुंधति, लोपामुद्रा, सुकन्या, केशिनी आदि पतिव्रताओं का उल्लेख किया था। सीता ने बचपन में पतिव्रता शिरोमणियों की कथाओं को सुनकर उनके आधार पर अपने जीवनादर्शों को तैयार कर लिया था।

चिकित्सा शास्त्र

रामायण में आयुर्वेद शास्त्र के जनक 'धन्वंतरी' का वर्णन मिलता है। त्रिदोष (4-45-31) इसमें सुंदर ढंग से चित्रित हुए हैं। अयोध्या नगर वैद्यों से भर रहता था। वैद्य,गणित, शास्त्रों में प्रवीण सुषेण वैद्य शिखामणि के रूप में प्रचलित हुए हैं।

रामायण काल की विविध विद्याओं के औन्नत्य के बारे में उपर्युक्त अंशों के माध्यम से जान लिया है। उस समय की विद्या का प्रथम उद्देश्य शारीरिक शक्ति को बढ़ाना है। प्राचीनार्य लोग स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन रहता है, विचार रखते थे। स्वस्थ, बल के अभाव में कर्तव्य पालन करना कठिन साध्य है। ''विद्यार्थी को दृढ़ शरीर पाकर अपनी संस्कृति और सभ्यता की रक्षा करने का सामर्थ्य रखना चाहिए।''

श्रीराम अपने बाहुबल, सैनिक शिक्षण के द्वारा ही सीता को रावणासुर से बचाकर अपने कुल गौरव की रक्षा कर पाये हैं। इसके अलावा उसकाल की विद्या का दूसरा उद्देश्य विद्यार्थियों को एक ही विषय को पढ़ाने के साथ-साथ अनेक शास्त्रों के विपुल विज्ञान को प्रदान करना भी था। कई विषयों का ज्ञान प्राप्त करना विद्यावान का लक्षण है।

युवकों को स्वच्छता, विदेयता, सदाचार आदि गुणों को प्राप्त करने के रूप में तैयार करना उसकाल के विद्याविधान का परम कर्तव्य था। रामायण काल की विद्या का वैशिष्ट्य उसकाल के आदर्शों को संतुलित रूप में विभाजन करना ही था। रामायण काल के आदर्श राजा उत्तम नागरिकता प्राप्त नागरिक थे। कर्तव्यपरायण अधिकारी किसी भी प्रकार की विसंगतियों के बिना हुआ करते थे। अच्छी सामाजिक व्यवस्था भी थी। ये सब उस समय की सांस्कृतिक विद्या के वर-प्रसाद थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्रीमद्रामायणमु : डॉ.एन.सी.वी.नरसिंहाराव।
2. तेलुगु साहित्यमुलो रामकथा : कुमारी पंडा शमंतक मणि।
3. रामायणकालमु लो भारतीय संस्कृति : डॉ. बालशौरि रेड्डी।
4. ना परिशीलनलो रामायणमु : डॉ.जे. वीरस्वामी।
5. जाति जीवनमु पै रामायण प्रभावमु : आचार्य कसिरेड्डी।

वाल्मीकिरामायण : रामकथाश्रित संस्कृत नाटक : एक अनुशीलन

डॉ. मल्लंपल्लि भद्रकालि

यावत स्थास्यंति गिरियः सरितश्च महीतले।
तावद्रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

ये पर्वत, नदियाँ धरती पर जब तक होंगी तब तक तुम्हारे द्वारा रचित रामायण सप्त लोकों में प्रचार में रहेगा।

युगों के बीत जाने के बाद भी इस जाति के लिए सिर्फ श्रीरामचन्द्र ही प्रभु हैं। उनके द्वारा बनाया गया सेतु ही धर्मसेतु है। (धर्म मार्ग या जीवन का पुल) ''रामो विग्रहवान धर्मः'' साकार धर्ममूर्ति वे हैं।

उस पुरुषोत्तम की कथा को इस अनंत काल प्रवाह में कितने लोगों ने कितने रूपों में कीर्तन किया? कितने लोग और कीर्तन करेंगे? वाल्मीकि की कलम से अप्रयत्न निकली सरस्वती रामायण बनना इस जाति का सबसे बड़ा सौभाग्य है। ऋषि होते हुए उस कवि ने जो काव्य निर्माण किया वह अमर बन गया है। हमारे संस्कृत काव्य संसार के लिए वह एक रत्न है। उससे ही भास, कालिदासादि महाकवि अंकुरों के रूप में पैदा होकर महावृक्ष बन कर प्रशंसित हुए हैं। कितने लोग कितनी भाषाओं में कितनी बार लिखने से सुनने से बार-बार लिखना है बार-बार सुनना है ऐसी कामना जगानेवाली शक्ति रामकथा में है।

इसलिए कवि सम्राट विश्वनाथ सत्यनारायण जी ने इस रूप में कहा है कि बार-बार लिखने का मतलब बार-बार रोजाना अन्न खाने की तरह उसकी रुचि कम नहीं होती है, उसी प्रकार रामायण को बार-बार लिखने के बावजूद उसे लिखने की प्यास तथा सुनने की प्यास नहीं बुझती है। रामकथा लिखने की अनुभूति अपनी नहीं होती है। वह भी राम की होती है। मेरी भक्ति रचनाएँ मेरी नहीं हैं। बल्कि उसी श्रीराम की हैं। उन्होंने ही मुझसे लिखवाया है।

इसलिए रामकथा के मधुररस का पान करने के लिए सभी तैयार होते हैं। सभी अपनी-अपनी रुचि के अनुकूल आज भी अलग रूप से रामायण रचने की कोशिश कर रहे हैं।

प्रस्तुत संदर्भ में रामकथाश्रित संस्कृत नाटक निम्न हैं।

1. भास : प्रतिमा, अभिषेक
2. भवभूति : महावीर चरित्रमु, उत्तररामचरितमु

3. दिङ्नगुडु : कुंदमाल

4. मुरारि : अनर्घ राघवमु

''काव्येषु नाटकं रम्यं'' यह आर्योक्ति है। वाल्मीकि रामायण श्रव्य काव्य है। शिष्यों के साथ स्नान करने गये वाल्मीकि क्रौंच वियोग से प्रभावित होकर उस बाधा को स्वयं अनुभव करते हैं।

पापात्मना कृतं कष्टं वैर ग्रहण बुद्धिना
य स्ता द्दशम चारुरवं कौंचीं ह न्या दकारणात
शोचक्नेव मुकुः क्रौंची मुप श्लोकमिमं पुनः
मुहुर्मरुहूः प्रीय माणाः प्राहुश्च भृश विस्मिताः
समाक्षकैः चतुर्भर्यः पानैर्गीतो महर्षिणा

साक्षात् चतुर्मुख ब्रह्म पधार कर सामने बैठने के बावजूद वाल्मीकि का मन उस दृश्य से नहीं हटता है।

श्चोन्नेव मुहूः क्रौंची मुपश्लोक मिमं पुनः
जगावंतार्गत मना भूत्सा शोक परायणः।।

यही कवि नामक व्यक्ति के लिए आवश्यक लक्षण है। यहाँ स्पष्ट है कि वाल्मीकि ऋषि से कवि बने हैं। इसलिए वे आदि कवि हैं। रामायण आदि काव्य बना है।

उनके बाद आये भास, कालिदास आदि महाकवि इनके बताये मार्ग पर ही चलते आ रहे हैं।

अधवा कृत वाग्ध्वारे वंशीस्मीन पूर्व सुरिभिः।
मीणौ वज्र समुत्कीर्णे सूत्र स्ये वास्तिमें गतिः।।

ऐसा कालिदास विनय के साथ कहते हुए रघुवंश काव्य रचकर अमर हुए हैं। कालिदास के पहले भास ने (रामकथा) प्रतिमा नाटक लिखने से भवभूति उत्तररामचरितमु नाटक लिखकर अमर हुए हैं।

भास

भास ने रामायण को आधार बनाकर दो नाटक लिखे हैं।वे हैं–1. प्रतिमा 2. अभिषेक।

अभिषेक : यह 8 अंकवाला नाटक है। इसमें रामायण के किष्किंधाकांड, सुंदर, युद्धकांडों का इतिवृत्त लिया गया है। इसमें सुग्रीव, विभीषण, श्रीराम तीनों के राजतिलक के बारे में कहने के कारण इसका नाम अभिषेक रखा गया है।

प्रतिमा नाटक श्रीराम के राजतिलक की तैयारी के साथ शुरू होता है।

छत्रम स व्यजनं सनंदि पटहं

राजतिलक के लिए सारी तैयारियाँ पूरी हुई हैं। संगीत शाला में नाटक के अंदर अन्तर्नाटक के लिए आवश्यक व्यवस्था कर दी गयी है। उस समय ''ततःप्रविशति अवदातिका वल्कलं गृहीत्वा''

अवदातिका भय के साथ वल्कल लेकर उस तरफ जा रहा था ''ततः प्रविशति सीता सपरिवारा'' तब सीता के हाथ के वल्कल को देखकर ''उन्मत्तिके एवं दोषो वर्षते, गच्च निर्यातय, निर्यातया'' ऐसा बोलकर भी दुबारा अवदातिका बुलाकर कहा है—वह वल्कल मेरे लिए अच्छा लगेंगे? कहती उसे लेकर सुंदर लोगों को सब सुंदर लगेंगे? पहन लो कहती है। शीघ्र ही सीता उसे पहन लेती है। 'भट्टिनि प्रियाख्यानिकं द्रिया श्यानिकं' कहती हुई आना सीता, वह प्रिय बात कौन सी है? पूछना— राम का अभिषेक चल रहा है। कहा जाता है। तब सीता तुरंत डरती हुई ''आपि तातः कुशली'' पूछती है। ''महाराजेन अभिषित्यते'' सुनते ही सीता संतोष के साथ अपने शरीर के सभी आभरण निकालकर सेविका को भेंट के रूप में देती है।

राम से मिलकर राजतिलक के लिए तैयार होनेवाली सीता अप्रयत्न से वनवास के लिए तैयार हो जाती है। यह भास की नाटकीयता है। इस रूप में प्रसंगों को अत्यंत आसानी से तुरंत बदल कर सृजन करने में ही भास की प्रतिभा का पता चलता है।

दृश्यों के आयोजन में भास किसी भी प्रकार के कष्ट का अनुभव नहीं करते हैं।

श्रीराम के अरण्यवास के लिए जाने के बाद दशरथ के दयनीय जीवन को वाल्मीकि से बढ़कर अत्यंत करुणा के साथ भास ने चित्रण किया है।

वाल्मीकि रामायण में —

हा राघव, महाबाहू, हा मया यासनाशन,
हा पितृ प्रिये, मेना, हा, द्वकासिगतस्पुत।।

कहते विलाप करता है। लगभग उसी रूप में भास ने प्रतिमा में—

हा वत्स, राम जगतां नयनाभिराम।
हा वत्स, लक्ष्मणा, सुलक्षणा, सर्वगात्र।
हा साध्वी, मैथिली, पतिस्थित चित्तवृत्ते
हा हा गताः किल वनं बत में तनूजाः।।

राम रहित अयोध्या का वर्णन भास ने इस रूप में किया है—

नागेंद्रा यवसाभिलाष विमुखाः साप्रेक्षणा वनाजिनो
हेषा शून्य मुखाः स वृद्ध वनिता भालाश्च पौराजनाः।
त्यक्ताहारकथाः सुदीन वदनाः क्रिदंत उच्चैर्दिशा
रामोयति यया सदारा सहजस्ता मीव पश्यंतत्यमी।।

इसके साथ प्रतिमा नाटक में भरत अयोध्या प्रवेश करते हुए गुरु वचन निर्देश से थोड़ा समय वहीं रहता है। भरत—''अहा क्रिया माधुर्य राषाणाम, अह भागवतिराकृतीनाम, दैवतो द्विष्टा, नामपि मानुष विश्वासतासां प्रतिनाम किं नु खलु चतुर्देवतो नयं स्तोमः। अथवा यानि तानि भवंतु। अस्ति ताव न्मे मनसि प्रहर्ष।

कामं दैवता मित्येव युक्तं नमयितुं शिरः।
वार्षलस्तु प्रदामः स्वनमंत्रार्चित दैवतः।।

भरत वहाँ की प्रतिमाओं को देख कर कहते समय देवकुलिक अंदर आता है।

भरत : ये प्रतिमाएँ किन की हैं?

देव : इक्ष्वाकु कुल लोगों की हैं?

भरत : इक्ष्वाकु कुल क्या है?

ये सब अयोध्याधीश हैं क्या?

मैं बिना जाने यहाँ आ गया हूँ।

देवकुलिक क्रम से दिलीप, रघु, अज उनकी अपनी प्रतिभाओं के साथ नाम समेत परिचय देता है।

देवः अयं दिलीपः

भरतः पितृ पितामहा महाराज्यस्य, ततस्ततः

देवः अत्र भवान रघुः

भरतः पितमहा महाराजस्य, ततस्ततः

देवःपिता तातस्य किमिति किमिति

दैवः अयं दिलीपः अयं रघुः अयं अजः

भरतः भ वंतं किंचित पृच्चुमि धरमाणानामपि प्रतिमाः स्थाप्यंते

देवः नखलु अतिक्रांता ना मेव, भर, तेनह्य पृच्चे भवंतत

देवः तिष्ट येन प्राणश्च राज्यं च स्त्री खल्कार्दे विसर्जिताः। इमां दशरथस्य त्वं प्रतिमां किं न पृच्चसे।।

देव कुलिक की इन बातों को सुनते ही भरत बेहोश हो जाते हैं। देवकुलिक को तब लगता है। आनेवाला इक्ष्वाकु कुल का है। कैकेयी पुत्र भरत है। भरत को भी तभी लगता है। भरत को भी तभी पता चलता है कि दशरथ नहीं रहे। अपनी माँ का काम। यह भास के द्वारा सृजित अद्भुत प्रसंग है। इस प्रसंग के अनुसार ही इस नाटक को प्रतिमा नामकरण किया गया है।

उसके बाद नाटक में सोने के हिरण की घटना नहीं है। श्रीराम पर्णशाला में अपनी पत्नी के साथ अपने पिता के अब्दक कर्म के बारे में सोचविचार कर रहे थे। रावण संन्यासी वेश में आकर अब्दक कर्म में कांचन मृग देने की बात कह कर उसके लिए श्रीराम को सीता से अलग ले जाता है। बाद में आकर सीता का अपहरण करता है। इस रूप में भास ने वाल्मीकि से भिन्न कल्पना इस नाटक में की है।

उत्तररामचरित : कुंद माला

उत्तरकांड की कथा को लेकर भवभूति और दिङ्नगुडु ने नाटक लिखे हैं। कथा संविधान में नाटकीय शिल्प को मिलाकर भवभूति ने अद्भुत सृष्टि की है। इसीलिए ''उत्तररामचरिते भवभूति द्विशिष्यते'' भवभूति ने ऐसा नाम कमाया है। वाल्मीकि रामायण में अन्त में सीता भू प्रवेश करती है। जब कि उत्तररामचरित में सीता और राम एक साथ रहते हैं। भवभूति ने नाटकीयता के लिए आत्रेयि,

तरल, वासंति जैसे नये पात्रों का सृजन भी किया है। इसके अतिरिक्त कई अवाल्मीकिय अंशों एवं प्रसंगों का आयोजन भी अपने नाटक में किया है। मुख्य रूप से तृतीय अंक में (छायांक) सीता और राम के मिलने का प्रसंग उनके भव्य दांपत्य प्रेम का सूचक है। इसके श्रीराम वाल्मीकि श्रीराम जैसे कठोर नहीं हैं। वाल्मीकि रामायण में श्रीराम ने सीता को जंगल में छोड़ कर आने की बात कही है तो इसमें श्रीराम ने सीता को वाल्मीकि आश्रम में छोड़कर आने की बात कही है। कुंदमाला में भी लक्ष्मण राम की आज्ञा से सीता को वाल्मीकि आश्रम के पास गंगा नदी के तट पर छोड़कर आता है। तब रोनेवाली सीता की आवाज सुनकर वाल्मीकि आकर सीता को सांत्वना देकर अपने आश्रम में ले जाते हैं। राजमहल में गंगा तट के दृश्यों को चित्र के रूप में देखकर सीता श्रीराम से वन में विहार करने की बात कहती है। तभी चर आकर लोकोपवाद की बात श्रीराम को बताते हैं। राम तुरंत सीता को गंगा तट पर जाने की अनुमति देते हैं। साथ ही लक्ष्मण को बुलाकर आदेश भी देते हैं। राम कहते हैं—

स्नेहं नयां तधा सौख्यं यदिवा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्ति मे व्यधा।।

वाल्मीकि रामायण में श्रीराम कहते हैं—

असह्यं जीवितं ज्ञह्यं युष्मन्वा पुरुषर्षभा।
अपवाद भयाद्भीतं किंपु वर्णन कात्मजाम।।

वास्तव में उत्तरकांड में सीता और राम सुख भोग करते 10 हजार वर्षों तक थे। काफी समय निकलने के बाद वनवास की घटना चित्रित है। जबकि भवभूति और दिज्ञकुडु ने कथा में रोचकता लाने के लिए नयी कल्पना की है। राजतिलक के बाद सीता और राम ने कुछ वर्षों तक सुखी जीवन बिताया था।

दशवर्ष सहस्राणि गतानि सुमहात्मनोः।
प्राप्तयोर्वि विधान भोगान सतीवशिशिरागयः।।

नाटक निर्माण के लिए कुंदमालाकार और भवभूति ने इस प्रकार नयी कल्पना की होगी।

कुंदमाला और उत्तररामचरित दोनों में श्रीराम सीता का स्पर्श पाते हैं। राम के तिरस्करण से वाल्मीकि रामायण में तपः शक्ति के कारण श्रीराम सीता को दिखाई नहीं पड़ते हैं। सीता के लिए रो रो कर आँखों में आँसुओं के कारण नेत्र जलने लगते हैं। साथ याग के धुएँ के कारण भी श्रीराम देख नहीं पाता है। तब श्रीराम आश्रम की गंगा में उतरते हैं। वहीं रहनेवाली सीता श्रीराम को इसकारण से दिखाई नहीं पड़ती है। लेकिन सीता राम को देखती है। लेकिन गंगा नदी के पानी में सीता की छाया राम को दिखाई पड़ती है। यथार्थ में सीता राम को दिखाई नहीं पड़ती है। श्रीराम बहोश हो जाते हैं। सीता आकर उन्हें अपनी गोद में लेकर ठीक करती है। फिर राम सीता की खोज करते हैं।

इसी प्रकार का प्रसंग उत्तररामचरितम के तृतीय अंक में है। इस प्रकार कुंदमाला और उत्तररामचरित में कई दृश्य और भाव साम्य, चमत्कार प्रसंग दिखाई देते हैं। एक ही वस्तु को लेने

पर महाकवियों की कल्पना में इस प्रकार की भिन्नता का होना सहज ही है।

मुरारी : अनर्घ राघवमु

यह सात अंकों का नाटक है। यह दसवीं सदी का है। विश्वामित्र याग रक्षाणार्थ राम और लक्ष्मण को ले जाते हैं। पूरी रामकथा को कहते हुए यत्र तत्र अन्त में रामकथा सीता, राम और हनुमान समेत पुष्पक चढ़कर अयोध्या लौटने का दृश्य है।

छलित राम नाटक :

यह दसवीं सदी के पूर्व ही रचा गया है। कृतिकार अज्ञात है। धनंजय ने दशरूपक में इसका उल्लेख किया है।

जयदेव का प्रसन्न राघवमु

यह सात अंकों का नाटक है। इसमें रावण ही नहीं बाणासुर भी सीता की याचना करता है।

श्रीराम के जीवन में गुरु का स्थान

डॉ. यस.एल.वी. उमामहेश्वर राव

''नारायण समारंभां व्यास शंकर माध्यमं
अस्मदाचार्य पर्यांतां वंदे गुरु परंपरां।''

आदि काल में नारायण, मध्यकाल में व्यास, शंकर भगवान, आधुनिक काल में हमारे गुरुजन, इन सभी ज्ञानमूर्तियों को नमस्कार।

'**गुकारो अंधकारस्य रुकारो तन्निवारकः**' यह आर्योक्ति है। अंधकार का मतलब भौतिक अंधकार नहीं है। अज्ञान नामक अंधकार है। अपने ज्ञान प्रकाश से जग के अंधकार को दूर करनेवाला ही गुरु है। अज्ञान को दूर करना ही नहीं बल्कि ज्ञान मार्ग को बतानेवाला भी गुरु है।

उत्तम गुरु शिष्य के लिए बाह्य साधन ही नहीं बल्कि पारमार्थिक साधन के रूप में प्रयोजन पहुँचाता है। लौकिक, अलौकिक मार्गों में सकल मानवों को उत्तम मार्ग दिखानेवाले, आदर्शवान मूर्ति श्रीराम ही हैं। गुरु विश्वामित्र के निदेशन में राम के द्वारा प्राप्त विजयों के अवलोकन से गुरु महिमा का पता चलता है। साथ ही जीवन में सद्गुरु की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है। इसके लिए रामायण के कुछ प्रमुख प्रसंगों का अनुशीलन किया जा सकता है।

रामायण के कुछ प्रमुख प्रसंगों में ताटकी संहार, अहल्या शाप विमोचन, सीता स्वयंवर उल्लेखनीय हैं। श्रीराम के जीवन में आयी स्त्री पात्रों में उनकी माओं को छोड़कर ताटकी और अहल्या मुख्य हैं। गुरु विश्वामित्र के साथ मिलकर यज्ञ की रक्षा करने जाकर श्रीराम ने उनमें लोक कंटक ताटकी का वध किया है। गुरु के आदेश पर किया। उसी प्रकार गौतम मुनि के आश्रम में महर्षि के गुस्से का शिकार हुई अहल्या को गुरु की सूचना के अनुसार ही स्त्री बना दिया। राजर्षि जनक की सभा में भी गुरु की आज्ञा से ही स्वयंवर में भाग लेकर गुरु के आशीर्वाद से शिव धनु को तोड़कर सीता के साथ विवाह किया है।

गुरु आदेश, सूचक और आशीष से ही श्रीराम के जीवन में उपर्युक्त तीनों घटनाएँ सम्पन्न हुई हैं। इनके अनुशीलन से ताटकी, अहल्या, सीता तीनों तीन गुणों के प्रतीकों के रूप में नजर आती हैं। राक्षसी ताटकी तमोगुण के लिए, मुनिपत्नी अहल्या रजोगुण के लिए, राजर्षि जनक की पुत्री जानकी सत्वगुण के लिए प्रतीक हैं।

प्रत्येक मनुष्य में ये तीनों गुण होते हैं। किंतु कौन सा गुण किस रूप में होना चाहिए गुरू के द्वारा दिये गये संस्कारों पर निर्भर होता है। गुरुओं से ही शिष्यों को संस्कार प्राप्त होते हैं। मनुष्य

को तमोगुण पूरी तरह छोड़नेवाला गुण है। रजोगुण कुछ सीमा तक क्षंतव्य है। सत्वगुण आचरणीय है। इसीलिए तमोगुण प्रतीक ताटकी का संहार करके, रजोगुण प्रतीक अहल्या का संस्कार करके सत्वगुण के प्रतीक सीता को श्रीराम ने स्वीकार किया है।

मनुष्य के जीवन में छोड़ने योग्य, संशोधन करने योग्य और स्वीकार करने योग्य विषयों को राम ने अपने आचरण के माध्यम से सुस्पष्ट किया है। ये तीनों घटनाएँ गुरु विश्वामित्र के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई हैं। मानव जीवन में गुरु के स्थान को तथा उसके औन्नत्य को, आवश्यकता को ये सारी घटनाएँ समर्थन करती हैं।

भगवत्स्वरूप श्रीराम का ही मार्ग दर्शन करनेवाले गुरु की बातों को हम जैसे सामान्यों के लिए भी मार्ग दर्शन करनेवालों को प्रमुख साधना समझना चाहिए।

श्रीराम के जीवन को आदर्श के रूप में लेकर अपने जीवन को उदात्त बनाने वाले कई महापुरुष हैं। उसी परंपरा में शिवाजी एक हैं। शिवाजी ने अपने गुरु समर्थ रामदास की सेवा से अपने जीवन को धन्य बनाया है। साथ ही मुसलमान राजाओं से देश की रक्षा की है। उसी प्रकार परिव्राजक रामकृष्ण परमहंस को गुरु के रूप में प्राप्त कर स्वामी विवेकानंद ने भारतीय आध्यात्मिक चेतना को प्राप्त किया है। भारतीय आध्यात्मिक क्षेत्र में युव किशोर बन कर अपने को तथा गुरु रामकृष्ण परमहंस को अमूल्य नाम पहुँचाया है। आधुनिक काल में तेलुगु साहित्य की खेती में रत्नों को पैदा करने के लिए कई साहिती कृषक रूपी गुरुओं को देख सकते हैं। उनमें तिरुपति वेंकट कविद्वय, सर्वपल्लि राधाकृष्णन आदि नित्य स्मरणीय हैं। गुरु के आदेशों का पालन करके अत्यंत सफल होनेवाले श्रीराम का जीवन हजारों वर्षों तक मनुष्यों के लिए आदर्श बना रहेगा।

''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरु साक्षात परमब्रह्म तस्मैश्री गुरुवे नमः

श्रीमद्रामायण में वरदान : वर्गीकरण

डॉ. ओ.वी. भास्कर शमा

श्रीमद्रामायण शत प्रतिशत मानवों के लिए लिखा गया अद्भुत ग्रंथ है कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। मानव का जीवन कैसे होना चाहिए? जवाब देनेवाला एक मात्र ग्रंथ रामायण ही है। इस ग्रंथ में श्रीराम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, भरतादि के आदर्शवान तत्वों के साथ-साथ अशीः-शपथ-शकुन-वरदान-शाप आदि तत्व भी हैं। वाल्मीकि ने इन सारे अंशों के साथ-साथ सौंदर्य और नवीन चेतना को भर कर रामायण को अमर बनाया है।

प्रबंधानां प्रबंधूणआमपि कीर्ति प्रतिष्टयोः।
मूलं विषय भूतस्य नेतर्गुण निरूपणम।।

(प्रताप रुद्रीयमु, विद्यानाथ)

लेखक को प्रबंध को कीर्ति और प्रतिष्ठाएँ प्राप्त होने का मूल कारण नायक के गुणों का निरूपण है। श्रीराम के गुण निरूपण के कारण इस ग्रंथ का नाम सार्थक हो गया है। साथ ही वाल्मीकि का नाम भी सार्थक हो गया है।

अदि राजयशो बिंबमादर्शं प्राप्यवाङ्मयम
तेषाम सन्निधान्येपि नस्वया पश्य नश्यतिः

(काव्यादर्श-दंडी)

सुशासन देनेवाले राजाओं में प्रप्रथम श्रीराम हैं। इसलिए उनका राज्य राम राज्य कहा गया है। ऐसे श्रीराम के यशो बिंब वाङ्मय रूपी दर्पण में बंद किया गया है। मन में न होने पर स्वयं अनदेखा होने पर भी श्रीराम के लिए 'रामो विग्रहवान धर्मः' ही माना जाता है।

उनका यही रूप साहित्य में रह गया है।

श्रीरामकथा लेखन के हजारों वर्ष बीत जाने के बाद भी उसका आकर्षण कुछ भी कम नहीं हुआ है। उसके अंदर के वरदान, शाप, अंगों के रूप में ही हैं। वे अलग-अलग नहीं होते हैं। दोनों रामकथा में एकता के रूप में ही होते हैं। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक संहार का स्वरूप और दूसरा संरक्षक स्वरूप है। शाप के बल से शत्रु नाश होता है। मृत्यु, पीड़ा, वध, उपद्रव आदि है। वरदान के लिए मूल भाव मंगलभाव होने के कारण उसका परिणाम मंगल, शुभकामना, उपकार आदि जैसे होते हैं। लेकिन रामायण में वर भी मृत्यु से संबंध रखता है।

वर शब्द वृधायवु से निष्पन्न हुआ है। इसके लिए कृपा, प्रसाद, इष्ट, चयन, अनुग्रह,

शुभकामना जैसे अर्थ हैं। ''वियते इति वरः मनाक अभीष्टेवरः तपोभिमष्येते यस्तु देवेभ्यो सवरो मतः'' ''अदृष्ट दानं वरः'' ये आर्योक्तियाँ हैं।

अभीष्ट सिद्धिर्थ के लिए प्रयत्न करनेवाले साधक के प्रति भगवान संतुष्ट होकर साधक को वरदान के रूप में उपकार करते हैं। यानी भगवान की संतुष्टि से ही वरदान प्राप्त होते हैं। यह संतोष होना तप, यज्ञ, प्रार्थना, स्तुति, पूजा, सद्‌गुण कीर्तन, सत्कार्य, उन्नत व्यक्तित्व, दुष्टजन दमन, शिष्ट जन रक्षण आदि कारणों से संबंध रखता है। अपनी प्रसन्नता को भगवान वरदान के माध्यम से व्यक्त करता है। वरदाता वरग्रहीता से जेष्ठ और श्रेष्ठ होता है। वरप्रदाता वरदान देने की इच्छा से शब्दोच्चारण रूप में उसकी अभिव्यक्ति करता है। यह अभिव्यक्ति अत्यंत सम्पन्न रहती है। वर ग्रहीता अत्यंत सद्‌गुण सम्पन्न होता है। अपने को प्राप्त वरदानों को लोक कल्याण के लिए ही इस्तेमाल करता है। ऐसे लोग लोक में यश को प्राप्त करते हैं। स्वार्थ पूर्ति के लिए वरदान पानेवाले लोक प्रयोजन नहीं करने पर वरदान शाप के रूप में बदल जाता है। अर्थात् वरदान स्वार्थपूर्ण होने से अरिषड्वर्ग बढ़कर वरग्रहीता को ही नुकसान पहुँचाता है। उसकी स्मृति और अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है।

रामायण में कुल 84 वरदानों का उल्लेख मिलता है। इनमें 15 तक तप और यज्ञ के कारण प्राप्त हुए हैं। इनके कारण राक्षसों को ही अधिक लाभ हुआ है। रावण, कुंभकर्ण, मेघनाद, विभीषण, मारीच, सुमालि, माल्यवंत, विराद, दुंदुभी आदि ने घोर तप किया था। राक्षसों की तरह विश्वामित्र, वशिष्ठ, शरभंग, कश्यप, भगीरथ आदि लोगों ने महोग्न तप किया था। इनमें विभीषण और विश्वामित्र को छोड़कर बाकी को वरदान मृत्यु बन गयी है। उसका मूल कारण धर्म प्रवृति को छोड़कर व्यवहार करना ही है।

रामायण के अंदर के वरदानों को वर्गीकरण करने पर याचित, अयाचित, अनिश्चित, नियमांचित, सानुग्रह, अस्वीकृत, नामक छह प्रकार के हो जाते हैं।

याचित वरदान

साधक तप और यज्ञ आदि से इष्ट देव को प्रसन्न करके अपनी कामना को बताकर वरदान प्राप्त करने को याचित वरदान कहा जाता है। इस वरदान में याचक अपनी कामना को ही बता सकता है। वरप्रदाता उसकी कामना के अनुसार ही वरदान देने का कोई नियम नहीं है। याचक की कामना को आंशिक रूप में या पूर्ण रूप में स्वीकार किया जा सकता है। नहीं तो अस्वीकार भी किया जा सकता है। इस वरदान को प्राप्त करते समय अयाचित वरदान के समय अगस्त्य राम से रावण के वरदान प्राप्त करने का समाचार भी देता है। रावण के तप से प्रसन्न होकर ब्रह्म प्रत्यक्ष होकर हे धर्मज्ञ, अपनी कामना बताओं, वरदान दूँगा कहा। रावण ब्रह्म को नमन करके इस रूप में कहा–

भगवान प्राणिनं नित्यं नान्यत्र मरणाद्भयम
नास्ति मृत्यु समः शत्रु रमरत्व महं वृणे।।

(उत्तरकांड, 10-16 श्लोक)

हे महात्मन् मैं अमरत्व को चाहता हूँ। वरग्रहीत रावण के इस वरदान को सुनकर वरप्रदाता ब्रह्म ने अस्वीकार किया है। दूसरा वर माँगने को कहा। तब रावण ने इस रूप में कहा—

सुपर्ण नाययक्षाणां दैत्य दानव राक्षसां।
अवध्यो हम प्रजाध्यक्ष देवता नांच शाश्वत।।
नहि चिंता मनन्येषु प्राणिष्व मर पूजित
तृण भूता हि ते मन्ये प्राणिनो मानुषादयः।।

—उत्तरकांड, 10 स - 1920

अर्थात् प्रजाध्क्षा, गरुड़, नाग, यक्ष, दैत्य, दानव, राक्षसों के हाथों में मैं मृत्यु नहीं चाहता हूँ। अन्य प्राणियों की चिंता नहीं है। मानवादि मेरे लिए तृण प्राय हैं। ब्रह्म ने तथास्तु कहकर वरदान दिया।

इस वरदान को ही नहीं अयाचित वरदान इस रूप में दिया है।

श्रुणु चा पि वरो भूयाः प्रीत स्येह शुभोदु म
हुतानि यानि शीर्वाणी पूर्वमक्ग्रोत्वया नघ
पुनसनि भविष्यं ति तथैव तव राक्षस
वित रामेह ते सौम्य वरं चान्य दुरासदम
चंद तस्व रूपं च मनसा यद्य थेप्पितम।।

—उत्तरकांड, 10 स, 23, 24,25

अर्थात् तुमने पहले जिन सिरों को अग्नि में डाल दिया था वे सब पूर्व रूप में प्राप्त हो जायेंगे। इसके अलावा दुर्लभ वर तुमको दे रहा हूँ। उसके अनुसार तुम चाहत के अनुसार रूप को प्राप्त कर सकते हो। ये दोनों पूर्ण रूप से अयाचित हैं। यहाँ रावण के द्वारा ग्रहीत वरदान से विश्व प्रयोजन नहीं हुआ। इसलिए उसे मृत्यु प्राप्त हुई है।

अयाचित वरदान

सद्गुण सम्पन्न होकर दुष्ट शिक्षण शिष्ट संरक्षण करनेवाले साधक को श्रेष्ठ प्रसन्न होकर कार्य साधना को शीघ्र गति से करने के लिए बिना माँगे ही वरदान देते हैं। वे ही अयाचित वरदान हैं। ये वरदान स्वीकृत वर हैं। और अस्वीकृत भी होते हैं। अयाचित वर स्वीकार करनेवाले अपनी कामना को व्यक्त करने का अवसर नहीं रखते हैं। उदाहरण के लिए जांबवान हनुमान को जन्म वृत्तांत बताते समय बचपन में अंजनीसुत सूर्य को फल समझकर खाने के लिए उड़े। इंद्र ने अपने वज्रायुध को हनुमान पर प्रयोग किया। तबसे हनुमान का नाम पड़ा। कुपित होकर वायु मुल्कों में वायु को रोका। वायु देवताओं पर प्रसन्न होने के बाद ब्रह्म ने हनुमान को वरदान दिये—

प्रसादिते पवने ब्रह्म तुभ्यं वरंदरौ।
अशस्त्र वध्यतां तात समरे सत्य विक्रमः।।

—किष्किंधा, 66-27

हनुमान को युद्ध में किसी भी अस्त्र से नहीं मरने का वरदान दिया। उसी समय में इंद्र ने भी–

वज्रस्य चनिपातेन विरुजं त्वां समीक्ष्य च
सहस्र नेत्रः पीतात्मददौते वर मूत्तमम
स्वछंद तश्च मरणं तव साजि वै प्रभो

–किष्किंधाकांड - 66-28-29

वज्र प्रहार से बाधा होने पर इंद्र प्रसन्न होकर तुझे स्वच्छंद मरण का वर दान देगा। और किसी रूप में तुम्हारी मृत्यु नहीं हो सकती है।

अनिश्चित वरदान

याचित है या अयाचित है किसी भी रूप में जानकारी के बिना प्राप्ति का विवरण न होने से विषय मध्यस्थ होकर स्पष्ट न होने से वह अनिश्चित माना जायेगा।

उदाहरण के लिए सीतापहरण के लिए सहायता माँगनेवाले रावण से मारीच ने इस रूप में कहा। ''मैं बलवान ही नहीं हूँ। ब्रह्म के द्वारा दिये गये वरदान से मुझे देवता लोग भी नहीं मार सकते हैं।'' कहा। यहाँ ब्रह्म के द्वारा दिए गये वरदान के बारे में स्पष्टता नहीं है। याचित है या अयाचित है, क्या दिया गया था, कब दिया गया था। मारीच राम से नहीं मारा गया। इसलिए वर अनिश्चित लग रहा है।

नियमांचित वरदान

शर्ते या नियमों के तहत रहनेवाले वरदान को नियमांचित वरदान कहा जाता है। उदाहरण के लिए विश्वामित्र श्रीराम को मरुत्तुल जन्म वृत्तांत के बारे में बता रहे थे। दिति के पति कश्यप ने महर्षि के पास जाकर यह प्रार्थना की। मेरे गर्भ से सर्वकार्य समर्थ, इंद्र विजेत बननेवाला पुत्र पैदा हो ऐसा मुझ पर अनुग्रह कीजिए। उसकी बातें सुनकर कश्यप ने कहा–

एवं भवतु भद्रंते सचिर्भव तपोधने
जनइष्यसि पुत्रं त्वं शुक्रहंतार माहवे
पूर्ण वर्ष सहस्रे शुचित्यदि भविष्यसि
पुत्रं त्रैलोक्य हंत्तारं मत्तस्त्रवं जनयिष्यसि

–बालकांड, 46-5,6

तपोधन, आपकी इच्छानुसार ही हो। तुझे शुभ है। तुम्हारी इच्छा के अनुसार 'इंद्रहंत' पुत्र पैदा होगा। लेकिन वर फल को प्राप्त करने के लिए हजार वर्ष शुचि व्रत करने की शर्त लगायी।

सानुग्रह वरदान :

''दृष्ट दान मनुग्रहः'' साधक को वरदान के साथ दिये जानेवाले शस्त्र, अस्त्र, धनुषबाण, रथ,

आशीर्वचन आदि अप्रयत्न से प्राप्त होने को सानुग्रह वरदान माना जाता है।

अहामेवा हरिष्यामि सर्वान लोकान महामुने
अयसं त्वहच्चिामि प्रदिष मिहा कानने।।

—अरण्यकांड, 5-33

महामुनि तुम्हारे बताये सारे लोकों को मैं ही स्वयं प्राप्त करूँगा। कहते शरभंग के वरदान को अस्वीकर कर दिया।

सीताराम ने दोनों वरदान देने पर भी स्वीकार नहीं किया। एक, दो स्वीकार करने पर भी स्वीय लाभ के लिए नहीं बल्कि लोक कल्याण के लिए स्वीकार किया। रामायण भर खोज करने पर भी कहीं भी लक्ष्मण को वर देने का प्रसंग नहीं है। अगर मिल भी गया तो राम के साथ मिला हो। अकेले को नहीं है। कहीं श्रीराम को अयाचित वरदान प्राप्त होने पर भी उस वर को स्वीकार करने का भाव अपने लिए न होकर दूसरों के लिए प्रयोजन होगा समझकर स्वीकार कर लिया होगा।

मरे हुए ब्राह्मण बालक को जीवित करने के लिए, युद्ध क्षेत्र में मरे वानरों को जिलाने के लिए, उन वानरों के लिए अयोध्या मार्ग में सारे पेड़ फलों से भरने के लिए, सारी जनता सुखी रहने के लिए, नदियाँ पानी से भरकर प्रवाहित होते रहने के लिए, दुष्ट दमन और शिष्ट रक्षण के लिए श्रीराम ने वरदानों को स्वीकार किया स्वार्थ के लिए कभी नहीं। इसलिए उस रामचन्द्र के मार्ग में--- लोकास्समस्ता सुखिनो भवन्तु।

रामायण : विभिन्न राज्य व्यवस्थाएँ

एन.एम. एलुमलै

राजा : राज्य व्यवस्थाओं की आवश्यकता

धरती पर जीनेवाले समस्त जीवों में अत्यंत विशिष्ठ, विचित्र जीव मानव ही है। आवेश, आनंद, आक्रोश आदि को मानव नियंत्रण में नहीं रख सकता है। अपने आप अकेले में जी नहीं सकते हैं। सर्वसंग परित्याग के साथ भी किसी न किसी रूप में दूसरों से काम पड़ेगा। मानव के इस स्वभाव के कारण ही शायद दूसरों से अपने पर नियंत्रण करने के लिए अवसर पैदा किये। महाभारत के शांति पर्व में भीष्म धर्मराज से कहते हैं–''पहले मानव को राजा नहीं था। जब से ईर्ष्या, द्वेष, लोभ, गुण आदि मानव में आ गये तब से राजा से तथा राज्यंग व्यवस्था से आवश्यकता हो गयी। तब तक शासन करने वाला या सजा देनेवाला कोई नहीं था।'' कहा था। (तिक्कन भारत, शांति पर्व, 2 आश्वास-198 से 206) इस परिस्थिति को हमारे बुजुर्गों ने कृत युग के रूप में देखा है। मानव के भावों में परिवर्तन होकर समाज में व्यवस्था का रूप बदलने के साथ-साथ हमारे उसकाल का नामकरण करते आये। उस प्रकार त्रेता, द्वापर, कलियुग आदि तैयार हुए। कृत युग के समय जो राज्यांग व्यवस्था नहीं थी त्रेता युग तक तैयार हो गयी। इस विषय का हम अपना पहला इतिहास रामायण में देख सकते हैं। रामायण में चर्चित विभिन्न राज्य व्यवस्थाओं का परिचय प्रस्तुत संदर्भ में दिया जा रहा है।

रामायण में प्रतिबिंबित विभिन्न राज्य व्यवस्थाएँ

रामायण में मुख्य रूप से तीन राज्यव्यवस्थाओं का परिचय प्राप्त होता है। पहला रामायण के आरंभ में ही कोसलराज दशरथ का शासन विधान है। दूसरा वानरों की शासन पद्धति और तीसरा राक्षसों का लंका राज्य विधान है। कथा प्रकार से देखने पर जिनके पास बल है राज्य उन्हीं का है। इस सिद्धांत में वानर राज्य को देख सकते हैं। फिर भी उनके पास भी कुछ नियमों को देखा जा सकता है। इसका विवरण बाद में दिया गया है। प्रस्तुत संदर्भ में इन तीनों राज्य व्यवस्थाओं का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है। इसके साथ-साथ उनके वैशिष्ट्य का परिचय दिया जा रहा है।

कोसल राज्य

कौसल्या के पिता के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिलती है। लेकिन वह कोसल राजा की पुत्री

होने के कारण कौसल्या हो गयी। उसके साथ दशरथ विवाह कर लेता है। श्रीराम उन्हीं का बेटा है। लोक जनता की अनुमति से राम का राजतिलक करने का निर्णय लिया गया है। वह भी भरत के अयोध्या में न होने पर। सीता के और कैकेयी के पिता को भी निमंत्रण नहीं भेजा गया। इससे बढ़कर अयोध्या में रहनेवाली कैकेयी को भी इसका पता नहीं है। भरत के अयोध्या पहुँचने के पहले ही राम राजतिलक का कार्य पूरा हो जाना है ऐसा दशरथ की योजना है। यह बात दशरथ ने ही राम से कही है। उपर्युक्त सारे विषय राजा अपने अभीष्ट के अनुसार करना चाहते हैं तो वह राजनीति के अन्तर्गत ही आता है। न कि किसी वैयक्तिक निर्णय के अन्तर्गत। फिर भी दशरथ के इसकार्य को संप्रदाय का समर्थन प्राप्त होता है। किसी प्रकार का दोषारोपण नहीं होता है। सारी निंदाएँ कैकेयी और मंथरा को ही मिली हैं। क्योंकि उनका कार्य ही संप्रदाय विरोधी कार्य है। संप्रदाय के प्रचार के कारण ही ऐसा संभव हो सका है। कैकेयी वरदान के कारण ही राम का राजतिलक रुक जाता है। राम को वनवास जाना पड़ा है। इस रूप में सर्वप्रथम आरोप कौसल्या ही करती है।

वनवास के रास्ते में पितृ वाक्य पालन करने की कीर्ति राम को प्राप्त होती है। राम भी दशरथ की निंदा करते हैं। वे ही श्रीराम कैकेयी अपने को वनवास करने की बात कही है सुनने पर मैं भरत को राज्य और सीता को भी दे सकता हूँ, कहते हैं। चित्रकूट पर्वत केसमीप में रहते समय अपने को अयोध्या ले जाने के लिए पूरी सेना के साथ आनेवाले भरत से श्रीराम कैकेयी के कुशल समाचार पूछता है? क्या वह राजभोगों के साथ खुश हैं? उसके बाद राजा को कैसा रहना चाहिए। शासन कैसे करना चाहिए। विस्तार से समझाता है। अपने को किसी भी रूप में अयोध्या ले जाने की कोशिश करने वाले भरत और उसकी दृढ़ता को देखकर श्रीराम असली बात बताता है। वह यह है कि दशरथ राजा कैकेयी के साथ विवाह करते समय उसके पिता को वचन दिया था कि कैकेयी पुत्र ही आगे गद्दी पर बैठेगा। इस बात के कारण ही दशरथ राम के राजतिलक के संदर्भ में डरता रहा। कहीं लोगों को इसका पता न चले और कैकेयी इसकी कोशिश न करे। फिर भी दशरथ की योजना सफल नहीं हुई। इसके लिए एक का शाप कारण के रूप में दिखाया गया है। इसका उल्लेख अयोध्याकांड के 63 सर्ग में आता है। इस गाथा में एक विशेषता है। दशरथ वन्य मृग समझ कर बाण चलाया था जिससे श्रवण कुमार घायल हुआ था। वह वैश्य पुरुष और शूद्र स्त्री की कोख से पैदा होनेवाला था। इससे अलग उसने वेद पढ़ लिया था। मरते समय उसने दशरथ से कहा था कि उसका वेदाध्ययन व्यर्थ हो गया है। यानी रामायण काल में वर्णविभाजन मात्र आया था। वेदाध्ययन की शर्तें अमल में नहीं थीं। इसलिए वेदाध्ययन करनेवाले शूद्रों को किसी भी प्रकार की सजा देने की बात नहीं कही गयी है। इसलिए मनुस्मृति रामायण काल के काफी बाद में अमल आयी थी। रामायण काल में नहीं है। दशरथ के द्वारा किये गये अश्वमेध याग में सभी वर्णों के (चारों) के लोग आये थे। उसका आतिथ्य सभी ने स्वीकार किया है। श्रीराम ने गुह का आतिथ्य और कोया कन्या शबरी का आतिथ्य स्वीकार किया था। इसलिए उस समय तक वर्ण विभाजन मात्र आया था वर्ण भेद और जातियों के बीच में झगड़े नहीं थे। मतलब सारी जातियाँ अपने को ही बड़ा समझने की विसंगति नहीं थी। फिर भी यह पूरा आर्यों की उदार प्रवृत्ति नहीं समझनी चाहिए। तब तक

आर्य यहाँ के लोगों पर पूरी तरह आधिपत्य नहीं कमाया था। इसके लिए लंकाधिपति ही बड़ा अवरोध था।

मारीच की चीख सुनकर सीता भयभीत हुई, सीता लक्ष्मण को अपने भाई की सहायता के लिए जाने की विनती की। वह जाने के लिए इनकार करता है। तब उसके व्यवहार पर शक करते हुए सीता इस रूप में कहती है—''राम को एक भाई ने जंगल भेजा है तो दूसरा भाई राम की पत्नी को ही भोगना चाहता है। किंतु प्राण खोकर भी मैं तुम्हारे वश में नहीं आऊँगी। यह बात सुनने के बाद लक्ष्मण आश्रम छोड़कर जाता है। राक्षसों को बाण से मारने के बाद ही उसके दोषों को गिनता है कि तुम्हारा भाई रहते ही उसकी पत्नी को बंदी बनाया है।'' कहता है। सीता लक्ष्मण के शील पर शक करके कही बातों को और राम के अपने भाई के प्रति की बातों में कोई बड़ा अन्तर नहीं है।

कोसल राज्य में नरों को, किष्किंधा राज्य में वानरों को एक स्त्री अपने पति के मरने पर शेष जीवन को पति के भाई के साथ काटने में दोष नहीं देखा जाता था। यह बात स्पष्ट हो जाती है। कैकेयी से राम कहते हैं—''किसी के हस्तक्षेप के बिना मैं सीता को तथा राज्य को भरत को दे सकता हूँ।'' अवसर के अनुसार कैसे बात करनी चाहिए तब तक कौटिल्य ने सूत्रबद्ध नहीं किया था। राम की बातों से भी उपर्युक्त विचार का समर्थन प्राप्त होता है।

राम के राजतिलक के लिए दशरथ ने जनता के स्वीकार को प्राप्त किया था। उसी राज्य की जनता राम के रावण संहार के बाद अयोध्या लौटकर सीता के साथ राजतिलक करने के बाद सीता के शील पर शक करती है। तब राम ने सीता को जंगल भेज दिया। इससे स्पष्ट होता है कि साकेत राज्य में जनता की इच्छा और अनिच्छा, विचारों को अधिक महत्त्व दिया जाता था। राम के 11 हजार वर्षों के शासन काल में अन्त में वर्ण व्यवस्था दृढ़ हो गयी ऐसा स्पष्ट संकेत प्राप्त होता है। शंबूक का वध भी इसका समर्थन करता है। राम पर ऋषियों का प्रभाव बहुत कुछ पहले से ही रहा है। राम के अंतिम दिनों में उसका प्रभाव अवश्य अधिक हो गया था। उनके आदेशों का विरोध राम नहीं कर सकते थे। इस स्थिति तक राम बढ़ गये थे। अन्त में दुर्वासा महर्षि के कारण राम को सरयू नदी में गिरकर प्राण त्याग करना पड़ा, यह सुनते ही समझ सकते हैं कि तत्कालीन राज्य में ऋषियों का प्रभाव राजाओं पर किस हद तक था। यहाँ एक और बात का उल्लेख करना चाहिए कि राम का समकालिक रामायणकर्ता है। गर्भवती उसकी पत्नी को अपने आश्रम में आश्रय देनेवाला है। उसकी संतान को अपनी संतान के रूप में आश्रम में रखकर पालन पोषण करनेवाला है। उनको रामायण गायन करने की विद्या को भी सिखानेवाला है। यह सब करनेवाला वाल्मीकि का प्रथम परिचय अश्वमेध यस की यसशाला में हुआ था। वह महर्षि वाल्मीकि सीता सुशीलता के बारे में राम से बहुत ऊँचे ढंग से बोलता है। फिर राम ने उनकी बातों को अनसुना कर दिया था। सीता भू प्रवेश करती है। महर्षि की बातें हवा में मिल गयी हैं। इसका मूल कारण तब तक राम में वर्णाधिक्य भाव दृढ़ होना ही है। (क्योंकि वाल्मीकि कवि बनने के पहले 'बोया' जाति का था) या नये ढंग से परिचित व्यक्ति महर्षि होने पर भी उसकी बातों को सुनने की या उसे महत्त्व देने की अधिक आवश्यकता

नहीं है। इस रूप में समझने वाले राम की, सीता को फिर से स्वीकार करने की प्रार्थना करने पर अस्वीकार करनेवाले राम की तुलना करने से दोनों में अन्तर को स्पष्ट देख सकते हैं। कुछ भी हो दक्षिण भारत देश में राम जैसे वीर के प्रवेश से तथा वे पुरोहित, ऋषियों के वचनों का पालन करनेवाले होने के कारण आर्य संप्रदाय इस पूरे भारत देश में स्थिर हो गया है ऐसा संकेत प्राप्त होता है। रामायण के द्वारा इसका प्रमाण प्राप्त होता है।

उपर्युक्त चर्चित विषयों के आधार पर कोसल राज्य की राज्य व्यवस्था के बारे में इस रूप में कह सकते हैं। कौसल्या कोसल राज की पुत्री है। उससे विवाह करने में समर्थ होने के कारण ही दशरथ कोसल का राजा बना है। उसके पहले वे किस राज्य के राजा थे स्पष्ट मालूम नहीं है। अयोध्या उसकी राजधानी होने के कारण शायद वह अयोध्या के किसी बड़े परिवार से आये हैं। नागरियों की सहायता से उनका शासन चला था। वह सम्राट नहीं थे। सम्राट बनाये गये थे।

वे पुरोहित और ऋषियों की अनुमति का इंतजार करते हैं। नगर प्रमुखों की सम्मति की आकांक्षा करते हैं। लेकिन जानपदों की स्वीकृति और अस्वीकृति से कोई मतलब नहीं रखते हैं। इसलिए दशरथ छोटे भूभाग के पालक थे। वह भी गणनपालक थे। श्रवण बालक दशरथ को ''जानपदाधिपति'' संबोधन करना ही इसका बहुत बड़ा साक्ष्य प्रमाण है। बुद्ध के काल में ही ये जनपद हुआ करते थे। बुद्ध के काल में 16 जनपद उत्तर भारत में प्रचलित थे। कोसल राज्य भी उनमें एक है। रामायण काल का कोसल राज्य आधा गण व्यवस्था में ही था। आर्यों की पुरुष सत्ताक व्यवस्था, स्थानिक मातृ सत्ताक व्यवस्था के साथ मिलकर एक विशेष प्रकार का शासन उस समय चल रहा था। निरंकुशता तभी नहीं थी। इसलिए दशरथ कैकेयी के पिता को दिए वचन, शंभरासुर वध के दौरान कैकेयी को दिए वचनों के कारण ही दशरथ कैकेयी के वरदानों से भयभीत हुए थे। क्रम से राम ने ही निरंकुशता को स्थापित किया था। पितृवाक्य पालन के लिए जंगल जानेवाले राम ने अपनी पादुकाओं को गद्दी पर रखकर शासन करने के लिए भरत को विवश किया था रामने ही। जंगल में कंदमूल खानेवाला जंगल में प्रवेश करते ही पहलेवाले दिन ही मांसाहार खाया था।अपने बाण से जमीन पर गिरनेवाले वाली से तुम शाखाचारी कहा था। एक वाली क्या? वानर सभी शाखाचार ही हैं (बंदर) लेकिन किष्किंधा में रहनेवाले सभी वानर हैं तो उनमें नल जैसे महान सेतु निर्माता कैसे और कहाँ से आये हैं? राम भगवान के रूप में यशोगान करवाने के लिए, राम नाम भवसागर को पार करानेवाला मंत्र के रूप में प्रचार करवाने के लिए वानरों के नल और नील ही जिम्मेदार हैं। उनके कारण ही सेतु का निर्माण हुआ। पत्थरों से वे सेतु का निर्माण नहीं करते तो राम रावण के पास पहुँच ही नहीं सकते थे। पत्थरों से पानी पर तैरनेवाला सेतु निर्माण करना आश्चर्य की बात है। किंतु इसे बनाने का नाम नल को मिलना चाहिए। लेकिन आर्यों के विस्तार के लिए अपने सर्वस्व को देनेवाले राम के प्रचार के लिए इसे इस्तेमाल किया गया है। राम ने भी अपने अंतिम काल में वर्णाधिक्य व्यवस्था को स्वीकार किया था। चातुर्वर्ण व्यवस्था का समर्थन करके आर्यों की सहायता और सहानुभूति को आज तक भी पाते आये हैं।

मिथिला राज्य राम की ही माया है। सीता के पिता जनक मिथिला गणों के लिए मुखिया मात्र

था। निरंकुश राजा नहीं था। यज्ञ वाटिका को स्वयं जनक ने ही जोता था। इससे स्पष्ट होता है कि जनक गणव्यवस्था का ही व्यक्ति था। बुद्ध के काल में गण मुखिया को महानायक कहा जाता था। आर्य सीता के पिता को जनक कहा है। इस शब्द का आज का अर्थ सीता का पिता या पिता है। सीता के पिता के अर्थ में भी इस शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। लेकिन सीता के पिता के लिए यह नाम प्रजापति या ब्रह्म या प्रजापति ब्रह्म अर्थ में प्रयोग किया गया था। मिथिला प्रदेश को राज्य का नाम देने पर मिथिला का राजा जनक कहना, सीता भूपुत्री होना सहज है। हमारे संप्रदायवालों का यही चमत्कार है।

किष्किंधा राज्य

राम के किष्किंधा में प्रवेश करने तक उस राज्य का राजा वाली था। वह वानर राज्य के रूप में प्रचलित था। नागरिकों से परिचय होने पर भी नागरिकता की गंध से दूर रहनेवाला प्रदेश था। बहुत बलशाली को भी मार सकनेवाले बलशाली वाली के नेतृत्व में किष्किंधा सुभिक्ष ही था। लेकिन वाली का भाई सुग्रीव वाली के कारण मानसिक वेदना का शिकार हुआ था। वाली ने उसे अपने राज्य से मार पीट करके भगा दिया था। उसकी पत्नी को अपने अधीन कर लिया था। इन भाइयों के झगड़ों के लिए जिम्मेदार दुंदुभी नामक राक्षस था। वाली को अपने भाई पर कितना भी गुस्सा क्यों न हो कभी उसे मारने के लिए नहीं सोचा था। अगर चाहते कभी मार सकता था। उसी प्रकार अपने भाई वाली से बचने के लिए सुग्रीव को ऋष्यमूक पर्वत ही शरण था। वाली इस पर्वत पर पैर रखने पर उसकी मौत होगी, ऐसा मातंगी मुनि का शाप था। वैदिक वाङमय में दिखाई नहीं पड़नेवाले ये शाप रामायण काल में दिखाई पड़ते हैं। पुराण इतिहासों में ही ये शाप दिखाई देते हैं। आवश्यकता होने पर राक्षसों की रक्षा भी इनसे होती है। रामायण हमारा प्रथम इतिहास काव्य है? परकांता व्यामोह व्यक्ति पतन का मूलाधार है, बतानेवाले इसकाव्य में राम सुग्रीव दोनों एक प्रकार के दुख से मित्र हो जाते हैं। सीता को रावण ने ही हरण किया है। सुग्रीव की पत्नी को वाली ने बंदी बनाया है। संयोग से रावण के अपहरण के बाद पुष्पविमान से जानेवाली सीता देवी अपने गहनों की पोटली को जमीन पर गिरा देती है तो वह ऋष्यमूक पर्वत पर गिरता है। राम बाण से वाली नीचे गिर जाता है। तब राम वाली से एक बात कहता है कि ''यह भूमि समस्त इक्ष्वाकु लोगों की है। अगर भूमि समस्त इक्ष्वाकु लोगों की है तो उसकाल तक ही विविध राज्य और विविध शासन पद्धतियाँ कैसे विकसित हुई हैं, इसका कोई विवरण नहीं मिलता है। मनुस्मृति के अनुसार यह पूरी भूमि ब्राह्मणों की है। यह कैसे है उसमें भी विवरण नहीं है। लेकिन वाली अपने बल के बल पर ही अपने भाई पर गलतफहमी के कारण उसे राज्य से निकालना ही उसे मारने की कोशिश करता है। सुग्रीव को किस स्थिति में राजा बनाना पड़ा, इसका विवरण देनेवाले मंत्रियों की बातों को भी वाली नहीं सुनता है। वाल्मीकि रामायण में यही कथा कही गयी है। लेकिन भाई दुंदुभी के हाथों में मारा गया है समझकर जिस गुफा में दुंदुभी और वाली घुसकर द्वन्द्व युद्ध कर रहे थे उस गुफा के सामने पत्थर रखकर आकर वही बात सुग्रीव मंत्रियों को बताता है। सुग्रीव की बातों पर

विश्वास करके उन लोगों ने सुग्रीव को गद्दी पर बिठाया। उस समय उस वानर राज्य के संप्रदाय के अनुसार भाई की पत्नी तारा को अपने अन्तःपुर में नहीं लाता है। यह प्रश्न उठता है। इससे अलग दुंदुभी और वाली के बीच के वैर का कारण भी एक स्त्री ही है। यह बात सुग्रीव ही राम से बताता है। अतः दुंदुभी को वाली से वैर का कारण भी एक स्त्री है, सुग्रीव और वाली के बीच के वैर का कारण भी एक स्त्री है। वह स्त्री तारा ही हो सकती है। क्योंकि वाली की मृत्यु के बाद उसके शव पर गिर कर तारा के बहुत रोने पर भी तारा आखिर सुग्रीव के पास ही आती है। लेकिन यह सब हमें कल्पना ही करना पड़ता है। ऐसे प्रसंगों को दृष्टि में रखकर ही हमारा संप्रदाय यह कहता है कि वाल्मीकि ने अपने रामायण में जितना कहना चाहिए उतना ही प्रस्तुत किया है। सुग्रीव दूसरी बार वाली को युद्ध के लिए ललकारने पर तारा उसे रोकती है। उसका कारण भी बताती है। राम और लक्ष्मण नामक दो योद्धाओं से सुग्रीव ने मैत्री की है। उनकी सहायता देखकर ही सुग्रीव पहली बार मार खाकर भी दूसरी बार युद्ध के लिए वाली को ललकार रहा है। यह जानकारी उसे अंगद के द्वारा प्राप्त हुई है, कहती है। अंगद को यह जानकारी एक चर के कारण प्राप्त हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि वानर राज्य में उस समय तक ही चरों की व्यवस्था थी।

सीता की खोज के लिए दक्षिण दिशा में जानेवाले वानरों के लिए नायक अंगद था। सीता की खोज के लिए दिया गया समय पूरा हो गया था। अंगद सीता का पता नहीं लगा पाये। तब अंगद अपने सहचर वानरों से सीता का पता लगाये बिना लौटने से सुग्रीव कितना कठोर है बताता है। अपनी पत्नी को बंदी बनानेवाला कुछ नहीं करेगा, कहता है। उसके वाक्यों का विरोध हनुमान करता है- अंगद कोई राजनीतिक षड्यंत्र कर रहा है। यहाँ पर व्याख्या कुछ भी करे प्राणोपाय के तैयार हुए लोग क्या राजनीति कर सकते हैं? सच यह है कि उसकी बात सुग्रीव की आज्ञा है। इससे सुग्रीव कितना कठोर था समझ में आता है। इस बात को संप्रदाय में आज भी प्रयोग करते देखा जा सकता है। अंगद की बातों से यह भी स्पष्ट होता है कि अपनी माता के साथ दूसरा पुरुष संबंध जोड़ने को उस समय के पुत्र भी स्वीकार नहीं करते थे।

लंका राज्य

लंका रामायण में प्राप्त होनेवाला तेलुगु शब्द है। उसी में संस्कृत प्रत्यय जोड़कर लंकायाम, लंका नगरी जैसे शब्द बनाये गये हैं। रावण के आधिपत्य में लंका नगर सर्वसम्पदाओं से विराजित था। रावण जन्म से ब्राह्मण है और व्यवहार से राक्षस बन गया है। यह एक प्रचलित विषय है। इसलिए रावणासुर कहने के साथ-साथ रावणब्रह्म भी कहा जाता है। रावण अपने सौतेले भाई कुबेर को लंका से भगाने के साथ-साथ उसके अधीन पुष्पक विमान को भी अपने अधीन कर लिया था। अपने शत्रु वर्ग के देवतादि लोगों पर विजय प्राप्त किया था। अनेक परायी स्त्रियों को बंदी बनाया था। उनमें कई स्त्रियाँ उनके विनाश के लिए शाप भी दिया था। कुछ पुरुषों ने रावण को शाप दिया था। इनकी दुष्ट चेष्टाओं में अपनी बहन शूर्पणखा के पति को युद्ध क्षेत्र में बिना सोचे समझे खून करना भी था। अपने किये पर बाद में चिंता करके अपनी बहन को दूर रखने के उद्देश्य से कर दूषणों

के साथ कुछ सेना को भी देकर उसे दंडकारण्य में भेज देता है। इसी शूर्पणखा की वजह से ही राम और रावण का वैर शुरू होता है। शासन के विषय में रावण सर्वश्रेष्ठ राजा है। लंका की विशेषताओं को राम से बताते समय हनुमान ने इसकी पुष्टि की है। हनुमान यह भी स्पष्ट करता है कि लोगों के शाप सच होने का समय आ गया है। सीता का अपहरण रावण ने किया। आखिर सेनासमेत युद्ध में मारा गया।

रावण का शासन विधान, राक्षसों की राज्य व्यवस्था दोनों के लिए लंका राज्य ही प्रमाण है। काव्य नायक राम के विरोधी रावण का खलनायक होना आवश्यक है। रामायण में रावण की अनेक दुष्ट-चेष्टाओं का चित्रण हुआ है। किंतु अकेले में रावण एक पंडित, महाभक्त, व्याकरणवेत्ता कहा जाता है। अनेक स्त्रत्रों के होते हुए भी ''रावणकृत शिवतांडव स्तोत्र' एक विशेष प्रकार का स्तोत्र गंथ बन गया है। राम-रावण युद्ध एक अलंकारिक ही बन गया है। उदाहरण के रूप में भी इसे दिया जाता है। राम के शत्रु होते हुए राम की पत्नी को एक कायर के रूप में राम की अनुपस्थिति में अपहरण करनेवाले के रूप में ही रावण प्रसिद्ध है। मोह करके ले गये सीता के साथ रावण ने कुछ भी नहीं किया। सीता की स्वीकृति के लिए वह स्वयं चिंतित होता है। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में सीता को लौटाने की राम की बात को वह ठुकरा देता है। अपने विनाश के लिए तैयार होता है। इसका मूल कारण आर्यों को अपनी भूमि पर रहनेवाली कामना है। आर्यों के द्वारा अपना स्थावर बनानेवाला दंडकारण्य उसकी भूमि थी। उस पर अधिकार को खोना वह नहीं चाहता था। झगड़े के लिए कारण बनी शूर्पणखा। अपनी बहन का अपमान करनेवाले राम और लक्ष्मण पर बदला लेने की भावना से ही रावण ने सीता का अपहरण किया था। हमेशा अपने यहाँ बंदी सीता को लौटाने की बात राम कहते हैं न कि अपने अधीन दंडकारण्य की जमीन को लौटाने की बात राम नहीं करते हैं। रावण के द्वारा अपने दंडकारण्य को छोड़कर जाने की सावधानी का उल्लेख रामायण में कहीं भी नहीं मिलता है। रावण को अपनी जमीन पर का मोह राम से भी ''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'' कहलवाकर मातृभूमि के लिए अति प्राचीन काल में से ही भारत में संघर्ष हुए थे, इस बात का निरूपण रामायण करता है। दशरथ के लिए, उसके पुत्र राम के लिए पौरोहित वर्ग अलग से था। लेकिन रावण स्वयं पौरोहित और राजा था। इसलिए रावण ब्रह्म कहलवाया है।

भाइयों के बीच में होनेवाली छोटी-छोटी गलतफहमियों को बड़ा करके उनमें किसी एक को अलग करके अपनी ओर करके विरोधी भावों को उकसाकर सामनेवालों को मार कर धीरे-धीरे अपने आधिपत्य को बढ़ाकर अन्त में अपने को ही उत्तम जन्म, बाकी लोग अधमाधम समझनेवाली भावना काफी पुरानी है। विभाजन करो और राज करो नीति का सूत्र हमारे देश में अंग्रेजों के साथ नहीं आया बल्कि रामायण काल से ही था।

सुग्रीव की पत्नी को बंदी करनवाले वाली राम दोष देते हैं, वही वाली की पत्नी को अपने साथ लानेवाले सुग्रीव को दोष नहीं देते हैं। अंगद को अपनी माँ के साथ सुग्रीव का संबंध जोड़ना अंगद को भी स्वीकार्य नहीं है। माँ के बाद माँ जैसी भाभी को बंदी बनाकर, अपने पिता की पटरानी को अपनी रानी बनाने को वह भी स्वीकार नहीं करता है। सीतान्वेषण में असफल होने के बाद वानरों

के सामने वह यह बात कहता है। साथ वानरों के सामने सुग्रीव का विरोध करता है। यह भी है कि सुग्रीव ने भाई का धर्म ठीक से नहीं निभाया है। दुंदुभी के साथ लड़ते वाली बिल में घुस जाता है। अपनी रक्षा में सुग्रीव को बिल के बाहर रक्षा के लिए रखता है। किंतु सुग्रीव बिल को पत्थर ढककर चला आता है। फिर भी सुग्रीव की निंदा नहीं की गयी है। विभीषण और रावण के बीच में आरंभ से ही स्वभाव का विरोध था। अवसर की ताक में रहनेवाला विभीषण अपनी सेना के साथ सेतु बाँधकर आये राम एक साधन के रूप में दिखाई देता है। अपनी आशय-सिद्धि के लिए विभीषण राम की शरण में जाता है। राम की सहायता से लंकाधिपति बनता है।

इसलिए कुछ परिवर्तनों के साथ आचार और व्यवहारों के भेद से आज और रामायण काल की व्यवस्था में बड़ा अन्तर दिखाई नहीं पड़ता है। दशरथ के अन्तःपुर में भी षड्यंत्र हुआ करते थे। अधिकार मोह से ही दशरथ, कैकेयी, मंथरा आदि के द्वारा विविध दाँव खेले जाते हैं। परिणाम स्वरूप राम को वनवास प्राप्त होता है। पुत्र वात्सल्य में दशरथ कुछ जल्दबाज निर्णय करते हैं। पत्नी को दिए वरदान के कारण अपने कार्यों में सफल नहीं हो पाते हैं। इसके अतिरिक्त रामायण में और भी रहस्य हैं, समझने वाले रामायण को परख सकते हैं आगे भी उसका अनुशीलन कर सकते हैं।

श्रीराम के पुरुषोत्तम लक्षण : तत्व कथन

डॉ. ओ.यस.आर.यस. वि.बी.यस.शमा

श्रीमद्रामायण भारतीयों के लिए शिरोधार्य प्रामाणिक ग्रंथ है। यह रामकथा रामभक्ति प्रतिपादक के रूप में, सर्वजन आह्लाद रूप में, कर्तव्य-कर्तव्य निरूपक के रूप में विराजित है। इस आर्ष ग्रंथ के अनुसार लौकिक एवं अलौकिक फलों को प्राप्त करने के लिए श्रीराम के जीवन को ही आदर्श के रूप में सर्वथा माना गया है। इसके लिए रामदास, त्यागराजु, अन्नमय्या जैसे महात्माओं को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। समस्त लौकिक समस्याओं को दूर कर सकनेवाला सर्वोत्कृष्ट राम नाम सिर्फ भगवन्नाम है। इस भगवन्नाम का अनुसरण करके महाभक्त अग्रगण्य कई लोगों ने चित्त शांति को प्राप्त करके ईश्वर साक्षात्कार को भी प्राप्त किया था। भौतिक कारणों से कोई बाधा दूर नहीं होने पर भी यह राम नाम चित्त स्थैर्य, मानसिक शांति, विचार करने की शक्ति, आत्म विश्वास आदि को भक्तों को प्रदान करके शरीर क्लेशों को दूर करता है। साथ ही सहनशीलता और सहिष्णुता को बढ़ायेगा। इस ग्रंथ में गुरु-शिष्य संबंध, भ्रातृ संबंध, पिता-पुत्र संबंध जैसे कई मानवीय संबंधों एवं मूल्यों का समर्थन किया गया है। ऐसे मूल्यों के भाग के रूप में ही श्रीराम के उत्तमोत्तम आदर्श लक्षणों को आचरण के साथ रामायण में चित्रित किया गया है। वनवास में रहनेवाले धर्मराज को मार्कंडेय महर्षि राम के उत्तम गुणों के बारे में बताते हैं। प्रस्तुत लेख में उन्हीं में से कुछ विशेषताओं को यहाँ संक्षेप में बताया जा रहा है।

पारगं सर्वधर्माणां बृहस्पतिसमं मतौ।
सर्वानुरक्तप्रकृतिं सर्वविद्याविशारदम।।
जितेंद्रियं ममित्राणा मपि दृष्टिमनोहरम।
नियंतारा मसाधूनां गोप्तारं धर्मचारिणां।।
धृतिमंत मनाधृप्यं जेतार मपराजितं।।

(वनपर्व, अ. 277)

श्रीराम समस्त धर्म पारंगत विद्वान है। बृहस्पति जैसा बुद्धिमान हैं। यावतप्रजानुराग पूज्य हैं। सर्वविद्या विशारद हैं। जितेंद्रिय, शत्रुओं के लिए भी गूढ़ मनोहर हैं। असाधु हैं। निग्रहवाला हैं। धार्मिकों के रक्षक हैं। धैर्यशाली, किसी को भी अस्वीकारशक्य वाला नहीं हैं, विजयशाली, अपराजेय उत्तम आदर्श पुरुष हैं। ऐसा वनवास में रहनेवाले धर्मराज को मार्कंडेय महर्षि ने स्पष्ट किया है।

श्रीराम के राजतिलक की योजना बनाकर दशरथ ने प्रजा की स्वीकृति माँगी। प्रजा ने बहुत

ही आनंद के साथ श्रीराम के गुणों का बखान किया है।

प्रजा को सुख देनेवालों में श्रीरामचन्द्र जैसे हैं। क्षमा में भू देवी के समान हैं। बुद्धि में बृहस्पति के समान हैं। पराक्रम में इंद्र के समान हैं। धर्मज्ञ, सत्यसंध और असूयरहित आदर्श पुरुष हैं।

पौरान स्वजनव न्नित्यं कुशलं परिपृच्चति।
व्यसनेषु मनुष्याणां भृशंभवति दुःखितः।।
उत्सवेषु चन सर्वेषु पितेव परितुष्यति।।

श्रीराम नागरिकों को स्वजन समझते हैं। गज हो या रथ हो आरूढ़ होकर उनके पास जाकर उनके कुशलक्षेम पूछते हैं। प्रजा को कष्ट होने पर स्वयं बहुत दुख का अनुभव करते हैं। प्रजा संतुष्ट रहती है तो एक पिता की तरह संतोष का अनुभव करते हैं। ''शक्ति स्त्रैलोक्य मष्येष भोक्तुं किन्नु मही मिमां'' यह श्रीराम त्रैलोकों को शासित करने की शक्ति रखनेवाले हैं।

बलमारोग्य मायुश्च रामस्य विदितात्मनः।
अशंसते जन स्सर्वों राष्ट्रेपुरवरे तथा।।

(अयोध्या, स.3)

सारी प्रजा श्रीराम को आयुआरोग्यबल प्राप्त हो ऐसी कामना कर रही है। कहते हुए दशरथ ने राम को बुलाकर इस रूप में उपदेश दिया—

राम वृद्धोस्मि दीर्घायु भुक्ता भोगा यथेप्पिताः।
जात मिष्ट मपत्यं मे त्व मद्या नुपमं भुवि।।
न किंचि न्मम कर्तव्यं तवा न्यत्राभिषेचनात।।

हे राम, दीर्घ काल जीवित मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ। कई भोग किये। अनुपम पुत्र के रूप में तुम मुझे प्राप्त हुए हो। देव-ऋषि ऋण पूरे हो गये। अब तुम्हारे राजतिलक किये बिना और कोई दूसरा कार्य नहीं बचा है। अब कुछ उत्पात दिखाई पड़ रहे हैं। अशुभ सूचक स्वप्न आ रहे हैं।

अवस्तब्दं च मे राम नक्षत्रं दारुणग्रहैः।
आवेदयन्ति दैवाज्ञाः सूर्यांगारकराहुभिः।।
प्रायेण च निमित्ताना मीदृशानां समुद्भवे।
राजा हि मृत्यु माप्नोति घोरं चापद मृच्चति।।

(अयोध्या, स.4)

मेरा जन्म नक्षत्र क्रूर ग्रहक्रांत होकर है ऐसा दैवज्ञों ने बताया है। ऐसे संदर्भ होने पर राजा की मृत्यु होती है। घोर आपदाएँ आयेंगी।

तद्याव देव मे चेतो न विमूह्यति राघव।
तावदेवा भिषिंचस्व चला हि प्राणिनाम मतिः।।

इसलिए लोगों की बुद्धि चंचल होने के कारण मेरी बुद्धि तुम्हारे राजतिलक से विमुख होने के पहले ही तुम अभिषिक्त हो जाओ। 'श्वस्त्वा हो मभिपेक्ष्यामि' कल ही तुझे अभिषिक्त कराऊँगा। भरत को आना चाहिए, कहोगे।

विप्रो षितश्च भंतो यावदेव पुर दितः।
ताव देवभिषेक स्ते प्राप्त कालो मतो मम।।

यहाँ से गये भरत अपने मातामह स्थान में रहते समय ही तुम्हारा अभिषेक होना चाहिए।

(ऐसा बतानेवाला दशरथ अपने विवाह काल में कैकेयी के पिता कैकयराज को कैकेयी सुत ही राजा बनेगा, ऐसे अपने वचन के बारे में सूचित किया, ऐसा अनुभव करता है।) वचन देने के कारण भरत को ही राजा बनाना चाहिए, ऐसा शायद कहोगे तो सुनो–

कामं खलु सतां वृत्ते भ्राता ते भरतः स्थितः।
जेष्टानुवर्ती धर्मात्मसानुक्रोशो जितेन्द्रियः।।

जेष्टानुवर्ती, धर्मात्मा, दयाशील, जिर्तेद्रिय होने वाले भरत ''सत्यंवृत्ते'' जेष्ट ही अभिषिक्त होना चाहिए ऐसे सत्पुरुषों के संस्कार से 'कामंखलु स्थितः' आद्यंत निश्चय बुद्धि के साथ रहेगा। ऐसा कहा।

इससे यह सूचना मिलती है कि भरत के इस विचार से ही मातामह स्थान में ही रह गये। अगर वह यहाँ होता तो राम अभिषिक्त नहीं होंगे, अपने को राज्यासक्त समझकर तुम अपनी प्रतिज्ञा भंग होने के भय से राजतिलक के लिए तैयार नहीं होंगे समझकर वही रह गया है। इससे बढ़कर विवाह काल में अपने सुत को किया गया राज्य शुक्ल प्रतिज्ञा, वह कन्या पुत्र निरपेक्ष होने पर अवरोध नहीं पैदा करती है। राम के राजतिलक हो जाने का समाचार पाकर ही वह मातामह स्थान से मैं यहाँ आऊँगा, ऐसा भरत अपने पिता से बता कर गया है, ऐसी सूचना यहाँ प्राप्त होती है।

इसलिए दशरथोक्ति में ''जेष्टानुवर्ती धर्मात्मा सानुक्रोशोजितेन्द्रियः'' भरत को लेकर कही बात सार्थक है।

इसलिए राम अपने पिता के वचन का बद्ध हो गये। यहाँ एक संदेह हो जायेगा। अगर भरत राज्य निरपेक्ष होना सच है तो कैकेयी उसे राजा बनाने की कोशिश क्यों करती है? संदेह यही है।

यहाँ विचार करने योग्य विषय यह है कि प्रप्रथम कैकेयी को यह इच्छा ही नहीं थी। राम के राजतिलक का समाचार मंथरा के द्वारा सुन कर आनंद में अपने कंठहार निकालकर उसे कैकेयी ने दे दिया। ''एकमाभरणं तस्यै कुब्जायै प्रददौ शुभं रामस्त्यैन गुणान देवी कैकेयी प्रवशंसहा''।

धर्मज्ञो गुणान दास्तः कृतज्ञ स्सत्यवाक शुचिः।
रामो राज्ञ स्सुतो ज्येष्टो यौवराज्य मतोर्हति।।
संतस्ये कथंकुब्जे श्रुत्वा रामाभिषेचनं।।

उसके बाद मंथरा ने चुगलखोरी करके उस पर आवेश से प्रभाव डाला। कैकेयी आवेश में आकर मंथरा के कहने के अनुसार करती है। कैकेयी को भरत और राम को लेकर कोई निजी विचार नहीं थे। दशरथ की योजना सफल न हो, राम वनवास चले जायें, ये मुख्य समझकर ही कैकेयी ने व्यवहार किया है। तब पिता के वचनों के प्रतिबद्ध श्रीराम ने लक्ष्मण से यह कहा–

''जीवितं चापि राज्यं च त्वदर्थ मभिकामये''

(अयो. स.5)

'हे भाई, मैं जीवन को या राज्य को तुम्हारे लिए ही स्वीकार करता हूँ।'

उसके बाद कैकेयी के द्वारा विघ्न डालने से चिंता में डूब कर पिता के पास जाकर पूछने पर दशरथ के समक्ष कैकेयी ने अपने मनोरथ को घोषित किया, तब निर्विकार चित्त होकर कैकेयी से कहा—

नाहा मर्थपरो देवी लोक मावस्तु मुत्सहे।
विद्धि मा मृषिभि स्तुल्यं विमल धर्म मास्थितम।।

देवी, मैं स्वार्थ भरे इस संसार में जीना पसंद नहीं करता हूँ। ऋषियों के तुल्य मैं धर्म का आश्रय लेकर जीनेवाला हूँ। पितृ शुश्रूषा, पितृवाक्य पालन मेरा महा धर्म है। पिता जो नहीं कह सका, आपने कहा है इसलिए ''वने वत्सामि विजने वर्षाणीहचतुर्दश'' मैं वनवास करूँगा।

भरतः पालये र्राज्यं शुश्रुषेच्च पितु र्यथा।
तथा भवत्वा कर्तव्यं स हि धर्म स्पनातनः।।

'माँ, राज्य का पालन और पिता की शुश्रूषा दोनों करने के लिए भरत से कहो।' राम ने कहा।

कौसल्या के महल में तुम्हारे राजतिलक में बाधा कौन पहुँचायेगा, मैं उसे देख लूंगा, ऐसा गुस्से में लक्ष्मण के कहने पर श्रीराम ने उसे समझाते हुए इस रूप में कहा। मुझे कैकेयी माँ पर अपार भक्ति है। उन्हें मुझ पर अपार प्रेम है। ऐसी स्थिति में आयी यह विघ्न दैवी कारण से है। और कुछ नहीं है। कैकेयी माँ का कोई अपराध इसमें कुछ भी नहीं है।

उसके बाद सीता और राम-लक्ष्मण के साथ वनवास जाने के लिए तैयार होकर कैकेयी के भवन में आने पर कैकेयी के द्वारा दिए वल्कल कपड़ों को राम और लक्ष्मण ने पहन लिया। उनके साथ-साथ सीता को भी उन्होंने वल्कल वस्त्र दिए। तब तक कौसल्या, सुमित्रा दशरथ के निमंत्रण पर आकर वही थीं। ऐसी स्थिति में वशिष्ठादि मुनियों के समक्ष में दिए गये वल्कल वस्त्रों को देखकर नगर की स्त्रियाँ दुखी हो गयीं। सीता देवी को उन्हें पहनाना किसी को भी पसंद नहीं था। इसलिए सीता देवी को बुलाकर उन्हें अंदर ले जाकर उन्हें वल्कल वस्त्र पहनाने की कोशिश किसी ने भी नहीं की।

श्रीराम के पहनने पर अपने को पहनना है समझकर लेकिन सबके सामने पहनने में असमर्थ सीता देवी यह कहती—

कृत्वा कंठे स्म सा चीर मेक मादाय पाणिना।
तस्थै ह्यकुशला तत्र व्रीडिता जनकात्मजा।।
भर्तार मिद मब्रवीत
कथं नु चीरं बधृन्ति मुनयो वनवासिनः।

एक चीर को गले में डालकर दूसरे चीर को हाथ से पकड़ कर कुछ नहीं कर पाने की स्थिति में राम की तरह देखती हुई वनवासी मुनिगण वल्कल धारण कैसे करते हैं, कहा।

तस्या स्तक्षिप्र मागत्य रामो धर्मभृतां वरः।
चीरं बबंध सीतायाः कौशेयस्योपरि स्वयं।।

(अयो.स.37)

तब श्रीराम ने सीता के पास आकर पहनी हुई साड़ी पर ही वल्कल साड़ी को पहनाया।

इस प्रकार श्रीराम राज्य की प्राप्ति हो, वनवास जाना हो, हर्ष हो, विषाद हो दोनों को एक रस से लेकर दिखाई देते हैं। रामायण में इसी भाव को व्यक्त किया गया है–

अहूतस्या भिषेकार्थे वनाय प्रस्थितस्य च।
न लक्षी तो मुखे तस्य स्वल्पो प्याकारविभ्रमः।।

सत्यं वद, धर्मंचर, मातृदेवोभव, आचार्य देवो भव, जैसी धर्म विधियों को श्रीराम ने शत प्रतिशत आचरण किया है।

कैकेयी के कार्य भरत, शत्रुघ्न ने उनकी निंदा करके, राम को समझा-बुझाने के लिए चित्रकूट पहुँचने के संदर्भ में अपने दोनों भाइयों को हाथों में लेकर ''मातरं रक्षकै केई मारोषं कुरु तां प्रति। मया च सीतया चैव शस्तोसि रघुनंदन।''–कैकेयी माता की रक्षा करनी चाहिए। उन पर गुस्सा करना अपराध है। यह बात मैं और सीता दोनों शपथ लेकर बता रहे हैं। इस रूप में राम ने उनको उपदेश दिया। ''न लक्ष्मणा स्मिन मम राज्य विघ्नेमाता यवीय स्यविशंकनीया। अहं हि वचना द्राज्ञ पतेय मपि पावके। भक्ष हेयं विषं तीक्षणं पतेय मपि चार्णवे।'' कहते पितृ भक्ति का परिचय दिया।

भरत भी नागरिकों के साथ, सेना के साथ आकर राम को समझा-बुझाकर अयोध्या वापस ले जाने के प्रयत्न के संदर्भ में भी चित्रकूट में लक्ष्मण भरत के हंगामा को देखकर राम से कहता है–''वह आनेवाला भरत अपने राज्य को स्थिर बनाने के लिए हमें हानि पहुँचाने के उद्देश्य से आ रहा है। मैं धनु ले कर उसका वध करूँगा।''

श्रीराम लक्ष्मण के गुस्से को अच्छी तरह जानता है। लक्ष्मण उन्हें माता-पिता समझता है। त्रिकणशुद्धि से वह राम की सेवा में लगा है। इसलिए वह सब कुछ छोड़कर सीता और राम के साथ जंगल में आया है। जब कि भरत इस रूप में आने पर उसकी समझ में नहीं आया। इसलिए उसे गुस्सा हो गया। श्रीराम उसे शांत करने की कोशिश में कहते हैं–''लक्ष्मण, तुम भरत के प्रति इतना वैर इसलिए कर रहे हो कि भरत ने मुझे राजा बनने से रोका है। लेकिन मैं पितृवाक्य पालन के लिए राज्य को छोड़कर वनवास कर रहा है। अब मैं भरत को मारकर राज्य को स्वीकार करना क्या धर्म सम्मत है? क्या यही हमें करना है?''

युद्धव्यं बान्धवानां वा मित्राणां वा क्षये भवेत।
नाहं तत्प्रतिगृहीण्णयां भक्ष्या न्विषकृतानिन।।

बंधु हो या मित्र हो उनके मरणोपरांत उनके धन को स्वीकार करनेवाला मैं नहीं हूँ। हमारे भरत अपने न होने पर हुए इस कार्य के लिए दुखी होकर अपने दुख को व्यक्त करने शायद यहाँ आये हों, दूसरे उद्देश्य से नहीं। लक्ष्मण, भरत ने तुझे कभी प्रिय किया है? उस पर तुझे संदेह क्यों है? इस रूप में भरत के प्रति गलत बोलना मेरे प्रति संदेह या अप्रिय प्रकट करने के बराबर है।

यदि राजस्य हेतो स्त्वमिमां वाचं प्रभाषसे।
वक्षामि भरतं दृष्ट्या राज्य मस्मै प्रदीयाताम।

''हे लक्ष्मण, बताओ तुझे कहीं राज्यकांक्षा तो नहीं है? भरत से कह कर तुझे दिला दूँगा।''

इस रूप में राम के कहने पर लक्ष्मण को बुरा लगा। फिर राम ने ही उसे सांत्वना देते हुए उत्साहित किया।

इससे स्पष्ट होता है कि श्रीराम को अपने भाइयों के प्रति कितना लगाव था और सासारिक विषय के प्रति कितनी विरक्ति थी ।

सकृ देव प्रसन्नाया तवास्मीति च याचते।
अभयं सर्वभूतेभ्योददा म्येत द्व्रत्वं मम।।

यह राम वाक्य शरणागत दीक्षा का बखान करता है।

इस प्रकार रामायण के कई विषय अपने जीवन के अस्तित्व के लिए उपयोगी होते हुए उसी के अंश के रूप में श्रीराम के उत्तम लक्षण मनुष्य के आचरण के लिए बहुत ही आवश्यक सिद्ध होते हैं।

सीता कल्याण

के. यन. उमामहेश्वरी

रामायण रत्नदीप से पिचकारी होनेवाला ज्ञान दीप और आशा दीप है। जीवनारण्य में भटकनेवाले पथिकों का मार्गदर्शन करनेवाला पथवार है। सब कुछ पढ़कर अतृप्त हुए लोग रामायण को पढ़कर प्रकाश को पाते हैं। यह रामायण भारतीय संस्कृति को हौदा चढ़ाकर विश्व भर में शोभायात्रा करनेवाला ग्रंथ है। यह छह कांडों का काव्य है। इसमें 24 हजार श्लोक हैं।

रामायण रसभरित रघुनाथ का चरित काव्य है। रामायण आदिकवि वाल्मीकि द्वारा चरित काव्य है। जनता का आदर सत्कार प्राप्त काव्य है। धर्मत्रय की वकालत करनेवाला त्रिवेणी संगम भी रामकथा है। मानव जीवन के अभ्युदय के लिए, आदर्श के लिए आवश्यक आधार ग्रंथ भी रामायण है।

रामकथा पवित्र भी है। पापों को दूर करनेवाला है। पुण्य फल देनेवाला है। सत्य और धर्म मनुष्य के जीवन को शोभा देते हैं, ऐसा राम का चरित निरूपण करता है।

वेद वेद्य परमात्मा दशरथ के पुत्र राम के रूप में जन्म लेते हैं। वेद आदि कवि की कलम से रामायण के रूप में आविर्भूत होता है। सीता कल्याण रामायण का अतिमनोहर दृश्य है। काव्य का मुख्य प्रसंग है। सीता कल्याण के लिए कवि ने अनेक प्रसंगों का आयोजन किया। उन प्रसंगों का परिचय निम्नांकित है।

विश्वामित्र का याग की रक्षा के बाद राम और लक्ष्मण के साथ मिथिला नगर आना

मिथिला नगर के राजा जनक महाराज हैं। वे अपनी पुत्री सीता देवी का स्वयंवर घोषित करते हैं। अपने घर में रहनेवाले शिवधनु को तोड़नेवाले के साथ सीता का विवाह करने की घोषणा करते हैं। क्योंकि बचपन में एक बार सीता ने उस धनु को उठाकर रखा था। कई राजकुमार आये। उनमें से एक भी उसे उठा नहीं पाये। कुछ दिनों के बाद जनक ने एक यज्ञ करना चाहा।

उस समय जनक ने विश्वामित्र महर्षि के आगमन का समाचार सुना। अपने गुरु सतानंद के साथ वे विश्वामित्र का स्वागत सत्कार करने गये। उन्होंने विश्वामित्र को साष्टांक नमस्कार करके कहा कि मेरा जन्म धन्य हो गया। मेरे यज्ञ को देखने आने से मेरा यज्ञ अवश्य सफल हो जायेगा। कहा है। साथ ही विश्वामित्र के साथ आये दोनों राजकुमारों के बारे में पूछा। तब विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण का परिचय दिया। दोनों को अयोध्याधीश के पुत्रों के रूप में परिचय कराया।

मेरे यज्ञ को मारीच, सुबाहु ध्वंस कर रहे थे। तब यज्ञ की रक्षा के लिए इनको साथ में ले आया।

दशरथ ने इनको भेजा है। ताटकी, सुबाहु, मारीच का वध करके उन्होंने मेरे याग को ठीक से सम्पन्न होने में सहायता की है। इनमें से बड़े श्रीराम रास्ते में अहल्या का उद्धार किया है। विश्वामित्र की इन बातों को सुनकर सतानंद को बहुत संतोष हुआ। अहल्या देवी सतानंद की माता जी हैं।

जनक महाराज विश्वामित्र और राम-लक्ष्मण को शिवधनु की कथा बताना

राम-लक्ष्मण को अपने घर में मौजूद शिव धनु को दिखाने से सर्व शुभ होंगे, यह बात विश्वामित्र ने जनक से कहा था। जनक महाराज ने शिव धनु कैसे उनके घर में आया। विश्वामित्र को सविस्तार बताया। मेरे पूर्वजों में छठी पीढ़ी में देवव्रत नामक राजा शासन कर रहा था। उस राजा को देवताओं ने शिव धनु को भेंट के रूप में दिया था। बाद में वह धनु देवताओं के पास ही पहुँच गया था। देवताओं ने इस धनु को बाद में अपने पूर्वजों को दे दिया था। तब से यह धनु अपने घर में ही पड़ा हुआ है।

एक दिन मैं यज्ञ भूमि को जोत रहा था। हल के रास्ते में एक शिशु प्राप्त हो गया था। हल के रास्ते में प्राप्त होने के कारण सीता नाम देकर अपनी निजी पुत्री के रूप में पालन पोषण करने लगा। वह ही बड़ा होकर सुंदर युवती बनी है। वह अयोजनिजा होने के कारण बल पराक्रम वाले युवक के साथ उसका विवाह करना चाहा। जनक ने यह निर्णय किया था।

श्रीराम के द्वारा शिव धनु को निशाने पर लगाना

विश्वामित्र के बताने पर जनक उस धनु को राम और लक्ष्मण को दिखाने की इच्छा से तुरंत सात सौ बलशाली वीरों को साथ भेजे। उस धनु को वे वीर आठ चक्रवाली गाड़ी पर लाद कर ले आये। उसे महर्षि और राम को दिखाया। तब जनक ने ''सुर हो या असुर हो, गंधर्व, यक्ष, किन्नर महारथी क्यों न हो इसे निशाने पर नहीं लगा सकते। इसलिए इसे जो निशाने पर लगायेगा उसके साथ सीता को देकर उनका परिणय कराऊँगा।'' जनक महाराज की इन बातों को सुनकर विश्वामित्र ने राम की तरह देखा। महर्षि ने धनु को देखने के लिए राम से कहा। राम ने उस धनु को देखकर अपने हाथ से स्पर्श करके देखना चाहूँगा। अगर इसे वहाँ से हटा सकता हूँ तो उसे निशाने पर रखकर देखूँगा। इसे वहाँ से हिलाकर निशाने पर लगाने का प्रयत्न करूँगा। कहते हुए श्रीराम ने आगे बढ़कर धनु को स्पर्श करना चाहा।

हजारों लोग देखते श्रीराम ने उस धनु को ऊपर उठाया। उसे झुकाकर डोरी को ठीक करने लगे तो वह आवाज करता टूट गया। उस धनु के टूटते समय पर्वतों के गिरने की, बड़ा भूचाल आने की आवाज आयी। वहाँ रहनेवाले सभी उसे सुनकर बेहोश हो गये। शिवधनु को तोड़नेवाले श्रीराम की जनक महाराज ने प्रशंसा करते हुए सीता राम के लिए अच्छी पत्नी बनेगी, यह निर्णय करके, विश्वामित्र के द्वारा दशरथ को यह समाचार पहुँचाकर आवश्यक व्यवस्था करने अपने मंत्रियों को भेजा है।

दशरथ का जनक महाराज का निमंत्रण पाकर सपरिवार मिथिला आना

जनक के द्वारा भेजे गये दूत तीन दिन यात्रा करके अयोध्या पहुँच गये। राजा दशरथ के पास जाकर जनक महाराज का निमंत्रण उन्हें सुनाया। यह भी सुनाया कि विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण

यज्ञ की रक्षा करके मिथिला नगर पहुँचे हैं। जनक की पुत्री सीता के स्वयंवर में भाग लेकर शिव धनु को तोड़ा है। जनक की पुत्री सीता के साथ श्रीराम का विवाह होनेवाला है। अतः आप अपने बंधु मित्रों के साथ मिथिला आकर सीता और राम के विवाह में भाग लेने के लिए जनक महाराज ने निमंत्रण भेजा है। ये बातें सुनकर दशरथ संतोष का अनुभव करके गुरु वशिष्ठ ने अन्यों के साथ विचार-विमर्श करके सभी को यात्रा के लिए तैयार रहने की आज्ञा दी।

दशरथ सेना समेत मिथिला पहुँचने पर जनक द्वारा उनका स्वागत करके अतिथि-सत्कार करना

निमंत्रण पाने के बाद दशरथ अपने ऋषिगण, अन्तःपुर स्त्रियों के साथ, सेना को भी लेकर मिथिला पहुँच गये। जनक ने उनका सादर स्वागत किया। साथ ही भव्य पड़ाव का इंतजाम किया।

दशरथ महाराज जो यज्ञ मैं कर रहा हूँ कल तक पूरा हो जायेगा। फिर ऋषियों की सम्मति से सीता और राम का विवाह करने का निर्णय किया गया है। विश्वामित्र और अपने दोनों पुत्रों को देखकर दशरथ बहुत प्रसन्न हुए।

वशिष्ठ महामुनि के द्वारा इक्ष्वाकु वंश और उसके वृक्ष का सम्पूर्ण परिचय देने के बाद जनक ने अपनी पुत्रियों के विवाह के लिए आवश्यक व्यवस्था उस रात को की।

श्री सीता-राम का कल्याण प्रसंग

जनक राजा ने सर्वाभरण भूषित सीता को लेकर अग्नि को साक्षी बनाकर राम के सामने खड़ा करके राम से इस रूप में कहा—''ये देखो मेरी पुत्री सीता। यह तुम्हारी सहधर्मचारिणी बनेगी। इसे स्वीकार करो। अपने हाथ से इसके हाथ को पकड़ो। महाभाग्यवान यह पतिव्रता बनकर सर्वदा तुम्हारा अनुसरण करके समर्थन करेगी।'' कहते हुए सीता और रामों पर उन्होंने मंत्राक्षत गिराये। उसके बाद जनक जी ने लक्ष्मण जी से भी इसी रूप में कहकर उर्मिला को उसके हाथ में पकड़ाया। उसके बाद भरत शत्रुघ्न को बुलाकर उन्हें मांडवी, श्रुतकीर्ति को सौंपा।

इस रूप में महात्मा रघुवंश के कुमारों ने अपनी-अपनी पत्नी समेत यज्ञ मंडप को तथा जनक महाराज को, ऋषियों को नमस्कार करके उनकी परिक्रमा करके गुरु वशिष्ठादि कहने के अनुसार उनके साथ विवाह किया। उस समय दुंदुभियाँ बजीं। अप्सरसाएँ नाचीं। गंधर्वों ने गान किया। नवदंपतियों ने अपनी पत्नीसमेत तीन बार अग्नि की परिक्रमा करके सबके आशिर्वाद लिए। विवाह सम्पन्न होते ही दशरथ महाराज, अपने पुत्र और पुत्रवधुओं सहित अयोध्या के लिए चल पड़े।

उपसंहार

आदि दंपति सीता और राम सबके लिए आदर्शवान हैं। नित्य सत्य इनका दांपत्य जीवन सभी युगों में अनुसरणीय होगा।

रामकथा : जीवन मूल्य

गुंडाल नरेंद्रबाब

रामायण मानव जीवन को संशोधन कर सकनेवाला महाकाव्य है। मानव मस्तिष्कों से कभी भी अलग नहीं कर सकनेवाली दिव्य गाथा है। मानव जीवन के अनेक रूप रामकथा में परावर्तित होते हैं। माता-पिता का अनुराग, भाइयों का संबंध, पुत्रों का अभिमान, पति-पत्नी का दांपत्य जीवन, स्नेह फल, धर्म का बल, गुरु भक्ति, शिष्यानुरक्ति, जीव कारुण्य, प्रकृति लालसा, विनय के साथ रहना, विवेक से आगे बढ़ना आदि उत्तम धर्मों का आचरण करने के कारण मनुष्य मनुष्य के रूप में कैसे विकसित हो सकता है, रामायण ने बताया है। इसके छोटे-छोटे पात्र भी मनुष्य को महान संदेश देकर मानव जाति को काफी स्फूर्ति देते हैं। विश्व साहित्य में आदि काव्य रामायण है। आदि कवि वाल्मीकि है। वाल्मीकि ने मारीच के मुँह से ''रामो विग्रहवान धर्मः सत्यधर्म पराक्रमः'' कहलवाकर श्रीराम जैसे आदर्श पुरुष और रामायण जैसे काव्य न भूतो न भविष्यति सिद्ध किया है। जब तक मनुष्य होगा तब तक रामायण रहेगा। श्रीराम के गुणों को वाल्मीकि ने रामायण के द्वारा अद्भुत ढंग से प्रस्तुत किया है।

वाल्मीकि महर्षि ने संस्कृत भाषा में रामायण रचा है। इसके पौलुस्त्य वध, रामायण, सीतायाश्चरितम महत नामक तीन नाम हैं। यह छह कांडों से 24 हजार श्लोकों से भरी रचना है। श्रेष्ठ समाज की स्थापना के लक्ष्य के रूप में भावी पीढ़ियों में स्फूर्ति भरने के लिए लिखी गयी रचना रामायण है।

मानव जीवन के मूल्यों का दर्शन करानेवाला अक्षरों का दर्पण रामायण है। इसलिए पहाड़, सागर जब तक होंगे तब तक रामायण रहेगा ऐसा ब्रह्म ने वाल्मीकि से कहा था। देश-विदेशों में अनेक प्रक्रियाओं में कई रामायण रचे जाने पर भी उन सबका मूल ग्रंथ वाल्मीकि रामायण ही है। कुछ कवियों ने वाल्मीकि रामायण के मूल रूप का अनुसरण किया है तो कुछ ने स्वतंत्र पंथ का अनुसरण करके अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुसार पाठकों को पहुँचाया है। उनमें से कुछ रामायणों का अनुशीलन करेंगे।

संस्कृत साहित्य में रामकथा

रामकथा विविध पुराणों में दिखाई देती है।

1. आध्यात्मिक रामायण

2. कालिदास-रघुवंश
3. भोज-चंपू रामायण
4. भट्टि कवि-रावण कथा
5. भास-प्रतिमा नाटक
6. भवभूति-उत्तररामचरित
7. धनंजय-राघव पांडवीयम
8. दिवाकर प्रकाश भट्ट-रामावलोक चरित
9. लवकुश युद्धचरित (कश्मीरी भाषा)
10. मोरो पंत-लवकुशख्यानम
11. समर्थ रामदास-रामायण (मराठी)
12. कंबन-रामायण (तमिल)
13. एलुत्तच्चन-आध्यात्मिक रामायण (मलयालम)
14. नागचन्द्र-रामचन्द्र चरित पुराण (चंपू काव्य कन्नड़)
15. सिद्धेंद्र योगी-विचित्र रामायण (ओड़िया)

तेलुगु भाषा में रामायण

1. गोनबुद्धा रेड्डी-रंगनाथ रामायण, तेलुगु का प्रथम द्विपद रामायण
2. तिक्कन-निर्वचनोत्तर रामायण
3. हुलक्की भास्कर-भास्कर रामायण
4. मोल्ल-रामायण
5. अय्यलराजु रामभद्र-रामाभ्युदयमु (प्रबंध)
6. तंजावूर रघुनाथ नायक-रघुनाथ रामायण
7. कंकंटि पाप राजु-उत्तर रामायण
8. कवि सम्राट विश्वनाथ सत्यनारायण-श्रीमद्रामायण कल्प वृक्षम
9. पिंगलि सूरना-राघव पांडवीयम (द्वयार्थी काव्य)
10. बलिजेपल्लि-उत्तर राघवम

इनके अतिरिक्त हरिकथा, बुरकथा आदि प्रक्रियाओं में रामायण रचे गये हैं। इनके पात्र सभी आज भी मानव हृदयों में सजीव जीवित हैं।

दशरथ को पुत्रों के प्रति बहुत प्रेम है। विशेष रूप से श्रीराम के प्रति और भी अधिक प्रेम है। रूप में, गुण में श्रेष्ठ व महावीर, मृदु स्वभावी, शरणागत वत्सल, सत्यनिष्ठावान, दीन बंधु, विनयशील, मातापिता, गुरुओं के प्रति निश्चल भक्ति भाव रखनेवाले, गर्व, क्रोध से मुक्त, असूय, मात्सर्य रहित, आलसीपन, उपेक्षा नहीं रखनेवाला, कलाओं में निपुण, प्रजा के प्रति वात्सल्य भाव रखनेवाला, सकल सद्गुण राशि श्रीराम से माता-पिता को ही नहीं पूरी जनता को परम प्रीति है।

रामायण से प्राप्त जीवन-मूल्य

मानव जाति को सँवारनेवाला रामायण धार्मिक जीवन कितना महान है, कितना पवित्र होता है, कितना आदर्शवान है, धर्मनिष्ठा, सत्य संधता, एकपत्नीव्रत, प्रतिज्ञापालन, पितृवाक्य पालन, स्नेह धर्म, मनिगण, ऋषिगण, देवतागणों के प्रति विनम्रता, भक्ति प्रपत्ति आदि गुणों का दृष्टांत रूप में दिखाई पड़ना ही नहीं, दुष्ट रावणादि राक्षसों का संहार करके लोक कल्याण में भूमिका निभानेवाले श्रीराम का पात्र, मानव जीवन के लिए अत्यंत आदर्श है।

श्रीमद्रामायण का एक और महोन्नत पात्र सीता का पात्र है। सीता महापतिव्रताओं मे अग्रगण्य है। शांति, सहन, विनय, निर्भयता, त्याग, सौशील्य, असाधारण पतिव्रत्य, सेवाभाव, निरुपमान पति भक्ति, संयम, धीरत्व आदि गुण महिलाओं के लिए प्रबोधात्मक गुण ही नहीं स्फूर्तिदायक गुण भी हैं। सामान्य गृहिणी के रूप में आदर्श जीवन जीनेवाली साध्वी सीता है। पति के अनुकूल व्यवहार करना चाहिए, अन्तःपुर में हो, या अरण्य में हो पति के साथ रहना ही स्त्री के लिए गौरवप्रद है, इस मार्ग को पूरे विश्व को बतानेवाली नारी शिरोमणि सीता है।

लक्ष्मण पात्र भाइयों के अनुराग के लिए अच्छा दृष्टांत है। अपने जीवन को भाई की सेवा के लिए समर्पित व्यक्ति लक्ष्मण है। श्रीराम के प्रति महोन्नत प्रेम रखनेवाला भाई लक्ष्मण है। सीता को माता के रूप में समझनेवाला मानवीय पात्र लक्ष्मण है। प्रतिक्षण भाई की रक्षा में खड़ा महोन्नत पात्र लक्ष्मण है।

भरत सर्वश्रेष्ठ भाई है। स्वामि भक्ति परायण है। स्वार्थ रहित व्यक्तित्ववाला है। विनयशीली, प्रेममूर्ति, श्रीराम के प्रति अनन्य भक्ति विश्वास रखनेवाला, भाई के लिए माँ की भी निंदा करनेवाला, रामाज्ञा को स्वीकार करनेवाला भाई भरत है। राज्यकांक्षा रहित आदर्श पुरुष भरत है।

हनुमान प्रभु भक्ति परायण है। सीतान्वेषण, लंकादहन में भी अत्यंत निपुणता और प्रतिभा, साहस दिखानेवाला पात्र हनुमान है। सारे वीरों को आचरणीय आदर्श पात्र हनुमान है।

विभीषण का पात्र अपूर्व पात्र है। विभीषण सेवा परायण, धर्मतत्पर, रावण का भाई है। अधर्मपरायण बड़ा भाई रावण का विरोध करनेवाला महावीर विभीषण है। धर्म के पक्ष में खड़ा होकर शाश्वत कीर्ति प्राप्त करनेवाला पात्र विभीषण का है।

सुग्रीव वानर राजा है। महान वीर, धर्मपरायण, मित्र धर्म को समर्पित पात्र है। सीतान्वेषण में श्रीराम की सहायता करनेवाला है।

मंथरा पात्र रामायण में काफी विशिष्ठ पात्र है। श्रीराम के वनवास के लिए जिम्मेदार पात्र है। कैकेयी की सखी है। भरे पूरे परिवार में आग लगानेवाली नारी है। रामायण में इसी रूप में मंथरा चरितार्थ हुई है।

रावण ने रामायण में अत्यंत प्रधान भूमिका निभायी है। रावण महान विद्यावान है। तपःशक्ति सम्पन्न है। महान शिव भक्ति परायण है। अस्त्र-शस्त्र विद्याओं में निपुण और महावीर है। परकांता व्यामोह रखनेवाला लंपट पुरुष है। काम और क्रोध रखनेवाला दुरहंकारी है। अच्छी बातों का विरोध करनेवाला दुष्ट व्यक्तित्ववाला है। छोटा भाई विभीषण के उपदेश की उपेक्षा करनेवाला है।

कुछ सद्‌गुणों के होते हुए भी रावण का परस्त्री व्यामोह के कारण सर्वनाश हो जाता है। रावण के पात्र का यही संदेश है।

माता-पिता देव समान हैं तथा परस्त्री माता के समान है, यह संदेश रामायण काव्य देता है। यह काव्य हमें कई मानवीय मूल्यों की शिक्षा देता है। रामायण सिर्फ परायण ग्रंथ ही नहीं है बल्कि आचरण प्रधान ग्रंथ है।

रामायण : सनातन धर्म प्रबोधा का वैशिष्ट्य

यस. माधवी लता

विश्व साहित्य में आदि काव्य रामायण है। संस्कृत भाषा में रामायण लिखकर आदि कवि के रूप में कीर्ति प्राप्त करनेवाला आदिकवि वाल्मीकि है। मावनजीवन को संस्कारयुक्त बनानेवाला काव्य रामायण है। माता-पिता का अनुराग, पुत्रों का अभिमान, पति-पत्नी का संबंध, गुरु भक्ति, शिष्यानुरक्ति, स्नेह फल, विनयशीलता, विवेक से आगे बढ़ना, जीव कारुण्यता, प्रकृति प्रेम, ऐसे कई जीवन के मूल्यों की शिक्षा देता है रामायण।

भारतीय साहित्य में अत्यंत महोन्नत स्थान पानेवाला रामायण सिर्फ पारायण ग्रंथ नहीं है। आचरण प्रधान ग्रंथ भी है। समाज को ऊँचे मूल्यों से अवगत कराकर प्रत्येक मनुष्य को सत्य, धर्म, आचरण युक्त संदेश देनेवाला काव्य भी रामायण है। श्रीराम, रावण, सीता, हनुमान आदि पात्रों के द्वारा लोक को प्रकाश से भरने का श्रेय वाल्मीकि को जाता है।

'रामो विग्रहवान धर्मः' उत्तम धर्म का आचरण करने से मनुष्य मनुष्य के रूप में कैसे आगे बढ़ सकता है, रामायण यह संदेश देता है। मानव जीवन कैसे होना चाहिए, अपने व्याख्यान के द्वारा रामायण ने उपदेश दिया है। इसलिए रामायण अमर काव्य बन गया है। रामायण में राम और रावण दोनों पराक्रमी हैं। लेकिन राम धर्म को आलंबन करके परिपूर्ण मानव के रूप में तथा देव बनते हैं, तो ब्रह्मवंशज रावण अधर्म का पल्ला पकड़ कर महा विनाश का शिकार हुआ है। धर्मरहित पराक्रम और शौर्य कभी भी जीत नहीं सकते हैं, यही नीति रामायण देता है।

विश्व भर में कई रामायण रचे जाने पर भी, कितने भी परिवर्तन होने पर भी, काव्य के द्वारा प्राप्त होनेवाले धार्मिक-संदेश में कोई विशेष परिवर्तन न होने के कारण रामायण नित्य नवीन और नित्य नूतन रूप में दिखाई देता है। इसलिए रामायण आज भी और हमेशा के लिए प्रासंगिक होता है। मानव जीवन पर सदा अपनी छाप छोड़ता ही जायेगा। रामायण किसी भी पीढ़ी के लिए संस्कार एवं धर्माचरण की शिक्षा देते हुए निरंतर स्फूर्ति देता रहता है। समुन्नत समाज की कल्पना करनेवाले प्रत्येक के लिए रामायण प्रकाश स्तंभ है।

सनातन धर्म

विश्व में सारे धर्मों में सनातन धर्म अत्यंत श्रेष्ठ और शाश्वत धर्म है।

वरीष्टो खिल धर्मेषु धर्म एव सनातनः।
जायन्ते सर्व धर्मास्तु शाश्वतोहि सनातनः।।

सनातन धर्म से अनेक धर्मों का विकास हुआ है। किसी भी युग में सनातन धर्म का नुकसान पहुँचता है तब भगवान धरती पर अवतार लेकर धर्म की स्थापना करके पुनःस्थापना करता है। सनातन धर्म का मूल साक्षात परम ब्रह्म और परमात्मा है। यही सनातन धर्म की विशेषता है।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपाल यस्तं
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
लोकास्समस्ताः सुखिनोभवस्तु।।

(वाल्मीकि रामायण)

सनातन धर्म विश्व की सारी जनता का आध्यात्मिक ज्ञान विकास को, सामाजिक विकास को, नैतिकोन्नति की दृढ़ कांक्षा का समर्थन करनेवाला है। विश्व की प्रत्येक जनता के लिए प्रार्थना करनेवाला है। सर्वमानव सौभ्रातृत्व की कामना करना ही सनातन धर्म का प्रधान वैशिष्ट्य है।

सनातन धर्म में माता, पिता, आचार्य, अतिथि सभी देवताओं के रूप में चित्रित हैं। मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव, इन चारों को देवताओं के रूप में मानकर सभी प्रकार की सेवाओं को समर्पण करके सनातन धर्म का आचरण करने का संदेश देता है। यह बहुत ही उन्नत भावना है।

सनातन धर्माचरण का परिणाम

राक्षसों के गुरु शुक्राचार्य ने अपने 'शुक्रनीति सार' में सनातन धर्म के आचरण की महिमा का गायन करके इस रूप में कहा है—

तपःस्वधर्म रूपं यदुर्विर्थितं वैनवै सदा।
देवास्तु किंक रास्तस्य किंपुनर्मनु जाभुवि।।

सनातन धर्म के पथ पर चलने समय तक भारत देश उच्च स्थिति में रहा है। बाद में उसका विरोध करके अपनी इच्छा से व्यवहार करने के कारण हमारा देश अधोगति की तरफ आगे बढ़ा।

रामायण - सनातन धर्म प्रबोध

1. सत्य वाक्य पालन : सनातन धर्म सत्य वाक्य पालन समर्थन एक विशिष्ठ ढंग से करता है। वह कहता है—

''नहि सत्यात परो धर्मः'' सत्य से बढ़कर उत्कृष्ट कोई दूसरा धर्म नहीं है। ''सत्यं वद धर्मं चर'' सत्य वचन करो। धर्म का आचरण करो।

रामायण में सत्यवाक्य पालक श्रीराम हैं। श्रीराम ने सत्य, धर्म को न छोड़कर, कितनी बाधाएँ उपस्थित होने पर भी धर्म मार्ग में कैसे चलना है प्रत्यक्ष रूप से आचरण करके दिखाया है। इसलिए

सबके लिए आदर्श बने हैं।

2. अहिंसा पालन : सनातन धर्म अहिंसा की महिमा को बताते हुए ''अहिंसा परम श्रेष्ठ धर्म, ज्ञान और तप है।'' कहता है।

रामायण में श्रीराम सकल प्राणी कोटि के प्रति भूत दया रखते थे। श्रीराम ने राजा के रूप में शौर्य, पराक्रम वाले होते हुए भी किसी को नहीं सताया, किसी का शिकार नहीं किया, जंगल में कंदमूल खाकर अहिंसा का मार्ग अपनाया है।

3. परोपकार परायणता :

परोपकारः कार्तव्य प्राणैरपि धनैरपि
परोपकारजं पुण्य नस्यात क्रतु शतैरपि।।

प्राणों को तज कर भी, धन का खर्च करके भी, परोपकार करना ही मानव का धर्म है। परोपकार से प्राप्त होनेवाला पुण्य कई सौ यज्ञों से भी प्राप्त नहीं होगा।

प्रतिफलापेक्षा के बिना मनुष्यों को उपकार करना ही परोपकार है। रामायण में श्रीराम अपनी चरणधूलि से पाषाण रूप में रहनेवाली अहल्या का शापविमोचन करके नारी के रूप में बदल देते हैं। शबरी को भी मुक्ति प्रदान की है। श्रीराम परोपकारी के रूप में प्रसिद्ध हुए हैं।

4. क्षमा : कष्ट, नष्ट और परुष वाक्यों को सहने को क्षमा कहा जाता है। क्षमा के वैशिष्ट्य को सनातन धर्म इस रूप में स्पष्ट करता है–

नरस्या भरणं रूपं, रूपास्या भरणं गुणः
गुणस्या भरणं ज्ञानं ज्ञानस्या भरणं क्षमा।।

मनुष्य को रूप, गुण, ज्ञान से क्षमा ही उत्कृष्ट आभरण है। सद्‌गुणों में क्षमा श्रेष्ठ है, ऐसा संप्रदाय ने कहा है। सहनशील व्यक्ति कितने भी कष्ट कार्य क्यों न हो स्वयं उसे प्राप्त कर लेता है। प्रजाओं से पूजित होकर शाश्वत कीर्ति को प्राप्त कर सकता है, ऐसी लोकोक्ति है।

श्रीराम, सीता कितने भी कष्ट हों, प्रतिरोधी स्थितियाँ हों अपनी सहनशीलता के लिए प्रजा से पूजित हुए हैं। युगों के बदलने पर भी उनके आदर्श मार्ग पर कोई आँच नहीं आयेगी। सभी मानवों को सहनशील बनना है, सनातन धर्म यही प्रबोध देता है।

रामायण : पतिभक्ति तत्परता

सी. विजय लक्ष्मी

रामायण मानवजाति को उपलब्ध एक परम पवित्र काव्य है। मनुष्यों को होनेवाले सारे संदेहों को वह दूर कर सकता है। मनुष्यों को धर्म मार्गो को सुझाता है। वेद, उपनिषद् जैसे आर्ष वाङमय सार को सामान्य मानवों तक रामायण पहुँचाता है। साहित्य क्षेत्र में विराजमान कृतियों में रामायण आदि काव्य है। इसे आविष्कार करके दूसरों को उपलब्ध कराया वाल्मीकि महर्षि ने। इसमें बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किंधा, सुंदर, युद्ध और उत्तर नामक सातकांड हैं।

इनकांडों में पति-पत्नी के संबंध, भाइयों के बीच का प्रेम, माता-पिता के प्रति पुत्रों के गौरव, पिता और पुत्र के बीच का प्रेम संबंध, पति भक्ति तत्परता, स्वामी सेवा परायणता, धर्मवर्तन, अधर्म पर धर्म की विजय जैसे कई अंश विस्तार से चर्चित हैं। एक व्यक्ति जन्म से लेकर मरने तक कैसे जीना है, कैसे व्यवहार करना है, कैसी समस्याएँ होती हैं, जीवन की गति में कष्टों का सामना कैसे करना है जैसे अनेक विषयों की चर्चा इसमें हुई है। स्त्री-पुरुष दांपत्य जीवन में बैलों की जोड़ी तरह है। उन बैलों के चलन पर जिस रूप में गाड़ी आधारित होती है, उसी प्रकार परिवार पति-पत्नी के संबंधों पर आधारित होता है। वाल्मीकि ने रामायण के विविध प्रसंग और घटनाओं के द्वारा सुस्पष्ट किया है। रामायण बाहर के लिए कथा जैसा लगता है किंतु अन्तर्लीन से वह भारतीय जीवन विधान किस प्रकार का है, कैसे होना चाहिए, कैसे नहीं होना चाहिए बताता है। इस दृष्टि से देखने पर रामायण में कई उदाहरण प्राप्त होते हैं। उनमें पति भक्ति तत्परता अत्यंत विशिष्ठ है।

रामायण की सीता, अहल्या, तारा, मंदोदरी की पतिभक्ति का अनुशीलन करने से हमें कई नवीन अंश प्राप्त होते हैं। इन चारों की पति भक्ति तत्परता में इनके समान कोई नहीं है, ऐसा निरूपण किया है।

अहल्या

अहल्या गौतम मुनि की पत्नी है। वे मिथिला नगर के समीप एक आश्रम का निर्माण करके जी रहे थे। महर्षि के आश्रम में नहीं रहते समय इंद्र आकर अहल्या को भोगने की कोशिश करता है। अहल्या उसके लिए तैयार नहीं हुई। उससे यह कहती है—

अथाब्रवीत सुर श्रेष्टं कृतार्थे नांतरात्मना।
कृतार्थास्मि सुर श्रेष्ठ गच्च शीघ्र मितः प्रभो।

आत्मानां मांच देवेश सर्वथा रक्षमानद।
इद्रस्तु प्रवाहन वाक्यं अहल्यं इदमब्रवीत।
सुश्रोणि परितुष्टोन्मि गमिष्यामि यथागतम।।

(बालकांड, सर्ग 48-श्लोक 20-22)

हे सुर श्रेष्ठ मेरे दांपत्य जीवन में मैं तृप्त हूँ। तुम यहाँ से शीघ्र ही चले जाओ। सभी प्रकार से मेरे और तुम्हारे गौरव का ख्याल करो। उसकी बातों से तृप्त होकर इंद्र जाने के प्रयत्न में रहते समय गौतम आश्रम में लौटता है। इंद्र के विगत वृषणवाला बनोगे, ऐसा शाप देता है। निरपराधी जानते हुए भी अहल्या को भी शाप देता है गौतम।

तथा शप्त्वा सवै शक्रम अहल्या मपिशस्तवान।
इह वर्ष सहस्रानि बहूनि त्व निवत्स्यसि।
वायुभक्षा निराहारा तप्यंती भस्मशाइनी।
अदृश्या सर्वभूतानाम अश्रमेस्मिन निवस्त्यसि।

हजारों वर्ष अन्नपानी से दूर वायु भक्षण से ही पीड़ित होकर इस आश्रम में पड़ी रहोगी। भस्मशायिनी बन कर किसी को भी दिखाई नहीं पड़ोगी। शापविमोचन का रास्ता भी गौतम बताते हैं। दशरथ के पुत्र श्रीराम इस जंगल में आने पर उनकी चरणधूलि के स्पर्श से तुम पवित्र हो जाओगी। तब तुमको निज प्राप्त हो जायेगा। उसके बाद ही रामकथा में अहल्या का शापविमोचन होता है।

इस प्रसंग में अपना कोई अपराध नहीं है, अनावश्यक शाप मत दीजिए, ऐसा अहल्या ने कोई विरोध नहीं किया। पति के शाप को चुपचाप भोगा है। शापविमोचन के बाद फिर पति गौतम के पास पहुँचती है। पति के आदेश का विरोध नहीं करना चाहिए, उनके क्रोध, आदेश का पालन करना चाहिए, यह दृष्टांत यही शिक्षा देता है।

सीता

कैकेयी के इच्छानुसार श्रीराम अरण्यवास के लिए निकलते हैं। उसके साथ मैं भी आऊँगी कहती है सीता। अरण्यवास के क्लेशों के बारे में बताकर अपने साथ मत आने के लिए कहता है। तब सीता पति भक्ति तत्परता के बारे में राम से कहती है।

'' प्रभु, मेरे पिताजी जनक ने कन्यादान के समय मुझे आपको सहधर्मचारिणी के रूप में सौंपा है। इसलिए मेरा तुम्हारे साथ अरण्यवास करना ही धर्म है। इससे बढ़कर पति-पत्नी का संबंध अलग नहीं करनेवाला है। आप से दूर यहीं रहना है तो मुझे अपना जीवन छोड़ना ही उचित है। सीता और इस रूप में कहती है–

शुद्धात्मन प्रेम भावद्दि भविष्या मि विकल्मषा।
भर्तारम अनुगच्चंती भर्ताहि ममदेवतम।।
प्रीत्यभावेपि कल्याणऋ संगमेमे सहत्वाया।

(अयोध्याकांड, सर्ग-29 -श्लोक 16,17)

हे प्रभो, मैं पति का प्रेमादर के साथ अनुसरण करते हुए सेवा करते रहने से मेरे सारे दोष दूर होकर पवित्र बन जाऊँगी। क्योंकि मुझे पति ही प्रत्यक्ष देव हैं। परलोक में तथा इहलोक में आप का सांगत्य ही मेरे लिए मुख्य है। अगर आप मुझे छोड़कर जायेंगे तो मैं विष लेकर या अग्नि में कूदकर या पानी में डूब कर प्राण छोड़ दूँगी।

इस प्रसंग से सती के लिए पति ही प्रत्यक्ष देव है, पति सेवा ही सती के लिए कर्तव्य है, विषय स्पष्ट हो जाता है। कोसल राज्य में हंसतूलिका तल्प पर आराम करनेवाली सीता पति के लिए अरण्यवास करके कई कष्टों का स्वागत करती है। फिर भी पति सेवा को ही परम धर्म के रूप में मान लिया है।

तारा

श्रीराम के हाथों मारे गये वाली के पास जाकर उसकी पत्नी तारा बहुत रोती है। वानरोत्तम और महाबलशाली अपने पति के मरने के बाद मुझे अपने पुत्र से क्या काम है? राज्य भी किस लिए है? मेरे अपने जीवन से ही आशा उड़ गयी है? ऐसा तारा वानरों से कहती है। पति के शव को देखकर तारा कहती है–

रानी दारुण विक्रांत, प्रवीर प्लवतां वर।
किं दीनाम अपुरोभागम। अद्यत्वं नाभिभाषसी।
उत्तिष्ट हरिशार्दुल भजस्व शयनोत्तमं।
नैवं विदाः शीरती हि भूमौ नृपति नत्तमा।
अतीव खलुते कांता वसुधा वसुधाधिप।
गतानुरपि यां गात्रैःमां विहयनिषेवसे।

(किष्किंधाकांड-सर्ग-20 - श्लोक, 3-5)

हे महावीर, तुम युद्ध में अजेय पराक्रमी हो। वानरों में श्रेष्ठ हो। निरपराधी होकर तुम्हारे साथ रहनेवाली मुझसे क्यों बात नहीं करते हो? हे वानर प्रभु उठो। श्रेष्ठ शयन पर सो जाओ। तुम जैसे महाराजा को इस रूप में जमीन पर नहीं सोना चाहिए। बोलती विलाप करती है। पति के मरण को झेल नहीं सकती है, सहन नहीं कर सकती है, तारा प्राण छोड़ने के लिए तैयार हो जाती है। तब हनुमान उसे सांत्वना देकर उस प्रयत्न से रोकता है। पति के बगैर जीवन नरकप्राय है, समझकर पति के साथ ही जीवन है सोच कर तारा आत्मार्पण करके पति के पास पहुँचना चाहती है।

मंदोदरी

श्रीराम के हाथों में मारे गये रावण के भौतिक शरीर को देखकर मंदोदरी भी बहुत विलाप करती है। अपने पति के गुणों का यशगान भी किया। उसी समय उसके दुष्ट कार्यों का उल्लेख भी किया।

''हे प्रभु, तुम तो चाहते सीता से भी बढ़कर सुंदर कन्याएँ अपने महल में ही थीं। लेकिन

कामातुर होने के कारण इस विषय को ग्रहण नहीं कर पाये थे। वंशोन्नति, विद्याभ्यास, सौंदर्य आदि में सीता मुझ से किसी भी रूप में बड़ी नहीं थी। कम से कम मुझसे समान भी नहीं थी। सीता के रूप में अपने आप मौत का स्वागत किया आपने, ऐसा अधिक्षेप भी वह करती है। उससे भी आगे अपने दांपत्य जीवन में हुए विकारों के बारे में भी वह बताती है। आगे सीता देवी श्रीराम के साथ सुखी जीवन जियेगी। अभाग्यवान मैं अनंत शोक सागर में डूब जाऊँगी। कैलास पर्वत पर, मंदर गिरि पर, मेरु पर्वत पर, कुबेर का वन चेत्र रथ पर, नंदनवन आदि समस्त दिव्य वनों में तुम्हारे साथ घूमघाम कर आनंद लिया है न? चित्र-विचित्र वस्त्र धारण करके चित्रविचित्र आभरण पहन कर अपने स्तर के विमान में बैठकर वैभवता के साथ विहार भी किया था। देश-विदेशों का दर्शन भी किया था। ऐसी मैं आपकी मृत्यु से सब कुछ खो बैठी हूँ। सारे भोग भाग्यों को खोकर आज मैं एक सामान्य स्त्री बन गयी हूँ। कहती अपने दांपत्य जीवन के मधुर क्षणों का स्मरण करके बहुत विलाप करती है।

धिगस्तु हृदयं यस्या ममेदं न सहस्राधा।
त्वयि पंचत्व मापन्ने फलते शोक पीड़ितम॥

(यद्धकांड, सर्ग-114-श्लोक-86)

आपके प्राण जाने के बाद शोक से विलाप करनेवाली मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो रहा है? मेरा हृदय एक पाषाण है। कहती विलाप करती है।

अपने को प्राप्त ऐश्वर्य, कीर्ति सब कुछ पति के कारण ही है। पति के जाने के बाद सब अब नहीं होंगे, जान कर पति ही पत्नी के लिए सब कुछ है, मंदोदरी के इस प्रसंग के द्वारा स्पष्ट होता है।

इनके ही नहीं और भी अनेक दंपतियों के जीवन वाल्मीकि ने अपने रामायण में प्रस्तुत किए हैं। उनका सबका अपना-अपना अलग है। किंतु स्थूल रूप से कहना है तो सभी पति परायण ही लगती हैं। उनके मार्ग अलग हैं लेकिन उनका लक्ष्य एक ही है।

आज भी परिवार और दांपत्य जीवन की चर्चा होती है तो रामायण के प्रसंगों को ही उदाहरण के लिए दिया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि रामायण जन जीवन में काफी गहराई से पैठ गया है। लेकिन पत्नियों की तरह पतियों को भी पवित्र रहना चाहिए। इसी की जानकारी मनुस्मृति में इस रूप में मिलती है–

संतष्टो भार्ययाभर्ता, भर्ता भार्या तदैवाच।
यस्मिन्नेव कुलेनित्यं कल्याणं तत्र वैध्रुवम॥

मनुस्मृति - 3-60 श्लोक

पति से पत्नी, पत्नी से पति संतुष्ट होकर जिस घर में होते हैं, उस घर में कल्याण परंपराएँ होती हैं, कहती है। यह सच भी है। ऐसी कल्याण परंपराओं के लिए बुनियादी डालनेवाले वाल्मीकि धन्यजीवी हैं।

रामकथा : जीवन

वाग्गेयकारों की रचनाओं में नृत्यांश के रूप में रामकथा : एक अनुशीलन

वी. हेममालिनी

विश्व भर में भारत अपनी कलाओं, संस्कृति, संप्रदायों के लिए प्रसिद्ध है। एक कला के द्वारा संगीत में गीत के द्वारा या नृत्य में अभिनय के द्वारा किसी प्रसंग का सृजन किया जा सकता है। ये प्रसंग अर्थात् पुराण और इतिहास ही नहीं सामाजिक अंशों को भी इस कला के द्वारा प्रदर्शन देने से पंडित और पामर लोग भी उसके इतिवृत्त के बारे में समझ सकते हैं। कलाकार संदर्भोचित कला के द्वारा श्रोताओं को उत्तेजित कर सकते हैं। यह सिर्फ भारतीय कलाओं के लिए ही संभव है।

हमारे भारत देश की विविध कलाओं के रूपों को परखने से तमिलनाडु में भरतनाट्यम, उत्तर भारत देश में कथक, केरल में कथकलि, मोहिनीअट्टं, आध्र में कूचिपूडि, ओड़िसा में ओडिस्सि, असम और बंगाल में मणिपुरि आदि को सांप्रदायिक नृत्य रीतियों के रूप में पाते हैं। इनसे अलग भारत देश के अन्य कलारूपों को परखने से लोकनृत्य, यक्षगान, हरिकथाएँ, नृत्यनाटक आदि के द्वारा रामायण, महाभारत, भागवत आदि इतिवृत्तों का प्रदर्शन इन कलारूपों के द्वारा प्रदर्शन किया जाता है। इनमें अभिनेता यानी नर्तक या नर्तकी अपने अभिनय के द्वारा जनता को सरल समझ में आये उस रूप में प्रदर्शन देते हैं। इस रूप में नृत्य के लिए संगीत भी आवश्यक है। संगीत और नृत्य दोनों मिलकर किसी भी वस्तु को प्रसंग के रूप में बहुत आसानी से प्रस्तुतत किया जा सकता है। कई वाग्गेयकार अपनी रचनाओं के द्वारा अपने-अपने इष्टदेवों की स्तुति करते हुए रचनाएँ लिखी हैं। उनमें संगीत त्रिमूर्ति त्यागय्या, मुत्तुस्वामी दीक्षितार और श्याम शास्त्री, उनसे अलग अन्नमाचार्य, क्षेत्रय्या, रामदास, स्वाति तिरुनाल और कई वाग्गेयकार विविध संगीत रचनाओं को रचने के कारण उन रचनाओं के साहित्य को अभिनय द्वारा जनता में ले जाने के लिए सहायता देनेवाली कला ही यह नृत्य कला है।

कुछ संगीत रचनाओं के अनुशीलन करने से, उदाहरण के लिए त्यागय्या ने अपने इष्टदेव राम को लेकर कई संकीर्तन रचे हैं। रामावतार के कई प्रसंग इसके अन्तर्गत आते हैं। उनमें एक संकीर्तन।

खंडचापु ताल और एदुकुल कांभोजि राग

पल्लवि : श्रीरामजयरामयनि चिंतिंप रादटे मनसा (ये मन तू श्रीराम जयराम कहकर क्यों नहीं सोचती)

चरण-1 : तलुकु चेक्कुल मद्दु बेट्ट मुनु कौशल्य तपमेमि जेसेनो

चरण-2 : दशरदुडु श्रीराम रारा अनिपिलव
तपमेमि जेसेनो दशरदुडु तपमेमि जेसेनो।

चरण-3 : तनवेंट चनचूचि उप्पोंगिन कौशिकुडु तपमेमि जेसेनो

चरण-4 : तन तनय नोसगे कनुलारा कनजनकुडु तपमेमि जेसेनो
त्यागराक्तयनि पोगड नारदमौनि तपमेमि जेसेनो

(अर्थात् बार-बार चूमने वाली कौसल्या ने कौन सा तप किया, दशरथ ने बार-बार राम-राम पुकारने के लिए कौन-सा तप किया, अपने साथ राम को ले जाने के लिए कौशिक ने कौन सा तप किया, अपनी पुत्री को राम को देने के लिए जनक ने कौन सा तप किया, त्यागराज को यह मौका देनेवाले नारद ने कौन सा तप किया।)

कीर्तन के द्वारा रामायण का विवरण देते हुए त्यागय्या ने इसे स्वर बद्ध किया है। इसका नृत्य के साथ भी अधिक संबंध है। क्योंकि एक नर्तकी एक पात्र अभिनय लेकर उसमें रामायण प्रसंगों को स्वयं अभिनय करती है।

रूपक ताल **मध्यमावति राग**

पल्लवि : अलकलल्ल लाडगने आ रामुनि एटु पोंगेने

अनुपल्लवि : चेलुवमीरगनु मारीचुनि मदमुननचेवेल

चरण : मुनिकनु सैग तेलिसि शिव धनुवुनु विरिचे
समयमुन त्यागराजविनुतुनि रंजिल्लु

(अर्थात् श्रीराम का नाम कीर्तन उत्साह भरता है। अपने गुरु के कहने पर राम ने मारीच वध किया। फिर मुनि के संकेत पर शिव धनु को तोड़ा। यह देखकर त्यागराजु का हृदय आनंद से भर गया है।) इस कीर्तन में विश्वामित्र याग की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाना, सीता स्वयंवर के बारे में त्यागय्या ने चित्रण किया है। इसमें नृत्य करने का अवसर है।

हंसद्वनिराग **आदिताल**

पल्लवि : श्रीरघुकुलमंदु पट्टि नीवु सीतानुचेकेनिन रामचन्द्र

अनुपल्लवि : अराम मंदु मुनुल कोरिकल ऊदेरचेय पूनुकोन्न राम

चरण : वररत्न पीठमंदु मज्जनमु पुडमि सुरुल चेत गैकोन्न रामा
परमभक्तुलनु पालनम्मु जेय साकेत वासा त्यागराजनुत।

इस कीर्तन में राम के यश का वर्णन है। इसके अंदर के प्रसंगों में राम का जन्म, याग की रक्षा, सीता स्वयंवर आदि ही नृत्य के लिए सुविधाजनक होंगे।

इस रूप में त्यागराजु के कई प्रसंगों को लेकर नृत्य करने के लिए अवसर निकाल सकते हैं। इससे अलग वाग्गेयकारों में कुछ अन्नमय्या, रामदास आदि के कीर्तनों का नृत्य संभव है। अन्नमय्या के 'इतडे परब्रह्म मिदिये रामकथा', 'रामचन्द्रुडितडु रघुवीरुडु', 'नमो नमो रघुकुलनाइका' आदि

नृत्य करने योग्य कीर्तन हैं।

रामदास के 'ननुब्रोव मनि चेप्पवे', 'सीतम्मकु चेइस्ति चिंताकु पथकमु' आदि कीर्तन भी नृत्य करने के लिए अनुकूल हैं। इस रूप में त्यागय्य कीर्तन, अन्नमय्या संकीर्तन, रामदास कीर्तन, स्वाती पेरुमाल के कीर्तन आदि नृत्य करने के लिए अनुकूल हैं। कलाकारों के नृत्य और संगीत विद्वानों के गीतों द्वारा काफी भक्ति श्रद्धाओं की साधना करते थे।

अन्नमय्या संकीर्तनों में रामायण की विशेषताएँ

डॉ. टी. रघुनाथ

अखिलांड कोटि ब्रह्मांड नायक को अपने हृदय के भक्ति मंदिर में स्थापना करके श्वास एवं ध्यास दोनों में वेंकट नाम को छोड़कर दूसरा किसी नाम को नहीं जाननेवाला भक्ताग्रेसर अन्नमय्या हैं। इतिहासामृत रामायण तब से लेकर अब तक विश्व के इतिहास में चर्चित रहा है। इसका मूल कारण सुनने से अच्छा लगनेवाला, देखने से और देखने की रुचि को पैदा करनेवाला, पढ़ने से हृदय को बाँध कर रखनेवाला, पंडित और पामर को भानेवाला रामचरित उसमें वर्णित होना है।

विश्व भर में पवित्रता को प्राप्त करनेवाली रामकथा, रामायण प्रसंगों, श्रीराम की महिमा को अपने भक्ति पदों के द्वारा, ग्रंथ रूपों के द्वारा कई कवियों ने प्रस्तुत किया है। उनमें दैवांश के रूप में पैदा होनेवाले अन्नमय्या भी एक हैं। भक्त कोटि का बंधु श्रीवेंकटेश्वर को अपने हृदयेश्वर के रूप में स्थापित करके नायिका भाव से कल्पना करके उनसे प्रेम करके स्वामी को कथानायक बनाकर 32,000 श्रृंगार और आध्यात्मिक संकीर्तनों की रचना करके आलाप करके अपने जीवन को भी धन्य बनानेवाले वाग्गेयकार अन्नमय्या हैं।

अन्नमय्या को प्रत्येक अवतारों में तथा किसी भी पुण्य तीर्थ की सेवा करने में श्री वेंकटेश्वर के ही दर्शन होते हैं। उनकी दृष्टि में उन अवतारों एवं वेंकटेश्वर में अभेदकत्व है। रावण संहार के लिए भूमि पर जन्म लेनेवाले श्रीराम श्री महाविष्णु लोकाभिरायडु श्रीवेंकटेश्वर का प्रतिरूप हैं। श्रीवेंकटेश्वर सुप्रभात का पहला चरण ही इसका साक्ष्य प्रमाण है—

कौसल्या सुप्रजा रामा पूर्वा संध्या प्रवर्तते
उत्तिष्ट नर शार्दुला कर्तव्यं दैव माह्निकम

यानी श्री वेंकटेश्वर को प्रतिदिन सुबह राम के रूप में पुकार कर जगाते हैं। इसलिए अन्नमय्या के द्वारा दशावतारों की चर्चा करते समय रामावतार का उल्लेख करने के संदर्भ में श्रीवेंकटेश्वर के लिए 'गाटपु जडल बिंकपु भूत' कहता है। एक और जगह स्वामी वरद हस्त का वर्णन करते हुए ''मेनसि जलनिधि यम्मु मोनकु देच्चिन चेयि'' कीर्तन करता है। एक और जगह श्री निवास के चरणों का वर्णन करते हुए ''कामिनि पापमु कडिगिन पादमु'' रूप में वर्णन करता है।

इस प्रकार रामावतार की विशेषताओं को वेंकटेश्वर में दर्शन करनेवाले अपर वाल्मीकि अन्नमय्या हैं। अन्नमय्या को राम और रामायण दोनों बहुत पंसद हैं। इसलिए —

घनतर सकल भोगंबुलु गाग
मनुचु वाल्मीकि रामायण मेल्ल
रागंबुतो ननु रागंबुतोड़
बागुगा गंधर्वु बागुगाजदिवि।

ऐसा बहुत सुंदर ढंग से गाता है। सुननेवाले सभी मुग्ध होकर, कोई तुंबुर या नारद या भूमि पर संचरण करनेवाला कोई गंधर्व हो समझ कर आश्चर्य होते थे। अन्नमय्या ने राम को, रामायण को संकीर्तनों में कीर्तन करना ही नहीं द्विपद में रामायण को रचा है।

प्रविमल द्विपद प्रबंध रूपमुन सवमुगा रामायणमु—यह चिन्नना ने बताया है। (यानी यह द्विपद में रामायण को रचना है।) किंतु आज यह अलभ्य है। रामकथा के रसभरे प्रसंगों को लेकर रचे गये अन्नमय्या के संकीर्तन बहुत उपलब्ध होते हैं। अन्नमय्या के द्वारा रचित श्रीराम संकीर्तनलु, (२००) संख्या की दृष्टि से दूसरा स्थान प्राप्त करते हैं। अन्नमय्या के द्वारा रचित श्रीराम संकीर्तनों को संकीर्तन रामायण, संग्रह रामायण आदि नामों से पुकार सकते हैं।

वैष्णवों को रामकथा अत्यंत प्रिय कथा है। उस दृष्टि से ही वैष्णव अन्नमाचार्य ने रामायण पर प्रेम के कारण अधिक भक्ति और श्रद्धा दिखायी है।

रामायण के किसी भी अक्षर का उच्चाकरण करने मात्र से महापापों का नाश होता है, ऐसा विश्वास है।

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम
एकैक मक्षरं प्रोक्तं महापातक नाशनं

कहते हुए एक श्लोक के द्वारा रामायण के वैशिष्ट्य का यशगान हमारे पूर्वजों ने किया है। इस श्लोक का भाव ग्रहण करके उसे हृदयांगम करके उसे कुछ विस्तृत रूप देते हुए रामायण गाथा के इस वैशिष्ट्य को अन्नमय्या ने निम्न रूप में प्रस्तुत किया है—

इस संकीर्तन में अन्नमय्या ने रामकथा को संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

इतडे परब्रह्म मिदिये रामकथा
शतकोटि वस्तरमु सर्वपुण्य फलमु
धरलोन रामुड्डु धरणिज पेल्लाडे
अरण्यवासुलकेल्ला नभयमिच्चे
सोदिरि मुक्कु जेवुलु चुप्पनातिनि गोसे
खरदूषणुलनु खंडिंचि वेसे।।इतडे।।

किसिसि वाली जंपि किष्किंध सुग्रीवुकिच्चे
वनदि बंधिंचे दाटे वानरुलतो
कनलि रावण कुंबकर्णादुलनु जंपि

वनित जेकोनि मह्लिवच्चेनयोध्यकुनु।।इतडे।।
सौमित्रियु भरतुडु शत्रुघ्नुडु ˙ गोलुवग
भूमियेले कुशलव पुत्रुल गांचे
श्रीमंतुडै निलिचे श्री वेंकटाद्रि मीद (4-519)
कामिंचि विभीषणुलकु लंककु बट्टमु गट्टि।

एक संकीर्तन में ही रामायण के सातकांडों का वर्णन करना अन्नमय्या की प्रतिभा का साक्ष्य प्रमाण है।

नर और वानरों को छोड़कर और किसी के हाथों में मृत्यु न हो ऐसा वरदान पानेवाले रावण का संहार करने के लिए श्री महाविष्णु ने रामावतार लिया है। इसके लिए देवता लोग ही नर और वानरों को रूप में भू पर उतराये हैं। निम्न संकीर्तन कौन क्या बने हैं, स्पष्ट करता है–

ओओ राकासुलाल वोड्डुसुंडिवैरमु
देवुनि शरणनरो तेलुसुकोरो अने कीर्तनलो

जगमु लो दामुड़ै जनिइंचे विष्णुडदे
अगपुडि लक्ष्मि सीतयै पुट्टेनु
तगु शेष चक्र शंकदैवसाधनमुलेल्ल
जिगि लक्ष्मण भरत चिंत शत्रुघ्नुलैरि।। ओओषष

सुरुलु वानरुलैरि सूर्युडु सुग्रीवुडु
मरिगि रुद्रुडी हनुमंतुडायनु
सरुस ब्रह्मदेवुडु जांबवंतुडैनाडु
वेरवरि नलुडे विश्वकर्म नुंडि।।ओहो।।

(1-295)

(अर्थात् हे राक्षसगण, देवताओं के साथ वैर को छोड़ दो। उस देव की शरण में आओ। जगत में श्री महाविष्णु राम के रूप में पैदा हुए हैं। लक्ष्मी सीता के रूप में पैदा हो गयीं। शंख, चक्र, आदिशेष आदि लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के रूप में पैदा हुए। देवतागण वानरों के रूप में, सूर्य सुग्रीव के रूप में, रुद्र हनुमान के रूप में, ब्रह्म जांबवान के रूप में विश्वकर्म नल के रूप ये में पैदा हो गये) इस रूप में अन्नमय्या ने देवताओं का ही नर और वानरों के रूप में चित्रण किया है।

पानी के लिए कुएँ खोदने से बेताल पैदा होना सहज ही है। अर्थात् एक की भलाई करना चाहा तो वह दूसरे के लिए बुरा भी हो सकता है। श्रीराम का आखेट सोने के हिरण का प्राण संकट बन गया है। श्रीराम के द्वारा सुग्रीव की भलाई करना चाहा तो वाली के लिए प्राण संकट बन गया। वानरों की एकता से राक्षसों को मरना पड़ा। विभीषण की अच्छी बुद्धि के कारण रावण के सर टूट कर नीचे गिर गये। इस उच्च भाव का निम्न संकीर्तन अन्नमय्या की प्रौढ़ प्रतिभा की ओर संकेत करता है–

नूतुलु द्रव्वगबोते भेतालमुलु पुट्टे
कांतालपु लोकुलाल कंटिरा ई सुद्दुलु
मारिन पुत्रकामेष्टि मिंचि लंककुबैवच्चे
अरडि रामावतार मसुर बाध
तूर सीता पेंड्लि हारु दड्डु विंटि पंडुगाय
पारापारि नम्मनेटुवले वच्चु वीरिनि।। नूतुलु।।
चूडुकैकेय्य राज्मु चप्पनाति पापमय
वेडुक मायामृगमु वेटायनु
वाडिके सुग्रीवु मेलु वालिकि गंडानवच्चे
ईदुगानि राचपुट्टु येट्टु नम्मवच्चुनु।। नूतुलु।।
वुम्मडि कोतुल कूटमु दधिकि गट्लुवच्चे
तम्मुनि बुद्धि रावणु तल वोयेनु
वम्मि श्री वेंकटेशुनि पट्टानिके इंतनाय (2-08)
थियिम्मुल निट्टि देवर नेटुटु नम्मवच्चुनु ।।नूतुलु।।

श्रीराम के वनवास के कारण कैकेयी को प्राप्त राज्य से सुख मिलने की जगह दशरथ का मरण, भरत से डाँट, वैधव्य द्वारा पाप ही प्राप्त हुआ, ऐसा संदेश है।

अन्नमय्या के संकीर्तनों में व्यक्त रामकथा के बारे में इतने संक्षेप में व्यक्त करना कठिन है। किंतु अन्नमय्या के अपने संकीर्तनों के माध्यम से व्यक्त संदेश यह है कि मनुष्य अर्थ और काम को जितना महत्त्व देता है उतना धर्म को नहीं है। यह मानव का स्वभाव है। राजकुमार के रूप में पैदा होनेवाला श्रीराम जीकर देव बने हैं। रावण अतिकाम से राक्षस बना है। संसार सुखों में डूब कर सनातन धर्म के प्रति उपेक्षा भाव को बढ़ाना उचित नहीं है। दिए गये वचनों के प्रति कटिबद्ध होना चाहिए। विषम परिस्थितियों में भी सत्य निष्ठा को नहीं छोड़ना चाहिए। लौकिक भोगों से अधिक प्रजा की भलाई ही श्रेष्ठ है। लक्ष्य साधना में गतिरोध पैदा होने पर भी मनोधैर्य से, शौर्य से आगे बढ़ना चाहिए, ऐसा संदेश रामायण देता है। एक महत्तर काव्य रचने के लिए सफल होने के लिए कई का अभिमान और प्रेम आवश्यक है। सर्वमानव समानता और निरंभरता को प्रत्येक आदमी पालन करने से किसी भी विषम परिस्थिति में अनायास ही विजय प्राप्त कर सकते हैं, ऐसा संदेश रामकथा से प्राप्त होता है।

आधारित ग्रंथ

1. प्रतिवादी भयंकर अन्नन - श्रीवेंकटेश्वर सुप्रभात-श्लोक-1
2. अन्नमय्या आध्यात्मिक संकीर्तनलु, गौरिपेद्दि, टी.टी.डी. प्रथम भाग, 101
3. वही 1-334
4. वही 1-191
5. चिन्नन्न, अन्नमाचार्य चरित्र, पृ. 30
6. वही, पृ. 45, 46

उत्तरराम चरित : लक्ष्मण का निर्वाण

डॉ. एन. कल्पलता

विश्व का आदि काव्य रामायण है। आदि कवि के रूप में वाल्मीकि को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। रामायण में मानव की विभिन्न मानसिकताओं का निरूपण किया गया है। राम देव हैं, रावण राक्षस है, ऐसा रामायण ने पूरे जगत को बताया है। श्रीराम एवं लक्ष्मण की कथाएँ नित्य नूतन हैं।

रामुडिदे लोकाभिरामुडितडु
गोमुन परशुरामु कोप मार्चेनटरे
यितडा ताटिकि जिंचे यिडिन्नवाडा
अतल सुबाहू गोट्टि यज्ञमु गाचे
चेतनेयि कोमारुडा शिवुनि विल्लु विरिचे
सीतनम्म बेंड्लाडे चेप्प गोत्त गदवे
मन कौसल्या कोडुका मायमृगमु नेसे
दनुजुल विराधुनि ताने चेरिचे
तनुमाडे नेडुदाल्लु तोड़ने वलिनडचे
इनुकुलडितडा येंत कोत्त जलधि गट्टि
रावणु जंपि सीत मरल देच्चेनु

(अन्नमय्या संकीर्तनलु, 1- भाग, 474 संकीर्तन)

भक्तजन रामायण को आध्यात्मिक ग्रंथ के रूप में आदर करके पूजा करते हैं। सामाजिक वैज्ञानिक इसका सामाजिक शास्त्रीय दृष्टि से अनुशीलन कर रहे हैं। मनोवैज्ञानिक अपने सिद्धांतों के अनुसार इसका परीक्षण कर रहे हैं। नीति धर्मज्ञ अपने मार्ग से इसका अनुशीलन कर रहे हैं।

रामायण के दो भाग हैं। पहला पूर्व रामायण और दूसरा उत्तर रामायण है। श्रीराम के जन्म से लेकर राजतिलक तक पूर्व रामायण में, सीता गर्भ से लेकर राम के स्वर्गारोहण तक उत्तर भाग में यानी उत्तर रामायण में निक्षिप्त है।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न में लक्ष्मण का निर्वाण पहले होता है। राम और लक्ष्मण अलग नहीं किये जानेवाले भाई हैं। इसलिए लक्ष्मण का निर्वाण बड़ा ही दुखदायक है।

लक्ष्मण का निर्वाण प्रसंग : कथाक्रम

यमधर्मराज राम से बात करने आता है। यमधर्म का आगमन यानी मृत्यु का आना। अर्थात् प्राणों को ले जाने के लिए यम का आना है। यहाँ पर सबसे पहले लक्ष्मण के प्राण ले जा रहा है।

श्रीराम की आज्ञा

आज्ञा का पालन नहीं करनेवालों पर सजा को समान रूप से अमल करना राजा का धर्म है। आत्मीय, अनुराग के लोग आदि उसमें नहीं होना चाहिए। राम मुनि रूप में आये यम से बातें करने के लिए एकांत मंदिर में प्रवेश करते हैं। एकांत मंदिर में प्रवेश करने के पहले कोई उनकी बातचीत में रुकावट न डाले इसके लिए लक्ष्मण को द्वार के पास पहरे पर रखते हैं। बीच में किसी भी स्थिति में अंदर न आने की आज्ञा देते हैं। अगर ऐसा करेगा तो मरणदंड मिलेगा। तभी बिजली की तरह दुर्वासा मुनि वहाँ आये। राम से वे मिलना चाहते हैं। लक्ष्मण उन्हें रोकता है। फिर भी दुर्वासा मुनि नहीं सुनते हैं। उनके शाप के भय से लक्ष्मण अपने भाई और अयोध्या को बचाने के लिए अंदर जाकर राम को यह समाचार देता है। यह सब बहुत शीघ्र हो जाता है। राम की आज्ञा का धिक्कार हुआ है। अब इसका दंड लक्ष्मण को भोगना पड़ेगा। श्रीराम तब धर्म संदेह में पड़ जाते हैं। एक ओर अपने जीवन को भी त्याग कर राम की सेवा करनेवाले लक्ष्मण हैं, दूसरी ओर धर्म का पालन है। अब भी लक्ष्मण ने अपने को तथा राज्य की रक्षा के लिए ही दुर्वासा के शाप से बचाने के लिए ही आज्ञा का धिक्कार किया है। ऐसे भाई के साथ क्या करना है? भ्रातृ प्रेम का आदर करके क्षमा करना है? या धर्म के अनुसार मरणदंड देना है? श्रीराम मंत्री और पुरोहित आदि सबके सामने अपनी समस्या को रखा। आखिर वशिष्ठ महामुनि के वचनों के अनुसार वैयक्तिक भ्रातृप्रेम को भूलकर, अपनी सेवा करनेवाले लक्ष्मण को मरण दंड की सजा दी। वशिष्ठ ने राम से यह कहा—

''श्रीराम, तुम अपने भाई के प्रेम में अपने धर्म को मत छोड़ो। जो सजा सुनायी गयी है उसे मत रोको। एक प्रभु के रूप में आप ही अपने धर्म का विरोध करने से राज्यार्थ ही व्यर्थ हो जायेगा।'' सामान्य जनों के प्रति मरण दंड और देश बहिष्कार दोनों बराबर है। अपने प्रिय भाई को देश से बहिष्कार करो। राम ने ऐसा ही किया।

दुर्वासा का शाप

दुर्वासा महर्षि हजार वर्ष तप करके शरीर कृश होने से बड़ी भूख से श्रीराम के पास आये। इसके लिए उन्होंने लक्ष्मण से अनुमति माँगी। राम के दर्शन वे करना चाहते थे। रामाज्ञा के अनुसार लक्ष्मण ने उनको अनुमति नहीं दी। तब दुर्वासा ने लक्ष्मण को पुत्र, मित्र, कलत्र, बंधु, धन, धान्य समेत भस्म हो जाने का शाप देने का डर दिखाया। तब लक्ष्मण रामाज्ञा का धिक्कार करके राम के पास जाकर दुर्वासा के आने का समाचार दिया। लक्ष्मण ने यही सोचा कि दुर्वासा के शाप से राम को और राज्य को बचाना ही प्रमुख है। अपने जीवन के बारे में सोचना उचित नहीं है।

राम-लक्ष्मण की वेदांत चर्चा

अपने भाई को मरण दंड सुनाने के बाद श्रीराम काफी यातना का शिकार हुए। मानसिक अशांति फैल गयी। लक्ष्मण के सामने वे फूट-फूट कर रोने लगे। तब लक्ष्मण ने कहा, ''भाई, श्रीराम मेरे बारे में मत सोचिए। नीति के बारे में जानने वाले आप जैसे लोग धर्म का पालन करना चाहिए। भाग्य को टालना किसी के वश की बात नहीं है। मुझे छोड़ देने से असत्य दोष लगेगा।''

लक्ष्मण आदि शेष का अवतार

श्रीराम ने लक्ष्मण को मारने की जगह देश से निकाल दिया। लक्ष्मण ने श्रीराम के चरणों को नमस्कार करके सरयू नदी में योग करने के लिए पानी में डुबकी लगायी। लक्ष्मण बनने के पहले अपने पूर्व रूप की याद कर ली। उस समय देवेंद्र ने लक्ष्मण पर पुष्प वर्षा की। लक्ष्मण मानव रूप छोड़कर देव लोक पहुँचकर कोटि सूर्य प्रकाश प्राप्त करके प्रकाशवान होकर देवताओं से पूजा प्राप्त करते अपने शाश्वत स्थान वैकुंठ पहुँच गया।

उपसंहार

रामायण परिवार का शास्त्र है। भारत के सामाजिक शास्त्र और तत्व शास्त्र के रूप में भी पूर्वजों ने निर्णय किया है। पारिवारिक व्यवस्था सामाजिक व्यवस्था की दृढ़ बुनियाद पर होनी चाहिए। इसमें पिता-पुत्र का संबंध, माता-पुत्र का संबंध, सहोदर प्रेम, पितृवाक्य पालन, स्नेह धर्म, पातिव्रत्य, आदि अनेक स्तंभों पर रामायण भवन बना है। श्रीमद्रामायण में लक्ष्मण का पात्र महोज्ज्वल पात्र है। स्वामी भक्त, कर्मयोगी, महात्मा, सदाचार प्रेम मूर्ति, सद्‌गुण सम्पन्न, त्यागी आदि रूप में लक्ष्मण निरूपित होता है।

अपदुद्धारक श्रीराम शतक

डॉ. के. करुणाश्री

रामायन्ना, नृशिंहयान्ना, रघुवीरायन्ना, शंभू, परं
रामयन्ननु, शंकरायनिन, गृष्णायन्नगनि, मरिं
केमन्नन रघुराम, निन्ने सुमि, नाके मीतडेव्वरिनो
या मंत्रिंचे नटिंचु नेंचकुमि, रामा, अपदुद्धारका!

मंगिपूडी वेंकट शर्मा ने अनेक रीतियों में श्रीराम की स्तुति की और मान लिया कि राम की ही स्तुति की। उन्होंने राम की स्तुति में 'अपदुद्धारक राम शतक' भी रचा है। उन्होंने राम को ही नरसिंह, रघुराया, शंभू आदि अनेक नामों से पुकारा है। इस शतक में उन्होंने अपने हृदय का निवेदन किया। प्रत्येक मनुष्य अपने कष्टों की मुक्ति के लिए भगवान की दया की सहायता होनी चाहिए, मानता है। स्वातंत्र आंदोलन के समय एक ओर समाज सुधार संबंधी कविता रचते हुए उन्होंने प्रजा के कष्टों को दूर करने के लिए इस शतक को रचा है। स्वतंत्रता के समय सभी ने कई प्रकार कष्ट उठाये। उन कष्टों से मुक्त होने के लिए आवश्यक रूप से राम की दया चाहिए।

रातिन नातिनि जेसिनावु, शबरिन रक्षिंचु नावागुहुन
ब्रीतुन गानोनरिंचु नावु कवुलन ब्रेमन विलोकिंचिना
वातात्पर्यमु नापयिन निलिपि नानंदमुन गूर्चवे
यातंकंबुल नेल्ल मानिप रघुरामा, अपदुद्धारका! (पद्य : 39)

अहल्या, शबरी, गुह आदि पर अपनी दया दिखानेवाले श्रीराम स्वतंत्रता के समय कष्ट झेलनेवाले सभी के कष्ट दूर कीजिए, ऐसी प्रार्थना के साथ शतक का आरंभ किया है।

जगत में कई धर्म हैं। धार्मिक संघर्ष भी हैं। फिर भी सारे धर्मों को भगवान की माया समझकर मानव उनमें पड़कर अपने अस्तित्व को मिटा रहा है। फिर भी मैं मंदबुद्धि होने के कारण इस सत्य को पहचान नहीं पा रहा हूँ। फिर भी कई अवतार होने पर भी रामावतार विशेष अवतार है। क्योंकि राम नाम ही तारक मंत्र है। कुल, धर्म के अतीत राम नाम सभी जगह भजता रहता है।

अवतारंबुलवेन्नि लेवू, भुवन व्यप्तंबुनी दोक्कटे
युव, गुग्राममुलंदु माल पल्लेलंदाश्चर्यमै चोद्यमै
भवदीयुल यमुल भवद्धजनुलुन भसिल्लु, शोभिल्लु नौ
रवुरा, नी प्रभनेन्न ना तरमे, रामा, अपदुद्धारका, (पद्य : 7)

(अर्थात् अवतार कई हैं। विश्वव्याप्त तुम्हारा अकेला है। छोटे-छोटे गाँवों में, चमारों की बस्तियों में, सब के पास तुम ही पहुँचते हो, तुम्हारी शक्ति के बारे में बोलना मेरे लिए संभव नहीं है।) श्रीराम की लीलाओं के बारे में बोलना असंभव कहते हैं मंगिपूडि वेंकट शर्मा।

''रचिइंचितिवि शैशवंबुनने भप्रासंबु कंदंबुलन
रचिइंपिंचितिवि मुन निरोष्टयशतकमुन ना चेत,
नी मीदि या रचनल मुद्रण मंदके समसे।''

(अर्थात् बचपन में ही मुझसे लिखवाया, मेरे साथ शतक रचवाया, ये रचनाएँ मेरी नहीं हैं।)

शतक की इस पहली रचना से ही पता चलता है कि इसके पहले दो शतक भी उन्होंने रचे हैं। वे भी श्रीराम पर ही। राम से उन्होंने यही विनती की है कि शेष जीवन राम की सेवा में ही कटे।

वानप्रस्थमु स्वीकरिंचि, ममतने वर्णिंचि, नेनीपद
ध्यानं भेमर बोक, शक्ति मेयिदेशाराधनन जेयुकुन
आनंदंबुगा गालमुन गडपगा नर्थिंतु, नन्नानिकिन
मानंबैतगु दार्धमीयगने, रामा, अपदुद्धारका।

(पद्य-100)

शर्मा जी ने अपने जीवनांत में इस शतक की रचना करके श्रीराम के अनुग्रह के लिए विनती की है। इस शतक में समाज में व्याप्त असमानता के बारे में भगवान को निवेदन करके उन्हें दूर करने की प्रार्थना की है। भगवान का जन्म आनंद के लिए हुआ है। समस्याओं के होते देश में आनंद का सूखा पड़ गया है। इसलिए शीघ्र ही आनंद के अनुग्रह की माँग की। अपने साथ-साथ पूरे समाज के उद्धार की माँग की है। अपनी अस्वस्थता के कारण परिवार का भार भी बढ़ गया है। उससे भी मुक्ति की माँग की है।

नी कारुण्यमु नापइन निलुपरा, नीवानिगादल्परा।
नी कल्याणपु रूपु चूपरा, मनोनेत्रार्तुलन भापरा।
नाकुन, नेडभयंबु नेक्कोलुपरा, नोकोर्कुलीडेर्परा।
क्ष्माकन्या हृदयाब्जधाम, रघुरामा, अपदुद्धारका।

(पद्य-8-1)

कष्टों से अपने को बचाने की प्रार्थना करने के साथ-साथ समाज की रीतियों को भी बदलने की प्रार्थना की। यह 105 पद्यों का शतक काव्य है। इसमें भक्त भगवान के दर्शन के लिए तड़पने का ही वर्णन है। उड़नेवाले पक्षी, साँप, क्रूर मृग को पकड़ सकते हैं किंतु उस राम के चित्त को पकड़ नहीं सकते, ऐसी कवि की वेदना है।

रामायण : नैतिक एवं धार्मिक अंश

सी. कुप्पय्या

प्रस्तावना

श्रीमद्रामायण कार्यार्थी को कामधेनु है। नवरस भरित मधुर काव्य है। सबके लिए वह एक चिंतामणि है। चाहनेवालों के लिए वह सोना है।

रामायण वैशिष्ट्य

इस महाकाव्य में श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न की कथा कही गयी है। पुत्रकामेष्टि के द्वारा दशरथ को ये संतान हुई है। बचपन में विश्वामित्र, वशिष्ठ के यहाँ इनकी पढ़ाई हुई है। रामायण इसी का साक्ष्य प्रमाण है। अहल्या के शाप विमोचन के लिए भी रामायण ही जिम्मेदार है। लोक कल्याण के लिए सीता-राम कल्याण भी इसी के कारण संभव हो सका है। लोक कल्याणार्थ रावण के संहार के लिए सीता और राम को जंगल भी इसी ने भेजा है। गुह को राम सेवा का भाग्य दिया। ययाति और मारीच को निजतत्व का बोध दिया।

गंगा, सरयू आदि पवित्र नदियों की विहार भूमि बनी है। अनेक महामुनियों के आश्रमों के लिए बुनियाद बनी है। शबरी को मुक्ति दी है। वाली का संहार करके सुग्रीव को राजा बनाया है। समुद्र को लाँघकर सीता की रक्षा करनेवाले मारुति को आलिंगन प्रदान किया है। सौ योजना की वारधि बनायी है। कुंभकर्ण, इंद्रजित आदि राक्षसों का संहार किया। आखिर रावण का संहार करवाकर शाश्वत शांति की स्थापना की रामायण ने। अधर्म पर धर्म की विजय की घोषणा की है। इसलिए रामायण के बारे में कहा गया है–

यावत स्थास्यंति गिरयः सरितश्च महीतले,
तावद्रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।

इस भूमंडल में जब तक पर्वत, नदियाँ होंगी, तब तक रामायण कथा की कीर्ति समस्त लोकों में जीवित रहेगी।

रामायण में श्रीराम की दिव्य लीलाओं का गायन है। इसकाव्य में भारतीय संस्कृति की चेतना भरी है। संस्कृत से लेकर भारतीय भाषाओं में निकले दृश्य, श्रव्य सारे काव्यों के लिए यह रामायण इतिहास ही मूल है। वाल्मीकि रचित श्रीमद्रामायण को इतिहास के साथ-साथ आदि काव्य का भी गौरव प्राप्त है।

रामायण : धर्म सूक्ष्म

रामायण विविध परिस्थितियों में व्यक्तियों के साथ कैसे व्यवहार करना है, सिखाता है। इसके साथ-साथ अनेक सामाजिक अंशों पर भी प्रकाश डालता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिवार के लिए आवश्यक सुख-सुविधाओं को जुटाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। जरूरत पड़ने पर इसके लिए अपने वैयक्तिक सुखों को त्यागना चाहिए, इसके कष्टों को भी झेलना है, ऐसी नैतिक शिक्षा रामायण देता है। इसके अतिरिक्त, सत्य, न्याय, सदाचार, प्रतिज्ञापालन, आदि उदात्त धर्मों की वकालत भी रामायण करता है।

ब्रह्म के मुख से वेद, वल्मीक संभव वाल्मीकि महर्षि की कलम से रामायण निकला है। दोनों चतुरश्यु हैं। ब्रह्म चतुर्मुखी हैं। वाल्मीकि चतुर वचनकर्ता हैं। ब्रह्म लोक विधाता हैं। वाल्मीकि श्लोक विधाता हैं। दोनों के बीच का भेद बहुत स्वल्प है। इसलिए धर्मसार रामायण वाल्मीकि की कलम से निकला है। रामायण के बालकांड में इसके प्राशस्त्य के बारे में कहा गया है—

काव्यं रामायणं कृत्स्नम, सीतायाश्चरितं महत।
पौलस्त्यवध मित्येव चकार चरित व्रतां।।

(सर्ग-4-श्लोक)

इसकाव्य में रामकथा, सीता चरित्रम, रावण वध वर्णित है। गहराई से देखने पर इसमें ब्रह्म कथा मनो विजय वर्णित है। रामस्य आयनम—रामायणम, अर्थात् राम का चरित्र रामायणमु है। रामः अय्यते अनेन इति रामायणम—अर्थात् इसे पठन करनेवाला राम की तरह धर्मशील होकर अन्त में ब्रह्म सायिज्य प्राप्त करेंगे, इसका यही भाव है। 'सीताया चरितम' रामायण कहा गया है। अर्थात् रामायण सीतादेवी का चरित्र है। श्रीराम और सीता दोनों लोक के लिए आदर्श हैं। आराध्य भी।

रामायण : नैतिक मूल्य

श्रीराम मनुष्य के लिए आवश्यक पुत्र धर्म, मित्र धर्म, भ्रातृ धर्म, भर्ता धर्म, शिष्य धर्म, शत्रु धर्म, आदि सारे धर्मों को स्वयं पालन करके लोक के लिए आदर्श बने हैं। सीता देवी भी स्त्रियों के लिए आवश्यक सारे धर्मों का आचरण कर उनके लिए आदर्श बनी हैं। मानव जीवन में धर्म, अर्थ, काम नामक तीन पुरुषार्थों की साधना करता है। इन तीनों के लिए मूल धर्म है। धर्मबद्ध नहीं होनेवाले अर्थ और काम दोनों व्यर्थ हैं। धर्म के विरुद्ध कैकेयी स्वार्थ से अपने पुत्र को राजा बनाने की कोशिश करने पर भी प्रयास व्यर्थ हो गया है। लोक निंदा का शिकार भी हुई है। उसी प्रकार धर्म का उल्लंघन करके कामातुर होकर परायी स्त्री का अपहरण करनेवाला रावण का सर्वनाश हुआ है। सपरिवार नष्ट हो गया है। धर्मबद्ध होकर राज्य को भी त्यागनेवाले श्रीराम लोकाराध्य बने हैं। इसलिए 'रामो विग्रहवान धर्मः' कहा गया है। श्रीराम घनीभूत धर्म है। इसलिए 'धर्मो रक्षति रक्षिताः' लोकोक्ति चल पड़ी है।

रामायण : कांड विभाजन

वाल्मीकि ने रामायण का सातकांडों में विभाजन किया है। वे हैं बाल, अयोध्या, अरण्य, किष्किंधा,

सुंदर, युद्ध, उत्तरकांड। बाल और अयोध्याकांड में बालक लव-कुशों के रामायण गान माधुर्य को दिखाया गया है। अयोध्या और मिथिला नगरों का वर्णन भी किया गया है। राजपरिवार की मर्यादाएँ, जीवन विधान आदि का भी वर्णन किया गया है। वैदिक धर्म, संप्रदाय की रीतियाँ, अश्वमेध यज्ञ निर्वहण, राजकुमारों का विद्याभ्यास आदि का भी परिचय दिया गया है। श्रीराम के जन्म के संदर्भ में और अन्य संदर्भों में ज्योतिषशास्त्र का परिचय दिया गया है। सीता देवी के जीवित विषय में सामुद्रिका शास्त्र प्रस्तावित है। संदर्भ के अनुसार विविध देशों की गाथाएँ, नदी आदि का वर्णन, प्रकृति सौंदर्य आदि का विवरण, राजा के वंशानुक्रम, महापुरुषों की गाथाएं, महर्षियों का तपः प्रभाव आदि विशेषताओं के साथ रामायण सम्पूर्ण मानव इतिहास बना है।

वास्तु शास्त्र, मार्गनिर्माण पद्धति, राजनीति शास्त्र आदि विस्तार के साथ चर्चित हुए हैं। नारी धर्म, दांपत्य जीवन की नैतिकता, संतान के कर्तव्य, माता-पिता का वात्सल्य भाव, भ्रातृप्रेम आदि सामाजिक अंश भी उसमें आये हैं।

अरण्य और किष्किंधाकांड दुष्ट दमन, और शिष्ट रक्षण करने के धर्म के बारे में स्पष्ट करते हैं। साथ मित्र बल को संग्रह करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है। सुंदरकांड सीता देवी के कुशल समाचार प्राप्त करने के लिए, दुष्टरावण के अस्तित्व के बारे में जानने के लिए, उसकी शक्ति को जानने के लिए, शत्रु को राम की शक्ति बताने के लिए रण व्यूह रचना के लिए उपयोगी हुआ है। इनकांडों में मानवोपयोगी धर्म संदर्भोचित ढंग से प्रस्तावित हुए हैं।

युद्धकांड लोककंटक रावणासुर को संहार करना, अग्निपुनीत सीता को स्वीकार करना आदि प्रसंगों के द्वारा श्रीराम की परमसिद्धि का आधार बना है। अयोध्या में राजतिलक करने के लिए मूलाधार बना है। उत्तरकांड श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ आदि लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए साधन बना है।

फलश्रुति

राम के राजतिलक के बाद की गाथा, सीता देवी भूदेवी की गोद में चले जाने के बाद की कथा पाठकों को आयुरारोग्य प्रदान करती हैं। प्रतिदिन एक सर्ग को पढ़ने से या सुननेवाले को हजार अश्वमेध यज्ञ करने का फल प्राप्त होगा। दस हजार वाजपेय यज्ञ करने का पुण्य प्राप्त हो जायेगा। श्रद्धा और आसक्ति के साथ श्रीराम की कथा को सुनने से सभी पापों से मुक्ति पाकर वैकुंठ प्राप्ति होगी।

यः पठेच्चरणु याश्नित्यं चरितं राघवस्य ह।
भक्तया निष्कल्मषो भूत्वा दीर्घ मायुरवाप्नयात।।

(उत्तरकांड, सर्ग-111, श्लोक-19)

राम के चरित को अनन्य भक्ति से नित्य पठन करनेवाले को पापरहित होकर दीर्घायु होती है। इस रामायण के एक श्लोक के एक पाद को, या एक शब्द को भक्ति से सुनने वाले को वैकुंठ की प्राप्ति होगी। श्री महाविष्णु के अनुग्रह के अधिकारी बनेंगे।

उपसंहार

भारतीयों का आर्ष वाङ्मय रामायण है। बाद के साहित्य के लिए वही बुनियाद बना है। भारतीयों के सारे जीवन मूल्य इसमें निक्षिप्त हुए हैं। इसलिए विश्व की सारी भाषाओं में इसका अनुवाद किया गया है। एक वाक्य में बोलना है तो सूर्य, चन्द्र और मानव जाति के रहने तक रामायण प्रकाश फैलाता रहेगा।

महाभारत : रामकथा

डॉ.एल. कस्तूरी

संस्कृत महाभारत को तेलुगु में कवित्रय नाम से पुकारे जानेवाले नन्नया, तिक्कना, एर्रना ने अनुवाद किया। आदि, सभा, अरण्य पर्व के चतुर्थआश्वास के कुछ पद्यों तक नन्नया ने अनुवाद किया। बाकी भाग को एर्रना ने पूरा किया। एर्रना के द्वारा रचित अरण्य शेष पर्व में रामायण कथा एक बड़ा उपाख्यान है। एर्रना ने उसे षष्ट्य आश्वास में कुछ भाग और सप्तम आश्वास में बाकी भाग को रखा है। मूल में 19 अध्यायों में (सं 3.258-276) 727 श्लोकों में रहनेवाली रामकथा को एर्रना ने 315 गद्य-पद्यों में रचना की है। बालकांड से लेकर किष्किंधाकांड तक रहनेवाली कथा को एक भाग में, सुंदर, युद्धकांड को दूसरे भाग में चयन करके, पहले भाग को 147 पद्यों में, दूसरे भाग को 168 गद्य पद्यों में पूरा किया है।

एर्रना की रामायण कथा वाल्मीकि रामायण से भिन्न है। रामापोख्यान की विशेषताओं को स्वर्गीय पेंड्याल सुब्रह्मण्य शास्त्री ने विशेष रूप से चर्चा की है। वाल्मीकि रामायण से अलग नयी विशेषताएँ एर्रना के उपाख्यान में मिलती हैं। रावण, कुंभकर्णादि के पूर्व जन्म वृत्तांत, वाली, सुग्रीव के युद्ध के समय हनुमान सुग्रीव को मालांकृत करना, त्रिजटा कथा, अवाद्य नामक वृद्ध राक्षस की कथा आदि एर्रना के रामायण में नये ढंग से आयी हैं। जब कि सीता का अग्नि प्रवेश एर्रना के रामायण में नहीं है। रामायण की कथा की उपकथाओं के बारे में हमेशा भिन्नता को ही देखा जाता है। ऐसा तेलुगु के आलोचक खंडवल्ली लक्ष्मी रंजनम का विचार है।

एर्रना ने बालकांड को सिर्फ 23 पद्यों में रचा है। युवराज के रूप में श्रीराम राजतिलक के साथ आरंभ करके सीता के कल्याण को एर्रना ने छोड़ दिया है। कैकेयी को दशरथ ने क्यों वरदान दिए? यह विषय, गंगा नदी को पार करते समय गुह का प्रसंग भी इसमें नहीं है।

धर्मराज मर्कंडेय से ''द्रौपदी जैसा दुख भोगनेवाली नारी और मुझ जैसा दुख भोगनेवाला भूपति इस लोक में दूसरा कोई नहीं है? ऐसा कोई है? अगर है तो उनका वृत्तांत आपने कभी सुना है?'' ऐसा सवाल करने पर मुनि ने थोड़ा हँसकर रामायण कथा युधिष्ठिर को सुनायी।

निराशा में डूबे हुए युधिष्ठिर को फिर कार्योन्मुख करने के लिए मार्कंडेय मुनि ने श्रीराम के बारे में बताया। क्योंकि श्रीराम भी धर्मराज की तरह अग्रज हैं। शासन को भाई को छोड़कर अरण्यवास के निकलना आदि श्रीराम जैसे मिलते-जुलते हैं। सीता का अपहरण, सीता को बचाना आदि भी दोनों कथाओं में प्राप्त होनेवाला सारुप्य है। रावण के संहार के बाद राम सिंहासन् पर बैठते हैं। इसलिए मुनि ने धर्मराज को यह कहानी सुनायी है। एर्रना प्रबंध परमेश्वर उपाधि प्राप्त

कवि हैं। इसलिए प्रबंध शैली इसमें दिखाई पड़ती है। रघुवंश के राजा दशरथ की कौसल्या, कैकेयी, सुमित्रा तीन रानियाँ हैं। उनको श्रीराम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न नामक तीन पुत्र हैं। दशरथ अपने बड़े पुत्र राम का राजतिलक करना चाहता है। यह समाचार पाकर परिचारिका मंथरा कैकेयी की कान भरती है। कैकेयी युद्ध के समय दशरथ के रथ से उनकी रक्षा करती है। तब दशरथ ने उसे वरदान दिया था। इस विषय के बारे में एर्रना ने नहीं बताया है। किंतु कैकेयी ने दो वरदानों को दशरथ से माँगा। इसका उल्लेख है।

यैवराज्य पदंबुन यंदु भरतु, नधिप।
यभिषेक मोनरिंपु मडविलोन।
नोलसि पदुनाल्गु वर्षंबुलुंडनान।
लीम्मुरामुनि, मरुवरम्मिदिय नाकु।

(भा.अ.ष. 302)

कैकेयी दशरथ से भरत को राजा बनाने के लिए, राम को 14 वर्ष वनवास भेजने के लिए दो वरदान माँगती है।

दशरथ के बेहोश होने का समाचार सुनकर भी राम अपने पितृ वाक्य का पालन करने लिए तभी लक्ष्मण और सीता समेत अरण्यवास के लिए निकल पड़े। श्रीराम को एर्रना ने पितृवाक्य पालन करनेवाले पुत्र के रूप में सिद्ध किया है।

दशरथ बहुत दुख से कहते हैं—

रामुड्डु सनुट विनि महोद्धाणमंबगु
शोक वह्नि दरिकोनंग महा
राम, गुणधाम, यनियनि,
भूमेश्वंड सु वियोगमुं ब्रापिंचेन

(भा.अ.ष.प. 305)

हे राम, सद्‌गुणशील अपने त्याग से आप वनवास के लिए गये। तुम्हारा बड़प्पन निरूपित हुआ है। तुम्हें छोड़कर मैं कैसे जी सकता हूँ। इस रूप में विलाप करने में दशरथ का पुत्रवात्सल्य का पता चलता है।

राम के वनवास जाने से और दशरथ के मर जाने से राजा नहीं रहा है। तब कैकेयी अपने पुत्र से राज्य भार लेने के लिए कहती है। भरत बहुत दुख से अपनी माँ पर गुस्सा करता है।

दुरितंबु लेन्नंड्डु, बोरयक वेलुगोंदु।
कमलाप्तकुलमुन गसटु गलिपि
परम धर्मात्मकु बुरुहुत सन्निभु
बतिम्रिंगि कोनि, कृप, बारवैचि
मायत बाहु दोजयुक्तु मायन्न।
बटु धैर्य नदवुलपालु वरिचि

जीवित हंत्रिवै त्रोवंगरानि दु।
स्मीर्ति नयौदलंगीलु कोल्पि।

(भा. अ.ष.प.307)

भरत इस रूप में अपनी माँ के प्रति गुस्सा, जुगुप्सा, दोषारोपण करता है। कहता है अपने स्वार्थ से सूर्य वंश में दाग लगा दिया है। अपनी माँ को पापात्मा कहने में भरत संकोच नहीं करता है। इसमें भरत की वेदना और अपने भाई के प्रति तथा धर्म के प्रति समर्पण भाव मिलता है।

उसके बाद भरत शत्रुघ्न वशिष्ठ आदि के साथ राम से मिलने चित्रकूट जाता है। मूल में वहाँ तपस्वी, धनुर्धारी लक्ष्मण समेत राम को देखने का उल्लेख है। लेकिन एर्रना ने इस संदर्भ में प्रबंध रीति में राम का वर्णन प्रस्तुत किया है।

कनियोंगोमल नीलमेघ सुभगाकारुन, जटावल्कला
जिनधारुन, सितभूति भूषितुनि, राजीवाश्रु गल्या की
र्तनु गाकुत स्तकुल प्रदीपकुनि, सीतलक्ष्मणोपेतु, से
न्मुनिलोकार्चितु, सत्य पाभरणु, रामुन, राज चूडामणिन।

(भा.अ.ष.प. 309)

एर्रना ने राम को सुंदर और राजा चूड़ामणि सिद्ध किया है। वल्कल धारण करने पर भी उनकी छवि प्रकाशवान है। सुकुमार देह में नील मेघ श्याम रंग में श्रीराम इक्ष्वाकु कुल को प्रदीप्त करनेवाले के रूप में दर्शाया है।

भरत अपने पिता के मरने का समाचार देकर राम के चरणों पर गिर कर दुखी होकर राम को अयोध्या लौटने की विनती करता है। किंतु पितृ वाक्य परिपालक राम ने अयोध्या आने को इनकार करके भरत की प्रार्थना पर अपनी पादुकाओं को दिया। उन्हें ले जाकर अयोध्या के समीप नंदिग्राम में रखकर शासन करता है। यह भ्रातृ प्रेम का श्रेष्ठ उदाहरण है।

राम और लक्ष्मण दोनों ने ऋष्यश्रृंग पर्वत पर सुग्रीव से मिलने पर सीता के द्वारा गिराये गये आभरण दिए। तब राम वाली का संहार करके सुग्रीव को वानर राजा बनाने की शपथ लेते हैं। सुग्रीव सीता की खोज में सहायता करने की बात कहता है। साथ हनुमान के साथ वानर सेना को सीतान्वेषण के लिए भेजता है। हनुमान लंका पहुँचकर सीता को खोज लेते हैं। लौटते समय हनुमान मधुवन पहुँच कर हंगामा करते हैं। उसका वर्णन एर्रना ने इस रूप में किया है–

तेनेलु ग्रोलिक्रोलि, कडुडियनि कम्मनि पंडुलिंपु सों
पानग नानियानि, परपंदिन नीडलु मेच्चि मेच्चि, मंद
दानिल शैत्य सौरभ समग्रतकुं गडु जोक्कि चोक्कि, यु
द्यानमु नंदु मारुतसुतप्रमुखुल विहरिंचि तृप्तुलै।

(भा.अ.सप्त. प. 11)

हनुमान और वानर सभी हर्ष के साथ मधुवन में प्रवेश करके शहद, फलादि खाकर उसका ध्वंस करते हैं। जाकर श्रीराम को सीता का पता बताते हैं। मधुवन का सुंदर वर्णन एर्रना ने किया

है। सीता की स्थिति का भी मार्मिक वर्णन एर्रना ने किया है।

कन्नीरु जडिगोनि क्रन्नाकेक्किन,
कम्र कपोल भागमुलु गलिगी
यवशमै येरगिन यंगवल्लिक पोंत
नुन्न भूमीरु हुंबात गाग
वेटलु निट्टूर्पुल वेडिमि बगिलिन
यधर पल्लवमु गारा कुबोल
दलपुलु संदडि दंदर्डिंचिन ताल्मि
गदिरि शिरःकंपगतुल बेरय।।
नुन्न पुण्यमूर्ति नुत्तम सौंदर्य,
नवनतास्यनार्तयैनदानि,
गनि विदेहतनयगा नेरिंगिति नेनु
हरमु प्रवीर यनुचु नडल।

(भा.अ.सप्त.प. 28)

हनुमान तलाश करके अन्त में रावण के महल के अशोक वन गये। वहाँ रो-रोकर विकृत चेहरे के साथ सीता को देखा। यहाँ पर एर्रना ने सीता के सौंदर्य का सहज वर्णन किया है। वह पीली कलाहीन पत्ते की तरह लगीं। यही बात हनुमान राम को बताते हैं।

सीता को अयोध्या ले जाने तक राम की सेवा करके हनुमान ने अपने जन्म को सार्थक किया।

लंकाधीश रावण से युद्ध करके उसका संहार करके सीता के साथ अयोध्या पधारनेवाले सीता राम के दर्शन का मनोहर चित्रण एर्रना ने किया है।

अविरोधंबुग जानकी सहितुडै याबद्धरत्न प्रभा
नव पुष्पंबगु पुष्पकंबनु विमानंबेक्कि यर्कान्वय
प्रवरुंडिम्मुल नेगे सम्मद भत प्राग्भागवाराकर
प्लव मानंदगुचुं बूरंबुनकु ब्राप्त श्री विसेषोन्नतिन

(अ.सप्त.प. 166)

शत्रु संहार करनेवाले श्रीराम सीता समेत पुष्पकविमान पर चढ़कर अयोध्या लौटते हैं।

भारत को पढ़नेवाले पाठक को रामायण पढ़ने का पुण्य भी मिलेगा समझकर व्यास ने भारत में रामायण को रचा है। पितृवाक्य पालन करके, एकपत्नी व्रत करके, पिता से बढ़कर पुत्र का आदर्श रूप प्रस्तुत किया राम ने।

पंचम वेद माने जानेवाले महाभारत में रामायण, भारत और भागवत अन्तर्भाग हैं। एक काव्य को पढ़ने से इतिहास और पुराण पढ़ने का पुण्य मिलता है। रामकथा पावन चरित है। भवसागर को पार करानेवाली नाव है। राम का सौशील्य, सीता की सहनशीलता, पातिव्रत्य की महिमा आदि को व्यास ने भारतांतर्भाग के रूप में जोड़कर लोक का हित किया है। उसे पढ़नेवाले हम भी धन्य हैं।

रामकथा - हनुमान का चातुर्य

यस. चन्द्रय्या

मनोजवां मारुत तुल्य वेगं
जितेंद्रियं बुद्धि मतां वरिष्टं
वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं
श्रीरामदूतं शिरसा नमामि।

इस श्लोक को सुनते सबका ध्यान पहले 'श्रीरामदूतं शिरसा नमामि' पर जाता है।

जगत में स्वामी की प्रशंसा की जाती है। क्योंकि उसका उच्च स्थान है। वह प्रभु गुणवान, प्रजाहित पालक होने पर उसकी प्रशंसा ही नहीं पूजा भी की जाती है। लेकिन उस प्रभु के पास सेवा करनेवाले एक सेवक को प्रभु के समान प्रशंसा प्राप्त होती है तो पूजा भी की जाती है तो असाधारण ही होता है।

रामायण में सुगुणाभिराम, धर्मस्वरूप, शक्ति सम्पन्न, प्रजाहित पालक श्रीराम जैसे महाप्रभु का सेवक होते हुए अपने लिए भी मंदिर निर्माण करवाने के महान व्यक्ति हनुमान हैं।

इतनी प्रशस्ति, महत्ता और पूज्यता रामदूत को प्राप्त हुई है तो इसके लिए जिम्मेदार उसका व्यक्तित्व है। शक्ति, युक्ति, भक्ति त्रिवेणी तीर्थ की तरह हनुमान में है।

रामायण को सम्पूर्ण ढंग से पढ़ने के बाद सब के मन में बसने वाले चार पात्र हैं। राम, सीता, रावण और हनुमान हैं। सीता राम बड़े पूज्य होने पर भी उनसे वाली का वध, सीता परित्याग आदि कुछ प्रश्न करने की आवश्यकता होती है। सीता लक्ष्मण से कही बातों को सुनने से सीता से सवाल करने की आवश्यकता होती है। मंदोदरी ने अपने पति रावण से कई प्रश्न किये। जब कि हनुमान पर आक्षेप करके सवाल करने की स्थिति कभी उत्पन्न नहीं होती है। यह हनुमान के व्यक्तित्व की बड़ी विशेषता है। हनुमान की शक्ति, युक्ति, सामर्थ्य, भक्ति-वात्सल्य के लिए किष्किंधा, सुंदरकांड प्रमुख है। सुंदरकांड हनुमान के व्यक्तित्व की वैभव पूर्ण कहानी ही है।

श्रीराम और हनुमान का समावेश

श्रीराम और किष्किंधा के बीच में मैत्री करानेवाले हनुमान हैं। राम को पंपा सरोवर का रास्ता कबंधुडु दिखाता है। इस समावेश के बाद लंका का रास्ता हनुमान ने ही बताया।

इसलिए रामायण में हनुमान और श्रीराम का समावेश बहुत प्रमुख है। राज्य और पत्नी के प्रेम से वंचित सुग्रीव पर्वत पर था और सीता और राज्य के लिए दूर राम दोनों वहाँ मिलते हैं। दोनों का दुख लगभग समान है। दोनों एक होने से दोनों को प्रयोजनकारी है।

पंपा सरोवर के तट पर राम और लक्ष्मण को घूमते सुग्रीव ने देखा। भाई वाली ने उसे मारने के लिए उन्हें भेजा है। ऐसा वह डर जाता है। तब हनुमान ने यथार्थ जाने बिना डरना व्यर्थ है बताया है। अकारण भय अनर्थ हेतु बताया है। बड़ी निपुणता से सुग्रीव को धैर्य बँधाया। फिर सुग्रीव का भय दूर नहीं हुआ। अन्त में वे कौन हैं जानने के लिए हनुमान वेश बदल कर एक भिक्षुक के रूप में राम के पास आते हैं। राम और लक्ष्मण दोनों को वे राजर्षियों के रूप में हैं बताया। बड़ी निपुणता से उनका समाचार प्राप्त किया। तापस वेश धारण करनेवाले आप धनुर्धर क्यों बने हैं? सवाल किया। अपने को सुग्रीव का सचिव बताया।

नाक्यज्ञं, मधुरै र्वाक्य
स्नेह युक्त मरिन्दम।

ऐसा राम से बुलवाकर राम के स्नेह को प्राप्त किया। राम को यह बोध कराया कि वह कितना बात करने में चालाक है, कितना मधुर बोल रहा है। कितना स्नेहयुक्त बोल रहा है। इस रूप में हनुमान ने पहली मुलाकात में ही राम के हृदय में अपने लिए स्थान बना लिया है। अग्नि साक्षी के साथ राम और सुग्रीव के बीच में मैत्री करवायी है।

सीतान्वेषण में हनुमान

हनुमान की महानता, उसकी शक्ति युक्ति के लिए सागर को लाँघना, लंकाप्रवेश करना प्रमाण है, यह सभी मानते हैं। वास्तविकता यह है कि हनुमान की महानता लंका नगर में प्रवेश करने के बाद पता चलती है।

अपरिचित एक नगर में वह भी शत्रु के नगर में, राक्षसों से बचकर, किसी को संदेह न हो, अपने को कभी नहीं देखनेवाली स्त्री को कम समय में खोज करके पता लगाना एक चुनौती पूर्ण कार्य है। राक्षसों की माया से ऊब गये, साक्षात् श्रीराम के आने पर भी संदेह करने के लिए विवश सीता को सही समय पर सही रूप में दर्शन देकर सही भाषा और सही रूप में बात करके अपने को राम दूत के रूप में सिद्ध किया हनुमान ने। यह उनकी चतुरता है।

सीता का पता चलने पर हनुमान को बहुत आनंद हुआ। उछले और कूदे। अविवेक से सीता के पास नहीं गये। हनुमान विचारवान हैं। पत्तों और शाखाओं की आड़ में बैठकर सीता से परिचय बढ़ाया है। फिर सीता को विश्वास दिलाकर राम दूत बन गये। सीता जब आत्महत्या करने के लिए शिंशुपा वृक्ष के नीचे आती है। तब अपने को सामने प्रस्तुत किया। संस्कृत में बात करने की जगह जनभाषा प्राकृत में बात की। रामकथा का गायन किया। सीता में आसक्ति को बढ़ाया। सीता को सर उठाकर पेड़ की तरफ देखने के लिए प्रेरित किया। तब तक शाखाओं में कच्चे फल के रूप में

छिपे हनुमान धीरे-धीरे नीचे उतरे। सीता को नमस्कार किया। सीता को विश्वास दिलाया। राम का भी परिचय दिया। उसके बाद अपने को राम दूत बताया।

धर्म की दृष्टि से नहीं सामान्य मानव दृष्टि से देखने पर भी हनुमान का एक विशिष्ठ व्यक्तित्व है। चरितार्थ जीवन है। रामायण में हनुमान ने रामदूत के रूप में स्वामिभक्ति दिखाते अपनी चतुरता का परिचय दिया है।

राम का शासन : राजनीति

के. विजय कुमारी

दशरथ का ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम हैं। मानव कार्य के लिए त्रेता युग में पैदा हुए श्री महाविष्णु ही श्रीराम हैं। त्रेता युग में श्रीराम ने एक राजा के रूप में पालन किया। वह आदर्श राम राज्य के रूप में प्रचलित हुआ। श्रीराम का पालन आज के लिए भी आदर्श पालन माना जाता है।

राजा को कैसा पालन करना चाहिए। धर्म का आचरण कैसे करना चाहिए। प्रजा की समस्याओं का समाधान कैसे करना चाहिए। राजनीति का अनुसरण कैसे करना चाहिए। इन सबका विवरण राम का शासन देता है।

राम के प्रिय भक्त तुलसीदास ने राम राज्य का परिचय निम्न रूप में दिया है—

बरनाश्रम निज बल धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहि सदा पादहि सुखहि नहि भय शोक नोराग।
दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराजु नहि काहुहि व्यापा।।
सब नर करहि परस्पर प्रीती। चलहि स्वधर्म निरत श्रुति रीती।।
चारिहु चरन धर्मजग माही। पूरि रहा सपनेहु अघनाही ।।
रामभगति रत सब नर नारी। सकल परम गति के अधिकारी।।
अल्प मृत्यु नहि कव निउ पीरा। सब सुंदर बस बिरुज शरीरा।।
नहि दरिद्र कोउ दुखीन दीन । नहि कोउ अबुध न लच्छन हीना।।

राम राज्य में सभी ने वेद मार्ग को अपनाया है। अनुसरण किया है। वर्णाश्रम धर्म को स्वीकारा है। राग द्वेष बगैर, भय शोक से मुक्त रहे, दैहिक, दैविक और भौतिक क्लेशों से मुक्त हुए हैं। सामाजिक लोग स्वधर्म पालन से परस्पर प्रेम के साथ रहते थे। धर्म चार पादों पर था। पुरुष सभी सपने में भी पाप विचार नहीं करते थे। अकाल मरण, जराभार सब दूर होकर पूरी जनता स्वस्थ और आनंद के साथ थी। गरीबी, दुख, अज्ञान आदि दूर होकर शुभ लक्षणों के साथ जनता सुखी थी।

किसी भी राजा के लिए सकाल बारिश का होना दृष्टांत है। राम के शासन में सही समय पर बारिश होती थी। नदी और तटाक सदा जल समृद्ध थे। फसलों से, फूलों से, फलों से हरियाली से, वनादि, सकल ओषधियों से धरती खुश थी। पक्षी और मृगादि अपने वैर भाव को भूलकर प्रेम से व्यवहार करते थे। इस रूप में राम राज्य सकल सुखों एवं सानंद हुआ करता था।

त्रेता युग का राम राज्य ने कृतयुग को भी भुला दिया, यह ऋत्विकों की बात है।

धर्म शासन

भगवान ने ही मानव रूप में पैदा होकर सहज गुणशील, युग धर्म का पालन करते हुए शासन किया था। धर्म वत्सल श्रीराम में धर्म को जानकर प्रजा के विचारों के अनुकूल धर्म शासन किया था, ऐसा कहा गया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि सभी अपने लोभ को भूलकर अपने-अपने धर्म पालन करते हुए सुखी जीवन जीते थे। सभी धर्म पर आसक्ति के साथ रहते थे। सत्य को मानते हुए अपने जीवन को चलाया था। ऐसा रामचरितमानस में स्पष्ट किया गया है।

नगर शासन

नर रूपधारी नारायण ने सर्वजन रंजक रूप में शासन किया था। अयोध्या सर्व सम्पदाओं से भरपूर था। उसके नागरिक सर्व सुखों से जीवित थे। उनके सुखों का वर्णन सहस्रफणी शेष भी नहीं कर सकता है। बहुत सुंदर उस नगर का वर्णन करना असंभव है। नानाविध रंगों से, शुद्ध स्फटिक प्रांगणों से, गृह सभी सोने के कलशों से, रत्न स्तंभों से, मोतियों से जड़ी खिड़कियों से, मणिदीपों से, नवरत्नखचित द्वार बंधनों से, गगन चुंबित भवनों से अयोध्या नगर अतिसुंदर था। अमरपुरी से बढ़कर अयोध्या नगर था।

उस नगर का प्रत्येक गृह सुंदर वाटिका से सुशोभित था। सुंदर जलाशयों से, नित्य हरितागृहों से, विविध पुष्प सौरभों से, मंडपों से, क्रीड़ा मंदिरों से, पक्षियों के कलरव से, नयनानंदकर रूप में अयोध्या शोभित था। आज के नगरों की तुलना करने से अयोध्या जैसा कोई नगर धरती पर आज नहीं है। आगे भी नहीं होगा। सभी प्रकार का प्रदूषण आज नगरों में है। किंतु अयोध्या नगर प्रदूषण से मुक्त था। अयोध्यावासी धर्मपरायण होकर राम संकीर्तन करते सुख जीवन काट रहे थे।

इससे अलग राम के राज्य में चोर, जार, जुआरी नहीं थे। नगरों में सिर्फ ज्ञानी, धर्मचिंतन करनेवाले, भक्ति प्रवर, साधु, सन्मार्गी आदि सभी राम राज्य में सुखी जीवन काट रहे थे। जनता एक दूसरे से सज्जन मैत्री से, राज भक्ति से, दैव भक्ति से, प्रकाशित होते आदि व्याधियों से मुक्त होकर सर्वथा सम्पन्न थी। पशु-पक्षी भी सुखी थे। सब वैर भाव को छोड़कर सुखी थे।

सत्पुरुषों का शासन

राजा के गुण गणों के आधार पर ही शासन होता है। राजा अगर सात्विक है तो सदा धर्म का आचरण करते, सत्पुरुष सदा सत्य का वचन करते हैं, प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट न हो, अधर्म से राजा को अपने लोगों का पोषण नहीं करना चाहिए। राजा को किसी भी स्थिति में धर्म का आचरण करना चाहिए। सत्पुरुषों का शासन स्पष्ट करता है। राम ने अपने भाई भरत और शत्रुघ्न को सज्ञन सांगत्य, दुर्जन सांगत्य के परिणामों के बारे में बताया है। प्रजा धन का उपयोग करना महा पाप बताया है। स्वार्थ चिंतन नहीं करना चाहिए। दूसरों को अकारण नहीं सताना चाहिए।

हिंसा को छोड़ देना चाहिए। माता, पिता, गुरुजनों का आदर करना चाहिए, प्रजा पर दूषण नहीं करना चाहिए। उनका अगौरव नहीं करना चाहिए। ये सब दुर्जन सांगत्य से संभव नहीं होता है। कृत, त्रेतायुग में ही नहीं किसी भी युग में ये धर्म आचरणीय हैं। धर्म को जानकर ही कोई शासक अच्छा शासन दे सकता है, श्रीराम ने अपने भाइयों को बताया है। इसलिए राम का शासन सत्पुरुषों का शासन माना जाता है।

न्याय शासन

रघुकुल राम ने प्रजा को कैसे न्याय दिलाया है। इसका दृष्टांत निम्न कहानी देती है।

एक दिन राम अपने अनुजों, मंत्रियों, आत्मीय जनों तथा आधिकार वृंद के साथ सभगार में थे। तब एक वृद्ध ब्राह्मण अपने एक मृत शिशु को लेकर सभा में आया। बहुत दुख से अपने शिशु की मौत के लिए राजा को दोषी ठहराया।

अहो, मेरे शिशु को बचपन में ही मौत आयी है, अकाल मृत्यु ने उसे खाया, यह कहाँ का न्याय है। राम के शासन की इस पुण्य भूमि में ऐसी दुर्घटना है? इसका क्या कारण है? वर्णाश्रम धर्म की सुरक्षा के बिना राजा के राज्य में प्रजा अकाल मृत्यु का शिकार होगी, आदि व्याधियाँ फैलेंगी। ऐसे में यह रघुकुल शासन नहीं है? इक्ष्वाकुल निर्मूल हो गया? एक बालक का मर जाना और उसका संस्कार एक पिता को करना बहुत ही भयंकर है। इस रूप में वह पिता पुत्र शोक में रो उठे।

अशरीर वाणी के द्वारा उस बालक की मृत्यु के लिए एक शूद्र का तप करना कारण है समझकर शीघ्र ही रघुनंदन ने धर्म की रक्षा के लिए उस शूद्र के सर को काट दिया। न्याय शासन के लिए यह एक बहुत बड़ा दृष्टांत है। आज के समय में न्याय की जगह अन्याय बढ़ गया है। न्याय शासन केलिए राम ने शुनक नीति को भी अपनाया था।

आज हमारे शासक भी राम की न्याय निरति पद्धति को अपना कर सभी को न्याय दिलाना चाहिए।

नागरिक शासन

श्रीराम ने नागरिक शासन को अधिक प्राथमिकता दी है। प्रति दिन जनता की शिकायत सुनकर राज कार्य को पूरा करते थे। मंत्रियों से विचार-विमर्श करके जनता की समस्याओं का समाधान ढूँढ़ते हैं। समस्या का समाधान ढूँढ़े बिना किसी भी दिन सभा को विसर्जन नहीं करते थे। इसके लिए रघुकुल नंदन ने गुप्तचरों की व्यवस्था को भी तैयार किया था। वे चरों के द्वारा जनता की समस्याओं को जानकर उनका समाधान करते थे। ऐसे नागरिक धर्म को राम ने निभाया था। राम ने जाना कि चरों के द्वारा जनता की समस्याओं को जानना नागरिक धर्म है। राम के शासन का यह एक दृष्टांत है।

प्रजातांत्रिक शासन

प्रजा के विचार ही वेद वाक् के रूप में मान कर राम ने अपना शासन किया था। आज के प्रजातांत्रिक शासन को राम ने त्रेता युग में ही अमल करके दिखाया था। प्रजातांत्रिक शासन कितना कठिन होता है। राम अच्छी तरह जानते थे। इसके लिए राम ने अपनी पत्नी को भी जंगल भेजने में संकोच नहीं किया। यह आज के पालकों को सीखने की शिक्षा है। अर्थात् प्रजा तंत्र में प्रजा ही राजा है। यानी प्रजा के द्वारा, प्रजा के लिए, पालन करने को ही प्रजातंत्र कहा जाता है। राम का शासन यही कहता है कि प्रजातंत्र कठिन होने पर भी उसका अनुसरण करना चाहिए।

वेद मार्ग की रक्षा हेतु राम ने कितने बड़े कष्ट उठाये यह अवर्णनीय अंश है।

एक मानव मात्र होते हुए राज्य का शासन कैसे करना चाहिए उसके लिए आदर्श राम का शासन है, ऐसा रामायण कहता है। लगभग ग्यारह हजार वर्ष श्रीराम राज्य शासन चला है। उसकाल में वृद्ध, स्त्रियाँ, बच्चे, सब जगह सारी जनता सुख और संतोष के साथ थे। सब जगह राम नाम प्रतिध्वनित हुआ करता था। सारी प्रजा ने रामकथा को जानकर पूरे जगत को राममय होते देखना चाहा। वही अच्छे शासन का दृष्टांत है, इस रूप में राम के शासन की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते हैं।

इस कलियुग में भी राम के शासन को प्रदान करने की कोशिश आज के शासकों को करनी चाहिए, ऐसी कामना के साथ—

रामायण में मानवीय मूल्य

डॉ. ए. सच्चिदानंद मूर्ति

रामायण भारतीय संस्कृति का मूल स्तंभ है। कई शास्त्र, पुराण, कथाएँ, गाथाएँ प्रचार में रहने के बावजूद रामायण जैसा प्रचलन उनको प्राप्त नहीं है। इस ग्रंथ के प्रचलन के लिए उसके पात्र, प्रसंग और कथाएँ ही जिम्मेदार हैं। भारतीयों के मन पर इनका प्रभाव ऐसा हो गया है कि इसका सार्वकालीनता, सार्वजनीनता, भावनाएँ, भक्ति, संबंध, अनुबंध आदि इनके साथ मिलजुल गये हैं। इसलिए तेलुगु भाषा में अनेक मुहावरों का जन्म हुआ है। जैसे सुग्रीवाज्ञा, चुप्पनाति शूर्पनखा, लक्ष्मण रेखा, इंडिगुट्टु लंककु चेटु, चूचिरम्मंटे काल्चि रावटमु आदि। ये तेलुगु भाषियों की जीभ पर ही नर्तन करते रामायण की याद दिलाते हैं।

इस ग्रंथ में अनेक ऋषियों का वर्णन है। देवर्षि नारद से लेकर ब्रह्मर्षि अगस्त्य तक। इनके अतिरिक्त राक्षस, वानर, जानपद, निषाद, प्रभु, मंत्रियों, सामंत, देवताओं, पक्षी आदि भी इसके पात्र बने हैं। कभी न कभी सभी मानवीय मूल्यों की चर्चा करते हैं। मूल्यों का प्रतिनिधि ग्रंथ रामायण है।

कदम-कदम पर मंदिर है। सबके मन में मंदिर है। रामायण के प्रत्येक संदर्भ में मानवीय मूल्य है। इस महाकाव्य में पात्र सिर्फ गुड़िया नहीं है। साधारण मानवों की तरह अभिनय करते हुए मानवों की अनुभूतियों और भावनाओं को बिखेरते हैं।

श्रीराम के राजतिलक को अरण्यवास के रूप में बदलने पर तीनों माताओं ने तीन अलग रूप में स्पंदन किया है। राजतिलक के पहले संतोष व्यक्त करनेवाली कैकेयी ने अपने दुर्बल व्यक्तित्व के कारण मंथरा की बातों को मान कर क्रूर व्यवहार किया। कौसल्या सामान्य नारी की तरह आनेवाले दुख के लिए सिर्फ रोती है। सुमित्रा ही मात्र महाज्ञानी के रूप में व्यवहार करती है। अपना पुत्र वनवास करने की जरूरत नहीं है। अपना पुत्र राम का अनुसरण कर रहा है, निश्चय हो जाने के बाद उसने रोका नहीं है। ऊपर से आशीष दिया, उत्साह किया।

इदं ह वृत्तमुचितं कुलस्यास्य सनातनम
दानं दीक्षा च यज्ञेषु, तनु त्यागो मृधेषु च।।
रामं दशरथं विद्दि- मां विद्धि जनकात्मजाम।
अयोध्या मटवीं विद्धि - गच्छ तात यधा सुखम।।

''रामो विग्रहवान धर्मः'' राम को लेकर अत्यंत प्रचलित लोकोक्ति बनी है। महर्षि वाल्मीकि

ने इसे राक्षस मारीच के मुँह से कहलवाया है। यह मानवीय मूल्यों के लिए दृष्टांत है। मारीच की बातों को सुनने से–

सुलभाः पुरुषा राजन - सततं प्रियवादिनः
अप्रियस्य च पथ्वस्य - वक्ता श्रोत च दुर्लभः
रामो विग्रहवान धर्मः - साधुः सत्य पराक्रमः
राजा सर्वस्य लोकस्य - देवानामिषुवा इव

नैतिक मूल्यों को लेकर वाल्मीकि ने संदर्भोचित व्याख्या दी है। हर रोज समाज में अनेक अत्याचार होते रहने का मूल कारण नैतिक मूल्यों का पतन है। राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ को छोड़कर शासन करने से हमारा देश विकसित होगा।

आपदा में रहनेवाले की रक्षा करना राज धर्म है। ''अषह्यं जीवितं जह्यं त्वां सलक्षणां''। यानी प्राण, प्राण से बढ़कर प्रिय पत्नी को, भाई को भी छोड़ने के लिए साहस करने से ही आश्रित जन की रक्षा के लिए की गयी प्रतिज्ञा का पालन करूँगा, ऐसा राम कहते हैं।

नारी सर्वदा पूजनीय है। लेकिन आज नारी पर होनेवाले अत्यचार रोजाना समाचार पत्रों में पढ़ रहे हैं। लेकिन अपने वनवास के लिए जिम्मेदार कैकेयी के बारे में भरत से राम कहते हैं–''मातरं रक्ष कैकेयी माक्रोधं कुरुतां प्रति'' कैकेयी की रक्षा करो। उन पर गुस्सा मत करो। वह इसका पालन करेगा या नहीं समझकर राम कहते हैं–''मयाच सीतया सार्थं शप्तोसि''। नारी पूजनीय कहने के लिए यह एक दृष्टांत है।

उसी रूप में पितृ वाक्य पालन का प्रतिबिंब रामायण है। रामायण का प्रत्येक पात्र मानवीय मूल्य का प्रतिबिंब है। विवाह बंधन का आदर्श रामायण है। सीता और राम का दांपत्य जीवन एक आदर्श है। सीता के विरह में राम किस रूप में तड़पता है सबको विदित है।

आज के समाज में सम्पदा के लिए झगड़े, भाइयों के बीच में झगड़े देखे जा सकते हैं। लेकिन रामायण भाई के बंधन के लिए आदर्श है।

देशे देशे कलत्राणी देशे देशे च बाँधवाः।
तंतु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदराः।।

रामायण को सूक्ष्म दृष्टि से परिशीलन करने से वह सकल धर्मों का भांडागार है, धार्मिकों का आदर्श मूर्ति श्रीराम है। इसमें जो धर्म नहीं है वह अन्यत्र भी नहीं है।

रामायण महार्णवम में मानवीय मूल्यों के रत्नों की खोज करने से कई रत्न प्राप्त हो जायेंगे।

यावत स्थास्यंति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।

संस्कृत वाङमय में आदि ग्रंथ रामायण है। वाल्मीकि रामायण में 24 हजार श्लोक हैं। रामायण 'सीताचरितं' 'पौल्स्त्य वध' नाम से भी पुकारा जाता है। रामायण के प्रत्येक संदर्भ में मानवीय मूल्य छिपे हुए हैं।

आज के समाज के लिए रामायण एक प्रतिबिंब है। क्योंकि आज भाभी, बेटी के अभेद से

अत्याचार किया जा रहा है। लेकिन रामायण में नारी को उच्च स्थान दिया गया है।

लक्ष्मण ने अपनी भाभी सीता के विषय में कैसा व्यवहार किया है। उन्होंने सीता को मातृ मूर्ति बना लिया है–

नाहं जानामि केयूरो–
नित्यापादाभिवंदनात–

रामकथा में स्त्री पात्रों की समस्याओं का चित्रण

के. गुरप्पा

तेलुगु में कई रामायणों के होते हुए भी रामकथा कहने से सर्वप्रथम वाल्मीकि रामायण ही सामने आता है। मानव हृदयों से हमेशा के लिए अमिट कथा है। मानव जीवन को सुधारनेवाला महाकाव्य है। माता-पिता का अनुराग, भाइयों के बीच का संबंध, पति-पत्नी का संबंध, गुरु भक्ति, गुरु शिष्य संबंध, स्नेह फल, धर्म बल आदि अनेक धर्मों एवं मूल्यों का आदर्श रामायण काव्य है। रामायण को पढ़ना जीवन को पढ़ना ही है।

'रामकथा' के पात्र और प्रसंग सत्य हैं। मूल में वे कल्पित होने पर भी हमारे पास आने तक सत्य बन जाते हैं। इसकी कथा और प्रसंग आवेशपूर्ण नहीं हैं। वे धर्माधर्म, न्यायान्य स्वरूप हैं। रामायण पारायण ग्रंथ ही नहीं है। आचरण ग्रंथ भी है। उत्तम धर्म का पालन करने से मानव कैसे उच्च मानव बनता है, रामायण सिद्ध करता है।

विषय विवरण

वाल्मीकि ने राम को 'रामो विग्रहवान धर्मः' ऐसा मारीच के मुँह से बुलवाने के बावजूद उसमें कुछ दोष और धब्बे देखने को मिलते हैं।

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु नपूज्यंते सर्व सत्रा फलाः क्रियाः।।

(स्त्रियों की पूजा होनेवाली जगह पर ही देवता निवास करते हैं। स्त्रियों को जहाँ गौरव प्राप्त नहीं होता है सर्वक्रियाएँ निष्फल होती हैं।) यह लोकोक्ति है। इससे बढ़कर तेलुगु में ''कलकंठि कन्नीरोलिकिन सिरियिंटिनुंडदु सुमती'', ''स्त्री रत्नमुल पूज्यलु'' जैसी सूक्तियों से नारी को प्राथमिकता देनी चाहिए, गौरव प्रदान करना है, उनको दुख नहीं पहुँचाना चाहिए, शत्रु होने पर भी उनकी रक्षा करनी चाहिए, ऐसा सनातन धर्म कहता है। किंतु युग युगों से नारी को अन्याय ही प्राप्त हो रहा है। अपमान ही किया जा रहा है। उन पर हिंसा की जा रही है। उनकी क्या समस्याएँ हैं? उनके कारण क्या हैं? ऐसा अन्वेषण कुछ ही लोगों ने किया है।

त्रेतायुग की रामकथा में भी नारी के साथ अन्याय ही हुआ है। भले ही वाल्मीकि ने रामायण को 'सीतायाश्चरितम महत' कहने के बावजूद उसे रामायण के रूप में प्रचलित किया। यह भी पुरुष पक्षपात है। लेकिन तेलुगु में तिक्कना ने 'निर्वचनोत्तर रामायण' रचा है। रामायण का 'सीतायनं'

नाम रखते तो उचित था।

असल में रामायण के लिए मुख्य कारण कैकेयी और मंथरा हैं। श्रीराम से प्रेम करनेवाली कैकेयी इस रूप में मंथरा की बातों को सुनने का कारण क्या है? विचार करने से —

स्त्री पात्र

1. कैकेयी : कैकेय देशाधिपति अश्वपति की पुत्री कैकेयी है। कोसल देश के राजा दशरथ की तीसरी पत्नी कैकेयी है। देवासुर संग्राम में दशरथ की सारथी के रूप में काम करके दो बार अपने पति के प्राणों की रक्षा की है। अपने प्राणों की रक्षा करनेवाली कैकेयी को दशरथ ने दो वरदान दिए। फिर कैकेयी ने मौका ताड़कर राम के राजतिलक के समय उन वरदानों को माँग लिया। 1. अपने पुत्र भरत को राजतिलक करना 2. 14 वर्ष राम को वनवास भेजना।

कैकेयी के इन वरदानों के पीछे रहस्य को जानने के लिए शोध करने से पता चलता है कि राम के राजतिलक के समय पूरी अयोध्या आनंद में डूबी थी। देवताओं को यह अच्छा नहीं लगा। सरस्वती देवी का आह्वान करके राम को राज्य छोड़कर वनवास जाने के लिए कह दो, कहा है। इससे देवताओं का कार्य सिद्ध होगा। इसमें आपको कोई दोष नहीं होगा। क्योंकि राम ने यह प्रार्थना की ''आर्ष विषादरहित'। इसलिए वाग्देवी ''श्रीराम वनवास जाने से राक्षस संहार होगा, कुशल कवि मेरा स्वागत करेंगे। मैं सबकी जीभ पर जाकर श्रीराम के चरित के बारे में बताऊँगी। इससे मेरी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।'' ऐसा सोचकर कैकेयी की दासी की बुद्धि को विकृत बना दिया।

सरस्वती देवी ने कैकेयी की बुद्धि को विकृत बनाने के कारण ही उसका मन कठोर होकर दशरथ से उसने दो वरदान माँग लिये। भरत को यह अच्छा नहीं लगा। उसने भी कैकेयी की निंदा की है।

दुर्जन सांगत्य से बुद्धि विकृत हो जाती है। सज्जन भी बुरे बन जाते हैं।

मंथरा : मंथरा निम्न जाति की कुब्जा है। कुटिल स्वभावी है। मंदबुद्धि भी है। भरत की माँ कैकेयी के पास दासी है। सरस्वती देवी ने उसकी बुद्धि को वक्र करके अपकीर्ति का शिकार बनाया है। राम के राजतिलक होने का समाचार सुनते ही उसमें दुर्बुद्धि जागती है। सुबह होने के पहले पूरे आयोजन को वह नष्ट करवाती है। कैकैयी के सामने नाटक करके उसके मन का परिवर्तन किया। परिणाम स्वरूप कैकेयी राम के वनवास के लिए कारण बनी है। मंथरा ने कैकेयी का भय दिखाया है कि ''राम के राजा बनने से उसके कष्ट शुरू हो जायेंगे। उसकी पूर्ण उपेक्षा होगी। लक्ष्मण राम का अन्तरंगिक बनेगा। तुम और तुम्हारा पुत्र कौसल्या के सेवक बनेंगे।'' इस चुगलखोरी का ही परिणाम कैकेयी के दो वरदान हैं। इस रूप में सरस्वती देवी ने मंथरा को बलि पशु बनाया है।

मंथरा के इस व्यवहार के लिए सुख-सुविधाओं के प्रति उसकी कामना नहीं बल्कि सरस्वती देवी का ही प्रभाव है, यह बात साबित होती है।

सीता : साक्षात् श्री महालक्ष्मी अवतार ही सीता है। वह भूमि पुत्रिका और अयोनिजा है। मिथिलाधिपति जनक यज्ञ के लिए जमीन जोतते समय जमीन से प्राप्त हुई है। इसलिए उसका नाम

सीता रखा गया। तब तक निस्संतान जनक ने उसे बहुत लाड़ से पाला। जनक के पूर्वजों से परंपरा के रूप में आनेवाले शिवधनु को एक दिन सीता ने उठाया। तब जनक ने निश्चय किया कि शिवधनु को उठाने वाले के साथ ही सीता विवाह करायेंगे। शिव धनु को तोड़नेवाले श्रीराम के साथ उसका विवाह किया।

विवाह के कुछ ही दिनों में राम को वनवास जाना पड़ा। राम के साथ सीता को भी वनवास करना पड़ा। पति के साथ वनवास जानेवाली महा साध्वी सीता है। सास ससुर पर आदर करके उनके वचनों का पालन करना अपना धर्म समझनेवाली नारी है सीता। लगभग 14 साल वनवास करती है। रावण के अत्याचार को भी सहती है। राम की आज्ञा के अनुसार अग्नि परीक्षा में खड़ी होती है। पुनीत होकर राजतिलक के साथ अयोध्या लौटती है। सिर्फ 6 महीने ही पति के साथ रहती है। फिर वनवास जाती है। फिर भी अपने पति पर ही विश्वास करनेवाली नारी शिरोमणि है सीता। गर्भवती के रूप में वाल्मीकि आश्रम में कष्ट झेलती है। सीता के कष्टों की याद करने से शायद ही कोई स्त्री पात्र इस प्रकार के कष्टों को झेला होगा। पटरानी होकर भी सामान्य स्त्री के रूप में सीता ने सारे कष्ट झेले। सीता के चरित्र को जानकर सबके हृदय करुणा से पिघल जाते हैं। आखिर अपने पुत्रों को पिता को सौंप कर अपने कर्तव्य का निर्वाह करती है। आदर्श पत्नी बनी है।

कुछ भी हो राम के धर्मपालन में सबसे ज्यादा सीता को कष्ट हुआ है। सीता के इस रूप में कष्ट झेलने के लिए कारण क्या है? क्या भूदेवी की पुत्रिका के रूप में जन्म लेना है? जनक के घर में पलना है? श्रीराम के साथ विवाह करना है? ये सारे प्रश्न हैं।

इसलिए आज के माता-पिता अपनी स्त्री संतान को जानकी या सीता नाम रखने में कतराते हैं। क्योंकि तेलुगु में 'सीता कष्टालु पीत कष्टालु ओक्कटे'' (सीता के कष्ट और केकेड़े के कष्ट दोनों एक ही हैं।) इस लोकोक्ति के कारण ही डरते हैं।

उर्मिला देवी : सीता का विवाह राम से तय होने के बाद जनक महाराजा अपनी श्रीमती सुनयना देवी की पुत्री उर्मिला का विवाह राम के भाई लक्ष्मण के साथ करने का निर्णय करते हैं। साथ ही अपने भाई कुशध्वज की बेटियाँ मांडविका और श्रुतकीर्ति का विवाह क्रमशः भरत और शत्रुघ्न से करने का निर्णय भी किया गया है। लक्ष्मण के साथ विवाह होने के कुछ ही दिनों के बाद लक्ष्मण अपने भाई राम के वनवास के लिए निकल जाता है। साथ में चलने के लिए अनुमति माँगनेवाली उर्मिला को वह रोकता है। उर्मिला इस रूप में लक्ष्मण की अनुपस्थिति में अयोध्या में ही १४ साल अकेली रहती है।

14 साल तक पत्नी को छोड़कर लक्ष्मण का दूर रहना क्या उचित है? सीता तो राम के साथ है। किंतु मैं अपने पति से दूर रही? सीता को एक न्याय और उर्मिला को एक न्याय कैसे? यह विचार करने योग्य मुद्दा है। आखिर अपनी 14 साल की निद्रा और लक्ष्मण के 14 साल की निद्रा दोनों को मिलाकर 14 साल वह सो गयी। उर्मिला के 14 साल की नींद के बारे में लोक कथा गीत

'उर्मिला देवी निद्रा' में उल्लेख मिलता है।

अहल्या : अहल्या गौतम मुनि की पत्नी है। अत्यंत भाग्यशालिनी, गुणवती और सौंदर्यवती है। उसके सौंदर्य से रीझ कर ही देवेंद्र उसके प्रति आसक्त होता है। एक दिन गौतम की अनुपस्थिति में देवेंद्र गौतम के वेश में जाकर अहल्या को वश में लाने की कोशिश करता है। मंदबुद्धि अहल्या उसे नहीं पहचान कर उसकी सेवा करती है। शीघ्र ही लौटने वाले गौतम यह देखकर दोनों को शाप देते हैं। अहल्या को पाषाण बनाते हैं। बाद में श्रीराम विश्वामित्र की आज्ञा से अपने चरण स्पर्श से अहल्या को पत्थर से नारी बना कर शाप विमोचन करते हैं।

यहाँ अहल्या का क्या दोष है? उसके लिए शाप ही एक मात्र रास्ता है क्या? यह प्रश्न है। गौतम ने अहल्या के साथ ऐसा क्योंकिया? यह प्रश्न है।

तारा : ऋक्ष विरजुनि का पुत्र, सुग्रीवाग्रज, इंद्रांश संभव वाली की पत्नी है तारा। सुगणशीली एवं दूरदृष्टि रखनेवाली है। इसी का पुत्र अंगद है। वाली और सुग्रीव भाई हैं। बड़ा होने के कारण वाली किष्किंधा का राजा बनता है। सुग्रीव युवराज बन गया। एक संदर्भ में वाली मायावी नामक राक्षस से युद्ध करते मर गया है समझकर सुग्रीव को वानर राजा बनाते हैं। कुछ दिनों के बाद लौटनेवाला वाली सुग्रीव पर गुस्सा करता है। किष्किंधा से बहिष्कार करके उसकी पत्नी रूमा को बंदी बनाता है। उसके पुत्रों को भी बंदी बनाता है। अन्त में ऋष्यमूक पर्वत पर छिपे सुग्रीव के साथ युद्ध करके राम के हाथों से वाली मर जाता है। तारा वाली को युद्ध करने से रोकती है। कहती है कि उसे श्रीराम की रक्षा है। फिर भी वाली ने स्वीकार नहीं किया। युद्ध में पेड़ों की आड़ से श्रीराम ने वाली का वध किया। राम किष्किंधा के राजा के रूप में सुग्रीव को बनाते हैं।

यहाँ श्रीराम का वाली को पेड़ों की आड़ से मारना उचित है क्या? क्योंकि तारा के बारे में सोचने की जरूरत क्यों नहीं है? तारा ने कौन सा अपराध किया है? पति को खोनेवाली पत्नी की स्थिति क्या होती? समझ सकते हैं। वाली का अपने भाई की पत्नी का अपहरण करना अपराध ही है। क्या उसके लिए वाली का वध करना उचित है ? तारा के बारे में और उसके पुत्र के बारे में सोचने की जरूरत नहीं है क्या? यह प्रस्तुत प्रश्न है।

शूर्पणखा : लंकाधिपति रावण की बहन शूर्पणखा है। अपने पति और भाई को भी खोने वाली नारी शूर्पणखा है। वनवासी राम के सौंदर्य पर रीझ कर उनके साथ विवाह प्रस्ताव रखनेवाली नारी शूर्पणखा है। इसमें बाधा पहुँचानेवाली सीत और लक्ष्मण को मार कर खा जाने का प्रस्ताव भी वह करती है। इसलिए लक्ष्मण ने उसकी नाक और कान काट दी है। बाद में शूर्पणखा ने अपने अपमान का समाचार अपने भाई रावण को दिया। बदलावश रावण ने सीता का अपहरण किया। यहाँ प्रश्न उठता है कि बहिन का अपमान करनेवाले के साथ इस रूप में रावण का करना उचित है? वनवास के समय श्रीराम की उम्र और शूर्पणखा की उम्र में काफी अन्तर दिखाई देता है। वास्तव में रावण दशरथ के समकालीन है। फिर शूर्पणखा की उम्र 80, 90 साल है। श्रीराम की उम्र 25 साल

है। प्रश्न उठता है कि उस उम्र में शूर्पणखा श्रीराम पर क्यों रीझ गयी होगी? फिर भी लक्ष्मण का पतिहीन शूर्पणखा की नाक और कान को काटकर व्यवहार करना क्या उचित है? यह प्रसंग आज के पुरुषों के द्वारा स्त्रियों पर किये जानेवाले कई अत्याचारों की याद दिलाता है।

उपसंहार

इस प्रकार रामकथा के मुख्य नारी पात्रों के जीवन पर विचार करने से कई संदेह पैदा होते हैं। साथ ही प्रश्न भी खड़े हो जाते हैं। त्रेता युग से लेकर आज तक भी नारियाँ कई समस्याओं से जूझ रही हैं। समाज और परंपराओं से संघर्ष करती आ रही हैं।

रामायण और मानवता का विकास

डॉ. टी. सुनीता

श्रीमद्रामायण रामायणों में श्रेष्ठ है। इस रचना की मूल प्रेरणा क्रोंच पक्षी का वियोग है। उसके शोक ने वाल्मीकि के हृदय को पिघला दिया। वाल्मीकि ने नारद की प्रेरणा से रामायण रचा है। इसे पढ़नेवाले अनेक कोटि हैं।

वैदिक धर्म के लिए रामायण एक दर्पण है। 21 वीं सदी में मनुष्य चन्द्र और अंगारक ग्रहों पर गया है। अनेक ग्रह और उपग्रहों को छोड़ रहा है। कई नये साधनों के साथ जीवन को आधुनिक बनाया है। इसकाल में भी लोगों को रामायण पढ़ने की आवश्यकता है।

रामायणे पाठितं ये पसन्नो स्मि कृतस्त्वया
करिष्यामि पुरणानि महाभारत मेव च।।

इस रूप में बृहद्धर्म में पुराणकर्ता व्यास ने रामायण के अध्ययन के बाद ही बाकी पुराणों को रचा है, ऐसा कहा गया है। इसलिए रामायण काव्य बीज के रूप में भी प्रशंसित है। रामायण को पढ़ने से लोकाचारों का पता चलता है। एतद्द्वारा मानवता का विकास होता है। भारत और रामायण मानव के विकास के दो नेत्र हैं।

मानवता का विकास

मानव का जीवन पवित्र है। सृष्टि में अकेला मानव ही चेतना रखता है। सूझबूझ रखता है। सहन और सामर्थ्य भी सिर्फ मानव को ही प्राप्त है। ईश्वर की कृपा सभी को पंचभूत समान है। समाज में सभी को समान जीने का अधिकार है। सभी का आत्म तत्व समान है। फिर मनुष्यों में ईर्ष्या और द्वेष क्यों हैं। इनकी वजह से मानव अमूल्य मानवीय मूल्यों को भुला रहा है। मानवीय मूल्य सर्वोत्तम संस्कार है। ऐसे संस्कारों का दस्तावेज ही रामायण है। उत्तम संस्कार के साथ मानव अपने जीवन को श्रीराम की तरह उन्नत बना सकता है। मानवीय मूल्यों के अभाव में मानव भी असुर बन जाता है। स्त्रियों के प्रति, बड़ों के प्रति, भाई-बहनों के प्रति प्रेम राहित्य अथवा अगौरव को बढ़ावा दे रहे हैं। रामायण और रामकथा इन मूल्यों की याद दिलाकर उन्हें फिर जगाने की कोशिश करती है। रामायण पारिवारिक संबंधों के साथ-साथ मानवीय संबंधों का समर्थन करता है।

प्रत्येक व्यक्ति के संस्कारों एवं मूल्यों के साथ जीने से समाज सुरक्षित रहता है, राम राज्य ही इसका दृष्टांत है। रामायण काल में श्रीराम ने धर्मबद्ध शासन किया है। इसलिए राम राज्य रहा

है। राम राज्य का समाज ही भरतीयों का आदर्श है। मानवता, संस्कार, मानवीय मूल्य सभी व्यक्तित्व से नियंत्रित होते हैं। मानव का चरित्र इसलिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। पारिवारिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था भी काफी सीमा तक व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। सामाजिक व्यवस्था धर्माचरण से पुष्ट होती है। श्रीराम ने अपने धर्माचारण से समाज को पुष्ट किया है। इसलिए सबके लिए आदर्श बने हैं।

श्रीराम के गुणों को बालकांड में वाल्मीकि ने प्रस्तुत किया है–

1. 'प्रशांतात्मा' अर्थात् किसी भी विषम स्थिति में विचलित नहीं होनेवाला है।
2. 'पूर्व भाषी' किसी को भी पहले संबोधन करनेवाला है।
3. 'नच अनृत कथा'– असत्य कहानियाँ नहीं फैलाता है।
4. 'न चलवशानुशः' समयानुकूल बात नहीं करनेवाला है। यानी अवसरवादी नहीं है।

त्यागी कृती कुलीनः सुश्री को रूप यौवनोत्साही।
दक्षों नु रक्त लोकस्तेजो वैदद्व श्रीलवान नेता।।

(साहित्य दर्पण)

श्रीराम के ये गुण आज के मानवों में अविरल हैं।

श्रीराम के सारे गुण महोन्नत गुण हैं। इसलिए प्रजा राम की पूजा करती है। इनमें से कुछ ही गुणों को आज की जनता रखती है तो समाज स्वस्थ बनेगा। राम का पितृवाक्य पालन एक सहज गुण है। इसलिए पितृवाक्य पालन का नाम सुनते ही राम की ही याद आती है। राम ने इसके लिए वनवास किया है। राजतिलक के लिए रथ पर आरूढ़ होकर जाते समय, वल्कल धारण करके जंगल के लिए निकलते समय राम का चेहरा एक जैसा रहा है। दुख और सुख में राम एक जैसे होते हैं।

शिव धनुर्भंग के समय परशुराम के आकर बहुत निंदा करने पर भी राम को कुछ समय के लिए गुस्सा आया। फिर भी सहन करके विश्वामित्र पर गुस्सा नहीं दिखाया। क्योंकि वह ब्राह्मण हैं और अपने गुरु के मित्र हैं। राम की शक्ति को जानकर परशुराम उसकी प्रशंसा करके चले गये।

राम हनुमान की शक्ति को पहचान कर अपने भाई के साथ उसका परिचय इस रूप में करते हैं–

नानृग्वेद विनीतस्य
ना यजुर्वेद धारणः
ना साम वेद विदुषः
शक्य मेषम विभाषितं

हे भाई, वेदत्रयं का अध्ययन करके, शास्त्रों को पढ़कर, नव व्याकरण को कंठस्थ करनेवाला अगर नहीं है तो इस रूप में बात नहीं कर सकता है। बातें करने की कला हनुमान जानता है इसलिए उससे सावधान होकर बात करनी चाहिए। अधिक बोलने के लिए यह सावधान सूचना है।

अविस्तरं असंदिग्धं
अवलंबितं अव्यधं

जो कहना है उतना ही कहना चाहिए, संदिग्धता और अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।

श्रीराम विनीत हैं, धर्म शासक हैं। हमेशा अपनी प्रजा के कुशल मंगल को जाननेवाले हैं। पत्नी के बार में निर्णय करना भी राम के शील का ही तत्व है। प्रजा के विचार को सुनने के बाद राम अपनी पत्नी को जंगल भेज देते हैं। मतलब यह नहीं है कि राम को अपनी पत्नी पर संदेह है। जनता के विचार को गौरव देते हुए राम ने सीता को वनवास भेजा है। सीता ने भी राम से वनवास जाने की इच्छा प्रकट की है।

रावण दुष्ट होने पर भी अपनी पत्नी का अपहरण करनेवाला होने पर भी युद्ध क्षेत्र में उसे देखकर उसके तेज की प्रशंसा करते हैं।

'अहो दीप्त महा तेजा रावण राक्षसेश्वरः' 'राक्षस राजा रावण बड़े तेज से प्रकाशित हो रहा है।' (युद्धकांड, 59-26)

साधारणतया मनुष्य दूसरों के दोषों की निंदा आसानी से करता है उसके अच्छह गुणों की प्रशंसा नहीं करता है। दूसरों के दोषों को छोड़कर उनके अच्छह गुणों की प्रशंसा करने से समझना चाहिए कि हमारी बुद्धि का विकास हुआ है।

इस रूप में वाल्मीकि ने राम के चरित्र पर विशेष ध्यान रखकर बाकी पात्रों से श्रीराम को अलग व्यक्तित्व के अधिकारी के रूप में खड़ा किया है। राम के आचरण के द्वारा समस्त मानवों को आचरण के संस्कार सिखाये। मनुष्य राम के द्वारा इन संस्कारों को सीखकर अच्छह मानव बन जाना ही वाल्मीकि का लक्ष्य है। तब मानव के जीवन में दोष, अपराध और भूल-गलतियों के लिए कोई स्थान नहीं होगा।

पारिवारिक व्यवस्था : रामायण

भारत में पारिवारिक व्यवस्था के लिए विशेष पहचान है। संतान और माता-पिता सब मिलकर एक ही स्थान में संयुक्त होकर जीना इसकी परंपरा है। एक-दूसरे के विचारों को गौरव देकर, एक ही विचार पर आगे बढ़ते हैं। पीढ़ियाँ बदलने पर भी आधुनिक विचारों के आगमन होने पर भी पिता का गौरव पिता का है। पिता परिवार का स्वामी है। रामायण इस संदर्भ में राम के पितृ वाक्य पालन की याद दिलाता है।

श्रीराम पिता के वचनों को दृष्टि में रखकर परिवार के बुजुर्ग और बड़े पुत्र के रूप में व्यवहार करते हैं। पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए धर्मबद्ध होकर सत्य का अतिक्रमण न करके अपने से प्रेम करनेवाली माँ के संघर्ष को अपने अंदर ही सहकर झेला है। अपनी माँ को सांत्वना देते हैं।

अपने भाई लक्ष्मण और अपने के बीच में कैकेयी के निर्णय के कारण गलतफहमी के विकास होने से दूर दृष्टि और सहन के साथ सोचकर शांत मन से निर्णय करते हैं। दूसरों के विचारों को गौरव देते हैं। अपनी माँ कैकेयी के प्रति कोई गुस्सा या द्वेष नहीं पालते हैं। सभी को अपने परिवार के सदस्यों के रूप में मानते हैं। इसलिए रामकथा और राम सबके समीप पहुँच सके हैं।

रामायण सबके जीवन पर और व्यक्तित्व पर कैसे प्रभाव डालता है, यह जानने के लिए

एक निजी घटना का उल्लेख करना चाहिए। एक धार्मिक प्रमुख माट्रील में अनुग्रह भाषण दे रहा था। अनेक भारतीय आकर व्याख्यान सुन रहे थे। उनमें एक दंपति भी था। उन्होंने एक पुत्र पैदा होने के बाद 23 साल पहले तलाक लिया था। पुत्र माँ के पास ही रहता था। तब अंतिम दिन उस दंपति को राम के राजतिलक होने के बाद आरती उतारने उन्हें मंच पर बुलाया। पति को इस अवसर को खोना उचित नहीं लगा। तुरंत स्त्रियों के कतार में बैठी अपनी पूर्व पत्नी के पास जाकर अगले दिन आरती उतारने के लिए निमंत्रण दिया। पत्नी ने कहा कि '' पहले आप घर आइये। उसके बाद आरती उतारेंगे।'' पति उसके घर चला गया। पत्नी और पुत्र के साथ मिलकर भोजन किया। दोनों दंपति फिर एक हो गये। अगले दिन सीता-राम को आरती उतारे। इस रूप में रामकथा ने तलाकी दंपति को मिलाया।

उत्तर भारत की एक और घटना का उल्लेख करना चाहिए। एक रेलवे स्टेशन में एक नवदंपति रेल का इंतजार कर रहे थे। गाड़ी नहीं आयी थी। वहीं एक बेंच पर बैठकर एक वृद्ध रामायण पढ रह था। युवक ने वृद्ध से पूछा कि यह आप कितनी बार पढ़ रहे हैं। वृद्ध ने जवाब दिया कि सौ से भी अधिक बार पढ़ा है। एक बार पढ़ने के बाद बार-बार पढ़ने के लिए उसमें क्या है। वृद्ध एक बार युवक को देखकर चुप रह गया। इतने में गाड़ी आयी। युवक किसी रूप में गाड़ी चढ़ गया। वृद्ध भी कोशिश करके गाड़ी चढ़ गया। कुछ देर के बाद देखा कि युवक की पत्नी गाड़ी चढ़ नहीं पायी। युवक ने जंजीर खींचकर गाड़ी को रोका। तब वृद्ध ने युवक से कहा कि अगर तुम रामायण को पढ़ते आज यह नौबत नहीं आती। क्योंकि गंगा पार करते समय राम पहले अपनी पत्नी को नाव पर चढ़ाये बाद में स्वयं चढ़ गये । यह हमारी परंपरा है। रामायण ने हमें यही सिखाया है। सीता-राम वनवास करते समय भी एक-दूसरे के साथ रहे। इसलिए उन्हें वनवास के किसी क्लेश ने नहीं सताया। वृद्ध की बातें सुनकर युवक प्रभावित हो गया। परिवार में अन्य सदस्यों के साथ कैसे व्यवहार करना है, इसकी शिक्षा हमें रामायण देता है।

समाज व्यवस्था और रामायण

समाज कोई अलग व्यवस्था नहीं है। लोगों का समूह ही समाज है। व्यक्ति, परिवार, समाज और देश एक से एक बड़े हैं। सामाजिक परिवर्तन के लिए व्यक्ति ही मुख्य है। व्यक्ति में परिवर्तन आने से परिवार और समाज बदल सकते हैं। व्यक्ति अपनी दुर्बलताओं से मुक्त होने पर बदल सकता है। व्यक्ति के बदलने से परिवार और परिवार से समाज बदल जाता है। वैयक्तिक सद्गुण इस रूप में पूरे समाज पर प्रभाव डालते हैं। ऐसे समाज में सुख-शांति होती है। इसलिए समाज की सुख-शांति के लिए वैयक्तिक संस्कार और परंपराओं की आवश्यकता है। नहीं तो व्यक्ति की स्वेच्छा की अतिशयता से स्वैच्छाचार में बदल सकता है।

सामाजिक धर्म से संबंधित अनेक पेशे, धर्म, वृत्तियाँ, आचार व्यवहार, संप्रदाय आदि रामायण में आचरण के साथ वर्णित हैं।

राम ने किसी को कभी कोई आदेश नहीं दिया। पहले स्वयं आचरण करके सबको रास्ता

दिखाया। मंत्रियों, भाइयों सबके साथ राम ने यही व्यवहार किया। इसलिए 'रामो विग्रहवान धर्मः' कहा गया है। पुत्र, सखा, मित्र, राजा किस रूप में व्यवहार करना है स्वयं अमल करके आचरण करके दिखाया है। वाल्मीकि ने राम धर्मपालक और धर्म रक्षक ठहराया है। स्वधर्मरक्षक सामाजिक व्यवस्था का समर्थन करता है।

भाई लक्ष्मण निःस्वार्थ से अपने भाई का सर्वकाल और सारी स्थितियों में साथी रहा। भाई की सेवा ही अपना धर्म समझकर वनवास के समय में राम की सेवा की है। भरत ने भी अपने स्वार्थ को भुलाकर प्राप्त अधिकार को नहीं भोगा है। राम की पादुकाओं को सिंहासन् पर रखकर तापसी के रूप में राज्य किया।

समाज में सहज ही अनेक वर्ग होते हैं। सबके अपने-अपने धर्म होते हैं। पेशे और आचार व्यवहार लोगों को अलग करते हैं। फिर भी कहीं न कहीं सारे मानव एक हैं। सबका कर्तव्य धर्माचरण है। आज लोगों के बीच में दूरी बढ़ रही है। धनी और धनी और गरीब और गरीब बनते जा रहे हैं। इससे समाज में संतुलन बिगड़ रहा है। असहन और असंतृप्ति बढ़ रही है।

रोजमर्रा का जीवन ठीक से चलने के लिए सभी पेशे के लोगों को अपने धर्म को निभाना चाहिए। पेशे में निपुणता को प्राप्त करना है। समग्र सामाजिक विकास के लिए सभी चाहिए। अयोध्या की सफलता का यही रहस्य है। सभी सुखी थे। रामायण उसी अयोध्या के समाज को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। जिसमें कुम्हार, बढ़ई, शिल्पी आदि रहा करते थे।

स्ववृत्ति धर्माचरण : रामायण :

शासन में राम राज्य की कल्पना करते हैं। क्योंकि सुख-शांति जीवन का प्रतीक राम राज्य है। तब से अब तक समर्थ पालक श्रीराम हैं। सिर्फ प्रजा के सुख के लिए अपने जीवन को अपनी पत्नी को त्यागनेवाला पालक श्रीराम हैं। ऐसे पालक इतिहास में कम ही दिखाई देते हैं। राम का पालन युग-युगों तक अनुसरणीय है।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयंतां
न्याये न मार्गेण महीं महीशाः।

ऐसा कहा जाता है। शासक धर्म पालन करके शासन करने पर ही प्रजा को सुख-शांति प्राप्त होंगे। राजा धर्मज्ञ होने पर मंत्री और अन्य अधिकारी उसके अनुसार ही काम करते हैं।

राम के चित्रूकट में रहते समय भरत ने राम से शासन को लेकर कुछ प्रश्न किये। वे आज भी अनुसरणीय हैं।

1. भरत, तुम्हारा अमात्य वृत्ति से परे है। यानी वे रिश्वत वगैरा नहीं लेते हैं क्या? कितना सटीक और अच्छा सवाल है?

2. सेना और अन्य कर्मचारियों को सही समय पर वेतन दिया जा रहा है? देर होने से उन्हें विश्वास नहीं होगा। दुष्ट बन जाते हैं। इससे बड़ा अनर्थ हो जायेगा। इससे बढ़कर शासक का उपदेश क्या हो सकता है?

शासन के लिए मुख्यतया पराक्रम चाहिए। राम में पराक्रम है। रामायण भर में राम का पराक्रम दिखाया गया है। यज्ञ की रक्षा, राक्षसों को मारना सभी में राम के पराक्रम का पता चलता है। जीवन भर राम ने क्षत्रिय धर्म का पालन किया है। लोक हित प्रजा के अनुकूल ही राम ने शासन किया है। ऐसे राम के प्रजा वश में हो गयी। सत्यव्रत से राम ने प्रजा के विश्वास को पाया है।

सेवकों को योग्यतानुसार सेवा में रखना चाहिए। उन्नत पद में भेजनेवालों की हर प्रकार से परीक्षा लेनी चाहिए। सेनापति अगर अच्छह हैं तो पूरी सेना अच्छा काम करेगी। सभी विषयों में राजा को सावधान रहना चाहिए। तभी राज्य सुभीक्ष रहेगा।

विश्वजनीन दृष्टि : रामायण

रामायण के राम ने देव होने के बावजूद भी सामान्य मानव के सारे कष्ट भोगे हैं। रामायण में राम का देव कहीं अन्तर्लीन कहीं बाह्य होने पर भी स्थूल रूप में राम मानव जैसे ही दिखाई देते हैं। ऐसे ही राम ने व्यवहार किया। राम ने अपने लिए कुछ नहीं चाहा। इसलिए रामायण विश्वजनीन बन गया। लेकिन दुष्टता, धोखे के पीछे वह छिप गया है।

वाली का भाई सुग्रीव भी शूर है लेकिन धीरशाली नहीं है। वानरों में जांबवान और हनुमान ही धीशाली हैं। एक वृद्ध हैं और दूसरा युवक। इसलिए राज्य प्राप्त होते ही अपना धर्म भूल कर सुग्रीव भोग लिप्सा में डूब गया। इसलिए राम ने लक्ष्मण को भेज कर सुग्रीव की खबर ली है।

एक एव रणे वाली
शिरेण निहतो मया
त्वां तु सत्यदति क्रांतं
हनिष्यामि सबाँधवं

कुसंस्कार की वजह से अकेले वाली को मारा। आज ऐसे व्यवहार से बंधु कोटि के साथ सुग्रीव का नाश करूँगा। ऐसा कहने के लिए लक्ष्मण से राम ने कहा। वह राम का वचन है। असत्यवादी को क्षमा नहीं किया। अपने पिता को अमर्यादा न हो इसलिए राज्य को छोड़कर आ गया ।

राम और रावण का संग्राम भीषण चल रहा है। कुंभकर्ण, इंद्रजित, महाकाय, विरूपाक्ष, युपाक्ष, प्रहस्त आदि सभी मर गये। रावण रथ पर चढ़ कर आया है। दिन बीतने लगे। जय-परापजय नहीं हुई। वानर और राक्षस दोनों हताश हो गये।

गगनं गगनाकारं
सागरं सागरोपमानं
राम रावण योर्युद्धं
राम रावण योरिव

आकाश आकाश जैसा ही है। अत्यंत गंभीर सागर के लिए सागर ही उपमान है। राम-रावण युद्ध भी वैसा ही है। वह अनुपम है। बाद में होने की संभावना भी नहीं है।

चतुर्दश भुवनों को भय कंपित करनेवाले रावण के साथ राम का युद्ध चल रहा है। दोनों महान

योद्धा हैं। वाली जैसे वीर को एक ही बाण से मारनेवाले राम रावण के साथ ऐसा क्यों नहीं कर पाये। रावण भी असाधारण नहीं है। उस दिन राम युद्ध के निकलते समय–

अद्य पश्यंतु रामस्य
रामत्वं मम संयुगे

आज के युद्ध में राम क्या हैं? देखेंगे–

अ रावण मरामं वा
जगद्रक्ष्युधा वानरा।

आज के बाद राम या रावण अकेले ही रहेगा। आवेश में भी वीर कैसे बात करेगा। राम ने दिखाया है। राम का जन्म से मरण तक एक ही वचन है। सामनेवाला बड़ा दुष्ट होने पर उसका अन्त करना उचित है। रामायण यही शिक्षा देती है। रावण का आलसीपन और उपेक्षा ही उसके नाश के कारण बने हैं। अतः अहंकार आदमी का सबसे बड़ा शत्रु है। इस प्रकार रामायण के पात्र और प्रसंग मनुष्य को सोचने के लिए विवश करते हैं। सोच कर उन विषयों को अपने जीवन में अमल करने से आज का आदमी अपने को तथा देश के भविष्य को सुधार सकता है।

उपसंहार

वाल्मीकि के द्वारा रामायण लेखन के कई युग बीत गये हैं। उनके न होने पर भी रामायण का गायन आज भी होता है। होता रहेगा। तब से अब तक सीता और राम भारतीयों के लिए आदर्श दंपति हैं। दांपत्य जीवन के प्रतीक है।

व्यक्ति, परिवार, समाज, देश, राज्य, जगत ऐसा सारे विषयों को रामायण में देखकर उनका अनुसरण कर सकते हैं। किसी भी देश में किसी भी परिस्थिति में रामायण का अनुकरण किया जा सकता है।

जाषुवा : कुशलवोपाख्यान

डॉ. जी. शैलम्मा

तेलुगु भाषा के विशेष अभिमानी कवि जाषुवा ने अपने मित्रों के अनुरोध पर 'कुशलवोपाख्यान' की रचना की है। उनकी इस रचना का आधार कवि वेंकट कृष्णप्प का 'जैमिनी भारत' है। इस रचना की वस्तु का अनुशीलन करने पर लगता है कि जाषुवा ने मुख्यतया वस्तु को कृष्णप्प के जैमिनी भारत की वस्तु से ग्रहण किया है। साथ ही पिल्लमर्रि पिन वीर भद्र कवि के द्वारा रचित 'जैमिनी भारत' की रामकथा से रामकथा प्रसंग को लेकर, फिर कंकंटि पापाराजु के 'उत्तररामचरितम' के कुछ प्रसंगों को लेकर अपने विशेष वर्णनों को जोड़कर सीता देवी के रसातल जाने तक की कथा को 'कुशलवोपाख्यान' के रूप में रचा है। स्वयं कवि ने काव्य की भूमिका में कृष्णप्पा, वीर भद्र कवि और कंकंटि पापराजु तीनों का उल्लेख किया है।

यह रचना कुशलव की कहानी कहती है। श्रीराम ने सीता समेत 14 वर्ष वनवास किया। सीता रावण की बंदी से मुक्त हो गया। राम का राजतिलक हुआ। सीता समेत शासन चल रहा है। यहाँ से यह कथा शुरू होती है। सीता अनेक कष्ट झेलकर अपने दोनों जुड़वे बच्चों को राम के हाथों में रखकर अपनी माँ भू देवी के पास भू प्रवेश करती है। उसके बाद राम अपने पुत्र और भाइयों के साथ राज करते हैं। 'कुशलवोपाख्यान' पाँच भागों में विभक्त है। पहले भाग में श्रीराम सीता को गंगा नदी के तट पर छोड़ कर आने की आज्ञा अपने भाइयों को देते हैं। गर्भिणी सीता को जंगल में क्यों छोड़ा जा रहा है, रचना में बताया गया है। एक धोबी की पत्नी अपने पति को छोड़कर अपने पीहर गयी है। पत्नी को ले लाये ससुर की निंदा दामाद ने की। वृद्ध मडिवेलु है। मडिवेलु की निंदा उसका दामाद करता है। वह कहता है कि समस्त लोगों के कपड़ों को मैं साफ करता हूँ। लेकिन तुम्हारी बेटी को मैं ठीक नहीं कर पाऊँगा। इसलिए तुम अपनी बेटी को साथ ले जाओ। सीता को वापस लानेवाले राम जैसा मुझे मत समझो। इसके बारे में पता चलने पर श्रीराम सीता को गर्भिणी होने पर भी गंगा नदी के तट पर छोड़ कर आने के लिए कहते हैं। उस समय की स्त्रियों के कष्टों के बारे में जानने के लिए यह एक अच्छा दृष्टांत है।

राम को भगवान के रूप में देखा जाता है। फिर राम ने ही अधिक कष्ट झेले हैं। पिता को खोया। 14 वर्ष वनवास किया। अब सीता को भी खोना पड़ा। भाग्य ने हमेशा अपने साथ खेल खेला है। राम ने अपने लिए नहीं दूसरों के लिए राज्य किया है।

सीता को गंगा नदी के तट पर भेजने के बाद की रात का वर्णन कवि ने बहुत मार्मिक ढंग

से किया है। राम ने सीता को वनवास भेजा। अपने मन को धिक्कार किया, दीनता में लम्बी श्वास छोड़ते हुए नीचे जमीन पर गिरकर रोते हुए, बार-बार चौंकते हुए, हाहाकार करते हुए, अपने जन्म की निंदा करते हुए, भक्ति से भगवान का ध्यान करते हुए, ध्यान करने में असमर्थ होकर, खड़े होने के प्रयत्न में नीचे गिरते हुए, आदि चित्र विचित्र रूप में राम ने रात बितायी है। इससे राम के मन की दशा का पता चल सकता है। राम ने अपने सुख के लिए सीता को वनवास नहीं भेजा है। बल्कि अपने सुख के बारे में सोचनेवाले होते तो सीता को कदापि वनवास नहीं भेजते हैं। (पृ. 92) श्रीराम का राज धर्म अपने लोग लक्ष्मणादि भाइयों के लिए तथा सीता के लिए कर्ण कठोर बनता है। फिर भी श्रीराम अपने भाइयों से विनती करते हैं। सीता को जंगल में छोड़ आना किसी को भी पसंद नहीं है। फिर भी राम अपने राज धर्म का ही समर्थन करता है। यह श्रीराम का सत्य व्रत है। अगर गुस्से होने से अपना गला भी चाहते तो काट सकते हैं। राम यह कहते हैं। (पृ.93) राम का यह विचार है कि नीति सबके लिए समान है। धोबी के वचनों को भी इसलिए गिनती में लेना चाहिए। लक्ष्मण अनेक रूपों में सांत्वना देकर राम को शांत करने की कोशिश करता है। किंतु राम अपने वचनों से पीछे नहीं हटते हैं।

राम की वेदना देखकर भरत शत्रुघ्न कारण पूछते हुए तलवार भी उठाते हैं। राम उनसे राज धर्म के बारे में बताते हैं अपनी वेदना और उसके लिए जिम्मेदार सीता के बारे में कुछ नहीं बोलते हैं। यह राम के चरित्र को उद्धीप्त करता है। जाषुवा ने इस प्रसंग को विशेष रूप से विचारोत्तेजक बनाया है। इस प्रथम भाग में ही राम को दुख को पहुँचानेवाले किसी भी तत्व का नाश करने के लिए राम के भाई भरत, शत्रुघ्न तैयार होते हैं। किंतु राम उनको यह अवसर नहीं देते हैं। अनेक रूपों में समझाने और बुझाने के बावजूद राम अपना निर्णय नहीं बदलते हैं। प्रथम भाग इस रूप में सीता को जंगल भेजने के प्रसंग से संबंध रखता है।

द्वितीय भाग में सीता गंगा नदी के तट पर मुनिकांताओं से रहने की अपनी इच्छा को पूरी कर लेती है। सीता देवी गंगा नदी तट पर जाने के लिए, जाने की जगह से अपरिचित होकर भी अपनी तीनों सासों के पास जाकर अनुमति माँगती है। ''आपके पुत्र की कामना के अनुसार मैं गंगी नदी के तट पर जा रही हूँ।'' कहकर अनुमति लेती है। ''अकेली ही जा रही हो। सावधान रहना'' तीनों सास सावधानी बरतने के लिए कहती हैं। रथ में बैठनेवाली सीता को आशंका होती है। तब भी वह अपने पति के बारे में और दूसरों के बारे में ही सोचती है। अपने बारे में नहीं।

करीब-करीब संध्या के समय सीता गंगा नदी के तट पर पहुँचती है। जाषुवा ने संध्या का भी वर्णन किया है। अँधेरे की तरह सीता के मन में भी भय फैलता है। लक्ष्मण से सीता अपशकुनों की बात भी करती है। रघुकुल स्वामी राम को शुभ ही हैं न? इस संदर्भ में भी वह लक्ष्मण से राम के बारे में ही पूछती है। राम ने गंगा नदी के तट पर छोड़ आने के लिए भेजा। गर्भवती अकेली कैसे रह सकती है, यह नहीं सोचा है। सीता के प्रति कठोर व्यवहार करते हैं। गंगा के तट पर पहुँचने के बाद सीता लक्ष्मण से जानकारी लेती है। तब सीता न लक्ष्मण की निंदा करती है न राम की। वह लक्ष्मण से लौट जाने को कहती है। यह सीता के चरित्र की उज्ज्वलता है। दोषारोपण,

निंदारोपण के प्रति सीता का विचार सर्वथा शिरोधार्य है। अपनी इस दशा के लिए स्वयं अपने को ही वह दोष देती है। इसमें किसी का कोई दोष नहीं है, कहती है। (पृ. 102) लक्ष्मण से वह कहती है कि राम दूर रहने पर भी सर्वथा उसकी आँखों के सामने ही रहेंगे। कहने पर सीता का चरित्र और राम के प्रति उसका प्रेम और उद्दीप्त होता है।

पति के प्रति यह समर्पण भाव अन्यथा दुर्लभ है। सीता देवी बिना किसी अपराध के जंगल में अकेली है। वह अपने आप में सोचकर दुःख का अनुभव करती है। कवि ने इस संदर्भ में कहा कि सीता की इस दशा को देखकर प्रकृति भी निश्चेष्ट हो गयी है। वह दुखी है। उसके दुख को कम करने के लिए जानवर हाहाकार कर रहे हैं। इस रूप में सीता को प्रकृति के साथ जोड़ने का जाषुवा प्रयत्न करते हैं। निराधार होकर, शाखा खंडित पेड़ की तरह सीता जंगल में रहती है। सीता के कष्टों को देखकर पाषाण भी पिघल जाते हैं। पक्षी उड़ना भूल गये। मृग अपनी गति को छोड़कर निश्चल हो गये। जानकी रो-रोकर बेहोश होकर नीचे गिर गयी। (पृ.103) सीता के आर्त को सुनकर भगवान वाल्मीकि को सीता की रक्षा के लिए भेजता है। बाद में वाल्मीकि आश्रम में सीता देवी दो बच्चों को जन्म देती है। सीता देवी अपने बच्चों को विद्या के साथ-साथ राम की तरह विद्या, शस्त्र चलाने, साहस, पराक्रम आदि सिखाती है। बारह साल की उम्र में ही उन्हें बहुत कुछ सिखाकर योग्य बनाती है। मुनि जातक चक्रादि की व्यवस्था भी करता है। उनको पूर्ण मनुष्य बनाता है। (पृ. 105)

बारह सालों तक राम ने अपने बच्चों को नहीं देखा। कुश और लव बारह सालों तक बिना पिता के ही बड़े हो गये। वे वाल्मीकि को दादा और सीता को माई कहकर पुकारते थे।

राम एक यज्ञ करने के लिए तैयार होते हैं। यज्ञ करने के लिए पत्नी की जरूरत होती है। गंगा नदी के तट पर रहनेवाली पत्नी को समझा-बुझाकर ला सकते हैं। किंतु ऐसा नहीं किया। सोने की प्रतिमा सीता को तैयार करके अपना काम पूरा किया। अश्वमेध यज्ञ में घोड़े को छोड़ा जाता है।

मित्रकुलाग्रणी दिविज
स्तोत्र पराक्रमंदु वीरसूः कौसल्या
पुत्रुडुक रघुपति विडचिन सत्रहयमु
बट्टु दर्वि सहसालुन्नान (पृ. 108)

यह लिखकर घोड़े के मुख पर लगाकर भेजा। उसके पीछे शत्रुघ्न सेना समेत निकलता है। अकेले लव अपने मित्रों के साथ रहते समय उस घोड़े को पक़डता है। शत्रुघ्न के साथ युद्ध करके बेहोश होकर गिर पड़ता है। सीता का यह समाचार मिलने पर दुखी हो जाती है। गंगा नदी के तट पर छोड़ आने को कहने पर सीता को दुख हुआ था। लेकिन इस दुख से वह दुख काफी कम था। उस समय दुख सागर में नहीं डूबी थी। लेकिन आज वह बिलख-बिलख कर रोती है। ''हाँ कुमार, तुम्हारे साथ अन्याय हुआ है। तुमने उनसे क्यों युद्ध किया। बालक होते तुमको वैर क्यों है?'' क्या बच्चा समझ कर राजा को दया नहीं आयी। भाई के न होते अभी तुम्हारे सौ साल पूरे हो गये हैं क्या? (पृः111) सीता देवी एक माँ के रूप में अपने पुत्र को खोने के बाद पुरानी बातें याद करके

रोती हैं। जाषुवा ने नेत्र पर्व के रूप में इस प्रसंग का चित्रण किया है।

लव की रक्षा के लिए कुश शत्रुघ्न से युद्ध करके उसे नीचे गिराता है। कुश के युद्ध को देखकर सेना दौड़ कर राम को यह समाचार देती है। अपना बेटा ही अपने भाई को मारा है, यह नहीं जान पाते हैं। अपने बेटों से युद्ध करने लक्ष्मण को भेजते हैं। शत्रुघ्न हार गये, बतानेवाली सेना की बातों पर राम विश्वास नहीं करते हैं। उनसे राम बोलते हैं, ''तुम लोग पागल हो गये। मेरा भाई ब्राह्मण बच्चे के हाथ में मारा जायेगा? लवणासुर को मारनेवाला मेरा भाई एक साधारण बालक के हाथों में कैसे हार सकता है? हे अनुज तुमने क्या किया?'' (पृ. 113) राम रोते हैं। लक्ष्मण के गिर जाने के बाद भी राम रोते हैं। बड़ी आवाज में रोते हुए पहले अविश्वास प्रकट करते हैं। इंद्रजित को मारनेवाले लक्ष्मण एक बालक के हाथों में कैसे हार सकता है। मुझे अब राज्य क्यों चाहिए? तुम्हारे बिना मैं राज्य का क्या करूँगा।'' (पृ. 118)

सीता देवी अपने को पति के छोड़ने पर, तथा पुत्र युद्ध में बेहोश होने पर रोती है। राम के भाई युद्ध में हारने पर भी रोती है।

युद्ध में अपने पुत्र के धैर्य-साहस, पराक्रम, वेग आदि ने अपने भाइयों को डरा दिया। चरों ने यह समाचार राम को दिया। तब स्वयं राम युद्ध में जाने का निर्णय करते हैं।

पाँचवें भाग में राम अपने पुत्रों को पहचानते हैं। वीरों के कहने के बाद विश्वास करते हैं। कुश लवों को देखकर अच्छा लगने के कारण युद्ध करने की जगह उनसे कई प्रश्न करते हैं। कुशलवों के मुँह से सीता का नाम सुनकर बेहोश हो जाते हैं। ''हमारी माँ सीता है। यह नाम सुनते ही राम बेहोश हो जाते हैं। फिर इसकी जाँच के लिए सूर्य पुत्र को आज्ञा देते हैं।'' (पृ. 121) राम यह भी जान नहीं पाते हैं कि सीता ने बच्चों को जन्म दिया है।

श्रीराम की राज भक्ति बहुत महत्त्व की है। सुग्रीव भी बच्चों की परीक्षा करके कहता है, ''राघवेंद्र, ये बच्चे सीता के ही हैं। रूपरेखाएँ, धैर्य, साहस, गुण सभी की दृष्टि से आपके ही पुत्र हैं।'' (पृ. 121) अपने पुत्रों से युद्ध भयानक होता है। राम की सेना से वीरोचित ढंग से युद्ध चल रहा है। इस युद्ध में स्वयं भूमि ने अपने रूप को खोया। ऐसा जाषुवा का वर्णन है। राम की सेना के साथ बहुत ही साहस और धैर्य के साथ लव और कुश ने युद्ध किया। इस भयानक युद्ध से तीनों लोक तितर-बितर हो जाते हैं। इस युद्ध के वर्णन के लिए आदि शेष के सहस्र फण पर्याप्त नहीं है। सातों सागर मानो एक हो गये ऐसा युद्ध चल रहा है। कुशलव युद्ध में राम पर विजयी होते हैं। युद्ध जीतकर आश्रम आनेवाले पुत्रों को देखकर सीता संतोष के साथ अपने भूत की याद करती है।

''पुत्रों के साहसी कार्यों को देखकर सीता विस्मय होकर सोच में पड़ जाती है। वन में अज्ञात रहनेवाली मेरा पता तुम्हारे कारण खुल गया। जंगल के मृगों ने शेर को हराया। राघव पर आपने विजय पायी है।'' (पृ. 123) युद्ध में जीतनेवाले पुत्रों को देखकर सीता देवी साधारण स्त्री के रूप में संतोष का अनुभव करती है। सीता देवी को सभा में लाते समय जाषुवा ने सीता को उत्तम स्त्री के रूप में वर्णन किया है। उसके मन में राम के व्यवहार का वर्णन भी किया है।

''अपने पति ने जनता की बातों पर क्यों विश्वास कर लिया। इससे मुझे अति दुख हो रहा

है। सीता के नेत्रों से आँसू टपकने लगते हैं। इसीलिए आज मुझे सभा के बीच में अपराधी की तरह खड़ा होना पड़ा है। चारों दिशाओं से वह प्रश्न करती है।'' (पृ. 126) सीता बड़े धैर्य के साथ अपने मन की बात कहती है। अपनी माँ को बुलाकर उसके पास जाना चाहती है। सीता के कष्टों के बारे में सुनने वाले अवश्य उसके प्रति सहानुभूति व्यक्त किये बिना रह नहीं सकते हैं। ''तब सीता राम के चरणों पर गिर कर नमस्कार करके सभा में बैठे सभी को विस्मय होते देखकर कहती है अगर मैं सेवा करनेवाली हूँ, कभी भी पति की आज्ञा का उल्लंघन करनेवाली नहीं हूँ तो हे भूदेवी माँ तुम मुझे अपने पास बुला लो। तब भूदेवी सभा मध्य में प्रकट होती है। सीता उसके साथ जाने के लिए तैयार होती है।'' (पृ. 127)

सीता पति को, बच्चों को छोड़कर अपने शरीर को भी छोड़कर स्वर्ग चली जाती है। जाषुवा की 'कुशलवोपाख्यान' रचना में संस्कृत शब्द, दीर्घ समास और ग्रांथिक तेलुगु भाषा दिखाई देती है। तेलुगु भाषा को परिपुष्ट करने के लिए यह रचना अधिक उपयोगी है। व्यवहार से दूर अनेक तेलुगु शब्द इस रचना में हैं। आद्यंत पढ़ने के लिए रुचि पैदा करनेवाले तत्व भी इस रचना में हैं। वाल्मीकि रामायण में सीता को कई कष्ट हुए हैं। जाषुवा की यह 'कुशलवोपाख्यान' रचना भी उससे भिन्न नहीं है।

वाल्मीकि रामायण और मोल्ल रामायण : तुलनात्मक अध्ययन

आई. रजनी

भारत में सारी भाषाओं में लिखित रामकथा या रामायण को जितनी लोकप्रियता है उतनी शायद किसी रचना को नहीं है। रामायण ने सिर्फ देश की भाषाओं को ही नहीं संस्कृत के लेखकों को भी प्रभावित किया है। नाटकादि रचनाओं में लिखने के लिए प्रेरित किया।

राजा धर्म के लिए राम, भाई धर्म के लिए भरत, लक्ष्मण, सती धर्म के लिए सीता को आदर्श प्रतीकों के रूप में नहीं ग्रहण करनेवाला समाज और जाति भारत में नहीं होगी। वाल्मीकि रामायण परवर्ती अनेक कवियों के लिए प्रेरणा बना है। भारतीय धार्मिक, गृहस्थ के नैतिक मूल्यों का दर्पण रामायण है। बलदेव उपाध्याय के अनुसार, ''रामायण भारतीय गृहस्थ धर्म का महाकाव्य है।'' यह संस्कृत भाषा का आदिकाव्य है। करुणा रस प्रधान, कांतासम्मित रूप में धार्मिक, नैतिक मूल्यों को अधिक महत्त्व देनेवाला काव्य है। श्रृंगार, वीर, रौद्र, हास्य, अद्भुत रसों का पोषण इसमें अधिक हुआ है।

तेलुगु में पहले भास्कर कवि के रामायण लिखने के बाद रंगनाथ रामायण, मोल्ल रामायण, कट्टवरदराजु रामायण, गोपीनाथ रामायण, वासुदासु रामायण, श्रीमद्रामायण कल्प वृक्षमु, सरस्वती रामायण, गोविंद रामायण आदि ही नहीं और भी अनेक रामायण लिखे गये हैं।

रामायण रघुराम की कहानी है। आदर के साथ सुनने से वह नया, लक्ष्मण संवाद और पुण्य वेद के रूप में लगता है। कवियों ने बार-बार उसे क्यों रचा है? यानी उसमें हमेशा कुछ कहने के लिए रहता है। ''भूजन कल्पकमै भुक्तिकि मुक्ति कि कारकुडैन रामुनि'' की प्रशंसा करना सभी कवि चाहते हैं। एक वेश्या ने अपने तोते का राम नाम रखकर बुलाकर अपनी भक्ति का परिचय दिया है। लोग अपने-अपने ढंग से राम भक्ति का प्रदर्शन करते हैं। काव्य लिखने पर भी वैसा ही आनंद प्राप्त होता है। ''नेरचि पोगिडिन वारिनी'' उनके बारे में जानकर प्रशंसा करने वालों को राम करुणा से रक्षा करने का कारण भक्ति ही है, न कि उनकी कोई प्रतिभा, पांडित्य है, कवयित्री मोल्ल इसे पूर्ण रूप से मानती है। अपने रामायण लेखन को भी वह अपनी प्रतिभा नहीं मानती है।

''मोल्ल रामायण में उल्लिखित देशीय शब्द, तेलुगु और संस्कृति की संधियाँ, समास, रीतियाँ, चाटुक्तियाँ, अर्थ, भावार्थ, काव्यपाक, रसभाव चमत्कार आदि को मैं नहीं जानती हूँ। यानी काव्य शास्त्र संबंधी किसी तत्व को मैं नहीं जानती हूँ।'' ऐसा उन्होंने स्पष्ट कहा है।

मोल्ल रामायण श्रीरामांकित है। तीन आश्वास उसमें हैं। बालकांड अकेला प्रथम आश्वास,

अयोध्या, किष्किंधा, अरण्य, सुंदरकांड ये चारों द्वितीय आश्वास में युद्धकांड अकेला तीसरे आश्वास में चित्रण किया है। इनमें अयोध्या, अरण्य, किष्किंधाकांड प्रत्येक में 15 पद्यों के साथ, बालकांड 100 पद्यों के साथ सुंदरकांड 150 पद्यों के साथ, युद्धकांड लगभग 200 पद्यों में मोल्ला ने प्रस्तुत किया है।

मोल्ल की विनम्रता, भगवत प्रसाद के रूप में अपने लेखन को मानना आदि उसकी असाधारण शक्ति के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। मोल्ला के कारण रामायण को तेलुगु में प्रचलन प्राप्त हुआ है।

वाल्मीकि रामायण में बालकांड में 77 सर्ग, 2322 श्लोकों से नारद वाल्मीकि को उनकांडों की मुख्य-मुख्य विशेषताओं को बताने का उल्लेख है। सौ श्लोकों से आरंभ करके विश्वामित्र का आना, ताटक वध, अहल्या का शाप विमोचन, श्रीराम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न का विवाह, परशुराम का गर्व भंग, दशरथ का नये दंपतियों के साथ अयोध्या पहुँचना आदि का पाँच-छह पद्यों में वर्णन किया है। जहाँ संक्षेपन की आवश्यकता है वहाँ मोल्ला ने संक्षेपन किया है। शांता, ऋष्यश्रृंग के बारे में कोई कुछ नहीं वर्णन है।

अहल्या शाप विमोचन प्रसंग में वाल्मीकि ने—

साहि गौतम वाक्सेन दुर्निरीक्ष्याबभूवहा
त्रयाणामपि लोकानां यावद्रामस्य दर्शनं

गौतम मुनि के शाप के कारण राम दर्शन होने तक किसी को भी दिखाई दिए बिना रहकर—

शाप स्यास्तमु पागम्यते फां दर्शन मागता
राघवौतु ततस्तस्याः पाडैं जगृहातु स्तदा।

अपने शाप के पूरा होने के बाद अहल्या राम और लक्ष्मण को दिखाई पड़ती है। उन्होंने उसके चरणों को नमस्कार किया। अपने रामायण में मोल्ला ने—

मुदितापसि वेनुवेंटनु
वदलक चनुदेंचिनट्टि वडि रामुनि श्री
पुदरजमु सोकि, चित्रमु
गदुलुचु बंगारु नोक्यु पलमटन।

कहते हुए—

पदनै योप्पिदमै, कडु,
गदुलुचु बंगारु पूदे करिगिन रीतिन
मेदलुचु, लाण्यस्थिति,
सुदतिग जूपट्टि निलिचे सुरुचिर लीलन।।

(अर्थात् तापसी विश्वामित्र के साथ श्रीराम और लक्ष्मण के आने पर उनकी चरणधूलि से विचित्र रूप में पाषाण नारी के रूप में बदल गयी। इस रूप में राम ने अपनी लीला दिखायी है।) अहल्या को शाप क्यों मिला है, इस वृत्तांत को विश्वामित्र के द्वारा मोल्ला ने नहीं बताया है।

सीता स्वयंवर के प्रसंग में श्रीराम के द्वारा शिव धनु तोड़ने के संदर्भ में —''विश्वामित्र की आज्ञा से जनक शिव धनु की पूजा करके सभा में उसे ले आये। सभा में घोषणा की कि हे सुरगण,

असुरगण, गंधर्व, यक्ष, किन्नेर, महारथी, जो इस धनु को उठायेगा उसका पुत्री सीता के साथ विवाह कराऊँगा।'' तब विश्वामित्र की आज्ञा से राम ने शिव धनु को उठाया और वह टूट गया।

मोल्ला का यह प्रसंग भी अत्यंत आह्लाद ढंग से चलता है। स्वयंवर में द्राविड, कर्णाटक, आंध्र आदि विविध राज्यों से राजकुमार पधारे हैं। लोग तरह-तरह के वाहनों पर आये हैं। जनक ने लोगों की सहायता से धनु को सभा के बीचोबीच रखवाया है। उसकी पूजा की गयी। धनु के विराट रूप को देखकर राजकुमार कुछ डर गये। कुछ राजकुमार इस रूप में स्वयंवर के पहले ही निकल गये। विश्वामित्र ने नेत्रों से ही राम को आज्ञा दे दी। तब लक्ष्मण ने इस रूप में कहा—

कदलकु मी धारतलम, काश्यपिभट्टु, फणींद्र भूविपा
सृदुलनु बट्टु, कूर्मनु रसातल भोगी धूली कुलीशुलन
वदलक पट्टु, घृष्टि धरणी कच्चप पोत्रि वर्गमुन
बोदुवुचु बट्टुडी करूँलु, भूवरुडीशुनि चाप मेक्किदुन।

(अर्थात् हे भूदेवी, तुम हिलो मत, हे आदि शेष तुम इस भूदेवी को मजबूती से पकड़ो, हे कूर्मा, तुम इस आदिशेष और भूदेवी को झेलो, हे वराह, तुम भूदेवी, आदिशेष, कूर्मा को पकड़ो, हे दिग्गज भूमि, फणी को, कूर्मा को, वराह को मजबूती से पकड़ो। क्योंकि राजा राम अब धनु को उठानेवाले हैं।)

मोल्ला रामायण में बालकांड के आरंभ में दिखाई देनेवाला अयोध्यापुरी का वर्णन उल्लेखनीय है। वह सूर्य वंश के राजाओं के नवरत्न खचित सिंहासन् के रूप में प्रचलित है। ''धर्म निलयम्मु महिनयोध्यापुरम्मु'' नामक पद्य ही इसका दृष्टांत है। श्रीराम और उनके भाइयों के विवाह के संदर्भ में वाल्मीकि ने लिखा है—''दशरथ ने अपने पुत्रों को साथ लाकर उन्हें सजाया। ऋषियों के साथ चलने से विवाह मंडप पर आये। कन्यादाता तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है ऐसा वशिष्ठ के कहने पर जनक ने प्रसन्न होकर ''मुनिश्रेष्ठ, कौतुक मंगल पूरा करके मेरी पुत्रियाँ प्रज्वलित होनेवाली आग की तरह वेदिका के समीप ही हैं। आप शास्त्रोक्त ढंग से वेदिका की पूजा करके विवाह को आरंभ कीजिए।'' कहा। तब सारे मुनिगण ने मिलकर विवाह की तैयारी शुरू की। सर्वाभरण शोभित सीता को लाकर राम के सामने बिठाया गया। ''इयं सीता मम सुता सहधर्मचारी तवः, प्रतीच्छा चैनां भद्रंते पाणि गृहीष्वपाणिवा'' यह मेरी पुत्री सीता, यह आपकी सहधर्मचारिणी है, इसे स्वीकार करो, अपने हाथ से इसके हाथ को पकड़ो। महाभाग्यशाली यह पतिव्रता होकर सर्वदा तुम्हारे साथ रहेगी। कहते हुए उन पर मंत्राक्षत डालकर दोनों को एक किया।

मोल्ला रामायण में दशरथ के नाम से निमंत्रण भेजनेवाले जनक के निमंत्रण से प्रसन्न होकर दशरथ सुमंत से—''सुमंत, अब हम सबको मिलकर मिथिला नगर जाकर अपने पुत्रों का विवाह करना चाहिए। इसलिए वशिष्ठ, द्विज श्रेष्ठों को, कौसल्याादि कांता लोगों को, अरुंधति आदि ब्राह्मणों की पत्नियों को सकल बंधु जनों को सबको खबर देकर उन्हें सोने के रथों पर बिठाकर ले आओ।'' सुमंत ने दशरथ की आज्ञा के अनुसार सबको तैयार किया। सभी मिथिला नगर निकले। जनक ने अगवानी की। उनका स्वागत करके उचित रीति से उनका सत्कार किया। निवास के पास पहुँचाकर

विवाह का आरंभ किया। इस रूप में मोल्ला ने जनक के विवाह की व्यवस्था का विस्तार से वर्णन किया। सीता, मांडवी, उर्मिला, श्रुतकीर्ति का विवाह इस रूप में सम्पन्न होता है। जनक ने बड़े धूमधाम से पुत्रियों का विवाह किया। विदाई भी की। मोल्ला ने इस संदर्भ में तेलुगु भाषियों के विवाहोत्सव का सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया है।

कुछ वर्णन मूल में नहीं है। फिर भी मोल्ला ने चित्रण किया है। जैसे–''राजुलु कांति यंदु रतिराजुलु रूपमु नंदु वाहिनी'' नामक पद्य अत्यंत प्रचलित है।

संस्कृत रामायण में तथा अन्य तेलुगु रामायणों में युद्धकांड के बाद बड़ा अयोध्याकांड ही है। किंतु मोल्ला ने इसकांड के मुख्य प्रसंगों का उल्लेख करके अयोध्याकांड को संक्षेप किया है। वाल्मीकि रामायण के मंथरा के प्रसंग को मोल्ला ने छोड़ दिया है। राम के राजतिलक के संदर्भ में कैक्रेयी दशरथ से दो वर माँग लेती है। अपने पुत्र भरत को राजा बनाना और 14 वर्ष राम को वनवास भेजना। राम, सीता और लक्ष्मण का वनवास गमन आदि प्रसंगों को मोल्ला ने दो-तीन पद्यों में पूरा किया है।

गुह के प्रसंग को भी मोल्ला ने दो पद्यों में पूरा किया। इनमें एक पद्य अत्यंत प्रचलित हुआ है। मोल्ला ने वाल्मीकि रामायण का अनुसरण करने के साथ-साथ आध्यात्मिक रामायण, भास्कर रामायण के प्रमुख प्रसंगों को भी लिया है। नदी को पार करने के पहले गुह द्वारा श्रीराम के चरण धोने की घटना आध्यात्मिक रामायण में है। उसे मोल्ला ने ग्रहण किया। अंत्यत रमणीय ढंग से इस पद्य को उन्होंने रचा है–

सुडिकोनि रामु पादमुलु सोकिन धूलि वहिंचि राइ ये
पॅड नोककांत ययेनट पन्नग नीतनि पादरेणुनि
येडवडि नोड सोकनिदि येमगुनोयनि संशयात्मुड़ै
कडिगे गुहुँडु राम पदकंज युगंबु भयम्मु पेंपुन।

(अर्थात् गुह राम भक्त हैं। राम के बचपन की लीलाओं के बारे में यथासमय जाननेवाला गुह राम की प्रतीक्षा करता रहा है। राम के नाव पर चढ़ने के पहले राम के द्वारा एक पाषाण नारी हो गयी है। कहीं राम के चरण स्पर्श से अपनी नाव नारी न बने। इस डर से गुह सोच रहा था। यह लोकजनता का भय है। मोल्ला ने उस ओर भी ध्यान रखा है।

राम के चरणों की धूलि लगकर पत्थर स्त्री बना है। ऐसे में अपनी नाव का क्या होगा। यह संशय गुह का है। मोल्ला जैसे सरल हृदय कवियों की कल्पना भी है। इसलिए गुह ने नाव पर चढ़ने के पहले ही राम के चरण धोये।

अयोध्याकांड में विपुल ढंग से शाम की संध्या, अँधेरा , चाँदनी , जारिणी आदि का वर्णन अयोध्याकांड के आरंभ में ही है। इससे अलग राम के राजतिलक की घटना का वर्णन भी है। राम के राजतिलक का निर्णय किया गया है। संध्या हो गयी है। दिन भर श्रम करनेवाला सूर्य पसीने से लथपथ होकर संध्या के समय स्नान करने के लिए निकल गया। कल्पवृक्ष पर लगे फल ताराएँ, घने अंधकार सुदति के नेत्रों के काजल की तरह अंधकार फैल गया। मन्मथ के इशारे की तरह हवाएँ चलने लगी हैं। मध्य रात में ताराएँ उपपत्नियों की तरह चमकने लगी हैं। आदि वर्णन मोल्ला ने अपने

रामायण में किया है। इस रूप में अयोध्याकांड में 14 पद्यों में प्रकृति का सुंदर चित्रण किया है।

वाल्मीकि रामायण में अरण्यकांड में 75 सर्ग, 2420 श्लोकों में राम और लक्ष्मण द्वारा जंगल में रहनेवाले राक्षसों को मारने के प्रसंग का वर्णन, सीतापहरण, सीता की खोज, पंपानदी के तट पर पहुँचना आदि प्रसंगों के साथ-साथ प्रकृति का वर्णन है।

मोल्ला रामायण में भी अरण्यकांड में कथा संक्षेप में कही गयी है। इसमें कुछ स्वतंत्र विचित्र कल्पनाएँ भी मिलती हैं।

मोल्ला रामायण में विराध वध, अत्रि महामुनि आश्रम संदर्शन, पंचवटी का प्रसंग, बीच में कुछ चंचीताओं का वर्णन आदि है। राम को देखकर चंचीता लोग कहते हैं—

इतनिकि बाध चारितन मेटिकि वच्चेनो? पट्ट भद्रु डी
सति नवरूप रेखलमु जक्कनिदय्युनु निट्टि दुर्धशल
प्रति वसिइंचु टेट्लो? रति राज समानुल वीरिनेल ई
गति बडद्रोचे ब्रह्म? यनि कांतुडु चेंचेतलम्महात्मुलन।

''ऐसे राजा को पादचारी बनना क्यों हुआ'' ऐसी स्वतंत्र कल्पनाएँ काफी मौलिक हैं। और भी है—

नडुवनेरनि कोम्म यडुगुलु पाकुलै।
शर्कर स्तलमुल श्रममु जेंदे
वीचिन चेतुलव्रेल्लु नेत्तुरु गम्मि।
पाटमर्लु केंपुल पोल्किनमरे
वडिगालि सुडिवडि—

यह सुंदर पत्नी ऐसी दुर्दशा को कैसे झेल सकती है? रति राज समान इनको ब्रह्म ने ऐसा भाग्य क्यों लिखा। ऐसा लिखा। चेंचेता के रूप में स्वतंत्र कल्पना करके मोल्ला ने पंचवटी में सीता और राम के मधुर जीवन का सुंदर ढंग से चित्रण किया है।

वाल्मीकि रामायण में माया मृग को देखकर सीता उसे चाहने लगती हैं। उसे लाने के बहाने राम दूर चले जाते हैं। बाद में वह समझ जाते हैं कि यह मारीच की माया है। राम के बाण लगने के बाद सीता और लक्ष्मण का नाम पुकारते हुए वह मर जाता है। इस चीख से सीता का क्या हुआ, महाबाहु लक्ष्मण का क्या होगा? यह सोचते हुए धब्बेवाले किसी और मृग को मार कर उसे साथ में ले आता है। यह वाल्मीकि रामायण का वर्णन है।

किंतु मोल्ल रामायण में सोने के मृग के वेश में आकर अपने को दूर ले जानेवाला मृग मारीच है, ऐसा राम जान लेते हैं—

अत्तणि राघवुडु तन नासल बेट्टचु कोंगचु बोवगा
जत्तमु नोच्चि मा मृगमु श्रीघ्रमुनंबडवेसि, दानियै
तित्तग दीसि विंटि कोन देच्चेडि वेल, बयोजमित्र वं
शोत्तमुडुल्क गान बड़ेनोक्कडे लक्ष्मुडुन्न दृष्टकिन।

कहते हुए मारीच की माया को जानकर सोने के हिरण के रूप में रहनेवाले उसे मार कर

उसकी चमड़ी उतारकर अपने धनु की नाड़ी बनाकर धनु को भुजा पर रखकर झूमते हुए राम सीता को भेंट देने ले आये हैं। इस सुंदर दृश्य की मोल्ला ने मौलिक ढंग से कल्पना की है। यह अवाल्मीकि प्रसंग है।

वाल्मीकि रामायण में संन्यासी वेश में रावण आकर सीता का अपहरण करके रथ पर बिठाकर लो जाते हैं, रास्ते में जटायु का संघर्ष, शबरी प्रसंग आदि हैं। मोल्ला ने इन प्रसंगों को संक्षेप में पूरा किया है। वाल्मीकि रामायण में 35 श्लोकों में शबरी के प्रसंग का चित्रण है। जब कि मोल्ला ने 2 या 3 पद्यों में इस प्रसंग का चित्रण किया है। किंतु इस प्रसंग में जिन विशेषणों का प्रयोग मोल्ला ने किया वह शबरी के प्रति मोल्ला की भक्ति का सूचक हैं।

चनिचनि येदुटनु रामुड्डु
गनु कोनिये महाजनोग्र करुफादि महा
शनि रूपं बनदगु ना
घन मुक्ति वधूविलास कबरिन शबरिन।

(अर्थात् लोक में जनों के पाप रूपी पहाड़ों के लिए शबरी एक बिजली की तरह है। मुक्ति कांता के सविलास केशपाश शबरी है। ऐसी शबरी ने राजा राम की पूजा करके नमस्कार किया। तब राम ने वहाँ आने का कारण बताया। तब शबरी ने राम से कहा–''सुग्रीव नामक एक वानर श्रेष्ठ है। उससे मैत्री कीजिए। वह सब काम कर सकता है।'' राम को यह सलाह देती है। शबरी पहले स्वयं चखकर उन फलों को राम को खिलाती है, इस प्रसंग को मोल्ला ने छोड़ दिया है।

इस अरण्यकांड में सीता देवी सौंदर्य वर्णन, श्रीराम विरहताप का वर्णन आदि अतिमनोहर हैं। शूर्पणखा द्वारा रावण से सीता का सौंदर्य वर्णन करना आदि मोल्ला रामायण में इस रूप में है–सीता के शरीर में नासिका, कर, चेहरा, चरण, कंठ स्वर, पयोधर, कमर, अधर, वाक्कु, बाहु, गमनरीति, हास, नेत्र, आदि को देखने से भ्रमरों के ऊपर चमेली को, पद्मों पर चन्द्र को, कोंपलों पर कोयल को, बिंबाफलों को तोतों को, कमल दलों पर हंसों को, चाँदनी के ऊपर चकोरों को होनेवाली स्पर्धा के रूप में मोल्ला ने इस पद्य में चित्रण किया है। अनेक दृष्टांत एवं उपमाओं के सहारे मोल्ला ने प्रसंग को अतिमनोहर बनाया है।

सीता बगैर पर्णशाला को देखकर ''चित्तमंत गलिगि श्रीरामचन्द्रुडु'' पागल बनकर संबोधन करनेवाले प्रसंग को चार पद्यों में करुण रस के साथ मोल्ला ने इस रूप में किया है–

नीदृग्वीलासंबु नेरिनभ्यसिंचेडु
गुरुकुचगानीवे हरिणविभुड अनी
घनसार भूजंब, कानवे नीवंटि
गंधंबु गलयट्टि करटियान'' कहती हुई
पडति नीतो कूडि पवलिंचु कर्कश
शय्यलु पूवुल शय्यलगुनु।

(अर्थात् राम विलाप करते हैं कि तुम्हारे बगैर ये सारी लताएँ, पेड़ आदि बहुत दुखी लग

रहे हैं। पुष्पों की सुगंध भी अच्छी नहीं लग रही है। तुम्हारे साथ इस कर्कश शय्या पर सोने से वह फूलों की सेज लग रही थी। लेकिन आज उसका उलटा हो रहा है।) इस रूप में मोल्ला ने राम के चित्त को बहुत सुंदर ढंग से चित्रण किया है। राम यह भी कहते हैं कि सीता कोशायद किसी मृग ने खा लिया होगा। यह दृश्य पाठकों को बाँध लेता है।

इस रूप में सीता को लेकर दुखी होनेवाले राम को देखकर लक्ष्मण सांत्वना देते हैं। सीता की खोज शुरू करते हैं। नागलोक, इंद्र लोक आदि घूम घाम कर सीता कहीं भी हो लाने की शपथ लेते हैं। लक्ष्मण बोलते हैं–

चिंचेद दैत्य संघमुल जिंदर वंदर जेसि ब्रह्मभा
धिंचेद, लोकपालकुल द्रेल्लग नेसेद, बूतलम्मुग ग्र
क्किंचेद शैल जालमुल गीटडगिंचेद, भूमि नंदनन
गांचेद, दल्लडिल्लिकुमु कंज हितान्वय वार्थिचन्द्रमा।

लक्ष्मण सारे ब्रह्मांड को तितर बितर करके सीता का पता लगाऊँगा, कहकर राम को तसल्ली देते हैं। मोल्ला की प्रौढ़ता का यह अच्छा दृष्टांत है।

वाल्मीकि ने रामायण में किष्किंधाकांड को 67 सर्गों में 2445 श्लोकों में रचा है। इसमें श्रीराम का पंपा तट के पास रहते सुग्रीव को देखकर भय कंपित हो जाना, हनुमान का महेंद्रगिरि पर से सागर को लाँघना आदि प्रसंग इसीकांड में हैं।

मोल्ला ने अपने रामायण में 27 गद्य और पद्यों में इस प्रसंग को औरकांड को पूरा किया है। सुग्रीव के भेजने पर हनुमान का श्रीराम और लक्ष्मण से मिलना, श्रीराम सुग्रीव की मैत्री, वाली वध, सीतान्वेषण के लिए अपने बहत्तर वेल्लुव कपि बल को भेजना, हनुमान को दक्षिण दिशा में भेजना, भारी सेना के साथ सारी दिशाओं में सीता की खोज के लिए निकल जाना आदि प्रसंग वर्णित हैं। बहुत संक्षेप में इस पूरे प्रसंग का चित्रण मोल्ला ने किया है।

वाली सुग्रीव का युद्ध होते समय राम ने वाली को एक बाण से गिराया। इसे मोल्ला ने इस रूप में चित्रण किया है–

सालमु पांतनिच्चि रघु सत्तमुड़ म्मरि वोसि, शब्दवि
न्मूलमुगाग विल दिविचि, मुष्टियु दृष्टियु गूर्चियु, गोत्र भृ
त्कूलमु वज्रपात हति गूलु विधंबुन गूल नेसेन
व्वालि, ब्रतापशालि, मृड वंदन शीलि, सुरालि मेच्चगन।

रामायण में सुंदरकांड प्रधान और सुंदरकांड है। इसलिए अधिकांश लोग इसकांड का पारायण करते हैं। हनुमान का सागर लाँघना, लंका में सीता को देखना, लंका दहन करना, लौट कर राम को इसका समाचार देना आदि इसकांड में वर्णित है।

वाल्मीकि रामायण में यहकांड 68 कांड और 2810 श्लोकों में वर्णित है। मोल्ला ने बाकीकांडों से अलग इस सुंदरकांड की कुल 248 गद्य-पद्यों में विवरणात्मक और वर्णनात्मक रूप में रचना की है।

इस कांड में सीता और रावण के बीच के संवाद का बड़े मनोहर ढंग से मोल्ला ने चित्रण किया

है। इसके अतिरिक्त वन के प्रसंगों को मोल्ला ने बहुत मार्मिक ढंग से चित्रण किया है। वे हैं सीता और हनुमान का संवाद, राक्षसवीरों के साथ हनुमान का युद्ध और हनुमान और रावण का संवाद।

सीता रावण की निंदा करते समय राम को लेकर इस रूप में कहती है। राम की चरणधूलि से एक पत्थर स्त्री बना है। माया रूप में मृग के रूप में आये मारीच का वध किया है।

''राजमात्रुंडे मेदिनी रक्षकुंडु, राम भूपाल डादि नारायणुंडु'' ऐसे राम के लिए लंका कितना और राक्षस कितने हैं। तुम कितने बलशाली हो, तेरी सेना कितनी बड़ी है। अब तुम ही देख लोगे। ऐसे भाव को व्यक्त करती वह बोलती है–

वीरालापमु लोडनेल विनुमी विश्व प्रकाशंबुगा
बारावारमु गट्टि, राघवुड्डु कोपस्फूर्ति दीविंचगा
घोराजिन निनुदासि, लावु कलिमिन गोटीर युक्तंबु गा
ग्रूरा स्त्रंबुला मस्तमुल दुनिमि, भक्तुल पेट्टु भूतालिकिन।

(अर्थात् वीरालाप क्यों करते हो, राघव आयेगा तो तुम्हारी शक्ति काम नहीं करेगी। राम के पास के दिव्यास्त्रों के शिकार होकर तुम बहुत आसानी से मारे जाओगे।) सुंदरकांड में सीता की खोज करने निकले कविवर–

''आकाश नदी प्रचुंबितार्भट भंगा। नीक महोघन रवभय। दादार नटत प्रकाशु'' ऐसे हनुमान को वे पकड़ लेते हैं। बंदी हनुमान को देखते ही रावण ''कुटिल भृकुटि नटन स्फुट धूम विलास पवन पूत्मति जनि तो त्कटनेत्रु'' बहुत गुस्सैल होता है।

मोल्ला स्त्री है इसलिए युद्ध वर्णन नहीं कर पायेगी समझनेवालों के विचार को नकारते हुए मोल्ला ने युद्धकांड में वीर रस के साथ-साथ करुण और भक्ति रस संबंधी मनोहर प्रसंगों का चित्रण किया है। यह एक आश्चर्य की बात है। हनुमान और राक्षस वीरों के बीच में हुए युद्ध को 60, 70 पद्यों में चित्रण किया है। युद्धकांड की कथा सुपरिचित कथा है। कुतूहल से बार-बार पढ़ने की रुचि पैदा करनेवालाकांड है। इसमें मोल्ला ने सेतुबंध, राम-रावण युद्ध प्रसंगों में विशेष चमत्कार के साथ चित्रण किया है।

युद्धकांड में काल नेमि ने हनुमान को धोखा देने के लिए बनाये सरोवर–''विमल मकरंद बुद्धि। भ्रमर निकर पक्ष वपन परिकंपिता स त्कम नीय कुमद कैरव। कमलंबुलु गलुगु कोलनु'' (अर्थात् विमल मकरंद बुद्धि के साथ भ्रमर आदि पक्षियों के साथ भरा हुआ बहुत ही मनोहर लगनेवाले कमलों से भरा हुआ सरोवर) सरोवर में कमल और कुमुद फूल हवा में हिल रहे थे।

श्रीराम के ब्रह्मास्त्र प्रयोग से रावण मारा जाता है। मोल्ला ने लिखा है–

अनघंदुज्वल चूबप दंडमुन ब्रह्स्त्रंबु संधिंचियो
त्सुन गर्णांतमुगा गड्ुन दिविचि प्रत्यालीढ पातस्तुंडै
दनुजाधीश्वरू बाहु मध्यमु पडिंदा बडिंदाकग लक्ष्यंबुगा
गानि बिट्टेसेनदल्चि तीव्र तरमौ कोपंबु बीपिंपगन

(अर्थात् श्रीराम ने अपने कोदंड पर ब्रह्मास्त्र रखकर उसका प्रयोग किया। वह कानों को भेदते हुए

रावण के पास जाकर दोनों बाहुओं के बीच में जाकर लगा। रावण का सर कट कर नीचे गिर गया।)

मोल्ला ने अपने रामायण में सरल तेलुगु भाषा का प्रयोग किया है। कई संदर्भों में व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग किया है। सरलता इसकी एक और विशेषता है। भाषा और भाव के संदर्भ में इस सरलता को देख सकते हैं। मोल्ला के विचारों के अनुसार उन्होंने रामायण को सामान्य लोगों के लिए लिखा है। इसलिए सरल मुहावरेदार और व्यंग्यार्थ भाषा में उसे रचा है।

श्रीराम के सौंदर्य वर्णन के लिए कई सुंदर उपमाओं का प्रयोग किया है मोल्ला ने–''नील मेघच्चायबोलु देहमुवाडु–बागैन यट्टि गुल्भमुलवाडु'' कहा है। नील मेघ श्याम और विशाल बाहुओं वाले हैं श्रीराम। अन्य कवियों की तुलना में मोल्ला ने वाल्मीकि को अधिक हृदयंगम किया है। हनुमान राम से सीता के पते के बारे में बताते समय–'' दृषे सीता–'' नामक श्लोक के लिए मोल्ला ने ''कंटिन जानकि पूर्ण चन्द्रवदनन कल्यणी ना लंकलो'' (अर्थात् देखा जानकी को पूर्ण चन्द्र जैसे चेहरे के साथ कल्याणी को उस लंका में) इस पद्य में सीता का चित्रण बहुत ही औचित्य रूप में किया है। हनुमान ''लेस्स राघव मन्नाडिदि निजमु नम्मु मुर्वीतनया'' इस पद्य में सीता से राम के बारे में कहता है। यह पद्य मोल्ला के पद्यों में अतिश्रेष्ठ है। ''चुक्कलु तलपूवुलुगा, नक्कजमुग मेनु पेंचिन'' के रूप में हनुमान के विश्व रूप का वर्णन श्रेष्ठ है। तारे हनुमान के सर के फूल जैसे लग रहे हैं, इतना विशाल शरीर हनुमान का है। काव्य की भूमिका में वाल्मीकि ने रामायण की महिमा को, रामायण की पारायण विधि को, रामायण माहात्म्य के साथ आरंभ किया है तो मोल्ला ने इष्टदेव की स्तुति के साथ, बाद में संस्कृत कवियों की स्तुति करके रामकथा सुधा रस के बारे में बाद में बताती है।

राम के काल में राम को जिसने नहीं देखा अपने को अभागा समझते थे। लेकिन आज के समय में रामायण को नहीं पढ़ सकने वाले या नहीं सुन सकनेवाले को बड़ा अभागा समझना चाहिए।

रामायण सकल जनों के लिए अनुसरणीय है। अत्यंत प्रयोजनकारी है। प्रति व्यक्ति इसे श्रद्धा के साथ पढ़कर समझकर इसके अंदर के उत्तमोत्तम उपदेशों का आचरण करने से उसका जीवन आदर्श बनेगा।मानव को महनीय बनाने की शक्ति आज भी रामायण को है, रामायण आज भी दिव्य ग्रंथ है।

आधार ग्रंथ :

1. वाल्मीकि रामायण–गीता प्रेस प्रकाशन, (गोरखपुर)।
2. मोल्ल रामायण–श्रीमान बोम्मकंटि श्रीनिवासाचार्य।
3. तुलनात्मक साहित्य अध्ययनमु, डॉ. एडला बालकृष्णा रेड्डी।
4. वाल्मीकि हृदयमु–डॉ. मामुदाल वेंकटेश्वर राव।
5. सारस्वती व्यासमुलु–(दूसरा भाग) पूंड्ल रामकृष्णय्या।
6. आध्रकवुल चरित्रमु–कंदुकूरि वीरेश लिंगम पंतुलु।
7. परिशोधन–(आ.प. वालों का संकलन) नायनि कृष्ण कुमारी।

वाल्मीकि रामायण महाकाव्य अवतरण : वैशिष्ट्य

पी. वरलक्ष्मी

सागर में नाव किसी भी प्रकार की अड़चन के बिना शांत चली जाती है। प्राकृतिक आपदाएँ होने पर नाव तितर-बितर हो जाती है। प्राकृतिक अपदाएँ क्यों होती हैं। इसे कोई नहीं जानता है। संसार सागर में भी जीवन नाव के समान है। जीवन में आनेवाले भाग्य और अभाग्य प्रसंग जीवन रूपी नाव को भंग करते हैं। ये क्यों आते हैं यह भी मालूम नहीं है। लेकिन जब ये होते हैं तो जीवन को संतुलित रखना चाहिए। व्यक्ति को काफी सहन और क्षमा के साथ अपने जीवन को संतुलित बनाना पड़ता है। अपने जीवन को कैसे सुधारना है यह वाल्मीकि रामायण व्यक्ति को बताता है।

क्योंकि भारतीय परंपरा में परिवार को अत्यंत प्रमुख स्थान है। इसी को गृहस्थाश्रम के रूप में मानते हैं। ऐसे उच्च्व गृहस्थ धर्म का पालन करके श्रीराम ने आदर्श मानव के रूप में अपने को स्थापित किया है। वाल्मीकि ने अपने रामायण में इसी श्रीराम की कथा कही है। जो प्रसंग रामायण में नहीं वह विश्व में कहीं भी नहीं है। मानव जीवन की प्रत्येक समस्या के लिए रामायण में समाधान दिया गया है। प्रत्येक रोग के लिए औषध का उल्लेख करके मानव के सम्पूर्ण विकास के लिए रास्ता रामायण ने दिखाया है।

लेकिन इसकाव्य रचना का लेखन कब हुआ? श्रीराम वाल्मीकि महर्षि का परिचय, रामायण के विशिष्ठ अंशों का परिचय, भारतीय संस्कृति, आदर्श राजनीतिक नेताओं के लक्षण, आदि के बारे में बताना ही इस लेख का लक्ष्य है। रामायण काल के वैज्ञानिक अंशों की तुलना में आज के वैज्ञानिक अंशों का क्या संबंध है इस पर भी इस लेख में विचार किया गया है। कला एक सामाजिक सत्य है, आयुर्वेद शस्त्र चिकित्सा रामायण काल तक ही विकसित हुई थी, इसके बारे में जानकारी दी गयी है।

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य में रामायण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। समाज के लिए आवश्यक सारे उच्च मूल्यों को रामायण प्रस्तुत करता है। प्रति व्यक्ति को धर्म और सत्य के बारे में आचरण रूप में दिखाकर श्रीराम आदर्श पुरुष के रूप में रामायण के द्वारा उभरते हैं। इसलिए रामायण उसकाल के आज के सर्वथा नित्य नूतन है। श्रीराम, रावण और सीता जैसे पात्रों के द्वारा लोक के लिए ज्ञान कांति को रामायण प्रसरित करता है। इसका गौरव वाल्मीकि को ही जाता है। वाल्मीकि नारद से किये गये प्रश्न से ही स्पष्ट होता है।

इस लोक में गुणवान और पराक्रमी कोई है? उच्च गुणों के साथ कोई है? वाल्मीकि ने नारद से यही सवाल किया था। तब नारद ने श्रीराम के बारे में बताया था। यह प्रत्येक मानव की जिज्ञासा हो सकती है। वह जानना चाहेगा उच्चतम गुणों के साथ इस संसार में जी सकते हैं?

वाल्मीकि ने अपने काव्य में राम को भगवान के रूप में नहीं माना है। अर्थात् भगवान मानव के रूप में अच्छह गुणों के साथ मानव माधव के रूप में विकसित होना है, यह वाल्मीकि का उद्देश्य है। मानव के अंदर के दैवत्व को जगाना ही वाल्मीकि का लक्ष्य है। नारद ने भी श्रीराम को ऐसे ही व्यक्ति के रूप में वाल्मीकि को बताया है। क्योंकि श्रीराम भी साधारण मानव ही हैं। लेकिन उनका व्यक्तित्व असाधारण है। इसलिए सभी श्रीराम को भगवान मानते हैं।

इन गुणों के साथ प्रत्येक व्यक्ति भगवान बन सकता है। इस संदेश को भी वाल्मीकि ने अपने रामायण के द्वारा बताया है। किंतु रामायण का रचना काल कब है? वाल्मीकि और श्रीराम का परिचय कब हुआ? आदि बातों पर विचार करने से—

1. **रामायण की रचना कब हुई है :** श्रीराम के राजतिलक के बाद जंगल भेजी गयी सीता का मिलन वाल्मीकि से हुआ है। उस समय हुआ होगा, ऐसा विचारकों का विचार है। कुशलव वाल्मीकि के पास बड़े हो गये। तभी वाल्मीकि ने नारद के द्वारा संक्षिप्त रामकथा को सुना है। बाद में अपने ध्यान में ब्रह्म के द्वारा संदेश को प्राप्त किया है। सीता साध्वी पर हुए संदेह से उनका हृदय पिघल गया है। तुरंत सीता देवी और रावण वध को जोड़कर ''काव्यं रामायणम कृत्यं सीतायाश्चरितं महत पौलस्त्य वधिमित्येवचकार चरित्र व्रतः'' (बाल-4-7) कहते महाग्रंथ को लिखकर उसे कुशलवों को सिखाया है।

2. **श्रीराम को वाल्मीकि पहले नहीं जानते थे? :** चित्रकूट प्रदेश में पर्णशाला बनाकर रहने के लिए सीता राम-लक्ष्मण जाते समय वहाँ अपने आश्रम में वाल्मीकि ने राम को दर्शन दिए। उस समय अपने वृत्तांत को वाल्मीकि को बताया। उसके बाद सीता वाल्मीकि आश्रम में पहुँचने के बाद तब तक घटित रामकथा को सीता से प्राप्त किया। इस रूप में रामकथा को विविध संदर्भों में विविध व्यक्तियों से वाल्मीकि ने प्राप्त किया।

वाल्मीकि रामायण : वैज्ञानिक शास्त्र विशेषताएँ

आज का विश्व अन्तरिक्षयान, कृत्रिम गर्भ आदि के संदर्भ में काफी आगे है। इस समय रामायण और महाभारत पर शोध क्यों करना है? यह प्रश्न सहज है। किंतु आज के वैज्ञानिक शास्त्र से परे भी कुछ विषय इनमें आज भी निक्षिप्त हैं। उनमें कुछ का उल्लेख निम्न है।

1. राम और लक्ष्मण वानर सेना के साथ लंका में प्रवेश करने के लिए 101 बटा 10 लंबाई और चौड़ाई वाला बुनियाद रहित सेतु पानी में तैरनेवाला बनाया है। नल नामक वानरोत्तम ने इसे बनाया है। अपने पिता से प्राप्त ज्ञान के द्वारा बनाया है। वह भी फाल्गुन शुद्ध चतुर्थी के दिन आरंभ करके सप्तमि तक के चार दिनों में इसे पूरा किया है। नल अकेला ही यह काम कर सकता है सागर देवता ने ही राम से बताया है। लहरों से भी यह सेतु बचेगा। इस रूप में नल के द्वारा बनाया गया

सेतु आज भी पानी पर तैरनेवाला महोन्नत सेतु के रूप में है। आज सेतुओं के लिए यही सेतु मूल है।

2. लंका में हनुमान ने अपूर्व पुष्पक विमान को देखा है। कितने लोगों के चढ़ने पर भी और जगह रखनेवाला है। आवश्यक वेग से जा सकनेवाला है। हमारा शास्त्रीय ज्ञान काफी विकसित होने के बावजूद आज भी इन दोनों विशेषताओं के साथ विमान को आजतक तैयार नहीं कर पाये हैं। वाल्मीकि द्वारा बताये विमान को तैयार करना अभी संभव नहीं हो सका है। स्फूर्ति के बावजूद संभव नहीं है। इससे बढ़कर विमान शब्द सारी भारतीय भाषाओं में इसी रामायण के द्वारा ही आया है।

3. आकाश में बादलों के पीछे रहकर युद्ध करने की कला को इंद्रजित और अक्षय कुमार ने दिखाया है। उनके समान बादलों की ऊँचाई तक उड़कर हनुमान ने उनसे युद्ध किया है। आज वैज्ञानिक विकास के कारण अग्रराज्यों के लोगों ने आकाश में युद्ध करने की योजनाएँ तैयार की हैं। इस शास्त्र प्रगति के लिए रामायण की यह घटना स्फूर्ति है।

4. शस्त्र चिकित्सा विभाग में उस समय की प्रतिभा आश्चर्य में डालती है। अहल्या के साथ काम क्रीड़ा करनेवाले देवेंद्र के वृषण गौतम के शाप से कटकर नीचे गिर गये। उस समय उसकी पुकार सुनकर अश्विनी देवताओं ने मेष वृषणों को लाकर शस्त्र चिकित्सा के द्वारा जोड़कर इंद्र को बचाया है। इसमें शास्त्र विज्ञान विधान को समझना चाहिए। उसी रूप में आज गुर्दे, नेत्रादि जोड़े जा रहे हैं। लेकिन रामायण काल में ही थे, ऐसा स्पष्ट होता है।

5. लक्ष्मण को जीवित करने के लिए हनुमान संजीवनी को लाता है। यहाँ जानने की बात यह है कि हनुमान के द्वारा सिर्फ पर्वत लाना नहीं है। बल्कि वह मूलिका वैद्य के बारे में जानना है। उस समय के लोग आयुर्वेद या मूलिका वैद्य को जानते थे। इस विद्या के बारे में और भी मेहनत करने की जरूरत है। हमारे प्राचीन वैद्य विधान को विकसित करने की आवश्यकता है। इस प्रकार के शास्त्र अंशों में उस समय के समाज के विकास का अनुशीलन करने से आज के वैज्ञानिकों को नये रास्ते मिलने की संभावनाएँ हैं। इससे स्पष्ट होता है कि रामायण सजीव शास्त्र है। सामाजिक प्रयोजनकारी है। ऐसा सुस्पष्ट होता है।

वाल्मीकि रामायण : भारतीय संस्कृति

वाल्मीकि महर्षि ने अपने रामायण में भारतीय संस्कृति के वैशिष्ट्य को सुस्पष्ट किया है। संस्कृति शब्द काफी विशाल अर्थ देनेवाला शब्द है। इसके नृत्य, संगीत, और चित्र लेखन आदि जनता को आनंद देनेवाली कलाएँ हैं। व्यसनों के द्वारा प्राप्त होनेवाले इंद्रिय सुखों को नियंत्रण में रखनेवाले साधन भी हैं। ऐसी शक्ति वाली कला के द्वारा सामाजिक प्रयोजन को पा सकते हैं, ऐसा संदेश देनेवाले रामायण को उत्तम कला मानना चाहिए।

मानव सामाजिक प्राणी होने के कारण सामाजिक प्रयोजन के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। इसके लिए मनुष्य को सर्वप्रथम संस्कार युक्त होना चाहिए। इस प्रकार सामाजिक प्रयोजन और व्यक्ति संस्कार दोनों को पानेवाला रोमपाद - ऋष्यश्रृंग की कहानियों में वेश्याओं की भूमिका अत्याद्भुत है। वे अपनी नृत्य और गान कला के द्वारा उसे आकर्षित करके अपने साथ फिर अपने

देश ले जाना उनका लक्ष्य था। उन्होंने अपने इस काम को बड़ी सफलता से पूरा किया था। कला के द्वारा समाज का सुधार संभव है दूसरा उदाहरण कुशलवों के द्वारा रामायण कथागान है। वाल्मीकि के द्वारा रचित रामायण को लव और कुश अयोध्या नगर में ही नहीं बल्कि अन्तःपुर में भी गायन करते हैं। जनता को सीता देवी के औन्नत्य के बारे में पता चलता है। अर्थात् कला के द्वारा प्राप्त होनेवाला सामाजिक प्रयोजन कितना बड़ा है हम समझ सकते हैं। यह किसी के भुजबल से प्राप्त विजय नहीं है। यह सिर्फ कला की विजय ही है।

कला कला के लिए है। शास्त्र शास्त्र के लिए है। इन नारों के बावजूद भी प्रत्येक काम के लिए सामाजिक प्रयोजन का होना आवश्यक है। लौकिक प्रधान अपने लक्ष्य को वाल्मीकि ने रामायण के द्वारा बताया है।

रामायण में भौतिक एवं आध्यात्मिक विषयों को संतुलन के साथ देखा गया है। आदर्श मानव जीवन के लिए आवश्यक मूल्यों का समर्थन रामायण में किया गया है। मानव की निराशा और हताशा को दूर करने के रास्ते रामायण में खोजे जा सकते हैं।

लक्ष्मण एक बार ''हे भाई, धर्माचरण से कोई प्रयोजन नहीं है। अधर्मी सुख भोग रहे हैं। अधर्म से चलना ही धर्म है। रावण को देखिए। धर्म धर्म कहते अपनी अवस्थाएँ देखिए। तब राम ने लक्ष्मण से कहा कि तुम्हारे मन में यह विचार क्यों आया है।

अवश्यमेव लभते फलंतावश्य कर्मणः
भर्तः पर्यागतेकाले कर्ता हस्त्य संशयः

समय आने पर वे अधर्म ही उनके विनाश के लिए कारण बनेंगे। इस रूप में लक्ष्मण को राम ने तसल्ली दी। यानी प्रत्येक व्यक्ति को प्रलय आने पर भी अधर्म का रास्ता नहीं अपनाना चाहिए।

उसी रूप में एक और संदर्भ में दुखी होकर बैठ जाने का कोई प्रयोजन नहीं है। पुरुष को प्रयत्न करना चाहिए। लक्ष्मण ने अपने भाई राम से यही कहा। कष्ट प्रत्येक मानव के जीवन में आते हैं। तभी उसका व्यक्तित्व निखरता है। राम का यह समाधान रहा है।

यानी व्यक्ति को अपने मूल्यों को कभी खोना नहीं चाहिए। यही सूचना देते वाल्मीकि ने रामायण रचना की है।

लंका नगर के वैभव और सम्पदाओं को देखकर एक बार लक्ष्मण ने राम से कहा था कि हम यहीं रहकर शासन करेंगे। इसके लिए राम ने—

अपि स्वर्णमयी लंका नमेरोचतो लक्ष्मणा
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'' कहते हैं।

आज का हमारा यह विचार रामायण काल में ही था। रामायण में वर्णित संयुक्त परिवार की व्यवस्था, माता-पिता के प्रति प्रेम, बुजुर्गों के प्रति गौरव, विनय आदि मूल्यों के प्रति उदात्तता दिखाई देती है।

इससे बढ़कर रामायण में श्रेष्ठ राजनीति के मूल्य भी हैं। यह आज के राजनीतिज्ञ के लिए भी आदर्श है।

श्रीराम को फिर से अयोध्या ले जाकर राज्य भार सौंपने के लिए भरत चित्रकूट में आता है। पहले भरत राम को कई रूपों में समझाने की कोशिश करता है। उस समय भरत के प्रयत्न को रोकने के लिए नीति शास्त्र संबंधी अनेक विषयों को बताता है। यानी यह नीतिशास्त्र भरत के लिए ही नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए भी है। यानी आज के शासकों को भी इनको अमल करना चाहिए। उन मूल्यों में आज के संदर्भ में परिवर्तन करके अनुसरण करने से जनता के लिए और समाज के लिए बहुत प्रयोजनकारी होगा। वाल्मीकि ने रामायण में इसी उद्देश्य से इन सारे अंशों को रखा है।

उपसंहार

रामायण कदम-कदम पर समाज के लिए आवश्यक ज्ञान को प्रदान करेगा। किसी भी विषय को न छोड़कर मानव जीवन के विधान को कई कोणों से प्रस्तुत करता है। मनुष्य को और महामानव के बीच के परदे को हटाकर वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करता है। इसलिए रामायण को त्रिकरण शुद्धि के साथ पढ़कर समझकर अनुसरण करने से—

प्रति व्यक्ति शक्ति कागलडु
प्रति मनिषि मनीषि कागलडु
प्रति अज्ञानी ज्ञानी कागलडु
नित्यमु विश्वमलो ममेकम चेंद गलडु।

(अर्थात् रामायण को पढ़ने से प्रति व्यक्ति को शक्ति मिलेगी। प्रति मनुष्य मनीषी बन सकता है। प्रति अज्ञानी ज्ञानी बन सकता है। नित्य लोक से जिलमिल रह सकता है।)

सभी को अपने आप इसकाव्य का अनुशीलन करके अपने लिए आवश्यक संदेश को प्राप्त करना चाहिए। उस संदेश के साथ अपने अंदर के दिव्य के दर्शन करना चाहिए। इस संदेश को समझने से काव्य प्रयोजन सिद्ध हो जायेगा।

प्रपंचमु विशालमु प्रकृतिलो वैविद्यम
मन मुंगिट श्रीमद्रामायण महाकाव्यमु
मरि मनलो सम्पूर्णमु।
नाटिकी नेटिकी वेलुनिच्चे
अद्भुतमैन आत्मदीपमु

यानी संसार विशाल है। प्रकृति में भी विविधता हैआत्म दीप है।

आधार ग्रंथ :

1. वाल्मीकि रामायण—पुल्लेल श्रीरामचन्द्रुडु।
2. वाल्मकी हृदयमु—मामुदाल वेंकटेश्वर राव।
3. ज्ञान योगमु—शिवानंद स्वामी।
4. नेनेवडनु—रमण महर्षि।
5. आमुक्त माल्यदा सौंदर्यमु—तुम्मपूडि कोटेश्वर राव।

रामायण में विविध भक्ति मार्ग

डॉ. सत्तु राधिका

भारतीय साहित्य में महिमान्वित आदि काव्य रामायण है। सत्य और कर्तव्य का मार्ग बतानेवाला काव्य भी रामायण है। रामायण में विविध भक्ति मार्गों का उल्लेख किया गया है। भागवत में मुख्यतया नवविधा भक्ति मार्गों की चर्चा की गयी है। लेकिन आदिकवि वाल्मीकि मुख्य रूप से गृहस्थ धर्म की स्थापना के लिए कटिबुद्ध हुए हैं।

भक्ति की परिभाषा : ''**सातस्मिन प्रेम रूपाभक्त**'' अपने नारद भक्ति सूत्रों में नारद ने यह कहा है।

''मोक्ष साधन सामर्ग्यां भक्ति येव गरीयसी'' उपनिषद् यह घोषणा कर रहे हैं।

1. मातृ भक्ति : लक्ष्मण ने वनवास करने राम के साथ मिलकर जाते समय सुमित्रा देवी को नमस्कार करके अनुमति माँगी तो सुमित्रा देवी ने इस रूप में कहा था– ''अरण्यमे अयोध्या अनुको, श्रीरामुड़े दशरथुडु अनुको, सीतम्मे सुमित्रा देवी गा भाविंचि सेविंचु।'' (हे लक्ष्मण अरण्य को ही अयोध्या समझ लो, श्रीराम को दशरथ समझ लो, सीता को सुमित्रा समझकर उनकी सेवा करो) वनवास के लिए जाते समय लक्ष्मण के अपनी माँ से अनुमति और आशीष लेने में उसकी मातृभक्ति का पता चलता है।

2. पितृभक्ति : श्रीराम अपने पिता के सत्य वाक्य पालन के लिए कैकेयी को दिए वरदान के अमल के लिए वनवास जाने की तैयारी करते हैं। पिता के सत्य वाक्य का पालन नहीं करने से पिता को नरक प्राप्त होगा समझकर पिता को उत्तम गति प्राप्त होने के लिए श्रीराम वनवास के लिए निकलते हैं। वनवास जाने के साथ-साथ वन में सुख भोग नहीं किये वल्कल धारण करके कंदमूल खाकर कुटीर में रहे हैं। यह श्रीराम की पितृ भक्ति का दृष्टांत है।

3. आचार्य भक्ति : रामायण काल में आचार्यों के प्रति श्रद्धा भाव रखते थे। दशरथ विश्वामित्र की इच्छा पर श्रीराम को उनके साथ भेजते हैं। उसी रूप में राक्षस संहार को स्वीकार करते हैं। विश्वामित्र स्वयंवर के लिए राम को मिथिला नगर को ले जाते हैं तो बिना सोचे समझे मान लेते है। उसी रूप में श्रीराम विश्वामित्र की आज्ञा पर बिना सोचे ही शिव धनु को तोड़ते हैं। यह दशरथ और श्रीराम की आचार्य भक्ति का दृष्टांत है।

4. अतिथि भक्ति : रामायण में कई जगहों पर अतिथि भक्ति दिखाई देती है। सीता

वेशधारी रावण को भिक्षा देने आती है। अपने भोजन के साथ अतिथि को भोजन खिलाना उस समय धर्म माना जाता था। अतिथि को साक्षात नारायण समझ कर पूजा करते थे। सीता के इसकार्य में अतिथि भक्ति दिखाई देती है।

5. पति भक्ति : सीता राम के साथ वनवास के लिए निकलती हैं, श्रीराम कई धार्मिक अंश बताकर उसे रोकने की कोशिश करते हैं। किंतु सीता राम से प्रश्न करते हुए तुम अपने पिता के वचनों का पालन करने पर मैं अपने पिता के वचनों का पालन करूँगी। मेरे पिता ने वचन दिया था कि जहाँ पति है वहीं सती के लिए स्थान है। एक पल के लिए पति को छोड़कर नहीं रहना चाहिए। कष्ट सुखों में पति के साथ रहना चाहिए। वल्कल धारण करके इसलिए सीता श्रीराम के साथ वनवास जाती हैं। इसमें उसकी पति भक्ति दिखाई देती है।

6. शत्रु के प्रति भक्ति : रावण मारीच से राम के बारे में बताने के लिए कहता है तो मारीच ''रामो विग्रहवान धर्मः'' कहता है। शत्रु पक्ष का मारीच भी श्रीराम को मूर्तिमान धर्म पुरुष कहने में शत्रु के प्रति भक्ति का पता चलता है।

7. मित्र भक्ति : विभीषण के शरणागत होने पर श्रीराम ने अभय दिया। अपना मित्र बना लिया। उसी प्रकार सुग्रीव को मित्र बनाकर वाली का वध करके उसे किष्किंधा का राजा बनाते हैं। सुग्रीव और विभीषण को विशेष भक्ति प्रपत्ति है। इसी को मित्र भक्ति कहा जा सकता है।

8. दास भक्ति : हनुमान ने श्रीराम के दास के रूप में कई सेवाएँ पहुँचायी हैं। रावण के तुम कौन हो प्रश्न करने पर हनुमान बोलता है ''दासोऽहं कोसलेंद्रस्य'' मैं कोसलेंद्र का दास हूँ बतया। इसमें हनुमान की दास भक्ति दिखाई देती है।

9. वात्सल्य भक्ति : शबरी श्रीराम का स्मरण करते हुए, पीले पत्ते की तरह शरीर के बदलने के बावजूद भी श्रीराम अपने पास आयंगे, इसी आशा के साथ जीवित रही है। उसी रूप में राम के आने पर बहुत ही आनंद के साथ मीठे बेर को राम को खिलाती है। अपने पुत्र के रूप में श्रीराम को देखकर सेवा करती है।

10. मूढ भक्ति : श्रीराम की चरणधिूल से एक पत्थर स्त्री बनी है, जान कर गुह श्रीराम को नदी पार कराते समय अपनी नाव भी स्त्री बन जायेगी समझकर श्रीराम को अपनी भुजाओं पर बिठाकर राम के चरण नाव पर न लगे ऐसा नदी पार करवाता है। इसमें गुह की मूढ भक्ति दिखाई देती है।

11. शरणागति भक्ति : गिलहरी सागर में डूब कर फिर रेत में अपने शरीर को डुबो कर शरीर पर लगे रेत को नल के द्वारा बनाये सेतु के पत्थरों के बीच में डाल कर सेतु को बनाने में अपनी ओर से मदद करती है। बिना थकान के सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक गिलहरी इस रूप में करती रही। उसकी भक्ति को राम ने पसंद किया। इसी को गिलहरी भक्ति कहा जाता है। गिलहरी भक्ति का अर्थ परिपूर्ण शरणागति के द्वारा सर्वस्व स्वामी को समर्पित करना है। उसी रूप में विभीषण और सुग्रीव भी श्रीराम की शरण में आये हैं। विभीषण एक राजा

का भाई है। गिलहरी एक जानवर है। दोनों में शरणागति है। उसी रूप में एक वानर में रहनेवाली शरणागति मानव में नहीं हो सकती है। वानर को कितनी भी भूख क्यों न हो वह राम फल या सीताफल नहीं खाता है। क्योंकि उन फलों में अपने आराध्य राम और सीता के शब्द हैं।

श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, एक बार भी धर्माचरण से विमुख नहीं हुए हैं। स्वधर्म का अमल करना भी भक्ति है। इस प्रकार रामायण में भक्ति के विविध मार्गों का परिचय प्राप्त होता है।

रामायण काव्य : दुःखी घटनाओं का निलय

यम. देवराजुलु

वेद वेद्य भगवान अयोध्या नगर में श्रीराम के रूप में पैदा हुए। वेद उनके जीवन विधान का सारांश है। रामायण गाथा वेदों की आत्मा मानी जाती है। रामायण सिर्फ राम की दिव्य गाथा ही नहीं घन शीलवती सीता की कहानी भी है। प्रचलन है कि रामायण सौ करोड़ श्लोकों का संग्रह है। उनमें मात्र एक श्लोक, एक पाद, एक शब्द, एक अक्षर ही सही मन लगाकर पढ़ने से या पढ़ने के लिए मन कहा तो मानव जीवन धन्य हो जाता है। उनके प्रत्येक अक्षर अपने जीवन के पाप को दूर करनेवाला है। यह भारतीयों का अटल विश्वास है।

रामायण का वैशिष्ट्य

त्रेता युग में ब्रह्म के आदेश के अनुसार नारद से उपदेश पानेवाले वाल्मीकि ने रामायण गाथा को 24,000 श्लोकों में रमणीय रूप से लिखा है। यह विविध सामाजिक, नैतिक, धार्मिक विषयों की निधि है। इसमें अवतार पुरुष श्रीराम की मानवलीलाओं का दिव्य चित्रण है। इससे अलग जगज्ञननी सीता देवी का आदर्शवान पातिव्रत्य , भरत की अनुपम भ्रातृ भक्ति, त्याग ऋण, दशरथ का अपूर्व वात्सल्य, कौसल्या का महोन्नत औन्नत्य, आदर्शवान श्रवण कुमार की पितृभक्ति, हनुमान की अमोघ सेवा भक्ति, विभीषण की न्याय दृष्टि, श्रीराम के प्रति अयोध्यावासियों की श्रद्धा आदि रामायण में बहुत सुंदर ढंग से वर्णित है।

पुरुषोत्तम श्रीराम को प्रजा के प्रति अमोघ प्रेम है। उनकी सेवा के लिए तथा राज धर्म के लिए अपने जीवन को भी त्यागनेवाला व्यक्तित्व श्रीराम का है। रामायण को वाल्मीकि ने सुंदर काव्य के रूप में बनाया है। अलंकार और सौंदर्य की द्दष्टि से भी रामायण अनुपम है। समयोचित इसमें करुणा, श्रृंगार, वीर आदि नवरसों का पोषण किया गया है। करुणा रस रामायण का प्राण है। श्रीराम का वनवास, श्रवण कुमार की मृत्यु, वाली की मृत्यु, सीता के वनवास क्लेश, रावण वध के बाद मंदोदरी का दुख आदि संदर्भों में करुण रस विशेष रूप से वर्णित है। रामायण इस रूप में रसमय और रमणीय काव्य है। भारतीय वाङमय में प्रथम स्थान रखनेवाला रामायण करुण रस का प्राण-ग्रंथ है।

दशरथ का दुख

श्रीराम के वनवास जाने पर दशरथ, कौसल्या और अयोध्या पुरवासी बहुत दुखी हुए हैं। वनवास

के समय पिता के आशीष लेने राम दशरथ के पास आये तो राम को देखकर दशरथ बेहोश होकर नीचे गिर गये। कुछ समय के बाद ठीक होकर राम से इस रूप में कहा है—''बेटा, राम, तुम जाओ। तुमको लौकिक और अलौकिक लाभ हो। तुम्हारी यात्रा सुखमय एवं शुभमय हो। वन में किसी जानवर या राक्षसों से तुमको किसी भी प्रकार का खतरा न हो। सकुशल लौट आओ।'' ऐसा आशीर्वाद दिया।

अयोध्या के नागरिकों का दुख

सीता देवी जब वल्कल वस्त्र पहनती हैं। तब राजमहल की स्त्रियाँ रोती हैं। श्रीराम, लक्ष्मण समेत वल्कल पहनकर वनवास जाते समय उनको देखकर नगर की जनता बिलख-बिलख कर रोती है। उनके दुख को इस रूप में वर्णन किया गया है—

रुदिताश्रु परिद्यूनं हहाकृतमचेतनम।
प्रयाणे राघव स्यासीत पुरं परम पीड़ितम।
सुप्राव नयनैः स्त्रीणाम अस्त्रमायस संभवम।
मीन संक्षोभचरितैश्च सलिलं पंकजैरिव।

(श्रीमद्रामायण, अयोध्याकांड, सर्ग-40-शो-34-35)

श्रीराम के वनवास से नगर की पूरी जनता परिताप का शिकार हुई है। हाहाकार पूरे नगर में छा गये। कई बेहोश हो गये। उनके आँसू से पूरा नगर ही भीग गया। सरोवरों की मछलियों की आँखों से भी आँसू निकले मानो अयोध्या में बाढ़ सी आ गयी। नगर के सभी जनों का व्याकुल चित्त होते देखकर दशरथ बहुत व्याकुल हुए। जड़ कटे पेड़ की तरह नीचे गिर गये। दशरथ की इस हालत को देखकर राम के रथ के पीछे रहनेवाले सिपाही हताश हो गये। वहाँ इकट्ठे हुए लोग आह राम, आह कौसल्या कहकर हाहाकार करने लगे। इस रूप में अयोध्या नगर के सभी दुख सागर में डूब गये।

कौसल्या का दुख

श्रीराम के वनवास जाते ही कौसल्या अपने पति दशरथ के पास जाकर विलाप करती है। बछड़े की माँ की तरह कौसल्या तड़प-तड़प कर रोती है। क्रूर शेर बछड़े को जिस रूप में दूर करता है वैसे दशरथ की वजह से राम वनवास चले गये। ग्रीष्म ऋतु के सूर्य के ताप की तरह श्रीराम के वनवास का दुख सबको जलाने लगा। पुत्र से अलग होने की शोकाग्नि सबको जलाने लगी। नगर की कुछ जनता राम के साथ वनवास भी जाती है। किंतु राम उनको सांत्वना देकर वापस भेजते हैं।

वृद्ध मुनि दंपतियों का दुःख

युवराज के रूप में एक दिन दशरथ आखेट पर जाकर जानवर समझ कर एक मुनि बालक पर बाण चलाता है। बाण की मार से वह बालक मर जाता है। इस विषय को उस मुनिबालक के माता-पिता को बताकर उनकी इच्छा पर उन्हें वहाँ ले आता है। वे बहुत रोते हुए अपने पुत्र के शरीर

को स्पर्श करके इस रूप में बोलते हैं–''हे पुत्र, पाँचों प्राण तुम पर रखकर हर पल तुम्हारे लिए ही जीनेवाले तुम्हारी माँ यह देखो, यहीं पर है। यह अंधी है। वृद्धा भी है। अब इसका क्या होगा। तुम्हारे मर जाने से हम दीन बन गये हैं। इस जंगल में अकेले पड़ गये हैं। इसलिए हम भी तुम्हारे साथ यम लोक आना पसंद करेंगे।'' उस बालक का नाम ही श्रवण कुमार था। दशरथ उनकी सांत्वना करता है। फिर भी उनका दुख शांत नहीं होता है। यह देखकर दशरथ भी दुखी होता है।

तारा का दुख

श्रीराम के द्वारा तारा का पति वाली मारा जाता है। पति के भौतिक शरीर को देखकर तारा बिलख-बिलख कर रोती है। ''हे नाथ, अपने पुत्र अंगद को शांत करो, उसे कोई उपदेश दो,'' और भी वह कहती है–

किं मा मेवं विलपतीं प्रेम्लात्वं ना भिलाष से।
इमाः पश्य वरा बह्वीः भार्यास्ते वानरेश्वर।

(किष्किंधाकांड, सर्ग-20-श्लोक-2)

मैं कितना भी रोऊँ आप कुछ नहीं बोल रहे हैं क्यों? तब सारी वानर स्त्रियाँ बड़ी आवाज में रोती हैं। अपने पिता की मृत्यु पर अंगद भी रोता है। दुख में ही पिता के अंतिम संस्कार करता है।

श्रीराम का दुख

सीता रावण के द्वारा अपहरण होने के बाद श्रीराम सीता के लिए बहुत रोते हैं। प्रत्येक पेड़-पौधे में सीता को देखकर रोते हैं और उनसे सीता के बारे में प्रश्न करते हैं। अपने दुख को लक्ष्मण से बाँट लेते हैं। हे लक्ष्मण मेरे प्रेम की मूर्ति सीता को तुमने कहीं देखा है। हे प्रियतमा तुम कहाँ चली गयी हो। बार-बार सीता का नाम लेकर राम वन में भागते हैं। बार-बार भ्रांति का शिकार भी होते हैं। जंगल में सीता की खोज करते हैं। सीता के बिना जीवित नहीं रहूँगा, जंगल में अपने को अकेले छोड़कर जाने के लिए लक्ष्मण से कहते हैं। शायद राक्षसों ने सीता का अपहरण करके मार दिया होगा। यह सोचकर बहुत रोते हैं।

रावण का दुख

अपने पुत्र इंद्रजित की मृत्यु पर रावण बहुत रोता है। इंद्रजित मरकर मुझे अकेले छोड़कर गया है। अब मुझे यह पूरा भूमंडल शून्य लग रहा है। और कहता है–'' हे महावीर, इस भूमंडल को अपनी पत्नी को, माँ को, अपने राक्षस मित्रों को, लंका को छोड़कर कहाँ चले गये हो, मुझे पहले मरना चाहिए, मेरे संस्कार तुमको करना चाहिए था, किंतु मुझे ही करना पड़ रहा है। कितना बड़ा दुर्भाग्य है।'' उसी रूप में कुंभकर्ण की मृत्यु के बारे में सुनकर रावण बहुत रोता है। इन दोनों की मृत्यु की खबर सुनकर पूरे लंका में विषाद का वातावरण छा जाता है।

राक्षस स्त्रियों का दुख

श्रीराम के हाथों में रावण मारा गया है समाचार पाकर राक्षस स्त्रियाँ बहुत रोती हैं। सभी अन्तःपुर से निकल कर रोती हुई युद्ध क्षेत्र जाने की तैयारियाँ करती हैं। कई स्त्रियाँ नीचे गिरकर रोती हैं। बछड़ों को खोनेवाली गायों की तरह रोती हैं। युधापति को खोनेवाली सेना की तरह रोती हैं। और भी स्त्रियाँ विविध मुद्राओं में विविध लोगों के साथ मिलकर अपने शोक को प्रकट करती हैं।

मंदोदरी का दुख

रावण की पटरानी मंदोदरी अपने पति की मृत्यु पर शोक प्रकट करती है। वह अपने वैधव्य की निंदा करती है। अपने को भी दोष देती है कि उसने पति को युद्ध में जाने से क्यों नहीं रोका है। परमब्रह्म के साथ युद्ध का परिणाम ऐसा ही होता है इस रूप में अपनी मंदबुद्धि को पहले क्यों नहीं मालूम हुआ। रावण जैसा पति पाकर और इंद्रजित जैसा पुत्र पाकर पहले वह गर्व कर रही थी। उसका गर्व चूर-चूर हो गया है। मैं अभागिन हूँ पति की मृत्यु को देखने का दंड मुझे मिला है। इस रूप में वह रोती है। रामायण के अन्य पात्र लक्ष्मण, उर्मिला, भरत आदि पात्रों ने भी अनेक संदर्भों में दुख को अनुभव किया है।

उपसंहार

रामायण काव्य को आद्यंत अनुशीलन करने से प्रत्येक प्रसंग में, घटना में,कांड में दुख दिखाई देता है। एक वाक्य में बोलना है तो पूरा रामायण दुःखमय काव्य है। संस्कृत वाङमय में रामायण जैसे दुख के प्रसंग, घटनाएँ दूसरे किसी काव्य में दिखाई नहीं पड़ते हैं। किसी भी काव्य में करुण रस से संबंधित प्रसंग एक दो होते हैं। किंतु रामायण में अधिकांश प्रसंग करुणा रस को ही व्यक्त करते हैं। अधिकांश पात्र भी कभी न कभी दुख का अनुभव करते हैं। इससे संदेश यह मिलता है कि मानव का जीवन दुख से शुरू होता है और दुख से ही अन्त होता है। दुख मानव जीवन का सत्य है। दशरथ का निस्संतान होना, अहल्या का प्रसंग, खरदूषण का वध, जटायु मरण, शबरी का प्रसंग, सीता का अपहरण, वाली वध, मेघनाद का मरण, रावण का वध आदि सभी प्रसंग किसी न किसी रूप में दुख को ही उजागर करते हैं। रामायण में दुख रहित कोई पात्र दिखाई ही नहीं देता है।

रामायण में पिता पात्र ही अधिक दुख झेले हैं। दशरथ, वाली, विभीषण, रावण आदि सभी इसी वर्ग के हैं। स्त्रियों में सीता, शूर्पणखा, तारा, मंदोदरी आदि ने अधिक दुख झेला है। कुछ भी हो मानव जीवन की मूल समस्या रामायण में छिपी हुई है। उन्हें समझकर अपने जीवन को सुधारने से अपने को दुख पहुँचानेवालों से बच सकते हैं, जीवन के दुख को दूर कर सकते हैं। रामायण के द्वारा यही संदेश मिलता है कि धर्माचरण से लोगों के दुख कम हो सकते हैं।

रामराज्य : आदर्श शासन : हमारा कर्तव्य

पेल्लूर सुनील

युगों के बदलने पर भी मानव के हृदय में सर्वदीप्त होनेवाला नाम तारक नाम राम नाम है। इस धरती पर कई राजाओं का शासन चलने पर भी तब भी, अब भी और हमेशा के लिए भी श्रीराम को ही आदर्श प्रभु मानते हैं। इसका मुख्य कारण श्रीराम ने धर्मबद्ध पालन किया है और साथ ही राम राज्य की प्रजा ने धर्माचरण किया है। तभी शासन काफी सफल हुआ है। प्रस्तुत संदर्भ में प्रभु के साथ-साथ प्रजा भी धर्माचरण से हटी है। दोनों के कारण शासन सफल नहीं हो पा रहा है। राम राज्य के इन दोनों अंशों की कुछ विशेषताएँ निम्न हैं।

प्रजा के लिए राजा आत्मा के समान है। शासक और प्रजा सत्य और धर्म के मार्गों पर चलने से ही देश और राज्य सुभीक्ष और शांतिमय रहेगा। 'यथाराजा तथा प्रजा' यह लोकोक्ति है। प्रभु जिस रूप में व्यवहार करता है तो प्रजा भी उसी रूप में व्यवहार करती है। यह नित्य सत्य है। श्रीराम ने सभी रूपों में धर्म का आचरण किया था। इसलिए सार्थक एवं सफल शासन किया। राम राज्य में पूरी प्रजा सुखी थी। अध्यात्म रामायण में इसका सुंदर चित्रण किया गया है। राम राज्य में व्याधियों का भय, चोरों का भय नहीं था। वृद्ध, सत्पुरुष, बच्चों को अकाल मृत्यु का भय भी नहीं था। प्रजा किसी भी प्रकार के अनर्थ का शिकार नहीं हुई थी।

नीतिहीन, इंद्रिय चपल आदमी के राजा बनने से उस राज्य की सम्पदाएँ और सुख नष्ट हो जाते हैं, यह रामायण का प्रवचन है। नीति नियम और इंद्रिय निग्रह के साथ रहनेवाले श्रीराम महान शासक बने हैं। आज के राजनीतिक नेताओं में ये दोनों लक्षण नहीं हैं।

अकृतात्मान मापाद्य राजानयनये रथम।
मसृद्धानि विनश्यंति राष्ट्राणि नगराणि च।।

श्रीराम के राजतिलक के पहले दशरथ ने अयोध्यावासियों के विचारों को प्राप्त किया। सामंतवाद के उस युग में भी दशरथ ने प्रजातांत्रिक प्रणाली अपनायी है। लेकिन आज प्रजातांत्रिक प्रणाली में ठीक उसका उलटा क्रम चल रहा है। नेता जनता के विचारों को गिनती में न लेकर अपनी मनमानी कर रहे हैं। प्रजा में समर्थ व्यक्ति को ही नेता बनाना चाहिए। मतदान करने के पहले सभी भारतीय अयोध्यावासियों के विचारों को समझना चाहिए। 'हे राजा, हमें कष्ट हो तो राम दुखी होते हैं। सुख मिलने पर अपने बच्चों को सुखी देखकर एक पिता जैसे सुखी अनुभव करता है, उसी रूप में राम को आनंद मिलेगा। राम अगर राजा होंगे तो हम सब सुखी रहेंगे।'

व्यसनेषु मनष्वाणां भृशं भवति दुःखितः।
उत्सवेषु च सर्वेषु पितेव परितुष्यति।।

सारी प्रजा राम को सुगुण राशि और धर्मात्मा मानती है। दशरथ राम को सावधान करते हैं। इंद्रियों को अधीन रखने का उपदेश देते हैं। व्यसनों से दूर रहने की सलाह देते हैं। अनेक सद्‌गुणों वाले राम को ही दशरथ इस प्रकार का उपदेश देते हैं।

भूयो विनय मास्थाया भविनित्यं जितेंद्रियः।
कामक्रोध समुत्थानि त्यजेथा व्यसनानि च।।

इतिहास यह स्पष्ट करता है कि अधिकार आदमी को गर्वी बना डालता है। इसलिए अधिकार में रहते समय बहुत सावधान रहना चाहिए। शासकों को इस पर सोचना चाहिए।

राजतिलक के समय राम नहीं फूले। अरण्यवास करते समय न सहम गये। पितृवाक्य पालन के लिए वनवास करनेवाले श्रीराम सारे भावों को समान रूप से लेनेवाले हैं। पदोन्नति न होने पर, पद को खोने पर, दुखी होकर आज के लोग बहुत दुख का अनुभव करते हैं। लेकिन राम ने ऐसा नहीं किया था।

प्रजा के कल्याण के लिए अपने सुखों का भी उन्होंने त्याग किया है। आखिर अपनी पत्नी को भी त्याग दिया। धर्म के अनुसार ही पालन किया। प्रजा कल्याण के लिए राम ने अपने जीवन को त्याग दिया। तो आज नेता लोग अपने कल्याण के लिए प्रजा के कल्याण को छोड़ रहे हैं। दोनों में मुख्य अन्तर यही है।

स्नेहं दयांच सौख्यंच यदिवाजानकी मपि।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्तिमे व्यथा।।

राम राज्य लायेंगे, राम जैसा शासन करेंगे, ऐसे आश्वासन् देनेवाले नेता को पहले रामायण को पढ़ना चाहिए। उसके अंदर के राम के शासन को समझना चाहिए। समझने के बाद उसके धर्म को जितना ही सही अमल करना चाहिए। तभी भारतीयों का राम राज्य का सपना पूरा हो सकता है।

यक्षगान - रामकथा

जी. हेमलता, डॉ. एन. हरिनाथ रेड्डी

'यक्ष' और 'गान' दोनों संस्कृत के शब्द होने पर भी 'यक्षगान' संस्कृत साहित्य से अलग एक देशीय प्रक्रिया है। किसी भी जाति के लिए एक मुद्रा को, एक जीवंतता को, शाश्वत तत्व को देशी साहित्य ही दे सकता है। ऐसी देशीय प्रक्रियाओं में सर्वाधिक प्रचलित है यक्षगान। यक्षगान को आज एक गान प्रक्रिया के रूप में नहीं बल्कि एक रूपक प्रक्रिया के रूप में माना जा रहा है। यक्षगानों के पहले वीथि नाटक प्रचलन में थे। बाद में वह वीथि नाटक के साथ मिलकर अपने अस्तित्व को खोये बिना प्रचलित रहा है। कलाप, कोरवंजि आदि देशीय दृश्य रचनाओं के विकास में प्रतिनिधि के रूप में यक्षगान ने काम किया है।

सन् 16 सदी तक गद्य पद्य मिश्रित चंपू काव्य शिष्ट साहित्य में प्रचलन में रहे हैं। किंतु लोक जनता ने आदि काल से लोक गीतों का आदर किया है। बाद के कवियों ने शिष्ट और जानपद दोनों के लिए द्विपद को अपनाया। बाद में पद्य और गद्य रूप में लोक साहित्य में यक्षगान का विकास हुआ है।

देशीय साहित्य में यक्षगान शाखोपशाखाओं में विभक्त हुआ है। बाद में यक्षगान में रामकथा को विशिष्ठ स्थान प्राप्त हुआ है। सम्पूर्ण रामकथा या रामकथा के किसी विशिष्ठ प्रसंग को लेकर यक्षगान रचे गये हैं। तेलुगु भाषियों को रामकथा के प्रति समर्पित भाव का यही दृष्टांत है। तेलुगु यक्षगानों में छह कांड प्राप्त होते हैं। छह कांडों पर आधारित यक्षगान ही बड़ी संख्या में प्राप्त होते हैं।

रामलीला यक्षगान

वेल्पूरी वेंकट कवि यक्षगान कर्ता सन् 1780-1853 मध्य में जीवित थे। ये कवि बापनमात्य का पुत्र थे। विशाख मंडल के रहे हैं। इनके गुरु का नाम गोंगाल राम शास्त्री है। विचित्र रामायण, रामलीला, गौरी शंकर विलास नाट्य, जानकी राम शतक आदि इनकी मुख्य रचनाएँ हैं। इनमें गौरी शंकर विलास और रामलीला दोनों ही आज उपलब्ध होते हैं।

रामलीला यक्षगान में रामकथा के छह कांड बहुत संक्षेप में वर्णित हैं।कांड के अन्त में गद्य है बाकी यक्ष गान पद्य में है। आख्यान शैली में यह यक्षगान रचा गया है। बीच-बीच में पद्यों के साथ-साथ द्विपदों का भी प्रयोग किया गया है। राग-रागिनियों का भी उल्लेख है।

गीत रघुनंदनं

इसका लेखक मुम्मडि देवुल तिरुमल कवि है। लक्ष्मम्मा और तिरुमलाचार्य के पुत्र हैं। ये रामचन्द्र यति के शिष्य हैं। ये हरिहर अद्वैत पर विश्वास रखते हैं। ये चित्तूर के रहनेवाले थे। ये सन् 19 सदी के पहले के माने जाते हैं। उन्होंने वाल्मीकि रामायण का पारायण किया है। वाल्मीकि रामायण को यदातदा यक्षगान में रचा है। यह वस्तु प्रधान यक्षगान है। सुदीर्घ संवाद, नाटकीय प्रसंग होने पर भी इसमें गीत ही अधिक हैं। रस प्रसन्न शैली में यह रचा गया है। यह यक्षगान द्विपदों से, लोक गीतों से, लोरी गीतों से भरा हुआ है। हृदय पर मुद्रा डालनेवाले गीत इसकी सम्पदा है।

रामायण

शीर्णाडु वेंकट राम कवि के द्वारा रामायण यक्षगान रचा गया है। वे सन् 1840 के समय के है। इनके गुरु का नाम नरहरि जोष्य है।

यह यक्षगान बाल, अयोध्याकांड की कथा को 'पहली रात की कथा', अरण्य, किष्किंधा, सुंदरकांड की कथा को 'दूसरी रात की कथा' के रूप में, युद्धकांड की कथा को 'तीसरी रात की कथा' के रूप में प्रदर्शन करने की सुविधा के अनुसार रचा गया है। यह यक्षगान प्रदर्शन के अनुकूल रचा गया है। सम्पूर्ण रामकथा को तीनों रातों में गानेयोग्य रूप में बनाया गया है। यही पद्धति अधिकांश यक्षगानों में देखी जाती है।

श्रीमद्रामवर रामायण

सन् 1897 में पैदा होनेवाले नल्लमिल्लि बसिवि रेड्डी आंध्र प्रांत के हरिकथकों में सर्वाधिक चर्चित हैं। इन्होंने रामायण, महाभारत और भागवत को हरिकथाओं के रूप में रचा है। 'श्री मद्रामवर रामायण' (छह कांड , तीन भाग) को यक्षगान प्रबंध के रूप में लेखक ने ही स्पष्ट किया है। यह यक्षगान संवादात्मक रूप में नाटकीयता को लेकर चलता है। इसके अतिरिक्त इन्होंने कुशलव चरित्र, मैरावण चरित्र आदि यक्षगान रचे हैं।

राम नाटक

उप्पवेलूरु पुर के ओगिराल पापय्या के द्वारा यह रचा गया है। भास्कर रामायण के अनुकरण में यह छह कांडों के साथ 1882 में रचा गया है। इसे 'नाटक यक्षगान' के रूप में रचा गया है। राम नाटक को उस समय के 42 बटालियन के लोगों से 14 वर्ष प्रदर्शन करना इसकी विशेषता है।

धर्मपुरि रामायण

तेलंगाना प्रांत के धर्मपुरि में निवास करनेवाले शेषाचल कवि ने इसे सन् 1780 में रचा है। तेलंगाना प्रांत में यह अधिक प्रचलित है। आंध्र में भी यह प्रचलित हुआ है। यक्षगानों में यह अधिक प्रचलित है।

सुग्रीव विजयमु

सुंदरकांड के एक प्रसंग को लेकर यह यक्षगान रचा गया है। सुग्रीव के मंत्री हनुमान के द्वारा सुग्रीव और श्रीराम के बीच में मैत्री, वाली वध करने के लिए राम की प्रतिज्ञा, सुग्रीव का राजतिलक आदि घटनाएँ इसमें मुख्य रूप से वर्णित हैं। इसका लेखक कंदुकूरि रुद्र कवि माने जाते हैं। यह सन् 16 वीं सदी का माना जाता है। उस रूप में यह तेलुगु का प्रथम यक्षगान ठहरता है। सुग्रीव विजय के पहले के यक्षगानों के बारे में पता नहीं चलता है। प्रप्रथम प्रकाशित यक्षगान भी यही है। प्रथम यक्षगान होने पर भी कला की दृष्टि से काफी सफल यक्षगान माना जाता है।

सुंदरकांडमु

इसका लेखक कौंडिनस्य गोत्र का है। ब्रह्ममानस पुत्र पेम्मराजु वेंकटराजु इसका लेखक है। इसके काल के बारे में विवाद है। इसकी कथा सुंदरकांड पर आधारित है। यह द्विपद में रचा गया यक्षगान है।

सीता स्वयंवरमु

गोपाल दास कवि के द्वारा यह रचा गया है। यह बालिकाओं में एवं पुण्य स्त्रियों के द्वारा पढ़ने के लिए अनुकूल रचा गया है। गौरी कल्याण इसकी विशेषता है। इसमें द्विपद का प्रयोग नहीं है।

सीता कल्याणमु

इसका लेखक मोक्षगुंड सुब्ब कवि है। ये कर्नूल जिले के कंभम तालुक के मोक्षगुंड अग्रहार के निवासी हैं। भारद्वाज गोत्र एवं बड़े पांडित्य के कवि हैं।

यह यक्षगान नाटक के रूप में दो रातों में प्रदर्शन योग्य है। बालकांड की कथा इसमें है। मुख्य पात्रों और प्रसंगों के आधार पर दशरथ वेश की कथा, बालिंत वेश की कथा, विश्वामित्र वेश की कथा इस रूप में विभाजन देखा जाता है। विरह वेदना से पीड़ित सीता के पास श्रीराम 'एरुका' वेश में आना इसकी विशेषता है। इसी के अनुकरण में श्री वेंकटेश्वर की कथा में भी वेंकटेश्वर पद्मावती के पास 'एरुका' के वेश में आकर विवाह का प्रस्ताव रखते हैं।

श्रीराम विजयमु

इसका लेखक पंडरि विठल राम कवि हैं। इन का समय 1874-1914 माना जाता है। इसे इन्होंने रावूरि कवि को समर्पित किया है। प्रदर्शन के अनुकूल रचे गये इस यक्षगान में आरंभ में रंभा, उर्वशी आती हैं। इसमें लोक गीतों के विविध रूपों का प्रयोग है।

महाभारत के उपाख्यानों की तरह रामायण में भी कई उपाख्यान हैं। उनमें श्रीराम विजय एक है। विश्वामित्र अपने को नमस्कार नहीं करनेवाले ययाति महाराज पर गुस्से से उसे मारने के लिए श्रीराम को भेजते हैं। विषय की जानकारी न होकर श्रीराम ययाति को मारने की शपथ लेते हैं। बाद में अपने भक्त धर्म परायण ययाति को मारने की अपनी विवशता पर चिंता करते हैं। बाद

में नारद की सूचना के आधार पर ययाति हनुमान की शरण में जाता है। हनुमान ययाति को अभय देकर बाद में वह भी दुखी होता है। परिणामस्वरूप रामांजनेय युद्ध होता है। उसमें राम की विजय होती है।

तेलुगु देशी साहित्य में अपने लिए एक अलग स्थान बनाने वाले यक्षगान पंडित और पामर दोनों के लिए मनोरंजक बने हैं। इस रूप में तेलुगु के यक्षगान सफल हुए हैं।

आधार ग्रंथ

1. रामकृष्ण प्रभा, स्वामी हर्षानंद।
2. रामायण काल में भारतीय संस्कृति, डॉ. बाल शौरि रेड्डी।
3. रामाभ्युदय पर्यालोक–बूदूरु कुसुमांबा।
4. श्री मन्नव वाल्मीकि रामायण–यम.वि.आर. कृष्ण शर्मा।
5. श्रीरामोपासना–पुराण पंडा राधाकृष्ण मूर्ति।
6. सुंदरकांड–गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. हनुमदेत्यमु–रामभट्ल पेरय्या शास्त्री।
8. रामायण और मानवीय संबंध–ब्रह्मश्री श्री चगांटि कोटेश्वर राव।

श्रीराम के हृदय में लक्ष्मण

डॉ. एम. गिरिबाब

रामायण, भारत, भागवत तीनों ग्रंथ न केवल संस्कृत वाङमय में बल्कि सम्पूर्ण भारतीय भाषा-साहित्यों में ग्रंथत्रयी के रूप में प्रचलित हैं। रामायण में श्रीराम और लक्ष्मण मुख्य पात्र हैं। श्रीराम अवतार पुरुष होते हुए भी मानव के सारे कष्ट झेले हैं। इसलिए तेलुगु संस्कृति रामकथा सुधावाहिनी में तैर गयी है। तेलुगु भाषा राम नाम के स्मरण से पुनीत हुई है।

देशे देशे कलत्राणी देशे देशे च बाँधवाः
तंतु देशं सह्यामि यत्रभ्राता सहोदरः

राम और लक्ष्मण भ्रातृत्व के लिए प्रतीक हैं। संसार में कहीं भी पत्नियाँ मिल सकती हैं, बंधु मिल सकते हैं किंतु लक्ष्मण जैसा भाई का मिलना असंभव है। उसी प्रकार श्रीराम को लक्ष्मण ही सब कुछ है। उसका दृष्टांत है युद्ध में लक्ष्मण बेहोश होकर गिर पड़ने के बाद श्रीराम बिलख-बिलख कर रोते हैं। श्रीराम सीता से भी लक्ष्मण से अधिक प्रेम करते हैं।

शक्या सीतासमा नारी मर्त्यलोके विचिन्वता
न लक्ष्मण समोब्राता सचिवः सम्परायकः

यानी सीता जैसी स्त्री मिल सकती है लेकिन लक्ष्मण जैसा भाई नहीं मिलेगा। श्रीराम को लक्ष्मण के बगैर जीवन सूना लगा है। इसका कारण लक्ष्मण के प्रति प्रेम ही है। श्रीराम अपने शरीर को भी त्यागने के लिए तैयार होते हैं। इससे लगता है कि श्रीराम के सीता से भी अधिक लक्ष्मण से लगाव है। बड़ों की सेवा करना छोटों का धर्म है। यह धर्म लक्ष्मण में परिपूर्ण है। शायद यही कारण है। श्रीराम को लक्ष्मण पसंद आये। लक्ष्मण ने राम के साथ वनवास जाकर अपनी सेवाओं से राम को मुग्ध किया।

वनवास के समय पंचवटी में रहने का निर्णय करके निवास बनाने की आज्ञा राम ने दी। तुरंत लक्ष्मण ने पर्णशाला बनायी, सीता राम की सेवा में जुट गये। लक्ष्मण की निपुणता श्रीराम को बहुत पसंद आयी। तृप्त होकर श्रीराम ने लक्ष्मण को आलिंगन किया।

राम के प्रति पिता तुल्य श्रद्धा के कारण लक्ष्मण ने राम के लिए ताराबल और ग्रह बल देखकर कुटीर बनायी। दशरथ ने जीवन भर राम की भलाई चाही मरने के बाद भी लक्ष्मण को साथ भेज कर अपनी भलाई ही देखी, ऐसा राम का विचार है। छोटों की प्रशंसा करना उचित नहीं है, जानते हुए भी राम ने लक्ष्मण की प्रशंसा की है। गोपीनाथ रामायण में मूल से भिन्न दो विशेषण हैं। एक

महान और दूसरा निषकल्मष है। इन दोनों से राम के मन में लक्ष्मण के प्रति भाव को समझ सकते हैं।

राम दो संदभो में लक्ष्मण को लेकर दुखी हुए। दोनों लक्ष्मण की मूर्छावस्थाएँ ही हैं। पहला इंद्रजित का नागास्त्र प्रयोग, दूसरा रावण का शक्ति प्रयोग। निचली बातों से यह स्पष्ट होता है कि राम को सीता से अधिक लक्ष्मण से प्रेम है।

सौमित्री गोल्पडि जनकज नाकु
नेमिटि किल मीद नेलनु ब्रतुकु

इसी के अनुसार राम के हृदय में लक्ष्मण को ही प्रथम स्थान है। भास्कर रामायण में लक्ष्मण को लेकर चित्रण है–

प्राण सखुडैन लक्ष्मुणु
प्राणंबुलु लेनि सीता पनि येटिकि ना
प्राणमु लेटिक नेटिकि
बाणासान दिव्य बाण भारमु नाकुन।

(प्राण सखा लक्ष्मण के बिना सीता मुझे क्यों चाहिए, प्राण भी मुझे क्यों चाहिए ये सारे दिव्य बाण भी मेरे लिए भारी हैं।)

लक्ष्मण के बिना प्राणों को भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाना, सीता भी लक्ष्मण के बाद ही कहना, सारे रामायणों में यही विचार दिखाई देता है। भास्कर रामायण में एक मात्रा अधिक ही दिखाई देती है। बचपन से ही राम के साथ लक्ष्मण और लक्ष्मण के साथ राम रहे हैं।

लक्ष्मण राम के लिए शारीरिक बंधु नहीं बल्कि मानसिक बंधु भी हैं। कुछ अन्य रामायणों यह हृदय बंधु रूप दिखाई नहीं देता है। ''इस नागास्त्र बंधन के दूर होने पर भी इसे छोड़कर मैं नहीं रह पाऊँगा। यह नहीं तो मैं अपने शरीर को ही छोड़ दूँगा।'' ये वचन मूल में नहीं हैं। इन बातों से श्रीराम के हृदय को जान सकते हैं। लक्ष्मण के लिए उसमें विशेष स्थान है। शत्रु संहार होते ही राम ने लक्ष्मण की भुजा पर धनु डाल कर उसे बताया। लक्ष्मण के प्रति राम के प्रेम का एक और दृष्टांत–

अप्यह्याम जीवितं जिह्वं त्वां वासिते स लक्ष्मणां
नतु प्रतिज्ञां संस्मृत ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः

''हे सीता, जरूरत पड़ने पर, तुमको लक्ष्मण को बचाने के लिए मेरे प्राणों तक छोड़ने के लिए तैयार हूँ। इन महर्षियों को जो वचन दिया उनका पालन करूँगा।

रावण संहार भी इसी प्रतिज्ञा का भाग है। लेकिन लक्ष्मण के लिए मरने के लिए भी तैयार होना इस प्रतिज्ञा के अन्तर्गत नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि राम के लक्ष्मण के प्रति राम का अत्यधिक वात्सल्य है।

नी वंटि तोड़ब्टुवु
नी वंटि गुणोत्तरुंडु निजमूहिंचन

भूवलय मंदु गलडे
भाविंपग नीवे तक्क भावना चरिता।

(तुम जैसा भाई भूमंडल में दूसरा नहीं है, तुम जैसा गुणवान भी नहीं होगा।) कहने वाले यह पद्य 'देशे देशे कलत्राणी' 'न लक्ष्मणा समो भ्राता' श्लोकों का अनुवाद लगता है।

नेरुक निद्रहारमु
लेरुगक पदुनालुगेंड्लु हितमति तो
मम्मरि मरि नरसिन् निघ्नुन।

यह मूल का भाव है। लक्ष्मण को भूल जाना अनैतिक मानव का लक्षण है। इस प्रकार कहने में लक्ष्मण के प्रति उनके प्रेम को समझ सकते हैं। लक्ष्मण के लिए राम प्राण त्याग करने के लिए भी तैयार हुए हैं। इसलिए वाल्मीकि ने ''बहिश्चर इव प्राणः'' कहते हुए एक छोटे वाक्य में ही लक्ष्मण पर राम के भाव को स्पष्ट किया है। लक्ष्मण की सेवाओं के कारण ही राम को प्रीत है। साथ ही लक्ष्मण निःस्वार्थी है। इसलिए भी राम को अधिक प्रीत है। लक्ष्मण पूरी तरह राम के प्रति समर्पित है। इसलिए भी राम को लक्ष्मण के प्रति अत्यधिक वात्सल्य है।

श्रीमद्रामायण में हनुमान का चरित्र

शेक जमाल बाशा

रामायण का विशिष्ठ पात्र हनुमान है। श्रीराम के पास सेवक के रूप में रहकर अपने स्वामी के समान गौरव और आदर प्राप्त करना बहुत कठिन कार्य है। उसमें प्रभु बहुत बड़ा गुणवान है तो यह काम और कठिन है। राम स्वयं गुणवान और आदर्श मूर्ति हैं। फिर उनका सेवक होते उतना ही गौरव और आदर पाना और भी मुश्किल है। यह सिर्फ हनुमान को ही संभव हो सका है। राम के समान अर्चना आदि अपने लिए करानेवाले सेवक हनुमान, ''श्रीराम दूतं शिरसा नमामि'' विचार के अधिकारी हनुमान सेवकोत्तम हैं।

हमारे देश में जगह-जगह पर राम भक्तों से अधिक हनुमान भक्त अधिक दिखाई देते हैं। अपने लिए इतनी प्रशस्ति, और अपार पूज्य भाव हनुमान ने कैसे प्राप्त किया। इसके लिए उनका व्यक्तित्व और अमोघ शक्ति, युक्ति, अचंचल भक्ति मिलकर त्रिवेणी तीर्थ जिम्मेदार है। इसलिए हनुमान की राम दूत के रूप में प्रसिद्धि है।

रामायण के जीवन में हनुमान ने महत्त्वपूर्ण अद्भुत और आश्चर्यपूर्ण भूमिका निभायी है। अयोध्या और किष्किंधा के बीच में मैत्री करवाकर सीता और राम को मिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। सीतान्वेषण और राक्षस संहार के लिए आवश्यक वानर बल को सुग्रीव के द्वारा उपलब्ध कराने में भी हनुमान की अनुपम भूमिका है। इसलिए वाल्मीकि ने अपनी रामायण में हनुमान को अत्यंत प्रमुख पात्र के रूप में चित्रण किया है।

राज्य को छोड़कर, पत्नी को खोकर, पत्नी के वियोग में सरोवर के तट पर पागल के समान भाई के साथ घूमनेवाले राम, अपने राज्य, पत्नी को खोकर भाई के हाथों में मार खाकर एक पर्वत पर रहनेवाले सुग्रीव के साथ सिर्फ हनुमान के कारण ही मैत्री कर पाये हैं। सुग्रीव और राम दोनों आपदाओं में हैं। दोनों समर्थ हैं। दोनों के बीच में मैत्री होने पर दोनों एक दूसरे की सहायता कर सकते हैं। इसकाम को हनुमान ने ही किया है। अपनी शुक्ति और युक्ति का प्रयोग करके दोनों को मित्र बनाया है। उत्तम दूत, कार्यसाधक का परिचय इस संदर्भ में हनुमान ने दिया है।

किसी भी बड़े कार्य के लिए प्रथम शक्ति चाहिए। शक्ति मानव का मूल धन है। वह शारीरिक है। वह मानसिक भी है। दोनों का मिलना ही महा कार्य के लिए बुनियादी है। हनुमान जन्म से अतुलित बलशाली हैं। वायुदेव के पुत्र हैं। बचपन में ही सूर्य मंडल तक उड़नेवाले बलवान हैं। वज्रायुध से बचनेवाले वीर हैं। इंद्र की प्रशंसा से स्वच्छंद मरण और ब्रह्म के अनुग्रह से अवध्यत्व

को वर के रूप में प्राप्त करनेवाले हैं।

हनुमान में एक विशेषता है कि अपना बल स्वयं को मालूम न होना। सामनेवाला जब तक उसके बल के बारे में नहीं बतायेगा, तब तक उन्हें अपने बल के बारे में मालूम नहीं होता है। आत्मबल के बारे में नहीं जानना हनुमान का स्वभाव है।

सागर को लाँघते समय हनुमान की शक्ति की परीक्षा के लिए देवताओं, गंधर्वों, महर्षियों ने सुरसा को प्रयोग किया है। सुरसा दक्ष पुत्री है। उसने राक्षस रूप धारण किया। हनुमान को रोकने की कोशिश की। हनुमान को निगलने का प्रयत्न किया। हनुमान ने कहा कि मैं राम कार्यवश जा रहा हूँ। लौटते समय तुम्हारा आहार बनूँगा। सुरसा ने नहीं माना। मेरा आहार हुए बगैर तुम नहीं बच सकते हो। कहा। ब्रह्म से प्राप्त वर के कारण अपना मुँह खोला। हनुमान ने अपना शरीर बढ़ाया। सुरसा ने अपने मुँह को और विशाल बनाया। हनुमान अचानक अपने शरीर को घटाकर अंगुष्ट मात्र बन कर सुरसा के मुँह से बाहर आ गया। सुरसा को नमस्कार करके कहा कि ब्रह्म के वर को मैंने धिक्कार नहीं किया। तुम्हारे मुँह में घुसकर फिर बाहर आ गया। अब मैं सीतान्वेषण के लिए जा रहा हूँ। सुरसा से आज्ञा लेकर चला गया। हनुमान की युक्ति से सुरसा ने आश्चर्य होकर आशीष देकर भेजा।

सिंहिका एक और विचित्र राक्षस है। वह छाया को पकड़कर प्राणों को निगलती है। हनुमान को भी अपनी ओर खींचकर अपने मुँह को खोला। खतरे को भाँप कर हनुमान ने अपने शरीर को बढ़ाया। सिंहिका ने भी अपने मुँह को और खोला। हनुमान ने अपने नखों से सिंहिका के प्राणों को चीरकर फिर उसके मुँह से बाहर आ गया। सिंहिका मर गयी। वाल्मीकि ने हनुमान की बुद्धि की प्रशंसा करके 'मतिमान कपि' कहकर प्रशंसा की है।

हनुमान बिना किसी योजना के लंका में प्रवेश करते तो उसका प्रयत्न बेकार जाता। लंका शत्रु नगर है। वह भी शत्रु दुर्भेद्य नगर है। इसलिए बिना सोचे प्रवेश करते तो असफल हो जाता। पकड़े जाने का खतरा भी है। हनुमान ने सोच विचार करके, किस वेश में, किस द्वार से नगर में प्रवेश करना है निर्णय कर लिया। हनुमान ने सूक्ष्म शरीर को ग्रहण किया। बिल्ली जैसे छोटे आकार में लंका में प्रवेश किया। पहले अपने बाएँ पैर को अंदर रखा। रोकनेवाली लंकाधिपति राक्षस को भी मार दिया। हनुमान का बाएँ पैर अंदर रखकर लंका प्रवेश करना लंकाधिपति पर बाएँ पैर से लात मारने के समान है।

शारीरिक एवं बुद्धि बल से कोई महात्मा नहीं बनेगा। उत्तम दूत नहीं बन सकता है। निचले की तरफ प्रवाहित होना पानी के लिए जितना सहज है उतना ही सहज शक्ति युक्तियाँ स्वार्थ की ओर झुकना। अमीस स्वार्थ समाज के लिए खतरा है। व्यक्ति के लिए भी खतरा है। एक व्यक्ति की शक्ति और युक्ति का प्रयोजन उसके और समाज के कल्याण के लिए जब उनका प्रयोग किया जाता है। हनुमान ने अपनी शक्ति और युक्तियों को राम के लिए इस्तेमाल किया। इसलिए राम की प्रशंसाओं को प्राप्त किया।

हनुमान श्रीराम के भक्त हैं। राम के प्रथम दर्शन से ही उनका हृदय भक्ति से भर गया। समय

के साथ वह बढ़ता ही गया। राम शब्द को सुनने से, राम नाम का स्मरण करने से उस महा भक्त का हृदय पुलकित हो जाता है। हनुमान ने अपने अन्तरंग को एक सुगुणमूर्ति, एक धर्ममूर्ति को समर्पित किया। एक महा कार्य के लिए अपनी शक्ति और युक्तियों का उपयोग किया। अपने जीवन को धन्य बनाया है।

अनेक दार्शनिकों ने हनुमान को मंत्र स्वरूप एवं शब्द स्वरूप, परमात्मा के संदेश को देनेवाली जीवात्मा के रूप में चित्रण किया है। मानव की दसों इंद्रियों पर मन शासन करता है। परमात्मा से अलग होकर जीवात्मा मानव शरीर में बंदी रहती है। उसके चारों ओर संसार सागर है। ऐसी स्थिति में परमात्मा से विलय होने का संदेश देनेवाली जीवात्मा के लिए देव दूत की आवश्यकता है। वही हनुमान है। उसी को रामायण में हनुमत तत्व कहा गया है। व्यक्ति के औन्नत्य को तथा समाज के कल्याण को बढ़ावा देनेवाला व्यक्तित्व हनुमान का है। इसलिए उन्हें अपार प्रशस्ति और पूज्यभाव प्राप्त हुए हैं।

रामायण कल्पवृक्ष : विश्वनाथ योग दर्शन

श्रीराम का वैशिष्ट्य

वैदिक धर्म का मूर्तिमान रूप श्रीराम हैं। मारीच ने भी रावण से सत्य ही कहा। 'रामो विग्रहवान धर्मः' यह मारीच की उक्ति है। यह राम के व्यक्तित्व की सटीक व्याख्या भी है। राम का व्यक्तित्व अति श्रेष्ठ है। लंका में हनुमान से रावण ने सवाल किया तो हनुमान ने अपने को ''दासोहाँ कोसलेंद्रस्य रामस्याक्षिष्ट कर्मणः'' कहा है। (वाल्मीकि रामायण, सुंदरकांड, सर्ग 42, श्लोक 34) हनुमान ने अपने को राम का दास घोषित किया। रावण के राक्षसों को हनुमान ही इतने शक्तिवान है उनके स्वामी राम कितने बड़े शक्तिवान हो सकते हैं? ऐसा विचार उनमें जगाया। हनुमान ने उनके आत्म स्थैर्य को नुकसान पहुँचाया है।

विश्वनाथ सत्यनारायण : राम नाम उपासना

विश्वनाथ के रामायण लिखने के दो मुख्य कारण हैं। यह बात स्वयं उन्होंने अपनी भूमिका में बतायी है। विश्वनाथ की रचना करते समय उनके पिता शोभानाद्री जी ने अगर लिखना हो तो रामायण ही लिखो बाकी लिखने से क्या प्रयोजन कहा। विश्वनाथ को अपने पिता के प्रति अपार गौरव और आदर था। अतः पिता के वचनों के आधार पर उन्होंने रामायण रचा है। दूसरा कारण विश्वनाथ की पत्नी के देहांत होने पर सांसारिक जीवन पर उन्हें बहुत विरक्ति हो गयी। अपने जीव की वेदना को वे समझ गये। इन दोनों कारणों से विश्वनाथ ने 'रामायण कल्पवृक्ष' नाम से रामायण की रचना की।

व्रासिन् रामचन्द्रु कथा व्रातिवनि पिंचुनो
तंड्रि याज्ञयुनु जीवनि वेदन रेंडु नेकमै।

(अर्थात् लिखूंगा तो राम की कथा को ही। पिता की आज्ञा को स्वीकार करके और मेरे जीव की वेदना को समझ कर यही करूँगा।) श्रोताओं के प्रश्न के लिए विश्वनाथ ने यह जवाब दिया–

''तलचिन रामुने तलचेद नेनुनु ना भक्ति रचनलु नावि गान'' सोचूँगा तो राम को लेकर ही सोचूंगा लिखूँगा तो राम भक्ति की रचनाओं को ही लिखूँगा। कहकर अपनी राम भक्ति का परिचय दिया विश्वनाथ ने।

विश्वनाथ जी ने लंबे अरसे तक राम नाम मंत्र का जप किया, सर्वावस्थाओं में राम का स्मरण किया। उस तारक मंत्र के प्रभाव से ही उन्हें योग दर्शन प्राप्त हुआ। इसलिए उन्होंने 30 वर्षों की

तपःशक्ति से रामायण कल्पवृक्ष को लिखा। योगी अरविंद को भी सावित्री पवित्र ग्रंथ को रचने के लिए भी तीस साल लगे हैं। दर्शन हुए विषय ही वे लिखते थे। विश्वनाथ ने दर्शन किये बातों को योग भूमि में बदल कर साधारण जनता को समझ में आये उस रूप में सरल बनाकर वेदांत विषयों को भी प्रस्तुत किया है। उसके कुछ विषय कठिन होने पर भी उसके अनुभव को प्रस्तुत करने में समर्थ हैं।

सर्व अवस्थाओं में राम नाम स्मरण

विश्वनाथ ने सर्वकाल और सर्व अवस्थाओं में राम नाम का जप किया है।

जागद्रवस्थानेमि यन स्वप्न सुषुप्तलगूड राम नाम
मग्रहणंबे नावयिन मानस जिह्वलु सेयु दत्कृथा।।

—रा. क.वृ.अव-पद्य-6

यह विश्वनाथ की भक्ति की पराकाष्ठा है।

ऋषिदर्शन रामायण

''ना वृषि कुरुते काव्यं'' यह लोकोक्ति है। ''सी ऋषि वंटि नन्नय्या रेंडव वाल्मीकि तिक्कन'' विश्वनाथ के द्वारा इस रूप में कहने में गूढ़ार्थ है। नन्नया की वेद व्यास से तुलना की है। व्यास ने महाभारत लिखा है। तिक्कना को दूसरे वाल्मीकि कहने में उनके योग दर्शन को समझ सकते हैं।

ऋषि ऋण

विश्वनाथ का विश्वास था कि ऋषि ऋण को अवश्य पूरा करना चाहिए।

ई संसार मिदेन्नि जन्मलकु नेनी मौनिवाल्मीकि भा
षा संक्रांत ऋणंबु दीर्पगलदा, सत्कार्य निर्माणरे
खा सामग्री ऋणंबु दीर्पगलदा, काकुत्सधडौ स्वामिगा
था सम्पन्नमु भक्ति दीर्चिननु द्वैताद्वेता मार्गंबुलन।

—रा.क.वृ.पद्य-33

कवि ने रामायण लिखकर ऋषि ऋण को चुकाया है। विश्वनाथ जी महा ज्ञानी हैं। उन्होंने प्राच्य और पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन किया है। वेद ने पाँच ऋण या पंच यज्ञों को पूरा करने के लिए कहा है। वे हैं 1.देव ऋण 2. पितृ ऋण 3. मुनि ऋण 4. भूत ऋण 5. मनुष्य ऋण।

मनस्सन्यासिनि - विश्वनाथ : यह राज योग लक्षण है।

नेनु मनस्सन्यासिनि नेनिदि इम्मंचुनडुग नेव्वरिनेपुडुन
दानेदि येनियु ब्रहाप्तुम्मेइनन वलदंचु जेप्पनंतियु गाकन

—अवतारिका पद्य -४४

लौकिक जीवन जीने पर भी विश्वनाथ जी सन्यासी ही थे।

रामायण कल्पवृक्ष : प्राणायाम

"प्राणायाममु बूनि यंतट नमो वाकंबुलर्पिंचि"

–रा.क.वृ. बा. -96

विश्वामित्र ने अपने शिष्य राम को कुछ योग विद्याएँ सिखायी हैं। राक्षस संहार के लिए, प्रकृति के अनुकूल शरीर को बचाने के लिए, भूख, प्यास, निद्रा को रोकने के लिए, थकान को दूर करने के लिए, बल और अतिबल विद्याओं को सिखाया है। तब श्रीराम ने वहाँ प्राणायाम किया, ऐसा कवि ने लिखा है। हठ योग रत्नावली में 8 प्रकार के प्राणायामों का उल्लेख है। वे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। अतीत शक्तियों से इनका साधनाभ्यास सिद्ध होते हैं।

सिद्धाश्रम : वैशिष्ट्य

श्रीराम ने दिखाई पड़नेवाले आश्रम कौन सा है ऐसा सवाल विश्वामित्र से करने पर महर्षि ने इस रूप में बताया है। यह सिद्धाश्रम है। कई सौ युगों के पहले विष्णु वामन रूप में जप करके शीघ्र ही योग सिद्ध प्राप्त किया, वह पवित्र स्थल यही है। कई महर्षि तप करके शीघ्र सिद्धि प्राप्त करने के कारण इस स्थल का सिद्धाश्रम नाम पड़ा है। वामन ने यहीं से परम पद को प्राप्त किया था।

पाषाणशिला-पवित्र स्त्री मूर्ति-योग दृष्टि

विश्वनाथ की योग दृष्टि इसमें दिखाई देती है–

प्रभुमेनि पैगालि वच्चिनंतने पाषाण मोकटिकि स्पर्श वच्चे
प्रभु कालि सव्वडि प्रांतमैनंतने शिल कोक्क दानिकि जेवुलु गलिगे
प्रभुमेनि नेत्तावि परिमलिंचिन तोग यश्शंबु ग्राणेंद्रियंबुजेंदे
प्रभुनील रत्न तोरण मंजुलांगंबु गनवच्चि रातिकि गनुलु गलिगे।

(अर्थात् प्रभु के शरीर की हवा लगकर पत्थर को स्पर्श अनुभव हुआ। प्रभु के चरणों की आवाज सुनकर पाषाण को कान लगे। प्रभु के आने से सुगंध से नाक के इंद्रिय सक्रिय हो गये। प्रभु के आने से रात के नेत्र खुल गये।) पाषाण शिला स्त्री के रूप में बदलने के समय श्रीराम की पाद धूलि लगी है। इसके साथ दूसरे इंद्रिय भी सक्रिय हो गये। इसमें विश्वनाथ की योग दृष्टि है।

विश्वनाथ समाधि दर्शन

श्रीराम की समाधि स्थिति के द्वारा विश्वनाथ ने यह व्यक्त किया है–

अम्मा, समाधि लो निटल मंदु वेल्पुलु वच्चि नम्नु रा
ज्यमुनु जेय वद्दनिन यट्लइतोचिन नेमि तोचके
निम्मेयि वच्चितिन निजमदेमियो नाकुनु सुडनट्ले रा
ज्यम्मुन यंदु गोर्कियनु नट्टिदि गुंडिय बट्टि लेदुनुन

(अयोध्याकांड, अभिषेक खंड, पद्य-96)

(अर्थात् माई, श्रीराम को समाधि अवस्था में रहते समय देवताओं ने शासन नहीं करने के लिए कहा है। इसलिए वे माँ के पास बताने के लिए गये। राज्य पर कोई मोह नहीं है।) देवताओं की सलाह पर और अपने व्यक्तित्व के बल पर राम को राज्य पर कोई मोह नहीं रहा। इसी बात को अपनी माँ कौसल्या को बताने गये। शासक का मन इस रूप में होना चाहिए, यह अप्रत्यक्ष ढंग से विश्वनाथ ने इस संदर्भ में कहा है। इस रूप में समाधि अवस्था की बातें श्रीराम के मुँह से कहलवाना विश्वनाथ की विशेषता है। यह विश्वनाथ का योग दर्शन है। 'रामायण कल्पवृक्ष' स्वर्ग के कल्पवृक्ष की तरह सारे अभीष्टों की पूर्ति करता है।

परिचय

बी.सुरेंदर	:	प्राचार्य, श्रीवेंकटेश्वर स्नातक और स्नातकोत्तर, प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. मल्लकुंट्ला रामनाधम	:	अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, एस.वी.ओ.महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ.माड्डुगुल अनिल कुमार	:	संस्कृत प्राध्यापक, श्री वेंकटेश्वर स्नातक और स्नातकोत्तर प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
कटारी लक्ष्मी नारायण	:	तेलुगु प्राध्यापक, श्री. वे.प्रा.कलाशाला, तिरुपति
डॉ. टी. माल कोंडय्य	:	रीडर, तेलुगु विभाग, एन.बी.के.आर महाविद्यालय, विद्यानगर-कोटा-नेल्लूर (जिला)
डॉ. सूरपराजु वसंतकुमारी	:	अध्यक्ष, तेलुगु विभाग, श्री पद्मावती महिला महाविद्यालय, तिरुपति।
डॉ.काकर्ल भूपति नायुडु	:	श्री.वे.प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. मंगमार मुनिलक्ष्मी	:	तेलुगु प्राध्यापक, श्री.वे.प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. बट्लूरि उषाराणी	:	प्राध्यापक, इतिहास विभाग, श्री.वे. प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. कोणिदल शोभा	:	तेलुगु प्राध्यापक, श्री.वे.प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. राचपालेम पुरंधीश्वरी	:	तेलुगु प्राध्यापक, श्री.वे.प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. वी. कृष्णवेणी	:	तेलुगु प्राध्यापक, श्रीपद्मावती महिला स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. वी. तेजोवाणी	:	तेलुगु प्राध्यापक, श्री पद्मावती महिला स्नातक और स्नातकोत्तर महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. यस. मुरलीधर राव	:	सहायक आचार्य, विद्या विभाग, आर.यस. विद्यापीठ, तिरुपति

जी. नीलिमा	:	शोध छात्रा, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति
डॉ. के. पुरुषोत्तम	:	तेलुगु प्राध्यापक, श्री.वे.प्राच्य महाविद्यालय, टी.टी.डी, तिरुपति
डॉ. मल्लंपल्लि भद्रकालि	:	संस्कृत अध्यापक, श्री.वे.प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ.यस.एल.वी. उमामहेश्वर राव	:	तेलुगु अध्यापक, जवाहर नवोदय विद्यालय, वैकुंठपुरम (छत्तीसगढ)
डॉ. ओ.वी. भास्कर शमा/		
एन.एम. एलुमलै	:	अध्यापक, इतिहास विभाग, श्री.वे. प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. ओ.यस.आर.यस.		
वि.बी.यस.शर्मा	:	व्याकरण विभाग, श्रीवे. प्राच्य महाविद्यालय, तिरुपति
के. यन. उमामहेश्वरी	:	शोध छात्रा, चित्तूर
गुंडाल नरेंद्रबाबु	:	प्राध्यापक, के.यस.आर. नगरपालक उच्च विद्यालय, भक्तवत्सल नगर, नेल्लूर
यस. माधवी लता	:	गल्लावाल्लवूर, तवणम पल्लि, चित्तूर
सी. विजय लक्ष्मी	:	शोधा छात्रा, तेलुगु विभाग, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति
वी. हेममालिनी	:	नृत्य अध्यापिका, संगीत नृत्य विभाग, श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालय, तिरुपति
डॉ. टी. रघुनाथ		
डॉ. एन. कल्पलता	:	ग्रंथालयाधिकारी, श्री पद्मावती स्नातक और स्नातकोत्तर महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. के. करुणाश्री	:	सरकारी महाविद्यालय, विडवलूर, नेल्लूर (जिला)
सी. कुप्पय्या	:	शोध छात्र, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति
डॉ.एल. कस्तूरी	:	तेलुगु विभाग, श्रीपद्मवती स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय, तिरुपति
यस. चन्द्रय्या	:	शोध छात्र, प्राच्य शोध संस्था, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति

के. विजय कुमारी	:	अध्यापक, राजनीति शास्त्र विभाग, पद्मावती महिला स्नातक और स्नातकोत्तर महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. ए. सच्चिदानंद मूर्ति		
के. गुरप्पा	:	शोध छात्र, प्राच्य शोध संस्था, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति
डॉ. टी. सुनीता	:	अध्यापक, वाणिज्य विभाग, श्रीपद्मावती महाविद्यालय, तिरुपति
डॉ. जी. शैलम्मा	:	सम्पादक सहायक, प्रकाशन विभाग, द्राविड विश्वविद्यालय, कुप्पम-517 426
आई. रजनी	:	तेलुगु प्राध्यापक, एन.पी. सावित्रम्म महिला महाविद्यालय, चित्तूर
पी. वरलक्ष्मी	:	सहायक आचार्य, सरकारी महिला महाविद्यालय, चित्तूर
डॉ. सत्तु राधिका	:	पेद्दकापु वीथि, तिरुपति
यम. देवराजुलु	:	शोध छात्र, श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति
पेल्लूर सुनील	:	शोध छात्र, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति
जी. हेमलता	:	शोध छात्र, तेलुगु विभाग, श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालय, तिरुपति
डॉ. एन. हरिनाथ रेड्डी	:	प्राचार्य, श्री.रा.इ.एलि.टी. एडु, श्रीनिवासपुरम, तिरुपति
डॉ. एम. गिरिबाबु	:	तेलुगु विभाग, बेंगलूर विश्वविद्यालय, बेंगलूर
शेक जमाल बाशा	:	शोध छात्र, राष्ट्रीय संस्कृति विद्यापीठ, तिरुपति

❑❑❑